

राधाकृष्णन पिल्लई

राष्ट्रीय स्तर के बेस्टसेलर पुस्तक 'कॉर्पोरेट चाणक्य' के लेखक

डी. शिवनंदन IPS (निवृत्त)

भूतपूर्व पुलिस आयुक्त, मुम्बई, एवं पुलिस महासंचालक, महाराष्ट्र

“सफल रणनीतियां... जिन्हें आप अपने कार्यक्षेत्र में सरलता से प्रयोग कर सकते हैं।”

मुम्बई मिरर

“नेतृत्व सहित प्रबंधन की अवधारणाओं का एक सुलभ व समृद्ध कोश।”

बिज़नेस लाइन, द हिन्दु

“कठिनाई में पड़ी मुम्बई को संकट से उबारने को सदा उपलब्ध पुलिसकर्मी... जिसमें चाणक्य द्वारा सुझाई गई युक्तियों के प्रयोग पर चर्चा की गयी है... रिलीज होने के पहले माह में ही इसकी १२,००० प्रतियां बिक गयी।”

डीएनए

NATIONAL
BESTSELLER

चाणक्य नेतृत्व के 7 रहस्य

CHANAKYA'S 7 SECRETS of LEADERSHIP

NOW IN
HINDI

JAICO

प्रशंसा

‘चाणक्याज्ज्ञ सेवन सिक्रेटस् ऑफ लीडरशिप’ एक पीढ़ियों पुराने दर्शन व मौजूदा व्यापारिक वातावरण का संगम है।

- सिटी एक्सप्रेस, न्यू इंडियन एक्सप्रेस

“पिल्लई व शिवनंदन ने मिलकर चाणक्य के प्रतिरूप को जीवंत बना दिया है।”

- उदय इंडिया

“इस पुस्तक में सिद्धांतों व व्यावहारिकता के मिलन के अतिरिक्त अकादमिक अनुसंधान व पुलिस अधिक्षण के विस्तृत अनुभव का संगम भी है, साथ ही सफलता की इस आधुनिक कथा में छुपा हुआ, एक प्राचीन मंत्र भी अनावरित हुआ है।”

- इंकपैड, बाय द वे पत्रिका

“महाराष्ट्र के भूतपूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस, व योग्य प्रशासकों में शीर्षस्थ डी. शिवनंदन ने इस पुस्तक में प्रभावी प्रबंधन के अपने दिशानिर्देश साझा किये हैं। विशेषकर वे, जिन्होंने उन्हें एक सक्रिय नेता बनाया।”

- न्यू अराइव्हलस, लैंडमार्क मैगजीन

“कठिनाई में पड़ी मुंबई के संकटमोचन व उनके लिये सदा उपलब्ध पुलिसकर्मी डी. शिवनंदन की पुस्तक, जिसमें बेहतर पुलिसव्यवस्था के लिए चाणक्य द्वारा सुझाई गई युक्तियों के प्रयोग पर चर्चा की गयी है, रिलीज होने के पहले माह में ही इसकी 12,000 प्रतियां बिक गयीं।”

- डी एन ए

“अत्यंत रोचकभावी नेताओं का मार्गदर्शन करेगी व उनके लिये अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी।”

- एम आर रेड्डी,

भूतपूर्व एस पी जी चीफ,

1967 की बैच के आय पी एस अधिकारी

“व्यावहारिक ज्ञान से भरपूर”

- डी आर कार्तिकेयन,

पद्मश्री व भूतपूर्व निदेशक सी बी आय

“चाणक्याज्ज्ञ सेवन सिक्रेटस् ऑफ लीडरशिप” एक महान रचना है, यह वाकई प्रेरक है।

- सुरेश धारनिया,

ले कर्नल (रि)
सीनियर मैनेजर व लोकेशन सिक्योरिटी हेड मुंबई

“शुद्ध प्रेरणा एवं आशा..... अंतर्दृष्टियों की सरल उपलब्धता”

- जी एम राव,
एवीपी, एडमिन,
कॉगनिजेंट

“मैने अभी-अभी कॉरपोरेट चाणक्य (और) चाणक्याज़ सेवन सिक्रेटस् ऑफ लीडरशिप पढ़ी..... यह (दूसरी पुस्तक) नेतृत्व, संप्रेशन, संबंध बनाने की योग्यता आदि से संबंधित एक सुंदर पुस्तक है..... विशेषकर डी शिवनंदन के अनुभव व सफलताओं को पढ़ने के बाद तो प्रशासनिक सेवा में जाने का मेरा निश्चय और दृढ़ हो गया। उनका जीवन ही एक ऐसी पुस्तक है जो हर उस विद्यार्थी को पढ़नी चाहिए जो प्रतिद्वंद्विता के इस युग में सफल होना चाहता है.... आपको व राधाकृष्णन पिल्लई को इतनी बढ़िया पुस्तक लिखने के लिये बधाई, शुभकामनाएं।”

- डा अमेय ओक

चाणक्य नेतृत्व के 7 रहस्य

CHANAKYA'S 7 SECRETS of LEADERSHIP



राधाकृष्णन पिल्लई
राष्ट्रीय बेस्टसेलर 'कॉरपोरेट चाणक्य' के लेखक

डी. शिवनंदन IPS (निवृत्त)
भूतपूर्वक पुलिस आयुक्त, मुंबई व पुलिसमहानिरीक्षक, महाराष्ट्र



जयको पब्लिशिंग हाउस

अहमदाबाद बेंगलूर भोपाल भुवनेश्वर चेन्नई
दिल्ली हैदराबाद कोलकाता लखनऊ मुंबई

प्रकाशक
जयको पब्लिशिंग हाउस
ए-2 जश चेंबर्स, 7-एसएर फिरोजशहा महेता रोड
फोर्ट, मुम्बई - 400 001
jaicopub@jaicobooks.com
www.jaicobooks.com

© राधाकृष्णन पिल्लई आणि डी. शिवनंदन

CHANAKYA'S 7 SECRETS OF LEADERSHIP
चाणक्य नेतृत्व के 7 रहस्य
ISBN 978-81-8495-688-7

अनुवादक: कामायनी महोदय

पहला जयको संस्करण: 2016

बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के इस पुस्तक का कोई भी भाग, किसी भी प्रकार से इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, न कॉपी कराई जा सकती है, न रिकार्डिंग और न ही कम्प्यूटर या किसी अन्य माध्यम से स्टोर किया जा सकता है।

मेरी यह पुस्तक समर्पित है

चिन्मय मिशन को

एक आध्यात्मिक संगठन जो कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों की व्यावहारिक महत्ता को आज के संदर्भ में प्रतिपादित कर लोगों को सिखा रहा है।

- डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई

मैं यह पुस्तक समर्पित करता हूँ

मेरी पत्नी ललिता व मेरी पुत्रियों अर्चना व ज्योत्सना को,

तथा

मेरे उस भरे-पूरे परिवार को जिसमें महाराष्ट्र पुलिस बल के वे

लाखों महिला व पुरुष अधिकारी सम्मिलित हैं,

जिन्होंने अपना जीवन राज्य के नागरिकों की सुरक्षा व सलामती

के नाम कर दिया है।

इस पुस्तक से प्राप्त संपूर्ण धनराशी पुलिस कर्मियों के

बच्चों की शिक्षा हेतु समर्पित है।

- डी. शिवनंदन

नोट्स

- यह पुस्तक प्रबंधन व नेतृत्व जैसे गूढ़ विषयों पर लिखी गई है, किन्तु हमने इसे सरल भाषा व लेखन शैली में प्रस्तुत किया है, जिससे कि एक साधारण व्यक्ति जिसकी प्रबंधन व नेतृत्व जैसे विषयों की पृष्ठभूमि नहीं है, वह भी इसे पढ़कर लाभ ले सके।
- यह पुस्तक, हमारी पहली पुस्तक 'कॉरपोरेट चाणक्य' में प्रस्तुत विचारों की अगली कड़ी है। यदि आपने उसे पढ़ा है तो आप इस पुस्तक की अवधारणाओं को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे। यदि नहीं तो हमारा सुझाव है कि आप पहली पुस्तक भी पढ़ें ताकि आप चाणक्य द्वारा प्रतिपादित विचारों को अधिक अच्छी तरह समझ कर उनका प्रयोग आने वाली विभिन्न परिस्थितियों में कर सकें।
- इस पुस्तक में चाणक्य के मूल सूत्र दिये गये हैं। ये सूत्र कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अंग्रेजी अनुवाद से लिए गये हैं। यह अनुवाद “कौटिल्याज्ज अर्थशास्त्र” मुम्बई विश्वविद्यालय के श्री आर.पी. कांगले ने किया है तथा इसे मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित किया गया है। यदि आप कौटिल्य का मूल अर्थशास्त्र पढ़ना चाहते हैं तो हमारा सुझाव है कि आप यह पुस्तक पढ़ें। विभिन्न विद्वानों द्वारा किये गये इस पुस्तक के कई अन्य अनुवाद भी बाजार में उपलब्ध हैं।
- इस पुस्तक में व्यावहारिक प्रयोग दिये गए हैं। अतः पुस्तक में कुछ पृष्ठ आपको व्यक्तिगत नोट्स बनाने के लिए भी दिये गए हैं। इस पुस्तक से आप जो भी सीखें उसका प्रयोग अपने कार्यक्षेत्र व व्यक्तिगत जीवन में अवश्य करें। हम आपकी सफलता की कहानी जानने को उत्सुक हैं। हमें अवश्य लिखें, हमारा पता है, info@ciplmumbai.in
- यदि आप चाणक्य के सिद्धांतों से प्रभावित हुए हैं तो अन्य लोगों को भी सिखायें। आरम्भ चाणक्य के शिष्य के रूप में करें, किंतु लक्ष्य चाणक्य की शिक्षाओं को पढ़ाने का रखें।
- ज्ञान का विस्तार, आपके स्वयं के ज्ञान को बढ़ाता है। विश्वास कीजिए, इसका प्रतिफल मुझे मिला है तथा आपको भी अवश्य मिलेगा।

आभारोक्ति

यदि आपकी पहली पुस्तक एक बेस्ट सैलर रही हो तो, कई लोग सोचते हैं कि दूसरी पुस्तक लिखना तो सरल रहेगा। किन्तु, मेरे लिए यह कार्य कहीं अधिक कठिन व चुनौतिपूर्ण रहा है।

इस पुस्तक को लिखने में मुझे अधिक समय भी लगा और शक्ति भी। इसके लिए मेरे, श्री शिवनंदन व जयको टीम के बीच, दो वर्षों के दौरान, लगभग दो सौ बैठकें हुईं। पुलिस तंत्र की कार्यप्रणाली समझने व उस पर रिसर्च करने, विभिन्न पुस्तकें, वेबसाइट्स व पत्रिकाएं पढ़ने, डाटा एकत्रित करने; तथा श्री शिवनंदन के सहयोगी कर्मचारियों का साक्षात्कार करने में लम्बा समय लगा।

मेरे व्यस्त यात्रा कार्यक्रम तथा विश्वविद्यालय में शिक्षण व अनुसंधान कार्य के चलते, इस पुस्तक पर अकेले कार्य करना मेरे लिए असंभव था। अतः इस दिन- प्रतिदिन बढ़ते प्रोजेक्ट के लिए मैंने जयको से संपादकीय सहयोग मांगा। प्रोजेक्ट की समाप्ति तक हमारे पास एकत्रित जानकारी व डाटा की मात्रा व गुणवत्ता देखते हुए हमारे सामने नई चुनौती थी कि इसमें से क्या न छपा जाये। जबकि अधिकांशतः विचार योग्य प्रश्न होता है- क्या छपा जाये।

सर्वप्रथम मैं शिवनंदन सर को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने इस प्रोजेक्ट का भाग बनना स्वीकार किया। अपने कार्यकाल के दौरान व सेवानिवृत्त होने के बाद भी अपने अनुभव बांटने के लिए उनके पास कई प्रस्ताव थे। किंतु मैं समझता हूं कि यह हमारा सौभाग्य ही था कि वे हमारे साथ इस प्रोजेक्ट पर कार्य करने को तैयार हो गए।

उन्होंने हमें जो भी जानकारी दी, वह अमूल्य रही। इस पुस्तक में दिए गए सभी तथ्य व आंकड़े शिवनंदन सर की विशिष्ट नेतृत्व शैली के परिचायक हैं। इस पुस्तक के लिए रिसर्च कर एकत्रित जानकारी का निरीक्षण व पुनः निरीक्षण करना अपने आप में एक बड़ा कार्य रहा, इसके लिए मैंने व शिवनंदन सर ने न केवल अपने घरों में, अपितु रेस्टोरेटों, कार्यालयों, होटलों, हवाईजहाजों, एयरपोर्ट तथा यहां तक कि विश्वविद्यालय में भी मुलाकात की।

जयको पब्लिशिंग हाउस- आकाश शाह, अश्विन शाह व श्री शर्मा प्रकाशन की दुनिया में मेरे मार्गदर्शक रहे हैं। उन्होंने मुझे एक लेखक के रूप में पहचाना व मुझे एक बेस्टसेलर लेखक बना दिया। संपादकीय दल, जिसमें लक्ष्मी, पूर्णिमा, संध्या तथा प्रज्ञा शामिल थी, ने मुझे हर स्तर पर समर्थन दिया। वे मेरे परिवार की तरह हैं और उन्हीं के कारण मेरे प्रयत्न इस पुस्तक का रूप ले पाये। इस पूरी यात्रा में उन्होंने बहुत ही धीरज व निष्ठापूर्वक मुझे सहयोग दिया। नीता, जिन्होंने इस पुस्तक का मुखपृष्ठ डिज़ाइन किया वे विशेष प्रशंसा की हकदार हैं। यह मुखपृष्ठ मेरी पहली पुस्तक 'कारपोरेट चाणक्य' के मुखपृष्ठ के समान होते हुए भी अलग है।

भारत भर में फैले जयको के दसों कार्यालयों के सभी ब्रांच मैनेजर्स तथा सेल्स पर्सन, व उनकी मार्केटिंग व सेल्स टीम के विजय व स्टीवन सहित सभी ने इस पुस्तक को बेहतर बनाने में योगदान किया।

चाणक्य इंस्टीट्यूट ऑफ लीडरशिप (सी.आई.पी.एल.)- चिन्मय मिशनमुम्बई विश्वविद्यालय के, दर्शनशास्त्र विभाग ने इस प्रोजेक्ट के लिये मुझे सदा समर्थन दिया।

जब मैं इस पुस्तक को लिखने में व्यस्त था, सी.आई.पी.एल. के निदेशक रंजीत शेटी ने मेरा कार्य भार अपने कंधों पर ले लिया। मेरे शिष्य, जो अब मेरे ही कार्यालय में कार्यरत भी हैं, मालती थेवर व विराज पढरिया, मेरे अनुसंधान सहायक रहे। मैंने जब कभी उनसे अर्थशास्त्र से कोई संदर्भ या उदाहरण मांगा तो वह जानकारी मुझे एक मिनट से कम समय में मिल गई। यह उनके उस पुस्तक के गहन अध्ययन का प्रमाण है।

विभाग के अन्य प्रोफेसरो ने भी सदा मुझे प्रोत्साहित किया। मैं डॉ. मीनल कातरनिकर को विशेष धन्यवाद देना

चाहता हूँ, जो कि कौटिल्य अर्थशास्त्र रिसर्च प्रोजेक्ट की संकाय सदस्य हैं, जहाँ हमने पब्लिक लीडरशिप पर एक छमाही पाठ्यक्रम आरंभ किया था।

मैं अर्थशास्त्र के अपने सभी शिष्यों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने अपने जीवन में चाणक्य के सिद्धांतों को प्रयोग में लाने का प्रण लिया है। उन्होंने अपने देश की दिशा बदलने का निर्णय लिया है। इनमें से अधिकतर ने अपने लिए सार्वजनिक जीवन, राजनीतिक क्षेत्र व अन्य सामाजोन्मुखी कार्यक्षेत्र चुने हैं।

मेरे अध्ययन, अनुसंधान व पी.एच.डी. के समय मेरे अध्यापक व गाइड रहे डॉ. गंगाधरन नायर, जो कि चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन से है तथा मुम्बई विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. शुभदा जोशी को धन्यवाद देता हूँ, जिनके कारण मैं चाणक्य के ज्ञान व बुद्धिमत्ता को शैक्षणिक क्षेत्र में ला सका।

मैं हमारे उपकुलपति डॉ. राजन वेलुकर का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरी पहली पुस्तक 'कॉरपोरेट चाणक्य' को 15 अगस्त, 2010 पर जारी किया तथा जिनके सतत् सहयोग के अभाव में मेरी दूसरी पुस्तक संभव नहीं थी।

मैं विशेष रूप से के.जे. सोमैया भारतीय संस्कृति पीठम् को धन्यवाद देता हूँ, जहाँ से मैंने संस्कृत में एम.ए. किया (कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा) मैं, श्री समीर सोमैया, डॉ. कला आचार्य, डॉ. ललिता नामजोशी व सोमैया की पूरी टीम को भी उनके मार्गदर्शन के लिये धन्यवाद देता हूँ।

मैं डॉ. चन्द्रप्रकाश द्विवेदी का भी आभारी हूँ जिन्होंने 'चाणक्य' टीवी सीरियल बनाया, जिसने मुझे व मेरे जैसे अन्य कई लोगों को चाणक्य द्वारा भारत को दिये योगदान को समझने में सहायता की।

चिन्मय मिशन- मैं चिन्मय मिशन का ही उत्पाद हूँ। इस आध्यात्मिक संगठन ने मुझे सब कुछ दिया है। यदि मैंने चिन्मय मिशन में अर्थशास्त्र का अध्ययन न किया होता तो मेरी दोनों पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक संभव न हो पाती। मैं चिन्मय मिशन के वर्तमान विश्व प्रमुख स्वामी तेजोमयानंद जी का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे गुरुकुल व गुरुशिष्य परंपरा द्वारा प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित किया। मैं स्वामी अद्वयानंदजी- प्रमुख, चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन को भी धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने एक स्कूल छात्र के रूप में मुझे सिखाया कि प्रबंधन क्या है; तथा संसार भर में फैले चिन्मय मिशन के उन सभी आध्यात्मिक शिक्षकों को भी धन्यवाद, जिन्होंने अर्थशास्त्र में संचित ज्ञान को दुनिया भर में फैलाने के मेरे मिशन में सहयोग दिया।

मेरा परिवार- मेरे अनापेक्षित कार्य व यात्रा के कार्यक्रमों को संभालने में मेरे परिवार ने मुझे हमेशा सहयोग दिया है।

सुरेखा- मैं जानता हूँ, एक बच्चे को मिल सकने वाली तुम सबसे अच्छी माँ हो। मेरे दोनों बच्चों-आंविक्शिकी व अर्जुन की, उनके विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्षों में देखभाल करने के लिए धन्यवाद। जब मैं सारी दुनिया को प्रबंधन व नेतृत्व की शिक्षा दे रहा होता हूँ, तब तुम उन्हें आध्यात्मिक मूल्य दे रही होती हो, जो कि नेतृत्व की दिशा में पहला कदम है। मेरे माता-पिता, सी.के.के. पिल्लै व सुशीला के. पिल्लै; मेरी सास व ससुर- शेखर व धनवती शेटी तथा मेरी पत्नी की बहनों सारिका व चंद्रिका को भी विशेष धन्यवाद।

एम.टी. एच. आर. ग्लोबल - मोर देन ह्यूमन रिसोर्स (www.mthrglobal.com) संगठन के सभी मित्रों को मेरा धन्यवाद- यहीं से 'कॉरपोरेट चाणक्य' नाम उपजा। राजेश कामथ, विपुल अग्रवाल, आशीष गाकरे, राजेश गुप्ता, प्रीति मल्होत्रा तथा केयूर जानी, ये सभी एच.आर. उद्योग में भारतीय प्रबंधन को एक नया रूप दे रहे हैं।

एस.पी.एम. ग्रुप ऑफ कंपनीज़- मुकुल छेड़ा, प्रवीण छेड़ा, राजेन छेड़ा, निकेत व उनकी पत्नियों के सहयोग के बिना मैं अपना सारा समय चाणक्य के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में नहीं लगा सकता था।

आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह एस.पी.एम. परिवार के उस सहयोग के कारण हूँ, जो उन्होंने मुझे 'चाणक्य' के सिद्धांतों का प्रसार करने के आरंभिक दिनों में दिया। मैं आज भी एस.पी.एम. फाउंडेशन के बोर्ड का सदस्य हूँ, जो कि समाज में कई अच्छे कार्य कर रहा है।

धन्यवाद, वेंकट अय्यर, मेरे बचपन के मित्र व मेरे आध्यात्मिक टूरिज्म व्यवसाय में भागीदार। तुम्हारी मित्रता मेरे लिए दुनिया की सारी दौलत से कहीं अधिक कीमती है। ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को तुम जैसा मित्र दे, जो कि अच्छे व बुरे दिनों में चढ़ान की तरह साथ खड़ा रहे। मेरे मित्रों पंकज जोशी, मिलिंद अग्रवाल तथा राजेश अजगांवकर ने सदा मुझे चाणक्य की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने के नये आयाम दिखाये।

पुलिस बल में मेरे मित्र- सतीश कर्णिक- आई.पी.एस., व सतीश मेनन (रेलवे सुरक्षा बल) मेरे स्कूल के साथी हैं, जो पुलिस बल में कार्यरत हैं। अपने दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार पुलिस की वर्दी में देख मुझे बहुत खुशी हुई। उन्होंने हमेशा पुलिस कर्मियों की कार्यप्रणाली पर मूल्यवान जानकारी दी। वे दोनों ही आज पुलिस बल के अनुकरणीय अधिकारी हैं।

शेमारू एनटरटेनमेंट- यह मेरा एक अन्य परिवार है। मेरे इस परिवार के सदस्यों माधुरी व हिरेन गाडा, अतुल मारू व उनकी पूरी टीम ने कई प्रोजेक्ट के द्वारा- जैसे कि प्रबंधन पर बनी फिल्म चाणक्य स्पीक्स, कई ऑडियो बुक्स तथा ट्रेनिंग किट के माध्यम से चाणक्य की शिक्षाओं को पूरे विश्व तक पहुंचाने का कार्य किया।

मेरे कॉरपोरेट जगत के मित्र- आदित्य बिरला समूह के डॉ. अजीत रानाडे व आशीष द्विवेदी को मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद, वेरांक समूह के एम.डी.तरंग जैन; क्लेरिंस फार्मास्यूटिकल्स के चेयरमैन सुशील वाधवा; ऑलकार्गो के सी.एम.डी. शशिकिरण शेटी; ए.एस.के. ग्रुप के असित कोटिचा व समीर कोटिचा; ज्योति लेबोरेटरीज़ के सी.एम.डी, एम.पी. रामाचन्द्रन तथा एल एण्ड टी के सतीश शिनोंए, इन सभी को 'चाणक्य' के सिद्धांतों का अपनी कंपनियों व व्यावसायिक समूहों में प्रयोग करने व प्रसार करने में दिये गये सहयोग के लिए मैं धन्यवाद देता हूं।

शैक्षणिक व अकादमिक संस्थाएं- मैं विभिन्न कॉलेजों व प्रबंधन संस्थाओं के प्रिंसिपलों, अध्यापकों, प्रोफेसर्स तथा निदेशकों का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे गेस्ट लेक्चरर के रूप में भाषण देने को आमंत्रित किया। इन्होंने मेरी पुस्तक भी एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में अपने विद्यार्थियों को सुझाई व उन्हें चाणक्य पर रिसर्च करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

मेरे लिए गर्व का क्षण था सशस्त्र बलों की संस्थाओं जैसे कि डिफेंस सर्विसेज़ स्टाफ कालेज (डी.एस.एस.सी.), नेशनल डिफेंस कालेज; तथा इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस एण्ड स्ट्रेटेजी एनालिसिस, में चाणक्य के विचारों को शिक्षा का भाग बनाया जाना। चाणक्य द्वारा दी गई युद्ध की रणनीतियों को सैन्य विज्ञान का एक गंभीर विषय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों में रहें- वाइस एडमिरल गायकवाड़, विंगकमांडर आदित्य किरण, कर्नल नायर, कर्नल प्रदीप गौतम तथा इन संस्थाओं के कमांडिंग अफसर।

लेखक मित्र- अमीश त्रिपाठी, अश्विन सांघी, रश्मि बंसल, देवदत्त पट्टनाईक, अनिता व हर्षा भोगले, ऋषभ तुरखिया, संतोष नायर, मुक्ता महाजनी... इन सभी ने स्वयं एक सफल व बेस्ट सैलिंग लेखक होते हुए, मुझे निरंतर अमूल्य सुझाव दिये जिससे मैं अपनी दूसरी पुस्तक को पहली से बेहतर बना सकूं-आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं उन सभी पुस्तकों की दुकानों व उनके कर्मचारियों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मेरी पुस्तक अपने ग्राहकों को सुझाई इनमें शामिल हैं क्रॉसवर्ड, लैंडमार्क, सपना, रिलाएंस, मीडिया मार्ट व भारत भर में फैले अन्य सभी स्टोर्स। मैं उन ऑन-लाइन स्टोर्स का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने 'चाणक्य' तथा उसके ई- बुक संस्करण का इंटरनेट पर प्रचार किया।

राजनीतिज्ञ- मैं कृतज्ञ हूं, श्री. राजेश तोपे- महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री; श्री संजय दीनापाटिल-संसद सदस्य; श्री पृथ्वीराज चौहान- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री; श्री नरेन्द्र मोदी- गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री व अन्य राजनीतिज्ञों व सरकारी अधिकारियों का जिन्होंने 'कारपोरेट चाणक्य' पढ़ी व उसकी शिक्षाओं का अपने कार्यक्षेत्र में प्रयोग करने के साथ ही अन्यो में भी उसके प्रति उत्साह जागृत किया।

और अंत में आपका व आप जैसे लाखों पाठकों का धन्यवाद, जिन्होंने यह पुस्तक पढ़ी व उपहार स्वरूप अन्यो को भी पढ़ने को दी। आपके सहयोग के बिना चाणक्य एवं प्रबंधन न तो प्रसिद्धि पाते और न ही आज की पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण बनते।

- डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई

अनुक्रमणिका

नोट्स

आभारोक्ति

प्राक्कथन

परिचय

चाणक्य कौन था?

1 स्वामी

2 अमात्य

3 जनपद

4 दुर्ग

5 कोष

6 दण्ड

7 मित्र

लेखक परिचय

आमंत्रण दें

प्राक्कथन

कुछ लोग भाग्यशाली कहलाते हैं, तो कुछ अन्य अत्यंत भाग्यशाली।

मेरे जैसे कुछ लोग इसे ईशकृपा या गुरु कृपा कहते हैं। जयको द्वारा प्रकाशित मेरी पहली पुस्तक “कारपोरेट चाणक्य” एक बेस्ट सैलर सिद्ध हुई। इस पुस्तक ने मैनेजमेंट पुस्तकों की श्रेणी में सेल्स के कई रिकॉर्ड तोड़े। प्रकाशित होते ही यह पुस्तक बेस्टसेलर पुस्तकों की श्रेणी में आ गयी थी। यह दस क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित हुई-हिंदी, मराठी, गुजराती, असमिया, उड़िया, बंगाली, तमिल, मलयालम, तेलुगु, व कन्नड।

यह पुस्तक एक ऑडियो पुस्तक के रूप में भी बाज़ार में आई और इस श्रेणी में भी बेस्टसेलर सिद्ध हुई। उस पुस्तक से प्रेरित हो, चाणक्य के सिद्धांतों पर आधारित संसार की पहली मैनेजमेंट फिल्म “चाणक्य स्पीक्स” भी बनाई गयी। (www.chanakyaspeaks.in) रिलिज़ होने के पहले माह में ही इस फिल्म को इंडी फेस्ट (कैलिफोर्निया) में श्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी मिला। एक सफल पुस्तक का लेखक होने के नाते मुझे पूरे विश्व से सैकड़ों कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में बोलने व भाषण देने के अवसर प्राप्त हुए, और यह भी मात्र दो वर्षों के अंतराल में। इस सफलता की सहायता से मैं मुम्बई विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में चाणक्य इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक लीडरशिप (www.ciplmumbai.in) की स्थापना भी कर पाया। यह दुनिया में अपनी तरह की पहली संस्था है जो कि अर्थशास्त्र पढ़ाती है।

यह यात्रा तो अभी आरम्भ ही हुई है और आने वाले वर्षों में अभी बहुत कुछ करना है। मैं इस पूरी सफलता को परमात्मा का आशीर्वाद मानता हूँ। सफलता अपने साथ समस्याएँ भी लाती है। क्या मैं फिर से इसी तरह सफल हो सकता हूँ? पहली पुस्तक ने नये मानदंड स्थापित किये थे, और उस पुस्तक के जारी होते ही लोग मुझसे पूछने लगे थे, और आपकी अगली पुस्तक कब आ रही है? किंतु मैं एक अलग प्रश्न में उलझा था.....

मेरी अगली पुस्तक ‘कब’ आयेगी इस प्रश्न की जगह मैं सोच रहा था कि मेरी अगली पुस्तक में क्या होगा। मैं इस प्रश्न से कई दिनों, महीनों व धीमे-धीमे वर्षों तक उलझता रहा। मैं अच्छी तरह जानता था कि इस पुस्तक का विषय चाणक्य ही होगा किंतु मैं कॉरपोरेट चाणक्य-भाग दो नहीं लिखना चाहता था। हालांकि पहली पुस्तक अपने आप में संपूर्ण थी लेकिन फिर भी मेरे पाठकों के लिये निरंतरता आवश्यक थी। चाणक्य कर्म में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। उनके शब्द मात्र विचार नहीं थे अपितु उन पर कार्य कर उन्हें उपयोग में लाया जा सकता था। जो बीते समय में सफल रहा वह आज भी उपयोगी हो सकता था। मैं चाणक्य को अपनी पीढ़ी में लौटा लाना चाहता था। इस महान व्यक्ति को मैं अपनी अगली पुस्तक में किस रूप में प्रस्तुत करूँ-मैं बहुत लंबे समय तक इस प्रश्न पर विचार करता रहा। मैं अर्थशास्त्र में वर्णित नेतृत्व के सभी सिद्धांतों से भली भांति परिचित था, किंतु इस बात की पूरी संभावना थी कि आपके व मेरे लिये वे कोरे सिद्धांत ही रह जाएँ-जिनकी कोई व्यावहारिकता व मूल्य न हो। फिर एक दिन मैं डी. शिवनंदन से मिला और मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर भी मिल गया। वे उस समय महाराष्ट्र पुलिस के डायरेक्टर जनरल थे और कुछ ही माह बाद पुलिस के सर्वोच्च पद से सेवानिवृत्त होने वाले थे। मैंने उनके व उनके कार्य के बारे में सुन रखा था। हम दोनों नेत्र विशेषज्ञों के लिये नेतृत्व पर आयोजित एक कार्यक्रम में वक्ता के रूप में मंच पर उपस्थित थे। उस दिन मेरे भाषण का विषय था नेतृत्व के सिद्धांत व शिवनंदन सर का विषय था नेतृत्व का व्यावहारिक पक्ष उन्होंने अपने अभिभाषण में स्थितिजन्य नेतृत्व, रूपांतरकारी नेतृत्व तथा नेता के निर्माण के लिये आवश्यक तत्वों पर चर्चा की। उनका भाषण सुनते हुए मेरे मन में एक घंटी बजी। “यहाँ खड़ा व्यक्ति क्रिया में विश्वास रखने वाला है। इसने सर्वाधिक विपरीत परिस्थितियों में भी परिणाम दिये हैं। मैं जिन चीजों पर बात करता हूँ इसने उन सभी को अपने कार्य में उतारा है।”

मेरे लिए शिवनंदन सर, एक ऐसा व्यक्ति बन गये जो वास्तविक जीवन में एक नेता था, जिसके कार्यों में चाणक्य के सिद्धांतों को स्पष्ट देखा जा सकता था।

अगले सप्ताह मैं मुम्बई विश्वविद्यालय के अपने विद्यार्थियों के साथ, शिवनंदन सर से उनके कार्यालय में मिला।

हमें उनके साथ केवल आधे घंटे का समय मिला था किंतु उनके व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद, उन्होंने हमें ढाई घंटे का समय दिया। विद्यार्थियों ने उनसे हर तरह के प्रश्न किये और उन्होंने उनके उत्तर भी तुरंत व विस्तृत रूप से दिये। मुझे पता चला कि पुलिस सेवा में आने से पहले वे इकॉनोमिक्स के प्राध्यापक थे। और तभी मेरे भीतर के अध्यापक का उनके भीतर के अध्यापक से परिचय हुआ।

यहीं से हमारा रिश्ता पनपा, और हम समय-समय पर मिलने लगे। मैं जानता था कि वे एक ऐसे पुलिसकर्मी हैं जिन पर हमारी सरकार व राष्ट्र को गर्व है।

उन्होंने कई उपलब्धियाँ हासिल की थीं किन्तु अभी भी उनके व्यक्तित्व के कई पक्षों से बहुत कम लोग परिचित थे। वे हमेशा चर्चा में रहें किंतु बहुत कम लोगों को उनके पूरे जीवन की जानकारी थी। कुछ और मुलाकातों के बाद मैं उन्हें अच्छी तरह से जानने लगा। उन्होंने ऐसी कई आश्चर्यजनक घटनाओं व कथाओं का वर्णन किया, जिनके बारे में अधिकतर लोगों को जानकारी नहीं थी। और फिर मेरे प्रकाशक-जयको व शिवनंदन सर के बीच एक बैठक हुई जिसने आपके हाथों में थमी पुस्तक को स्पष्ट आकार दिया। इस पुस्तक की विषयवस्तु निश्चित ही चाणक्य हैं, किंतु यह पहली पुस्तक से भिन्न है। मैंने नेतृत्व पर लिखा है किंतु एक केस स्टडी तथा एक महान व रूपांतरणीय नेतृत्व के उदाहरण के रूप में शिवनंदन सर को लिया है।

इस पुस्तक में आप चाणक्य द्वारा प्रतिपादित नेतृत्व का प्रारूप पायेंगे। आप यह भी पायेंगे कि शिवनंदन ने अपने कार्यकाल में पुलिस बल का नेतृत्व करते हुए, किस प्रकार इस प्रारूप को जीवंत किया। उन्होंने बहुत ऊँचे मानदंड स्थापित किये और अन्यो के लिये अनुकरणीय बन गये। यह पुस्तक सिद्धांतों व प्रयोग के मिलन के बारे में है, नेतृत्व की अवधारणाओं व उनके उपयोग के मिलन के बारे में है तथा पुरातन काल से चले आ रहे सूत्रों व सफलता की आधुनिक कहानियों के मिलन के बारे में है। शिवनंदन सर के साथ, चाणक्य द्वारा दिये गये नेतृत्व के सिद्धांत जीवंत हो उठते हैं।

परिचय



चाणक्य द्वारा प्रतिपादित सामरिक नेतृत्व के सात मर्म

नेतृत्व-अवधारणा

अर्थशास्त्र में चाणक्य राजा को “विजिगिषु” कहते हैं। इसका अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो विजयी होना चाहता है जो बाधाओं के होते हुए भी जीतना चाहता है। आज भी एक नेता से अपेक्षित है कि वह एक विजयी की तरह सोचने वाला हो और सदा सफल रहे, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों।

नेतृत्व की अवधारणा का विकास कई शताब्दियों से चला आ रहा है। प्रारम्भ में नेता शब्द का प्रयोग किसी देश अथवा राष्ट्र के राजा के लिये किया जाता था। आज हर क्षेत्र में नेता है, चाहे वह-राजनीति हो, या व्यवसाय, विज्ञान, अकादमिक व शैक्षणिक संस्थाएँ, प्रशासन, सशस्त्र सेनाएँ, समाज, समुदाय, विभिन्न संगठन, खिलाड़ियों के दल अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र ही क्यों न हों। कई नेता अच्छे वक्ता व जनता को संबोधित करने वाले होते हैं तो कुछ शांतिपूर्वक अपनी मेज अथवा प्रयोगशालाओं में बैठकर “विशिष्ट विचारक” बन जाते हैं। ये नेता लोगों के विचारों को नया पक्ष व दिशा देते हैं। कुछ नेता अपने जीवन में अत्यंत लोकप्रिय होते हैं। कई अन्य नेताओं को उनकी मृत्यु के बाद ही सम्मान व पहचान मिल पायी क्योंकि वे अपनी पीढ़ी व समय से कहीं आगे थे और उनकी पीढ़ी उनकी महानता को समझ ही नहीं पायी। कुछ अन्य नेता जैसे कि लोकमान्य तिलक, रविन्द्रनाथ टैगोर या थिरूवल्लुवर एक क्षेत्र विशेष, एक गांव, समुदाय अथवा एक राष्ट्र में ही जाने जाते हैं। जबकि महात्मा गांधी, नेपोलियन, एल्बर्ट आइंस्टीन व अब्राहम लिंकन जैसे नेता पूरे विश्व में पहचाने जाते हैं। फिर भी इन सभी नेताओं में कुछ समानताएं हैं, कुछ ऐसे गुण जिनके कारण उन्हें पहचान व सम्मान मिला और जिन्हें हम नेतृत्व के गुण कहते हैं।

आखिरकार नेतृत्व क्या है?

आज पूरे संसार में नेतृत्व एक गंभीर चर्चा, शिक्षा व अनुसंधान का विषय है। नेतृत्व पर लिखी गयी पुस्तकों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। भारत में नेतृत्व को बहुत गंभीरता से लिया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सर्वाधिक तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और इसी कारण आज विश्व की नजरें भारत पर ही टिकी हुई है। भारत एक युवा किंतु प्राचीन देश है। 1947 में स्वतंत्र हुए इस युवा राष्ट्र की संस्कृति, परंपराएं व इतिहास दस हजार वर्ष पुराना है। अन्य राष्ट्रों की तरह भारत व भारतीयों के प्रेरणास्त्रोत भी उनके ऐतिहासिक नायक व महान नेता ही हैं। सौ करोड़ से अधिक जनसंख्या वाला यह राष्ट्र अपने प्राचीन नेताओं की उपलब्धियों पर गर्व करता है। महात्मा गांधी व महाराज अशोक जैसे हमारे नेताओं ने न केवल पूरे विश्व के नेताओं को प्रेरित किया है अपितु नये नेताओं की रचना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। शिवाजी, सुभाषचन्द्र बोस, राजेन्द्र प्रसाद, लाल बहादुर शास्त्री, व अन्य स्वतंत्रता सेनानी हमारी आज की पीढ़ी को प्रेरणा देते हैं तथा युवाओं में

देशप्रेम जगाते हैं। यदि हम इतिहास में और गहरे जायें तो हमें कृष्ण, राम व बुद्ध जैसे असाधारण नेताओं द्वारा दीं गयीं नेतृत्व की शिक्षाएं रामायण व महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिल जाती हैं। भारतीयों के लिये ये शिक्षाएँ उनके विचारों, दैनिक जीवन व प्रतिदिन की चर्चाओं का विषय है। भारत की यह विशेषता है कि हम मात्र नेता से ही नहीं अपितु उसके गुरु, 'राज गुरु' से भी सीखते हैं। नेता महत्वपूर्ण है, किंतु नेता का रचनाकार अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह अन्य कई नेताओं का निर्माण करने में सक्षम है। स्वामी रामदास के मार्गदर्शन में ही शिवाजी एक सफल राजा बने। स्वामी विवेकानंद अपने गुरुजी श्री रामकृष्ण की प्रेरणा से ही एक विश्वप्रसिद्ध महान आध्यात्मिक नेता बन पाये।

कुछ लोगों के अध्ययन का प्रिय विषय होता है नेतृत्व, लेकिन हमारे जैसे कुछ अन्य लोगों के अध्ययन का प्रिय विषय है नेताओं के गुरु 'राज गुरु' या 'लीडरशिप गुरु'। और इन गुरुओं में भी जो विलक्षण है तथा जिन्हें नेतृत्व की शिक्षा का सर्वोच्च गुरु माना जाता है, वे हैं-चाणक्य।

चाणक्य, मौर्यवंश के पहले राजा चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु थे, जो कि महाराज अशोक के दादा थे, वही अशोक जिन्होंने संसार भर में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। कई इतिहासकार चाणक्य को विश्व इतिहास का ऐसा पहला व्यक्ति मानते हैं जिसने एक 'देश' या 'राष्ट्र' की अवधारणा का निर्माण किया। उनके द्वारा प्रतिपादित कुछ शिक्षाएँ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में रचित "कौटिल्य अर्थशास्त्र" में संग्रहित हैं। पिछले कई वर्षों से मैं अर्थशास्त्र का विद्यार्थी हूँ। चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन के डी. गंगाधरन नायर के मार्गदर्शन में अर्थशास्त्र का अध्ययन करते हुए मैंने नेतृत्व की कई प्राचीन भारतीय अवधारणायें खोजी। चाणक्य द्वारा दिये गये नेतृत्व के सिद्धांतों की आधुनिक युग में उपयोगिता मुझे आश्चर्य में डाल देती है। ये सिद्धांत प्राचीन ही नहीं शाश्वत हैं। अर्थशास्त्र में चाणक्य द्वारा दिया गया नेतृत्व का एक विशेष प्रतिरूप वर्णित है, यह है 'चाणक्य का सप्तांग'- राज्य के सात स्तंभ। पीढ़ियों तक विस्मृत रहे इन प्राचीन स्तंभों की व्याख्या आधुनिक संदर्भ में नेतृत्व के सात मर्मों के रूप में की जा सकती है। हमने इस पर आधारित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया व पूरे विश्व में नेतृत्व विकास के कार्यक्रम चलाये। हमने विभिन्न क्षेत्रों के नेताओं को प्रशिक्षित किया- व्यापारिक निगम, संस्थान व समूह, सशस्त्र सेना व पुलिस बल, वैज्ञानिक व शिक्षाविद्, सामाजिक संगठन, आध्यात्मिक संस्थाएँ, सरकारी विभाग एवं कई अन्य। नेतृत्व के इस प्रतिरूप की उपयोगिता देश-विदेश के प्रत्येक सामाजिक क्षेत्र में देखना एक प्रेरक अनुभव रहा।

चाणक्य द्वारा प्रतिपादित नेतृत्व के सात स्तंभ

अर्थशास्त्र की छठी पुस्तक के पहले अध्याय के पहले सूत्र में चाणक्य ने नेतृत्व के इस प्रतिरूप का वर्णन किया है।

“स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड, मित्र, इति प्रक्रित्य” (6.1.1)

(राजा, मंत्री, राज्य, दुर्ग, राजकोष, सेना तथा सहयोगी, यही राज्य के घटक हैं।) प्रत्येक राज्य को ऐसे सात भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है जो कि मिल कर पूरा राज्य बनाये।

चाणक्य द्वारा दिये गये नेतृत्व के 7 मर्म

मर्म	दर्शाता है	आधुनिक संगठन में
▲ 1. स्वामी	राजा (नेता)	नेता
▲ 2. अमात्य	मंत्री राजा के सलाहकार, सभासद, प्रबंधक	प्रबंधक
▲ 3. जनपद	राज्य (नागरिक)	मार्केटिंग/ग्राहक
▲ 4. दुर्ग	किला	बुनियादी ढांचा
▲ 5. कोष	राजकोष	वित्त
▲ 6. दंड	सेना (दल)	सामूहिक कार्य (टीमवर्क)
▲ 7. मित्र	सहयोगी (मित्र)	सलाहकार/ मार्गदर्शक

खुशहाल राज्य के घटक हैं एक आदर्श राजा (स्वामी) जिसका मार्गदर्शन सुयोग्य मंत्री (अमात्य) करता हो, जो कि नागरिकों (जनपद) का ध्यान रखता हो, उन्हें उत्कृष्ट बुनियादी ढांचा व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाता हो तथा यह सुनिश्चित करता हो कि राज्य एवं नागरिकों का कोष सदा भरा रहे तथा उनकी सुरक्षा, सक्षम सेना (दंड) के हाथ में हो तथा उसकी सहायता को अच्छे सहयोगी (मित्र) सदा उपलब्ध हों। यह प्रतिरूप नेतृत्व का विस्तृत रूप दर्शाता है। एक नेता की दृष्टि पूरे वन प्रदेश पर होनी चाहिए जबकि हम में से अधिकांश केवल वृक्ष ही देख रहे होते हैं। किसी कंपनी के आईटी विभाग में कार्य पर रहे व्यक्ति का ध्यान उसके कार्यक्षेत्र से संबंधित मुद्दों पर ही रहता है। लेखा विभाग केवल वित्तीय आंकड़ों की ओर देखता है। मार्केटिंग एवं सेल्स की टीमों केवल अपने ग्राहकों पर ध्यान देती हैं। उत्पादन विभाग के लिये उत्पाद इकाइयों का आंकड़ा महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार की दृष्टि का अर्थ मात्र पूरी कंपनी को देखना ही नहीं वरन् उस पर टुकड़ों में नज़र डालना भी है।

एक सी.ई.ओ. या चेयरमैन को इन सभी विभागों को अलग-अलग व एक इकाई के रूप में समझना चाहिए। एक चेयरमैन जानता है कि प्रत्येक विभाग का कार्य अलग व अपने आप में अनुठा है और वे एक-दूसरे पर निर्भर हैं। स्थूल एवं सूक्ष्म पर साथ-साथ ध्यान देना ही एक नेता का कौशल है। क्या वित्त विभाग में कार्य करने वाला व्यक्ति उत्पादन एवं मार्केटिंग समझ सकता है? क्या मार्केटिंग का व्यक्ति समझ सकता है कि मानव संसाधन (एच.आर.) विभाग क्या करता है? क्या मानव संसाधन (एच.आर.) विभाग भर्ती एवं प्रशासनिक कार्य के परे जा सकता है? यही है विस्तृत दृश्य पर नज़र डालना। यही है नेतृत्व का दृष्टिकोण।

एक प्रचलित मिथ्या धारणा है कि यदि उत्पादन विभाग में कार्य करने वाला एक व्यक्ति अन्य विभागों का कामकाज सीखने लगता है तो उसकी अपने स्वयं के कार्य की उत्पादकता घट जाती है। हालांकि सच्चाई इसके विपरीत है उत्पादन विभाग में कार्य करने वाले व्यक्ति का कौशल इससे बढ़ जायेगा और वह एक अधिक उत्पादक कर्मचारी बन जायेगा। एक मानव संसाधन (एच.आर.) विभाग का कर्मचारी जो कि अन्य विभागों की कार्य पद्धति व भूमिका को समझता है एक बेहतर मानव संसाधन कर्मचारी बन जाता है। फिर हममें से अधिकांश

संपूर्ण परिदृश्य को छोड़कर केवल टुकड़ों की ओर ही क्यों देखते हैं? इसका कारण है हमारा पुराना प्रशिक्षण व पृष्ठभूमि। हमारा परिवार, हमारी शिक्षा व हमारा वातावरण ही हमारे सोचने, समझने की प्रक्रिया तय करते हैं। अतः यदि आप एक चार्टेड अकाउंटेंट है तो आपको वित्तीय आंकड़ों व रिपोर्ट आदि के कार्य का प्रशिक्षण दिया गया है। एक एच आर में कार्य करने वाले व्यक्ति की शिक्षा व प्रशिक्षण में, औद्योगिक संबंध, वेतन, साक्षात्कार, मानव संसाधन की उपलब्धता व उससे संबंधित योजनाएँ तथा उसके कार्य क्षेत्र से जुड़े अन्य मुद्दे शामिल होते हैं। समय के साथ आप अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हो जाते हैं। आधुनिक युग को सुपर स्पेशलाइज़ेशन का युग कहा जाता है। एक विशेषज्ञ होना बुरा नहीं है, किंतु इस प्रक्रिया में आप विस्तृत परिदृश्य खो देते हैं। हम कंपनी की ओर देखना भूल कर सिर्फ विभाग को ही देख रहे होते हैं। यहाँ मूल बिंदु है-स्वयं को किसी एक विभाग तक सीमित न रखें; विस्तृत परिदृश्य का ध्यान रखें। एक चेयरमेन अथवा सी.ई.ओ. की तरह सोचें, कंपनी की ओर देखने का नेतृत्व का यही तरीका है।

“नॉन फायनेंस मैनेजर के लिये फायनेंस” - आज इस तरह के पाठ्यक्रम बहुत लोकप्रिय हैं। इन पाठ्यक्रमों में आपको उसी कंपनी को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने का प्रशिक्षण दिया जाता है। ये पाठ्यक्रम आपको समग्रता से सोचने का प्रशिक्षण देते हैं न कि टुकड़ों में। यही नेतृत्व की शिक्षा है। अच्छी कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को सभी विभागों व हर कार्य के लिए प्रशिक्षित करती हैं। परिणामस्वरूप वे अपने कर्मचारियों को महान नेताओं में रूपांतरित कर देती हैं।

चाणक्य द्वारा दिया गया-“नेतृत्व के सात स्तंभों” का सिद्धांत, आपको वनक्षेत्र और वृक्षों दोनों की ही ओर देखने का प्रशिक्षण देता है। वनक्षेत्र के बिना वृक्ष तथा वृक्षों के बिना वनक्षेत्र दोनों ही अधूरे हैं। इन दोनों का एक-दूसरे पर निर्भर होने का ज्ञान हमें अपने वातावरण व कार्यक्षेत्र की परिस्थितियों के प्रति अधिक जागरूक बनाता है। यह पुस्तक नेतृत्व के सात स्तंभों की व्याख्या करने के साथ ही इस व्याख्या का प्रयोग आपको नेतृत्व का प्रशिक्षण देने में करती है। हम इन्हें नेतृत्व के सात मर्म कहते हैं। इस पुस्तक में हमने प्रस्तुत किया है कि भारतीय पुलिस तंत्र इस प्रतिरूप का प्रयोग कैसे करता है। हालांकि यह प्रतिरूप मात्र पुलिस प्रणाली के लिये नहीं है; इसका प्रयोग किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व के लिये किया जा सकता है।

इस पुस्तक में आप नेतृत्व के सिद्धांतों व साथ ही उनके प्रयोग से भी परिचित होते हैं, जी हां, चाणक्य के सिद्धांत भी और उनका क्रियान्वयन भी। आप प्राचीन भारत व आधुनिक भारत को साथ-साथ देखते हैं। इस पुस्तक का दृष्टिकोण बहुविषयक है। हमने चाणक्य द्वारा दिये गये नेतृत्व के सिद्धांतों को डी. शिवनंदन के पुलिस नेतृत्व में हुए उनके प्रयोग के साथ जोड़ा है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि यह पुस्तक आपको स्वयं में छिपे नेता को ढूंढ निकालने में सहायक होती है।

आप एक व्यवसायी, पुलिसकर्मी, एक शैक्षणिक संस्था के डीन, एक गृहिणी या नौकरी ढूंढने को तत्पर एक विद्यार्थी- कुछ भी हो सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति नेतृत्व के बारे में जान सकता है, सीख सकता है। एक व्यक्ति जो एक नेता नहीं है, इन सात मर्मों का प्रयोग कर, नेता बन सकता है। एक नेता इन सिद्धांतों के उपयोग से बेहतर नेता बन सकता है। यदि आप एक माता या पिता है, तो आप अपने बच्चों को ये सिद्धांत सिखा कर उन्हें भविष्य का नेता बना सकते हैं। इस पुस्तक का प्रत्येक अध्याय आपको इस में वर्णित सिद्धांतों को अपने व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में उतारने के नुस्खे भी देता है।

नेतृत्व को समझने के लिए आगे पढ़ें। एक नेता बनने के लिए आगे पढ़ें।

पुलिस बल का नेतृत्व

एक नेता को अपनी टीम को दिशा देनी होती है, अतः यह आवश्यक है कि उसे अपने लक्ष्य, उद्देश्य तथा जिम्मेदारियाँ स्पष्ट रूप से पता हो। नेतृत्व का सर्वोच्च प्रकार है रूपांतरकारी (ट्रांसफॉर्मेशनल) नेतृत्व, जहां आप संगठन की संस्कृति को एक सकारात्मक, उत्पादक एवं परिणामोन्मुखी संस्कृति में परिवर्तित कर देते हैं। जैसे कि हरित क्रांति व संचार क्रांति ने भारत को रूपांतरित कर दिया। देश का प्रत्येक व्यक्ति इन क्रांतियों से लाभान्वित हुआ। रूपांतरकारी नेतृत्व भी ऐसे ही परिणाम देता है। कई बार यह प्रश्न किया जाता है कि क्या एक व्यक्ति अकेला ही पूरे तंत्र को बदल सकता है? यथार्थ में केवल एक ही व्यक्ति रूपांतरण ला कर परिवर्तन निर्मित कर सकता है। हां, यह सत्य है कि टीमवर्क या सामूहिक प्रयत्न ही परिवर्तन को संभव बनाता है। फिर भी बदलाव की पूरी प्रक्रिया का आरम्भ उसी एक व्यक्ति से होता है जिसने परिवर्तन का निर्माण किया- रूपांतरकारी (ट्रांसफॉर्मेशनल)

नेता। विभिन्न नेताओं को भिन्न-भिन्न कौशल की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक नेता का उद्देश्य अलग होता है। राजनीतिक नेतृत्व में व्यक्ति का मिशनरी जोश बहुत महत्वपूर्ण होता है। नरेन्द्र मोदी व नीतिश कुमार जैसे मुख्यमंत्रियों ने गुजरात व बिहार जैसे राज्यों को देश के सर्वाधिक विकासशील राज्यों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। प्रत्येक राज्य की सरकार को आवश्यक संसाधन-जी हाँ दोनों ही, मानव भी व भौतिक भी-तथा उसका पूरा प्रशासन तंत्र उसके एक आदेश पर उपलब्ध होता है। परिवर्तन के लिये एक बार राजनीतिक इच्छाशक्ति जागृत हो जाने पर, पूरा तंत्र एक सकारात्मक क्रिया के लिये तैयार हो जाता है तथा परिवर्तन भी तुरंत दिखाई देने लगते हैं। कॉर्पोरेट नेतृत्व को एक बार विभिन्न एंजेंसियों अथवा आयपीओ के माध्यम से प्राप्त वित्तिय संसाधन उपलब्ध हो जाने पर, पूरा संगठन क्रियाशील हो उठता है व उत्पादों व सेवाओं का निर्माण आरम्भ हो जाता है। एक कॉर्पोरेट नेता की हैसियत से स्टीव जॉब्स ने आयफोन, आयपाड व आयपैड बहुत कम समय में बाजार में उतारे। इसी प्रकार रतनटाटा ने नैनो लाँच की और इस गाड़ी की कीमत भी उन्होंने वही रखी जिस पर वे उसे ग्राहकों को उपलब्ध करवाना चाहते थे। क्या पुलिस बल का नेतृत्व इससे भिन्न है? इसका उत्तर ढूँढ़ने से पहले यह समझना आवश्यक है कि भारत में पुलिस बल का लक्ष्य हैं, कानून व व्यवस्था की स्थिति बनाये रखना, तथा अपराधों को नियंत्रित रखना व उन्हें रोकना। किंतु इन विस्तृत उद्देश्यों के पीछे कई अनजान चीजें भी हैं। सामान्य से परे की प्रत्येक वस्तु के लिये पुलिस बल की आवश्यकता होती है-दंगों पर नियंत्रण, यातायात नियंत्रण, साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखना, एक अतिविशिष्ट व एक सामान्य व्यक्ति दोनों की ही सुरक्षा बनाये रखना, अपराध की जांच, नक्सलवाद का सामना, आतंकवाद को सम्भालना-यह सूची अंतहीन है। पुलिस की भूमिका की व्याख्या करना उतना सरल नहीं है जितना कि एक कंपनी की, जहाँ, सेल्स टारगेटों के द्वारा परिणामों को सरलता से मापा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त पुलिस के कार्य में एक छोटी सी गलती भी जीवन-मृत्यु का प्रश्न बन जाती है। प्रतिदिन कोई नयी तरह का अपराध सामने आता है। उदाहरण के लिये आज से बीस वर्ष पूर्व किसी ने भी साइबर क्राइम का नाम नहीं सुना था, किंतु आज यह पुलिस जांच का एक बड़ा हिस्सा है। पुलिस का कार्य सक्रियता का दूसरा नाम है। यह चौबीसों घंटे चलता है। अतः पुलिस के नेतृत्व को अन्य क्षेत्रों के नेताओं की तुलना में कहीं अधिक व विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है। एक ओर तो पुलिस बल को अंडरवल्ड के सरगनाओं का सफाया करना होता है, वहीं दूसरी ओर वे एक खोये हुए बच्चे को सकुशल घर पहुँचाने में भी सहायता करते हैं। पुलिस बल महिलाओं व बुजुर्गों के मन में यह विश्वास जगाता है कि वे अपने घर में सुरक्षित हैं। वे एक सनकी युवा को तेज गति से वाहन चलाने से रोकते हैं, तो एक वयस्क लड़के व लड़की को उनके मनपसंद जीवन साथी के चुनाव की स्वतंत्रता देते हुए उनके कानूनी अधिकारों की रक्षा करते हैं। चाहे यह उनके माता-पिता की इच्छा से मेल न खाता हो। फिर भी हमारा समाज एक पुलिसकर्मी की भूमिका को सम्मान नहीं देता। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी पुलिसकर्मी सर्वगुण संपन्न होते हैं। पुलिस तंत्र में भ्रष्टाचार है; कई पुलिसकर्मीयों को तो वर्दी वाले अपराधी कहना अतिशयोक्ति न होगी। किंतु सभी पुलिसकर्मी भ्रष्ट या अपराधी नहीं होते। पुलिस का कार्य समाज का एक आवश्यक अंग है, जिसके अभाव में पूरा समाज ढह जायेगा।

पुलिसकर्मीयों को अकल्पनीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जब पूरा देश, दिपावली, गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा, स्वतंत्रता दिवस, ईद या क्रिसमस जैसे त्यौहार मना रहा होता है, पुलिसकर्मीयों को छुट्टी नहीं मिलती। उन्हें प्रतिदिन बारह घंटे काम को देने होते हैं, तथा पूरे चौबीस घंटे वे ड्यूटी पर होते हैं। उनका कोई पारिवारिक जीवन नहीं होता। एक पुलिसकर्मी की पत्नी को सदा यह भय रहता है कि कहीं कोई अपराधी उसके पति को अपनी गोली का निशाना न बना ले। उनकी बेटियों के लिये सुयोग्य वर ढूँढ़ना कठिन काम होता है। इसके अतिरिक्त पुलिस में कार्यरत लड़के भी आदर्श वर नहीं माने जाते। पुलिसकर्मीयों के हितों की रक्षा हेतु कोई संघ अथवा यूनियन नहीं होती। उन्हें कॉर्पोरेट वल्ड में काम करने वाले अपने समकक्षों की तुलना में कहीं कम वेतन मिलता है। वास्तव में अधिकांश वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अत्यंत तीव्र बुद्धिवाले होते हैं, यदि उन्होंने कॉर्पोरेट वल्ड की राह चुनी होती तो वे निश्चित ही किसी बड़ी कंपनी के सी. ई. ओ. होते। मीडिया वाले ब्रेकिंग न्यूज की तलाश में सदा उनका पीछा करते रहते हैं। निरंतर बना रहने वाला राजनीतिक दबाव भी पुलिसकर्मीयों के लिये अत्यधिक तनाव का कारण होता है।

ध्यान दें, मुम्बई की जनसंख्या दो करोड़ है और यहाँ पदस्थ पुलिसकर्मीयों की संख्या है बयालीस हजार। चूँकि इनका कार्य दिवस बारह घंटे का होता है, इनमें से आधे दिन में काम करते हैं और आधे रात में। इस प्रकार लगभग बीस हजार पुलिसकर्मी दो करोड़ लोगों की सुरक्षा करते हैं। अर्थात् एक पुलिसकर्मी पर एक हजार लोगों की

सुरक्षा का उत्तरदायित्व होता है। यह ऐसा ही है जैसे कि एक सेल्समैन एक हजार सेल्स अकाउंट्स का काम देखे। आप पुलिस की नौकरी व एक कॉर्पोरेट क्षेत्र की नौकरी के दबाव में तुलना कैसे कर सकते हैं?

इसके अतिरिक्त एक पुलिसकर्मी का हर तरह के हर व्यक्ति से आमना-सामना होता है, चाहे वह एक फिल्म स्टार हो या एक अवैध नागरिक, सड़क पर घूमता हुआ एक विक्षिप्त हो या एक शराबी, वह आत्महत्या का प्रयास करने वाला एक छात्र भी हो सकता है, यातायात दुर्घटनाएं, उत्तेजना में किये गये अपराध, या रंगदारी के लिये किये गये फोन। प्रत्येक पुलिसकर्मी को निरंतर अनजान स्थितियों से निपटना होता है। पुलिस बल सदा संसाधनों व कर्मचारियों की कमी से जूझते हुए समाज में शांति स्थापित करने के अपने लक्ष्य को पाने का प्रयास कर रहा होता है। एक बार शांति बहाल हो जाने पर कोई उनकी सुध नहीं लेता। जब अपराध की दर अधिक होती है तो दोष उन्हीं पर मढ़ा जाता है। पुलिस की उपस्थिति से सभी अनजान होते हैं किंतु उनकी अनुपस्थिति सभी को खलती है। इन कारणों से कई बार पुलिस के कार्य को एक ऐसा धन्यवादविहीन कार्य कहा जाता है जहां कृतज्ञता की आशा करना व्यर्थ है।

इन सब के बावजूद इस समाज को एक अच्छे भविष्य की आशा देने का कार्य भी अच्छा पुलिस नेतृत्व ही करता है। इस पूरी गड़बड़ में से एक ऐसे नेता का उदय होता है जो ऊपर से लेकर नीचे तक प्रत्येक व्यक्ति का प्रेरणास्रोत होता है। जो उन्हें एक पिता की तरह अनुशासन में रखता है और एक माता की तरह उनका ध्यान भी रखता है।

यह पुस्तक उन पुलिस अधिकारियों के बारे में है जिन्होंने समय-समय पर लाखों लोगों के मन में आशा जगाई है और उस वर्दी के प्रति सम्मान जगाया है जो वे पहनते हैं। वे प्रसन्नतापूर्वक अपने बीते करियर पर नजर डालते हैं और कहते हैं, “पुलिस में नौकरी करने का हमारा निर्णय सही था।” उन्हें यह प्रसन्नता ऐसे अधिकारियों के प्रयत्नों से ही मिली है। ये अधिकारी पुलिसकर्मियों में कुछ हासिल करने की भावना जगाते हैं और उन्हें यह अनुभव करवाते हैं कि उन्होंने समाज में योगदान दिया है और राष्ट्र-निर्माण में सहायता की है।

इस पुस्तक में डी. शिवनंदन की केस स्टडी प्रस्तुत की गई है। किंतु यह पुस्तक उस पुलिस बल के बारे में है जो अपने नेता के साथ मजबूती से खड़ा रहा। यह पुस्तक उनसे पहले आने वाले उन कई नेताओं के बारे में है जिन्होंने विभिन्न तरीकों से नेतृत्व का प्रदर्शन किया। यह पुस्तक भविष्य में आने वाले पुलिस अधिकारियों के लिये एक संदर्भ के रूप में लिखी गयी है। यह उन युवकों व युवतियों के लिये है जो आत्मविश्वास से कह सकें, “मैं भी शिवनंदन की तरह बन कर बहाव का रुख बदल सकता हूँ।” जैसा कि कहा जाता है, नेतृत्व, ‘कारणों के बावजूद जीतना’ है न कि ‘कारणों से जीतना’।

यह पुस्तक आपके और मेरे जैसे आम आदमी के लिये है। अगली बार जब आप एक यातायात पुलिसकर्मी को भरी दोपहर में अपना कर्तव्य निभाते देखें तो चिढ़ कर या क्रोधित होकर उसे भ्रष्ट व अकुशल होने का तमगा न दें, अपितु उससे हमदर्दी रखें व यह कहकर कृतज्ञता प्रकट करें, ‘आप जो कार्य कर रहे हैं उसके लिये धन्यवाद सर, मैं जानता हूँ कि घर पर मेरे बच्चे और पत्नी सकुशल हैं.....’

चाणक्य कौन था?

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में, भारत में जन्में चाणक्य को विष्णुगुप्त व कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है। पिछली कई शताब्दियों से विद्वान उनका वर्णन एक ऐसे अत्यंत बुद्धिमान गुरु के रूप में करते आये हैं, जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों व विषयों में महारत हासिल थी, जैसे की - प्रबंधन, अर्थशास्त्र, राजनीति, कानून, नेतृत्व, राजकाज, युद्धनीति, सेना की सामरिक नीतियाँ, सामरिक योजनाएँ, वित्त, लेखा व अन्य कई।

उन्हें नंद वंश के पतन व अपने योग्य शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध के सिंहासन पर एक महाराजा के रूप में स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। इसी कारण उन्हें 'राजा निर्मित करने वाला' या 'किंग मेकर' भी कहा जाता है। पूरे संसार को जीतने का सपना देखने वाले सिकंदर महान की भारत में हुई पराजय की योजना का श्रेय भी उन्हें जाता है। एक राजनीतिक विचारक के रूप में, मानव इतिहास में पहली बार चाणक्य के द्वारा 'राष्ट्र' की अवधारणा की परिकल्पना की गई। उनके समय में भारत के विभिन्न भागों पर भिन्न-भिन्न राजवंशों का राज्य था। वे इन सभी छोटे-छोटे राज्यों को एक साथ एक केंद्रीय सरकार के अंतर्गत लेकर आये और आर्यव्रत नामक एक राष्ट्र का निर्माण किया, जिसे बाद में भारत के नाम से जाना गया।

उनके पूरे जीवन का कार्य दो पुस्तकों-अर्थशास्त्र व चाणक्य नीति में समाहित है। अर्थशास्त्र में छः हजार सूत्र हैं, जिन्हें पन्द्रह पुस्तकों, एक सौ पचास अध्यायों व एक सौ अस्सी विषयों में स्वयं चाणक्य द्वारा श्रेणीबद्ध किया गया है। नेतृत्व के दर्शन से संबंधित कई अवधारणाएँ उन्होंने अर्थशास्त्र में दीं, जैसे कि आन्वीक्षिकी (विचार करने का विज्ञान), राजकृषि (दार्शनिक राजा) इन्द्रियजय (जिसे स्वयं पर नियंत्रण हो) विजिगिषु (विजेता)। ये सभी अवधारणाएँ भारत द्वारा पूरे विश्व को दी गयी भेंट हैं।

शताब्दियों से संसार भर में विद्वान व बुद्धिजीवी, नेतृत्व व राजकाज जैसे विषयों पर मार्गदर्शन के लिये अर्थशास्त्र का प्रयोग करते रहे हैं। एक लम्बे समय से पूरे विश्व के राजा अर्थशास्त्र से संदर्भ लेकर ऐसे राष्ट्रों का निर्माण करने का प्रयत्न करते रहें हैं जिनकी अर्थव्यवस्था मूल्यों पर आधारित हो तथा स्थिर व जमी हुई हो।

अर्थशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है "धन/अर्थ का ग्रंथ", परंतु इस ग्रंथ में दुनिया के प्रत्येक विषय से संबंधित ज्ञान उपलब्ध है। यद्यपि, इस ग्रंथ में कोष (धन) का ज्ञान वर्णित है किंतु यह ग्रंथ स्वयं ज्ञान का कोष है।

अध्याय 1



स्वामी

नेता

स्वामी राजा
अमात्यमंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
दंड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

“कौटिल्य का अर्थशास्त्र”, नेतृत्व पर लिखी गयी पुस्तक है। इस मार्गदर्शिका व संदर्भग्रंथ का प्रयोग नेता राष्ट्रीय चुनौतियों से निबटने के लिये करते रहे हैं। कई शताब्दियों तक भारतीय राजाओं के लिये अर्थशास्त्र का अध्ययन अनिवार्य माना जाता था।

अर्थशास्त्र पंद्रह पुस्तकों में विभाजित हैं। इसकी छठी पुस्तक के पहले अध्याय के पहले सूत्र में चाणक्य ने राज्य के सात स्तंभों को परिभाषित किया है। वे कहते हैं, पहला स्तंभ राजा अथवा नेता स्वयं है। यहाँ एक विशेष बिंदु पर ध्यान देना आवश्यक है। यद्यपि अर्थशास्त्र में नेता को पुरुष मान कर संबोधित किया गया है, (इस पुस्तक में भी इसी प्रथा का पालन किया गया है) किन्तु नेतृत्व के गुण किसी लिंग विशेष तक सीमित नहीं हैं। आधुनिक युग में स्त्रियाँ भी नेता हैं और किन्नरों व परिवर्तित-लिंग (ट्रांसजेंडर) समुदायों के सदस्य भी नेतृत्व की भूमिका में रहे हैं। कोई भी व्यक्ति नेता बन सकता है; यह महत्वपूर्ण नहीं कि उसका लिंग, जन्मस्थान अथवा पृष्ठभूमि क्या है। अतः इस पुस्तक को पढ़ते हुए सोचें “मैं भी नेता बन सकता हूँ।”

भाग अ



पहला मर्म स्वामी: एक नेता

‘नेता’ कौन होता है? और चाणक्य नेता को इतना महत्त्व क्यों देते हैं? हममें से अधिकांश के लिये किसी ओहदे अथवा पद विशेष पर बैठा हुआ व्यक्ति नेता है- किसी कम्पनी का चेयरमैन या मुख्य कार्यकारी अधिकारी, खिलाड़ियों के किसी दल का कप्तान, किसी शैक्षणिक संस्थान का डीन या फिर फौज का जनरल। ये सभी निशंक रूप से नेता हैं। किन्तु एक ‘महान नेता’ में कुछ अन्य गुण भी होने चाहिए एक नेता जो कि कार्य कौशल में दक्ष है, परिणामोन्मुखी है तथा प्रेरक है।

व्यक्ति को नेता का पद विरासत, शक्ति अथवा प्रभावक्षेत्र के चलते मिल सकता है। किन्तु यदि आप सुयोग्य नहीं हैं, तो पद आपको टिकने नहीं देगा।

- स्वामी चिन्मयानंद

वे सहज गुण एवं विशेषताएँ कौन सी हैं? इस अध्याय में हम एक अच्छे नेता के इन्हीं गुणों की चर्चा करेंगे।

इससे पहले एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है:

► आप किसे चुनेंगे- एक अच्छे नेता को या एक बुरे नेता को?

इसका उत्तर सुस्पष्ट ही है। प्रत्येक व्यक्ति सबसे अच्छे नेता के साथ ही काम करना चाहता है। किन्तु, यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक संगठन में अच्छे नेता हों। इसीलिए लोग उन विलक्षण रत्नों को ढूँढते हैं जिनके नेतृत्व में टीम अपने लक्ष्यों को ईमानदारी व कुशलता से प्राप्त कर सके, बिना किसी जोड़-तोड़, अनैतिक या अवैध तरीके का प्रयोग किये।

आइये अब हम परिस्थिति बदलें व अगला प्रश्न करें:

► आप क्या चुनेंगे : एक बुरा नेता या नेतृत्व विहीनता?

क्या यह एक कठिन प्रश्न है? अधिकांश संगठनों की वास्तविकता यही है। प्रत्येक व्यक्ति एक आदर्श नेता चाहता है, किन्तु नेता संपूर्णता से कोसों दूर होते हैं। वास्तव में हममें से अधिकतर यही सोचते हैं कि मौजूदा नेता के इस्तीफा दे देने या उनकी जगह किसी और को ले आने से संगठन तेजी से सफलता की ओर बढ़ चलेगा।

कल्पना कीजिए कि ऐसा ही कोई प्रमुख या नेता अचानक किसी दुर्घटना का शिकार हो जाता है और अगले दिन से ही संगठन के शीर्ष पर कोई नहीं है। कम्पनी का बोर्ड विकल्प की खोज आरम्भ कर देता है। किन्तु अगले एक वर्ष तक उन्हें आदर्श नेता नहीं मिल पाता। परिणामस्वरूप संगठन की गतिविधियाँ धीमी पड़ जाती हैं, क्योंकि सामरिक महत्व के नीतिगत फैसले लेने वाला कोई नहीं है और कर्मचारी किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं। यह एक ऐसी कहानी हो जाती है जहाँ पहले कोई भी काम कर लेता था फिर कोई तो कर ही लेता था और अंत में

कोई भी नहीं करता था। क्रमशः कर्मचारी सोचने लगते हैं कि उनका पुराना नेता इतना भी बुरा नहीं था चाहे धीमे ही सही काम चल तो रहा था। उस समय संगठन दिशाहीन नहीं था और कर्मचारी भी अनाथ अनुभव नहीं करते थे।

यह हमें एक अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ले जाता है:

► यदि एक बुरा नेता अच्छा नेता बन जाये तो...?

यह सम्भव है। जी हाँ, हमारा अगला प्रश्न होगा : कैसे? एक बुरे नेता को अच्छे नेता में बदलने के कई तरीके हैं साथ ही कई कर्मचारियों को नेतृत्व के लिये प्रशिक्षित किया जा सकता है। इस तरह यदि शीर्ष नेता की अचानक मृत्यु हो जाती है अथवा वह सेवानिवृत्त हो जाते हैं तो उनका स्थान लेने के लिये कई विकल्प उपलब्ध होते हैं। इसके लिये आवश्यक है कि ऊपर से नीचे तक प्रत्येक कर्मचारी को प्रशिक्षित कर उसमें नेतृत्व के गुणों का विकास किया जाये।

सेना में कहा जाता है, कि “एक सैनिक जीवित रहते मैदान नहीं छोड़ता।” इसका अर्थ है युद्ध में किसी टुकड़ी के नेता की मृत्यु होने पर उनसे अगला व्यक्ति नेतृत्व सम्भाल लेता है और युद्ध जारी रखता है। यदि दूसरा व्यक्ति भी मारा जाता है तो पदानुक्रम में तीसरा व्यक्ति नेतृत्व सम्भाल लेता है। प्रत्येक परिस्थिति के लिये नेता तैयार करने की यह व्यवस्था सेना में अंतर्निहित है।

आप आश्चर्यचकित हो सोच सकते हैं कि क्या कोई भी व्यक्ति नेता बन सकता है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि युद्ध के मैदान में लड़ने वाला प्रत्येक योद्धा जनरल नहीं होता, लेकिन पदानुक्रम में नीचे का योद्धा भी एक नेता की तरह सोचने के लिए प्रशिक्षित होता है। नेतृत्व, पद अथवा ओहदे से नहीं, अपितु व्यक्ति की कुशलता एवं अभिवृत्ति से जुड़ा गुण है।

नवम्बर 26, 2008 को मुम्बई पर हुए आतंकी हमले से पुलिस सब-इंस्पेक्टर तुकाराम ओम्बले ने इसी तरह के नेतृत्व का परिचय दिया। वे सीने पर गोलियां झेलते हुए आगे बढ़े और अजमल कसाब को जीवित पकड़ लिया। ओम्बले ने अपने पद के विपरीत नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

इस आतंकी हमले में मुंबई पुलिस ने अपने 16 जवानों को खोया, जिनमें से दो भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी थे - हेमंत करकरे, आतंक विरोधी दस्ते के ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर, व अशोक कामटे अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर, पूर्वी संभाग। आईपीएस या भारतीय पुलिस सेवा भारतीय पुलिस के नेतृत्व की सर्वोच्च श्रेणी मानी जाती है। करकरे व कामटे दोनों ही सही मायने में नेता थे, जिनके पास सर्वोच्च प्रशिक्षण व पद था। अन्य 14 पुलिस इंस्पेक्टर, सब-इंस्पेक्टर एवं कांस्टेबल के पदों पर थे।

फिर भी इन सभी ने स्वयं को अग्रणी नेता सिद्ध किया। आज राष्ट्र इन सभी 16 नेताओं के बलिदान को नमन करता है, चाहे उनका पद कोई भी रहा हो। यह स्थितिजन्य नेतृत्व का कार्यकारी रूप है। इन अधिकारियों द्वारा संकट के समय आगे बढ़ कर नेतृत्व सम्भालने के पीछे रहा उनका प्रशिक्षण एवं उनकी अभिवृत्ति।

ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि कई अन्य ऐसे व्यक्ति भी रहे जो इस ऑपरेशन से जीवित बच निकले ये वे लोग भी वही हैं जिन्होंने आगे बढ़ कर स्थिति को सम्भालने का बीड़ा उठाया और अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया।

अतः हम कह सकते हैं कि चाणक्य के अनुसार एक नेता या स्वामी ऐसा व्यक्ति है जो पहल करता है और अपने उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बलिदान देने से पीछे नहीं हटता।

डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन की एक बहुप्रचलित घटना है जो बताती है कि उनके गुरु समान नेता ने किस प्रकार संकट की घड़ी को सम्भाला। उस समय प्रो. सतीश धवन इसरो (इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन) के अध्यक्ष थे और डॉ. अब्दुल कलाम को भारत के पहले सेटेलाइट लॉन्च व्हीकल, एसएलवी-3 को विकसित करने की जिम्मेदारी दी गयी थी ताकि उपग्रह (सेटेलाइट) ‘रोहिणी’ को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया जा सके। सन् 1973 में यह उस समय का सबसे बड़ा कार्यक्रम था, जिसमें उच्च तकनीक का प्रयोग किया जाना था। अंतरिक्ष वैज्ञानिकों का पूरा दल इस कार्य को सफल बनाने में जुटा था। इन सभी पुरुषों व महिलाओं के कठोर परिश्रम के

फलस्वरूप 10 अगस्त 1979 को एसएलवी-3 को पहली प्रक्षेपण उड़ान पर छोड़ा गया।

एसएलवी-3 को सुबह तड़के छोड़ा गया और इस उड़ान का पहला चरण सफल रहा। यद्यपि प्रथम चरण पर सभी राकेट व तन्त्रों ने अपना कार्य किया, किन्तु, फिर भी यह अभियान का प्रयोजन सिद्ध नहीं हो पाया, क्योंकि उड़ान के दूसरे चरण में उसके नियंत्रण तंत्र में खराबी आ गई। उपग्रह अंतरिक्ष में प्रस्थापित न हो पाया और बंगाल की खाड़ी में गिर गया। यह अभियान असफल रहा।

इस घटना के बाद श्रीहरिकोट में हुए संवाददाता सम्मेलन के दौरान, जिसमें डॉ. कलाम एवं प्रो. सतीश धवन दोनों ही उपस्थित थे, प्रो. धवन ने घोषणा की कि इस असफलता के लिये वे उत्तरदायी हैं। हालांकि, इस अभियान की पूरी जिम्मेदारी डॉ. कलाम की थी।

बाद में 18 जुलाई 1980 को एसएलवी-3 को फिर छोड़ा गया और इस बार उसने उपग्रह रोहिणी को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया। इस बार के संवाददाता सम्मेलन में प्रो. धवन ने डॉ. कलाम को आगे रखा और इस अभियान की सफलता की कहानी संवाददाताओं के साथ बांटने को कहा।

इस प्रकार नेता सफलता का श्रेय उन्हें देते हैं जिन्होंने इसके लिये कार्य किया हो किन्तु कार्य की असफलता वे स्वयं पर ले लेते हैं। इस घटना का डॉ. कलाम के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और आगे चलकर वे भारत के सर्वाधिक सम्मानित नेताओं में से एक बने।

अर्थशास्त्र की पहली पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय में पहले पांच श्लोकों में चाणक्य कहते हैं :

“यदि राजा ऊर्जावान है तो प्रजा भी उतनी ही ऊर्जावान होगी। यदि वह असावधान, सुस्त है और अपने कार्यसम्पादन में ढीला है तो उसकी प्रजा भी सुस्त होगी और उसके खजाने को खाली कर देगी। इसके अतिरिक्त एक असावधान राजा सरलता से शत्रुओं के हाथ पड़ सकता है। अतः स्वयं राजा को सदा ऊर्जावान होना चाहिए।”

नेता अपने व्यवहार से एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिसका कि अनुकरण होता है। भगवत् गीता में भी श्रीकृष्ण ने कहा है “यथा राजा तथा प्रजा।”

अतः ऊर्जावान होना बहुत महत्वपूर्ण है। एक नेता में शारीरिक ऊर्जा व मानसिक सावधानी व चेतनता होनी चाहिए।

यदि नेता सुस्त होगा तो उसके अनुयायी भी वैसे ही होंगे। सर्वाधिक परिश्रमी व परिणामदायक व्यक्ति भी एक खराब नेतृत्व में आकर सुस्त हो जाते हैं। दूसरी ओर एक ऊर्जावान व चुस्त राजा ढीले व्यक्तियों को भी प्रेरित कर उन्हें उनकी अपनी आशा से अधिक सफल बना देता है।

चाणक्य यह भी कहते हैं कि यदि नेता सावधान व चौकन्ना नहीं है तो लोग उसके धन का उपभोग करने लगते हैं। अतः सावधानी का सीधा प्रभाव संस्था की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। भ्रष्ट लोगों को सदा नेता द्वारा पकड़े जाने का भय रहता है। अतः नेता की असावधानी भ्रष्ट लोगों को संस्था के कामकाज में शामिल होने के आमंत्रण के समान होती है।

नेता का ऊर्जावान होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है नेता किसी अन्य द्वारा प्रेरित किये जाने की अपेक्षा नहीं कर सकता। उसमें स्वप्रेरणा का होना अनिवार्य है। स्वप्रेरणा व प्रेरणा का अंतर है - प्रेरणा सदा किसी ‘हेतु’ होती है जबकि स्वप्रेरणा “यह सब होते हुए भी” विद्यमान रहती है। नेता को एक ऐसा उच्चतम लक्ष्य या आदर्श ही प्रेरित करता है जिसके लिये वह सब कुछ त्याग दे।

पुलिस बल के लिये ‘राष्ट्र’ ऐसी ही प्रेरणा है। यह इतना ऊँचा आदर्श है जिसके लिये वे सर्वोच्च बलिदान देने के लिये भी तैयार रहते हैं। हाँ, यहां पर भी नेता का अपने अनुयायियों के लिये आदर्श होना आवश्यक है। जैसा कि कहा जाता है, “जब समय कठोर होने लगे तब केवल कठोर ही टिक पाते हैं”। यही आगे बढ़ना है। यही नेतृत्व है। यही सच्ची प्रेरणा है।

भाग ब



चाणक्य के मतानुसार

नेतृत्व के गुण

अर्थशास्त्र की छठी पुस्तक में नेता के विभिन्न गुणों का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में हम एक स्वामी के नेतृत्व के गुणों के मूल पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। ये गुण किसी को भी जन्मजात नहीं मिलते वरन्, निरंतर प्रयत्न व कठिन परिश्रम द्वारा ही इनको विकसित किया जा सकता है।

ये गुण नेतृत्व के सर्वमान्य सिद्धांत माने जाते हैं। अतः यदि आप एक नेता बनना चाहते हैं तो स्वयं में इन गुणों का विकास करें। या अपने आदर्श नेता को इन गुणों का प्रयोग करते देखें। एक स्वामी व नेता के गुण हैं (पुस्तक 6, अध्याय-1, श्लोक-3, अर्थशास्त्रः)

- ▶ बुद्धिमान एवं ऊर्जावान
- ▶ अनुभवियों से मेल जोल
- ▶ सत्यवादी
- ▶ वचनबद्ध
- ▶ कृतज्ञता सीखने को तत्पर
- ▶ मिलनसार

आइये अब इनमें से प्रत्येक पर विस्तृत चर्चा करें।

- ▶ बुद्धिमान एवं ऊर्जावान

बुद्धि एवं ऊर्जा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। बुद्धि को अधिकतर शैक्षणिक योग्यता अथवा ऊँचे आयक्यू के साथ जोड़ा जाता है। हालांकि वैज्ञानिक खोजों ने सिद्ध किया है कि सभी व्यक्ति समान बुद्धि के साथ पैदा होते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है व्यक्ति की शिक्षा एवं वातावरण उसकी बुद्धि को धार देते हैं।

बुद्धि का अधिक उपयोग व्यक्ति को अधिक बुद्धिमान बनाता है। उदाहरण के लिये जो विद्यार्थी अधिक मेहनत करते हैं, वे परीक्षा में अधिक नम्बर पाते हैं। फिर भी शिक्षा एक जीवन-पर्यन्त चलने वाली सतत प्रक्रिया बनी रहनी चाहिये। अच्छी पुस्तकों, समाचार पत्रों एवं रिसर्च के जरनलों का अध्ययन आपको कई नयी चीजों से अवगत कराता है और विश्व की जानकारी बढ़ाता है। किन्तु ध्यान दे कि मात्र जानकारी का जमाव आपको बुद्धिमान नहीं बनाता। एकत्रित जानकारी का विश्लेषण, महत्वपूर्ण फैसला लेना और उन फैसलों को क्रियान्वित करने की योग्यता का विकास करना आवश्यक है।

एक नेता का एकत्रित जानकारी, खोज, चर्चा एवं विश्लेषण द्वारा मूल समस्या का पता लगा लेना व उसके हल तक पहुंच जाना इस प्रक्रिया का आरंभिक बिन्दु है।

अगला चरण इन खोजों को प्रयोग में लाने का है। यही वास्तविक चुनौती है, जिसमें नेता केन्द्रिय भूमिका निभाते

हैं।

दूसरा पक्ष है क्रियाशील ऊर्जास्रोत होने का। इसके लिए आगे बढ़कर हिम्मत व आत्मविश्वास से अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करना आवश्यक है। स्वामी चिन्मयानंद के अनुसार, “अपने कार्य की रूपरेखा बनायें व रूपरेखा को क्रियान्वित करें।” हर नेता को अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय देने के लिये यह करना होता है।

किसी भी योजना को क्रियान्वित करना सरल नहीं है क्योंकि उसके क्रियान्वयन में कई कठिनाइयाँ आती हैं। कई लोग उन कठिनाइयों के भय से क्रियान्वयन का आरम्भ ही नहीं कर पाते हैं। कुछ अन्य आरम्भ करते हैं किन्तु मुश्किलों से सामना होने पर रुक जाते हैं। महान नेता कार्य आरम्भ करते हैं और यह सुनिश्चित कर लेते हैं कि कठिनाइयों के होते हुए भी वे सफल रहें नेता जानते हैं कि लक्ष्य क्या है और वे उसे प्राप्त कर लेते हैं।

► अनुभवियों से मेल-जोल

संस्कृत में इस गुण के लिए शब्द है “वृद्धसंयोग” अर्थात् है बड़ों की संगति।

इस शब्द का अर्थ है नेतृत्व प्रबंधन व वित्त व्यवस्था के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों के वास्तविक अनुभवों से सीखना। ऐसे अनुभवियों से मिलने व सीखने की यह प्रक्रिया सदा चलती रहनी चाहिए।

दुनिया में तीन तरह के लोग हैं : पहले वे जो अपनी गलतियों से सीख लेते हैं, दूसरे वे जो अपनी गलतियों से कभी भी कुछ नहीं सीखते और तीसरे जो कि सर्वश्रेष्ठ है दूसरों की गलतियों से सीखते हैं। अनुभवियों से मेल-जोल का अर्थ है अपने से अधिक परिपक्व व अनुभवी व्यक्तियों से सीखना।

निरंतर सीखते रहना, महान नेताओं का एक बड़ा गुण है।

► सत्यवादी

एक नेता का सच बोलना बहुत महत्वपूर्ण है किन्तु इसके पहले एक और चरण है- सत्यको समझना। यही सफलता की कुंजी है। प्रत्येक नेता के लिये निर्णय लेने से पहले सच जानना आवश्यक है। उदाहरण के लिये यदि किसी संगठन में कोई विवाद है तो नेता जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं ले सकता। उसे लोगों से बात करके जानकारी व सबूत इकट्ठा करने होंगे। इसके बाद उसे इस जानकारी की सत्यता कई बार जांचनी होगी। सच का पता चल जाने पर अगला कदम होता है, उस सच को स्वीकार करने का और फिर उस पर आधारित निर्णय को क्रियान्वित करने का। और फिर जब नेता उठाये गये कदम एवं निर्णय के बारे में बोलता है तब वही समय होता है उसके शब्दों में सच्चाई होने का- सत्यवादिता का - एक महान नेता वही है जो अपनी राय बिना किसी लाग-लपेट के ईमानदारी से रखे।

एक नेता को वास्तविकता का सामना करना होता है, जी हाँ, कई बार सच्चाई कड़वी भी होती है। और सच्चाई का पक्ष लेना ही वास्तव में नेतृत्व है। सच्चाई का सामना करने में आने वाली एक अन्य बड़ी बाधा है- भावनाएँ। एक नेता को यह याद रखना आवश्यक है कि वह भावनाओं को समझे किन्तु भावुकता में न बहे।

प्रकृति ने मनुष्य को सिर, हृदय के ऊपर दिया है। अतः एक नेता को निर्णय लेते समय अपनी बुद्धि को हृदय से अधिक महत्व देना चाहिए न कि इसके विपरीत।

नेतृत्व के सम्बंध में एक अंग्रेजी के शब्द ‘गट फीलिंग’ का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है सहज बोध जो कि बुद्धि एवं हृदय के मिश्रण से जनित है। उच्चतम स्तर के नेतृत्व पर नेता अपने सहज बोध का ही प्रयोग कर रहा होता है। कई लोग सहज बोध को छठी इन्द्रि भी कहते हैं। सहजबोध अंतर्दृष्टि से पैदा होता है और अंतर्दृष्टि परिपक्वता एवं सत्य की समझ से प्राप्त होती है।

सभी महान नेताओं में सत्य को समझने, उसका सामना करने और सत्य बोलने का गुण होता है। अधिकतर लोगों का विश्वास है कि सत्यवादिता एवं सत्यनिष्ठा केवल किताबी बातें हैं जो कि आधुनिक समय में असंगत एवं अव्यवहारिक है। जबकि वास्तविकता यही है कि सत्यवादी एवं सत्यनिष्ठा वाले लोग ही समय के साथ वास्तविक नेता सिद्ध होते हैं। अंततः सत्य की ही जीत होती है। मुंडक उपनिषद् से लिये गये हमारे राष्ट्रीय चिन्ह में भी यही

अंकित है-सत्यमेव जयते। नेता सत्य की प्रतिमूर्ति ही है।

► वचनबद्धता

भारतीय संस्कृति में भगवान राम को आदर्श राजा माना जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी राम-राज्य की अवधारणा को आगे बढ़ाया। सुशासन का आदर्श राज्य।

तुलसी रचित रामचरित मानस का एक प्रसिद्ध दोहा है-रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाये पर वचन न जाई। यह दोहा रघुकुल की नेतृत्व परंपरा की ओर इशारा करता है। इस कुल की परम्परा है कि चाहे आपको अपने प्राणों से हाथ धोना पड़े किन्तु आप अपना वचन निभायेंगे।

‘बड़े वादे’ करना व उनकी आंशिक पूर्ति करना नेतृत्व से जुड़ा गुण नहीं है। नेतृत्व तो वास्तव में आपने जो प्रतिज्ञा की उसे पूरा करना ही है।

वाणी के अनुरूप आचरण रखें- यही मूल मंत्र है। यह एक अत्यंत सरल परन्तु गहरा फॉर्मूला है। ऐसा भी समय आता है जब टीम ही यह विश्वास नहीं कर पाती कि उनके नेता द्वारा दिया गया वचन पूरा किया जा सकता है। इसी स्थिति में नेतृत्व उभरता है। जैसा कि नारायण मूर्ति ‘चाणक्य स्पीक्स’ फिल्म में कहते हैं-“नेतृत्व लोगों को पानी की सतह पर चलाना है... यह उन्हें बलिदान देने के लिए तैयार करता है। कभी-कभी आपको अकेले भी चलना होता है। नोबल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी पुस्तक गीतांजलि में कहा है “जब सारा संसार रुक जाता है तब नेता चलना आरम्भ करता है... अकेले ही सही, चलते रहो।”

याद रहे आपको दूसरों को दिया वचन पूरा नहीं करना है, अपितु, वह प्रतिज्ञा पूरी करनी है जो आपने इस यात्रा के आरम्भ में की थी।

पुलिस बल में हर नये रंगरूट को यह संवैधानिक शपथ लेनी होती है कि वर्दी पहन कर वह इस राष्ट्र के कानून को लागू करेगा। जी हाँ, तो यहाँ मुद्दा स्वयं से किये गये वायदे को न तोड़ने का है। यह है नेतृत्व की वचनबद्धता।

► कृतज्ञता

कृतज्ञता का अर्थ है विनम्रता। वास्तविक शक्ति विनम्रता में ही होती है। यह आम धारणा है कि एक विनम्र व्यक्ति कमजोर होता है। वास्तव में इसका परोक्ष ही सत्य है- शक्तिशाली लोग ही विनम्र होते हैं।

आइये हम यहां पर विनम्रता को कार्यान्वित होते देखें। पुलिसबल में अपने लंबे कार्यकाल में श्री शिवनंदन ने कई वरिष्ठ अधिकारियों, सहकर्मियों एवं मातहतों के साथ कार्य किया है, इसके अतिरिक्त विभिन्न जगहों पर काम के दौरान वे लाखों लोगों के सम्पर्क में भी आये हैं। उनके लिये यह संभव नहीं है कि वे उन सभी के नाम याद रख सकें जो उनसे मिले थे, किन्तु उन्हें कई लोग जानते हैं क्योंकि उन्होंने कई उच्च पदों पर कार्य किया है।

कई बार ऐसा होता है कि उनका कोई पुराना सहकर्मी उन्हें मिल जाता है और कहता है, “नमस्कार शिवनंदन सर, क्या आपने मुझे पहचाना? मैं रामेश्वर गोखले, मैं आपके साथ ठाणे में था।” न पहचान पाने की अचकचाहट पूर्ण स्थिति में वे उससे यह नहीं कहते कि “कौन रामेश्वर?” या “आपने क्या नाम बताया?” अपितु वे उससे अत्यंत आदरपूर्वक बात करते हैं और पूछते हैं, “आप कैसे हैं?” या “जी हां जरूर-जरूर सर, आप कैसे हैं?” या “मैडम, आपकी दुआ से मैं ठीक हूं।” हालांकि इनमें से अधिकांश लोगों ने उनके मातहत काम किया होता है। लोग उन्हें उनकी विनम्रता के लिये याद रखते हैं।

जब आप नेतृत्व पर हों तो आप भी इस व्यवहार का प्रयोग करके देख सकते हैं। “मैं सब जानता हूँ” वाली मनोवृत्ति एक नेता के लिये घातक सिद्ध हो सकती है।

अपनी टीम के सदस्यों को श्रेय देना आवश्यक है। यदि वे अच्छा कार्य करते हैं तो उनसे प्रशंसा व महत्ता छीनना उचित नहीं होगा। इसके विपरीत आप एक कदम पीछे हट जायें और जगजाहिर होने दें कि असली हीरो कौन है। किसी की प्रशंसा करने से आपका भी सम्मान बढ़ता है।

लेकिन यह कैसे जानें कि आप वाकई विनम्र हैं। एक बार एक धनी व्यक्ति ने अपने गुरु से कहा-“मैं विनम्र बनना

चाहता हूँ।” गुरु ने उससे किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता करने को कहा जो उससे कमजोर हो। उस व्यक्ति ने अपने गुरु की बात मानी और पुनः उनके पास जाकर पूछा, “आज मैंने एक गरीब की धन से सहायता की। क्या अब मैं विनम्र हो गया हूँ?” गुरु ने उत्तर दिया, “नहीं” और उससे फिर किसी कमजोर की मदद करने को कहा। धनी व्यक्ति कई बार अलग-अलग लोगों के पास उनकी मदद करने गया। और फिर अपने गुरु के पास लौटा। उससे पुनः गुरु से वही प्रश्न किया कि “मैं कब विनम्र कहलाऊंगा?” उस ज्ञानी वृद्ध ने कहा “जब तुम्हें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा जो तुम्हें स्वयं से किसी भी रूप में कमजोर लगे, तुम तभी विनम्र माने जाओगे।”

प्रत्येक व्यक्ति शक्ति, पद एवं धन में समान नहीं होता। किन्तु जिस दिन आप जान लेते हैं कि प्रभु की दृष्टि में सभी बराबर हैं... एक नेता का जन्म होता है।

► सीखने को तत्पर

सीखने की तत्परता के दो पक्ष हैं : स्वयं सीखना व अन्यो को सीखाना। ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रशिक्षण अथवा सीखना हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। एक नवजात बालक पूर्णरूप से अपने माता-पिता एवं वातावरण पर निर्भर होता है। धीमे-धीमे वे उसे चलना, बात करना, शौच के नियम समझना व अपने वातावरण से तालमेल बैठाना सीखाते हैं।

विद्यालय में हम पढ़ना, लिखना, सामाजिक संबंध बनाना एवं अन्य कई विधाएँ सीखते हैं। थोड़ा बड़े होने पर हम व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में दाखिला लेते हैं ताकि हम कुछ ऐसे हुनर सीख सकें जो हमारी योग्यताओं का विकास कर हमें काम दिला सकें। जीवन के इस पायदान पर हमारी सीखने की क्षमता अद्भुत होती है। किन्तु जैसे ही हम अपनी नौकरी या व्यवसाय में जमने लगते हैं हममें आत्मसंतुष्टि का भाव आ जाता है।

यह बहुत भयानक स्थिति है। इसी बिन्दु से व्यक्ति को सतत सीखने की मनोवृत्ति के विकास का प्रयास करना होता है। निरंतर सीखते रहें व अपने क्षेत्र अथवा विषय से संबंधित ज्ञान को बढ़ाते रहें। ऐसा माना जाता है कि सफलता का सूत्र मात्र सीखना ही नहीं अपितु सीखे हुए को भूलना, पुनः सीखना व फिर निरंतर सीखते रहना ही है।

नेता यह बात जानते हैं। वे पुस्तकों से भी सीखते हैं और लोगों से भी। साथ ही रिपोर्ट, समाचारपत्रों तथा सरकारी एजेंसियों द्वारा उपलब्ध कराये गये आंकड़ों से भी। सीखते रहना उनका नशा हो जाता है। वे कभी भी संतुष्ट नहीं होते और स्वयं को नयी सम्भावनाओं के उन्मुख बनाते रहते हैं।

सीखना जीवन के साथ ही समाप्त होना चाहिए। भगवान बुद्ध मृत्यु शैया पर थे, लोग निरंतर उनसे मिलने आ रहे थे और वे भी सभी से मिल रहे थे। उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा, “आप इस स्थिति में क्यों सबसे मिल रहे हैं?” उन्होंने उत्तर दिया, “ताकि मैं जाने से पहले इनमें से प्रत्येक से कुछ न कुछ सीख सकूँ।”

व्यक्ति को नियमित रूप से व निरंतर, कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए। यही वृत्ति व्यक्ति को सीखने व प्रशिक्षण पाने को इच्छुक बनाती है। किन्तु यह भी आवश्यक है कि एक प्रशिक्षित व्यक्ति अन्य लोगों को शिक्षित करें। कभी भी अपना ज्ञान अपने तक ही सीमित न रखें। इसे दूसरों के साथ बांटें। एक वास्तविक नेता को कभी भी अपना ज्ञान खो जाने अथवा अन्यो में बंट जाने का भय नहीं होता। वास्तव में दूसरों के साथ बांटने से ज्ञान बढ़ता है। एक दीप से दूसरा दीप जलाने पर पहले दिये की लौ कम नहीं होती, हाँ रोशनी जरूर बढ़ती है। यही जीवन की वास्तविक संपूर्णता है।

एक नेता अपने दल के लिये सदा सबसे अच्छे स्तर का प्रशिक्षण सुनिश्चित करता है। लोग चाहे आपके साथ लम्बे समय तक रहे या जल्द ही आपका साथ छोड़ दे किन्तु प्रशिक्षण में आपका निवेश हमेशा उच्चतम स्तर का होना चाहिए। महान नेता सदा ऊँचे दर्जे के प्रशिक्षण तंत्र व संस्थाएँ स्थापित करते हैं। वे स्वयं भी प्रशिक्षण में सम्मिलित होते हैं। वे प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि सबसे अच्छे लोगों को उनकी जानकारी व ज्ञान बांटने के लिए आमंत्रित करें। यही नेतृत्व का उत्कर्ष है।

► मिलनसार

जब भी लोगों को आवश्यकता हो, नेता उनके लिए उपलब्ध रहता है, ना कि सिर्फ तब जब उसे लोगों की जरूरत

हो।

नेता एक बार में कई भूमिकाएँ निभाता है। वह माता-पिता, मित्र, दार्शनिक व मार्गदर्शक होता है। एक नेता वह साधन है, जो संस्था की किसी भी समस्या को हल करने हेतु सदा ही तैयार व उपलब्ध होता है।

लोग नेता की ओर मात्रा देखते ही नहीं हैं। वे उसकी ओर आशा से देखते हैं। जी हाँ, एक ऐसा नेता मिलना जो अपने लोगों का ख्याल रख सके एक दैवीय आशीर्वाद से कम नहीं।

पुलिस बल के एक उच्च अधिकारी व नेता होने के कारण शिवनंदन वहां की सभी समस्याओं से भली-भांति परिचित थे। पुलिस बल में अपने मातहतों से सर्वोच्च स्तर के आज्ञापालन की अपेक्षा की जाती है। यदि उसका अधिकारी आज्ञा दे तो एक पुलिसकर्मी को अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार रहना चाहिए। किन्तु शिवनंदन यह भी जानते थे कि उन्हें अपने मातहतों का ध्यान भी रखना है। यह काम करने के लिए आवश्यक था कि वे उनके विचारों, भावनाओं व व्यवहार को समझें।

लोगों को अबाध्य प्रवेश देना महत्वपूर्ण है। आरम्भ में ही किसी भी समस्या को हल कर लेना सरल होता है। यदि समय रहते फैसले न लिये जाएं तो समस्याएं बेकाबू हो जाती हैं। यहीं पर अबाध्य प्रवेश की नीति लाभप्रद रहती है क्योंकि इसी के द्वारा हमें उचित निर्णय लेने के लिये सही जानकारियाँ व आंकड़े आरम्भ में ही उपलब्ध हो जाते हैं।

पुराने समय में भी राजा जनता दरबार लगाया करते थे, जहां वे आम जनता से मिलते थे। राजा शब्द आज के समय में अप्रासंगिक है, किन्तु हममें से प्रत्येक अपनी दुनिया का राजा है। आप चाहे किसी भी पद पर हो उच्चतम, माध्यमिक या निम्न, आप अपने कार्यक्षेत्र के राजा हैं और आप के नीचे कार्य करने वाले लोग आपसे मार्गदर्शन व उचित फसलों की अपेक्षा करते हैं।

अतः अपना स्वयं का जनता दरबार लगायें और जिस प्रकार लोहा चुम्बक की ओर खिंचा चला आता है, महत्वपूर्ण जानकारियों को भी स्वयं तक पहुँचने दें। एक समाधानकर्ता व निर्णय लेने वाले नेता बने।

आपके भीतर का नेता अब वास्तव में अन्यो की सहायता कर रहा है।

► नेतृत्व के गुणों को आचरण में लाना

ये सभी गुण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक नेता के विभिन्न आयामों को दर्शाते हैं। आप हैरान हो कर सोच सकते हैं आखिर शुरुआत कहाँ से करें? याद रखें एक वृत्त में प्रत्येक बिन्दु आरम्भ भी है और अंत भी।

आप आरम्भ किसी भी गुण से कर सकते हैं, और आश्चर्य करेंगे जब आप पायेंगे कि अन्य गुण अपने आप ही विकसित होने लगते हैं। उदाहरण के लिये यदि आप अधिक पढ़ना आरम्भ कर दें तो आपकी जानकारियाँ व बुद्धि अपने आप बढ़ने लगती है। साथ ही चूंकि आप अन्य संभावनाओं से परिचित होने लगते हैं तो आपका दृष्टिकोण बदलने लगता है और आपकी मनोवृत्ति भी अधिक विनयपूर्ण हो जाती है। आप चाहें तो कृतज्ञता से भी आरम्भ कर सकते हैं, इसके लिये आप अबाध्य प्रवेश; की नीति अपनायें और प्रत्येक आगंतुक से आदरपूर्वक मिलें।

सभी से एक सा व्यवहार करना ही नेतृत्व है। आप में से प्रत्येक इसका विकास कर सकता है, इसके लिए आपको सिर्फ अपने नौकर, ड्राइवर या अन्य मातहत को आदर देना है।

नेतृत्व का कोई सा भी गुण लें और उसे आचरण में लाने का प्रयास करें। जी हाँ, सबसे महत्वपूर्ण है प्रयास आरम्भ कर देना। नेतृत्व के गुणों व सिद्धान्तों की जानकारी मात्र ही काफी नहीं है। एक नेता होने के लिये नेता की तरह सोचना आवश्यक है, और नेता की तरह सोचने के लिये आपका आचरण भी नेता के अनुरूप होना चाहिए। आपका कार्य/आचरण एक नेता की तरह तभी हो पायेगा, जब आप संपूर्ण अंतर्मुख से इसका प्रयास करेंगे।

आइये, अपने भीतर के नेता को जगायें।

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन संगठित अपराध का सामना

“आप अपने युद्ध क्षेत्र का चुनाव नहीं कर सकते क्योंकि यह ईश्वर प्रदत्त है, किन्तु जहाँ कोई स्तर ही नहीं था, वहाँ आप एक स्तर की स्थापना अवश्य कर सकते हैं।”

नथालिया क्रेन

उन्नीस सौ नब्बे के दशक में मुंबई की स्थिति खराब ही नहीं बहुत खराब थी। चारों ओर भय का साम्राज्य था और अंडरवर्ल्ड के सरगना पूरे शहर पर राज्य कर रहे थे।

किसी भी सरकार का पहला कर्तव्य है अपनी प्रजा को सुरक्षा देना। सुरक्षा का अर्थ यह नहीं है कि हजारों गार्ड आपकी सुरक्षा के लिये खड़े हों। यह तो स्वयं को सुरक्षित अनुभव करना है। यदि यह अनुभूति मौजूद नहीं है और प्रत्येक व्यक्ति मात्र जीवित रहने को लेकर चिंतित हैं, तो इस स्थिति में जीवन नर्क के अतिरिक्त कुछ नहीं। उस समय मुंबई के लोगों में सुरक्षा की भावना नहीं बची थी।

सन् 1997 में अक्टूबर का माह था। जावेद फावड़ा नामक एक गैंगस्टर पुलिस मुठभेड़ में मारा गया। इस मौत को लेकर मुंबई पुलिस के खिलाफ एक जनहित याचिका दायर की गई, जिसमें आरोप था कि जावेद फावड़ा की अन्यायपूर्ण हत्या की गई। जज ए.एस. एगुआर को इस मामले में जांच सौंपी गई। उन्होंने न केवल इस मामले की जांच की बल्कि अपनी जांच के दौरान गैंगस्टर्स के विरुद्ध 95 अन्य मामले पाये, जिनमें पुलिस की भूमिका पर सवालिया निशान थे। इन मामलों में सदा पावले व विजय तांदेल की पुलिस कार्रवाई के दौरान हुई मौत शामिल थी।

परिणामस्वरूप मुंबई पुलिस का मनोबल बहुत कमजोर हो गया था। उसके बाद पुलिस संगठित अपराध के खिलाफ कड़ा कदम उठाने से बचती रही। वे सभी पुलिस कार्रवाई विशेषज्ञ जो उस समय देवता तुल्य हो गये थे, आज अपने बचाव में खड़े थे। उन पर झूठी पुलिस कार्रवाई में पावले, तांदेल व अन्य कई की हत्या का आरोप था। इससे मुंबई के संगठित अपराध को शह मिली और गोलाबारी व हिंसा बेरोक-टोक जारी रही।

अपराधियों ने शहर को अपहरित किया हुआ था। सन् 1998 में मात्र एक वर्ष के दौरान 93 घटनाओं में अंडरवर्ल्ड ने 101 लोगों की हत्या की। पुलिस मात्र दर्शक बनी रही और नेतृत्व की असफलता के कारण कानून व व्यवस्था इतनी चरमरा गई कि न तो कोई शादियाँ हो रही थीं, न कारें खरीदी जा रही थीं, न फ्लैट बिक रहे थे और न ही संभ्रांत वर्ग डिनर आयोजित कर रहा था और वह भी लूट या एक्सटर्शन के भय से। यदि आपके पास महंगी कार है तो संगठित अपराधी आपसे पैसा वसूलने पहुँच जायेंगे, यदि आपके परिवार में विवाह समारोह है तो भी वे आप से पैसा मांगेंगे। राष्ट्र की आर्थिक राजधानी में अर्थ का प्रवाह रुक सा गया था, लोग वहाँ पैसा निवेश करने के बदले यहाँ से विनिमेष करने लगे थे।

आप स्थिति की कल्पना कर सकते हैं, जब अक्टूबर 1997 से लेकर जुलाई 1998 तक पुलिस ने कोई कड़ी कार्रवाई नहीं की। इस परिस्थिति में केवल एक ही चीज़ की जरूरत थी- पुलिस का नेतृत्व।

इस तनावपूर्ण समय में शिवनंदन को गड़चिरौली के जंगलों में बुलाया गया और पहली जुलाई, 1998 को उन्होंने मुंबई पुलिस में ज्वाइंट कमिश्नर ऑफ पुलिस, क्राइम का पदभार ग्रहण किया। उस समय मुंबई पुलिस बल की यह एकमात्र नियुक्ति थी।

उनके पास कार्य संपादित करने के लिए मात्र 6 माह का समय था। उन्हें मुंबई के तत्कालीन पुलिस कमिश्नर आर.एच. मेन्डोन्सा का संपूर्ण समर्थन था। इसके अतिरिक्त पूरा पुलिस बल उन पर विश्वास करता था और उनकी सहायता को तत्पर था और इसी कारण बाद में उन्होंने अपनी सफलताओं का पूरा श्रेय अपनी टीम को दिया।

यही वह समय था जब वर्षों तक मात्र एक चैनल दिखाने वाले दूरदर्शन ने सैकड़ों चैनलों को प्रसारण की अनुमति दी।

तत्काल समाचार प्रसारित करने वाले समाचार चैनल पुलिस के लिए एक दुधारी तलवार की तरह, वरदान भी सिद्ध हो रहे थे और श्राप भी। पहले सूचनाएँ शिवनंदन को उनके मातहतों से मिलती थी, अब इसके पहले की पुलिस को उनका भान हो, वे पूरे राष्ट्र में प्रसारित हो चुकी होती थी। इस प्रकार समाचार चैनल के रिपोर्टर सूचना देने वाले का काम कर रहे थे। यदि पुलिस बल इन सूचनाओं को ठीक से संभाल लेता तो उन्हें इसका लाभ मिलता और यदि वे इसमें असफल रहते तो जनता नाराज हो जाती, यहाँ तक कि सरकार की स्थिरता भी खतरे में आ जाती।

एक दिन शिवनंदन एक समाचार चैनल पर एक गृहिणी का साक्षात्कार देख रहे थे। वह कही रही थी- “मुझे डर लगता है कि सुबह काम पर जाने वाले मेरे पति, शाम को घर नहीं लौटेंगे, जब तक वे लौट नहीं आते, मैं सोचती रहती हूँ कि क्या वे जिंदा भी हैं, क्या वे कभी वापस आयेंगे।” यह शब्द शिवनंदन को बिजली के झटके की तरह लगे।

एक प्रतिज्ञाबद्ध पुलिस ऑफिसर की तरह उन्होंने सोचा, - “नागरिकों को ऐसा नहीं लगना चाहिये। उन्हें सुरक्षित रखने की क्षमता हममें होनी चाहिए। यदि यह गृहिणी सुरक्षित अनुभव नहीं करती है तो इसका अर्थ है कि मैं अपना कार्य ठीक से नहीं कर रहा हूँ।”

उनके अंदर का नेता जाग गया था।

अब यह सक्रिय होने का समय था।

लेकिन यह होगा कैसे?

सर्वाधिक आवश्यक था पुलिस का मनोबल बढ़ाना। उन्होंने अपने दल को बुलाया और कहा, “अदालती जाँच कर का काम अभी बाकी है और यह अपनी गति से चलते हुए पूरा होने में समय लेगा। लेकिन हम आपको पूरी कानूनी सहायता देंगे। अब हमें पिछली बातें भुलाकर आज की परिस्थितियों में काम करना है।

अगला कदम था पुलिस कर्मियों को कानूनी सहायता देना। वे प्रसिद्ध वकील वी.आर. मनोहर से मिले और उन्हें तथ्यों से अवगत कराया। मनोहर पुलिस कर्मियों के बचाव में खड़े हुए और सन् 1999 में उन्हें मुंबई उच्च न्यायालय से उनके हक में फैसला दिलवाने में सफल रहे।

हालांकि वास्तविक चुनौती थी मुंबई उच्च न्यायालय का फैसला आने से पहले पुलिस कर्मियों का मनोबल बनाये रखना। कदम उठाने का सही समय यही था। पुलिस कोई और कार्यवाही करने के लिये न्यायालय के फैसले का इंतजार नहीं कर सकती थी। पुलिस इस भय में जकड़ी हुई थी कि उनके द्वारा उठाये गये कदम के कारण कहीं उच्च न्यायालय पुलिस को ही सजा न दे दे। ऐसी स्थिति में शिवनंदन को स्वयं आगे बढ़कर उनका नेतृत्व करना था जिससे कि व्यवस्था फिर से सक्रिय हो सके।

उन्होंने अपनी टीम को बुलाया और कहा कि, “आप संगठित अपराध के विरुद्ध कड़े कदम उठाये, मैं आपका ख्याल रखूंगा।” इन शब्दों में कानूनी संरक्षण नहीं था। उन्होंने कहना जारी रखा, “आप मुझे दोषी ठहरा सकते हैं यदि उच्च न्यायालय ने कार्यवाही करने वालों को सजा देने का फैसला किया।” किन्तु नेतृत्व में मात्र बड़े- बड़े वायदों व मनोबल बढ़ाने वाले भाषणों से काम नहीं चलता।”

अपनी टीम को समर्थन देने के लिये उन्हें आवश्यक साधन भी उपलब्ध करवाने थे और सबसे पहली आवश्यकता थी- पैसा। हमारे देश में, जहाँ रोटी, कपड़ा और मकान भी अभी तक राष्ट्रीय समस्याएँ हैं, किसी व्यक्ति को केवल

झूठे आश्वासनों व आशा दिला कर प्रेरित नहीं किया जा सकता। अधिकांश पुलिस कांस्टेबल झोपड़पट्टी या खराब रिहायशी बस्तियों में रहने के अलावा भी कई समस्याओं का सामना कर रहे होते हैं। उनका किस तरह से ध्यान रखा गया, उसकी चर्चा हम आने वाले अध्यायों में करेंगे। लेकिन यहाँ सच्चाई यही थी कि गैंगवार्स में महत्वपूर्ण भूमिका पैसे की थी और इन लड़ाईयों में पुलिस का भी इस्तेमाल हुआ।

यदि अफवाहों को मानें, तो उस समय पुलिस, अपराधी संगठनों से पैसा लेकर उनके ही विरोधी संगठनों का खात्मा कर रही थी। इस तरह पुलिस की कार्यवाहियाँ अपराधी संगठनों के पैसे से चल रही थीं। यह पूरी तरह से गैरकानूनी था लेकिन पुलिस अफसरों का अपने मातहतों पर कोई नैतिक अधिकार नहीं रहा था।

एक नेता को पैसे की महत्ता समझनी चाहिए व उसकी आवश्यकता का आदर करना चाहिए। आपके दल के सदस्य भी मनुष्य हैं और उनमें से कईयों पर एक बड़े परिवार के भोजन, शिक्षा व देखभाल की जिम्मेदारी होती है। लालच से उत्पन्न हुआ भ्रष्टाचार पूरी से गलत व अस्वीकार्य है, किन्तु यदि कोई व्यक्ति अपनी भूल आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिये भ्रष्टता का सहारा लेता है तो यह नेता की जिम्मेदारी है कि वह इस वास्तविकता को समझे।

अतः इस बात का ध्यान रखते हुए शिवनंदन ने सरकार को एक पेशकश की और पुलिस कार्यवाही के लिये एक करोड़ रुपये का स्पेशल फंड प्राप्त कर लिया।

जैसे ही पैसे मिला, उन्होंने अपनी टीम को बुलाया- अपने बाहर ज़ोन की बारह टीमों के सभी कांस्टेबल व इंस्पेक्टरों को और फिर उन्होंने खुलकर पैसा बांटा। यह वैध पैसा था और हर प्राप्तकर्ता ने इसके लिये रसीद पर दस्तखत भी किये। इससे प्रत्येक कार्य में पारदर्शिता आ गयी। ऐसा करके उन्होंने अपनी टीम को कई गुना ताकतवर बना दिया था। अब वे मोबाईल फोन खरीद सकते थे, पूरे देश में घूम सकते थे, जानकारी देने वालों को इनाम दे सकते थे। कुल मिलाकर इस शक्तिदान की परीणिती अद्भुत कार्यवाहियों में हुई।

शिवनंदन उन अधिकारियों में से एक थे, जिन्हें मकोका (महाराष्ट्र कंट्रोल ऑफ ऑर्गेनाइज़्ड क्राइम ऐक्ट, 1999) लाने का श्रेय जाता है। मकोका की प्रस्तावना कहती है, “मौजूदा न्यायिक ढांचा, अर्थात् दंडात्मक एवं कार्यविधिक कानून व न्याय व्यवस्था संगठित अपराधों को रोकने व नियंत्रित करने के लिये अपर्याप्त है। अतः सरकार ने एक विशेष कानून लाने का निर्णय लिया है, इसमें सख्ती व निवारण की व्यवस्था है तथा कुछ विशेष परिस्थितियों में वायर, इलेक्ट्रॉनिक व मौखिक बातचीत को अवरुद्ध कर जाँचने का प्रावधान है, जिससे कि संगठित अपराध के खतरे को नियंत्रित किया जा सके।”

अन्य कानूनों के विपरीत मकोका में किसी वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के सामने दी गई स्वीकारोक्ति मान्य है तथा यह केवल स्वीकारोक्ति देनेवाले आरोपी के सम्बन्ध में ही नहीं, अपितु उस मामले के अन्य आरोपियों के विरुद्ध भी मान्य है। इस कानून में आरोपियों को अग्रिम जमानत न दिये जाने की भी व्यवस्था है।

मकोका के अंतर्गत दर्ज किया जाने वाला पहला अपराध था, मुंबई के भूतपूर्व मेयर श्री मिलिंद वैद्य की हत्या का प्रयास। इस प्रयास में तीन अन्य लोग मारे गये थे। यह मुकदमा एक वर्ष में सफलतापूर्वक पूरा हो गया। तीन अपराधियों को मृत्युदण्ड, तथा सात अन्य को आजीवन कारावास व एक करोड़ पाँच लाख रुपये का सामूहिक अर्थदंड दिया गया।

इस त्वरित न्याय व कड़ी सजा ने संगठित अपराध जगत में सिहरन दौड़ा दी। इसके बाद कई जाने माने फिल्म निर्माताओं व बड़े लोगों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं जो कि अपराधियों के लिये चेतावनी थी कि पुलिस को कम न आंके।

पुलिस बल को पैसा, संसाधन एवं कानूनी सहायता के अतिरिक्त, उच्च न्यायालय उनके निर्णयों व समाचार पत्रों के हमलों के विरुद्ध भी संरक्षण दिया गया। मजबूत समर्थन के साथ ही उन्हें प्रशिक्षण भी दिया गया।

अगला कदम था अच्छे लोगों को लाना। कई योग्य अधिकारियों को टीम में सम्मिलित किया गया। एक ऐसे ही अधिकारी थे सहायक पुलिस अधीक्षक (एसीपी) दशरथ अवहट। शिवनंदन ने उन्हें विश्वासपूर्ण तरीके से कार्य करने को प्रोत्साहित किया। दल के सामने एक खुली चुनौती थी और उन्होंने उसे स्वीकार किया।

उन्होंने कहा, “आईये, अब सब मिलकर पासा पलटें।” और 11 नवम्बर 1998 को पासा पलट गया। क्राइम ब्रांच के अधिकारियों को सूचना मिली थी कि आर्थर रोड जेल के सामने कुछ गैंगस्टर किसी की हत्या करने वाले हैं। दल धैर्यपूर्वक अपराधियों के आने की प्रतीक्षा में था। जब पाँच अपराधियों का समूह वहाँ पहुँचा तो वे पुलिस को

देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने भागना आरम्भ किया और पुलिस ने दादर तक उनका पीछा किया। पुलिस ने आत्मरक्षा में गोली चलाई और चार अपराधी मारे गये। इस कार्यवाही ने एक नई शुरुआत की। अभी तक आम आदमी मारे जाते थे और पुलिस अपना बचाव कर रही होती थी।

इस एक्शन ने पुलिस का-अतिआवश्यक मनोबल बढ़ाया। पुलिस बेहतर काम कर सकती है- यह विश्वास बल में फिर लौट आया और उसके बाद फिर कभी उन्हें पीछे नहीं लौटना पड़ा।

इसके बाद कई लोगों को एम.पी.डी.ए.ए. (महाराष्ट्र प्रिवेन्शन ऑफ डेंजरस एक्टिविटीज़ ऐक्ट) के अंतर्गत सजा हुई। करीब 1500 गैंगस्टर व जबरन वसूली करने वाले लुटेरे पकड़े गये। 1,500 हथियार बरामद हुए और 300 गैंगस्टर पुलिस कार्यवाही का शिकार हुए। इस सभी के बीच शिवनंदन पूरी तरह सतर्क रहे व वास्तविक नेतृत्व का प्रदर्शन किया। एक बार आरम्भ कर देने के बाद अब उनका जीतना जरूरी था।

उपायकुशलता व सामरिक सूचना संचयन

प्रत्येक क्षण एक नयी व अलग सोच की आवश्यकता थी। यहां हम एक ऐसी ही घटना का विवरण दे रहे हैं जो कि सामरिक जानकारी एकत्रित करने से संबंधित है। उस समय कुछ गिने-चुने फोन ही टेप किये जाते थे, किन्तु जब शिवनंदन ने कार्यभार संभाला तो उन्होंने एक नया तरीका इजाद किया। उन्हें लगा समस्या को सही तौर पर देखने से उसकी जड़ पर प्रहार करना बेहतर होगा। पुलिस फोर्स ने स्थानीय छोटे गैंगस्टर के फोन टेप करने की जगह उन अपराध सरगनाओं के फोन टेप करने का निर्णय लिया जो पाकिस्तान व अन्य देशों में छिपे बैठे थे।

वे विदेश संचार निगम लि. के दफ्तर में गये और उनके ऑपरेशंस मैनेजर से उन नम्बरों को टेप करने की बात की, जिससे कि देशभर में से कोई भी अपराधी जब पाकिस्तान अपने सरगना से बात करने को फोन लगाये तो पुलिस को पक्की इलेक्ट्रॉनिक सूचना मिल सके और वे अपराधियों से एक कदम आगे रहें।

उदाहरण के लिये पुलिस को सूचना मिली कि प्रसिद्ध फिल्म डायरेक्टर पहलाज नेहलानी की हत्या की जाने वाली है, पुलिस टीम पहलाज नेहलानी के घर के बाहर ही प्रतीक्षा कर रही थी और उन पर निशाना साधने वाले शूटर को उन्होंने वहीं निष्प्रभावी कर दिया। आमिर खान, जे.पी. दत्ता, महेश भट्ट और कई अन्य फिल्मी हस्तियाँ भी हिट लिस्ट में थीं। समय पर सूचना मिल जाने से पुलिस इन गैंगस्टर्स को निष्प्रभावी करने में कामयाब रही।

सामरिक नेतृत्व का यह एक बढ़िया उदाहरण था। विदेशों में छुपे हुए गैंग लीडरों के फोन टेप करना और उनके स्थानीय पिटुओं को छोड़ देना- एक शानदार सफलता थी। इसके कारण सैकड़ों लोगों की जानें बचायी जा सकीं, जिनमें से कई फिल्म उद्योग, राजनीति व उद्योग जगत की बड़ी हस्तियाँ थीं। उन दिनों के बाद, किसी बिल्डर की गोली मारकर हत्या नहीं की गई। जबकि पहले 1995 में, ओम प्रकाश कुकरेजा, वल्लभ ठक्कर, नटवरलाल शाह, ठकियुद्दीन वाहिद, ईस्ट-वेस्ट एयरलाइंस के मैनेजिंग डायरेक्टर, गुलशन कुमार, मशहूर फिल्म निर्माता एवं संगीत जगत के बड़े पूंजीपति एवं उद्योगपति सुनील खटाऊ जैसे लोग दुर्भाग्य से अंडरवर्ल्ड के शिकार बन गये। इन सभी जाने माने लोगों को दिन दहाड़े गोली मारी गयी और इस पर जनता ने तीखी प्रतिक्रिया दी। व्यावसायिक जगत ने 'काली दीपावली' मनाने की घोषणा की और अपना विरोध जताने के लिये काले झण्डे लगाये। यह मात्र एक शहर की समस्या नहीं रह गयी थी। महाराष्ट्र राज्य, उसकी विधान सभा और यहाँ तक कि दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी भी हिल गयी थी। यह अंतर्राष्ट्रीय खबर बन गयी थी और भारत की आर्थिक एवं सुरक्षा की नींव के लिये गहरी चिंता का विषय भी।

इस अभियान की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2001 से 2011 की बीच कोई गोली काण्ड नहीं हुआ, सिवा हाल ही में हुए जे डे- संवाददाता एवं इकबाल कास्कर हत्याकांड के।

सन् 1998 में गैंगस्टर्स ने 101 उद्योगपतियों की हत्या कीं शिवनंदन व उनके दल ने अगले ग्यारह वर्षों तक एक भी हत्या नहीं होने दी। उन्होंने लोगों के मन में सुरक्षा की भावना स्थापित करने में सफलता पाई। शांति बहाली से होटल व बिल्डिंग उद्योग फलने-फूलने लगे व अन्य औद्योगिक गतिविधियाँ भी बढ़ीं।

भारत की आर्थिक राजधानी में आया ठहराव समाप्त हो गया और वह पुनः एक तेजी से बढ़ता आर्थिक केन्द्र बन गयी। उस वर्ष मुम्बई में संगठित अपराध का सफाया करने में मिली सफलता को पुरस्कृत करने हेतु महाराष्ट्र सरकार ने क्राइम ब्रांच दल के आठ सदस्यों के विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक दिये तथा शिवनंदन

को उनकी अति विशिष्ट सेवा के लिये राष्ट्रपति का पुलिस पदक दिया गया।

सन् 2000 में दिये गये कुल आठ पुलिस पदकों में से सात, ज्वाइंट सीपी (क्राइम) शिवनंदन एवं उनकी टीम को मिले।

जिन सात लोगों को यह पुरस्कार मिले, वे थे:-

- डी शिवनंदन, ज्वाइंट सीपी क्राइम
- ऐ डी शिंदे, डीसीपी (इकोनॉमिक ऑफेंस विंग)
- एस जे इनामदार, इंस्पेक्टर, क्राइम ब्रांच
- बी के नवघरे, इंस्पेक्टर, क्राइम ब्रांच
- एम डी जावेद राशिद, इंस्पेक्टर, क्राइम ब्रांच
- ए एम दारेकर, हेड कांस्टेबल, बैज नं. 18591
- बी ए गाडगे, हेड कांस्टेबल, बैज नं. 14833

इन सभी ने बढ़िया काम किया था और आशातीत परिणाम दिये थे। अब वे टेलीविजन पर दिखाई गई उस महिला को याद कर कह सकते थे कि, “मैडम, मैं आशा करता हूँ कि अब आप खुश व संतुष्ट होंगी कि आपके पति जीवित घर लौट आयेंगे और इस बात की चिंता नहीं करेंगी कि वे किसी गुंडे या गैंगस्टर की गोली का शिकार न हो जायें।”

आईये अब ज़रा एक बार, शिवनंदन के ज्वाइंट सी.पी. (क्राइम) के पद पर मुंबई आने से पहले की व उसके बाद की परिस्थितियों पर नजर डालें। मुम्बई एक ऐसा शहर है जहाँ व्यापार फलता-फूलता है तथा लोग अपने आपको सुरक्षित अनुभव करते हैं। यह कैसे किया गया? माफिया गैंग्स पर छः तरफा हमला बोला गया:-

- ▶ गिरफ्तारियाँ / धर-पकड़
- ▶ लुटेरों व जबरन वसूली करने वालों की धर-पकड़
- ▶ गैंगस्टरों की गिरफ्तारियाँ
- ▶ हथियारों की जब्ती
- ▶ पुलिस कार्यवाही
- ▶ मकोका के अंतर्गत गिरफ्तारियाँ

इस योजना का स्पष्ट प्रभाव जानने के लिए आईये, कुछ आंकड़े देखते हैं:-

- ▶ लूट व जबरन वसूली के केस

1998-2001 के बीच जबरन वसूली व लूट के आरोप में 1,651 गिरफ्तारियाँ की गईं। अर्थात् इस अवधि में सर्वाधिक गिरफ्तारियाँ की गईं, अर्थात् इस अवधि में सर्वाधिक गिरफ्तारियाँ हुईं। इससे जहाँ 1993 में जबरन वसूली के 728 केस दर्ज किये गये थे, वहीं 2009 में यह संख्या 176 हो गई व इसके बाद निरंतर कम होती गयी।

- ▶ पुलिस कार्यवाही

1998-2001 के बीच 238 पुलिस ऑपरेशंस में 298 खतरनाक अपराधी निष्प्रभावी किये गये। इस कार्यवाही का प्रभाव कई वर्षों तक रहा।

- ▶ अपराधियों द्वारा गोलीबारी

अपराधी गुटों की आपसी लड़ाईयों की 176 घटनाएँ हुईं, जिनमें 192 अपराधी मारे गये। सन् 2009 में गोलीबारी की कुल आठ घटनाएँ हुईं।

► अपराधियों की गिरफ्तारियाँ

1998-2001 के बीच संगठित अपराधी में लिप्त गैंगस्टर्स की कुल 1,635 गिरफ्तारियाँ हुई, जो कि एक अविश्वसनीय सी संख्या हैं। लेकिन इन गिरफ्तारियाँ के कारण अंडरवर्ल्ड व उसके अंतर्संबंध पूरी तरह से नियंत्रण में आ गये।

► मकोका के मामले

सन् 1999-2001 के दौरान जब मकोका लागू किया गयां कुल 53 मामलों में 214 गैंगस्टर्स पकड़े गये थे। सन् 2009 में यह संख्या घटकर 24 पर पहुँच गई व वह भी मात्र पांच मामलों में।

► गोली मारकर हत्या के मामले

गैंगस्टर्स लोगों की हत्या दिन दहाड़े करते थे। 1998 का वर्ष सबसे खराब रहा। इस साल 93 मामलों में 101 नागरिक मारे गये। वसूली आम थी। जबरन वसूली व अन्य छोटे अपराधों के 397 मामले दर्ज किये गये, इनमें से 32 फिल्मस्टार थे, जिन्हें धमकियाँ मिली थीं। इन अपराधियों को काबू करने के लिये उस एक वर्ष में 640 गिरफ्तारियाँ की गईं।

► माफिया गैंग्स पर बहुतरफा आक्रमण (पूरे आंकड़े)

► नीति व विश्वसनीयता के साथ कार्य सम्पादन

अपना नेतृत्व सिद्ध करने के लिये यह आवश्यक है कि आपका आचरण ऊँचा हो व लोग आपको आदर्श व्यक्ति मानें, कोई भी व्यक्ति आप पर भ्रष्ट होने या किसी अन्य दुराचार में लिप्त होने का आरोप न लगा सके। नेता को पूरी एकाग्रता से अपना कार्य करना चाहिए। यदि वह यह सत्यनिष्ठा बनाये रखता है तो स्थानांतरण की हर नयी जगह व सेवा निवृत्त होने के बाद भी आदरणीय रहेगा।

मुम्बई में पदभार संभालने से पूर्व, 1995-98 के दौरान शिवनंदन नागपुर रेंज के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस थे। इस रेंज में आने वाले क्षेत्र थे, नागपुर, चन्द्रपुर, गढ़चिरौली, भंडारा, बोंदिया व वर्धा। इस नक्सल प्रभावी क्षेत्र की चुनौतियाँ उन चुनौतियों से पूरी तरह भिन्न थीं जिनका समाना उन्होंने मुम्बई पुलिस के शीर्ष पर रहते हुए किया।

इन नक्सल प्रभावी क्षेत्रों में उनके नेतृत्व का तरीका मुम्बई की उनकी कार्यशैली से एकदम भिन्न था। जो चीज एक समय, एक स्थान विशेष पर सफल रही हो, वह दूसरी जगह कारगर नहीं रहेगी। नेता को प्रत्येक चुनौती के अनुरूप एक विशेष हल खोजना होता है।

नोट :- मोटे अक्षरों में दिये गये आंकड़े उस दौरान के हैं, जब शिवनंदन ज्वाइंट सी.पी. क्राइम थे।

वर्ष	1993	1994	1995	1996	1997	1998	1999	2000	2001
गिरफ्तारियाँ (MPD)	172	116	129	353	144	365	638	242	406
जबरन वसूली/लूट करने वालों की पकड़	69	48	51	176	91	200	394	127	242
गिरफ्तार गैंगस्टर्स	213	435	248	273	308	455	437	348	395
बरामद असल	386	286	248	226	269	535	540	434	471
पुलिस कार्यवाहियाँ	36	30	9	57	72	48	83	73	94
MCOC में गिरफ्तारियाँ	-	-	-	-	-	-	64	65	85

वर्ष	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009
गिरफ्तारियाँ (MPD)	281	165	137	190	186	151	80	61
जबरन वसूली/लूट करने वालों की पकड़	192	117	37	42	26	27	23	22
गिरफ्तार गैंगस्टर्स	304	163	207	174	235	208	291	68
बरामद असल	343	564	466	506	355	399	311	314
पुलिस कार्यवाहियाँ	47	40	15	13	16	12	20	8
MCOC में गिरफ्तारियाँ	31	12	90	134	123	52	80	28

(स्रोत : क्राइम ब्रांच, मुंबई पुलिस)

इन क्षेत्रों में, नक्सलियों के अनुसार, पुलिस शत्रु वर्ग में आती थी, अतः मुठभेड़ों में उनकी हत्या कर दी जाती थी व इस शत्रु को समाप्त करने के लिये वे जमीनी सुरगों का भी प्रयोग करते थे।

महानगरों में पुलिस कार्यवाही में गैंगस्टर्स को निष्प्रभावी करना कारगर रहता है, किंतु शिवनंदन जानते थे कि नक्सलियों के साथ इस प्रकार की कार्यवाही के विपरीत परिणाम मिलेंगे क्योंकि जैसा कि कहा जाता है, इस घुसपैठ या आतंकवाद के भूल में एक विचारधारा है। नक्सलियों को गैंगस्टर्स की तरह मारने की परिणिति हजारों नक्सलियों के जन्म में होगी।

अतः उन्होंने एक विभिन्न हल निकाला। उनके दल में योग्य सहायक व अन्य अनुभवी सदस्य थे। उन सभी ने मिलकर एक अलग कार्ययोजना बनायी। यह योजना थी लोगों को आत्मसमर्पण के लिए राजी करना। उस समय सरकार, आत्मसमर्पण करने वालों को कोई आर्थिक सहायता नहीं देती थी। ऐसे में शिवनंदन एवं उनकी टीम मात्र न्यायपूर्ण व उचित व्यवहार द्वारा स्थिति को संभालने में सक्षम रही। पूर्व निश्चित योजनानुसार कोई भी अनावश्यक व्यक्ति नहीं पकड़ा गया, किसी भी निर्दोष को परेशान नहीं किया गया, तथा किसी को भी अकारण गोली नहीं मारी गयी। अंततः क्षेत्र में मौजूद सभी नक्सलवाद प्रभावित महाराष्ट्र मूल के व्यक्तियों से टीम आत्मसमर्पण कराने में सफल रही।

एक उदाहरण है शिवाजी टुमरेडू एवं उनकी पत्नी का। इन दोनों ने अपनी एके-47 राइफलों व नकद 1.5-2 लाख रुपये के साथ आत्मसमर्पण किया। उन्हें पैसे देने की कोई पेशकश नहीं की गयी थी, बल्कि उन्होंने पैसे के साथ आत्मसमर्पण किया।

ऐसे परिणाम पाने के लिये आपको लोगों पर विश्वास करना होता है तथा लोगों को भी आप पर विश्वास होता है। यह एक पूरी तरह से भिन्न रणनीति है।

नक्सलवाद आज भी हमारे देश की एक गम्भीर समस्या है। लेकिन महाराष्ट्र में शिवनंदन ने इसे नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। परिस्थिति के अनुकूल नेतृत्व व भिन्न विचारधारा का प्रयोग करते हुए, जब शिवनंदन व उनकी टीम ने नागपुर रेंज छोड़ी तो वहाँ महाराष्ट्र मूल का एक भी नक्सली नहीं था। उनका दल कम से कम इतना कर पाने में तो सफल रहा।

नैतिक मूल्यों व नक्सलवाद से संबंधित एक घटना यहाँ उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत है। शिवनंदन के उस कार्यकाल के

दौरान, पुलिसकर्मियों के एक दल ने एक ऐसे स्थान पर शिविर लगाया हुआ था, जहाँ नक्सली सदा हमले की फिराक में रहते थे। अंधकार में देख सकने वाली अपनी दूरबीनों की सहायता से पुलिस वालों ने जंगल में ग्रामीणों का एक समूह देखा। उन हरे जंगल में उन्होंने हरे कपड़े पहन रखे थे और उनके हाथों में बंदूकें थीं।

पुलिस दल ने उन्हें नक्सली समझ कर ललकारा। इस कार्यवाही में एक ग्रामीण को गोली लग गयी। जब तक पुलिस को यह पता चला कि वे नक्सली नहीं हैं, बहुत देर हो चुकी थी, पुलिस ने उस व्यक्ति को जंगल से बाहर लाने का प्रयास किया, किन्तु अस्पताल पहुँचने से पहले ही अधिक खून बह जाने के कारण उस ग्रामीण की मृत्यु हो गयी।

अब पुलिस के सामने दुविधा थी कि वे या तो यह घोषित कर दें कि एक नक्सली पुलिस की गोली का शिकार हुआ या स्वीकार कर लें कि एक निर्दोष ग्रामीण पुलिस द्वारा गलती से चलाई गई, गोली से मारा गया।

शिवनंदन को इस घटना की जानकारी फोन पर दी गई। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि एक संवाददाता सम्मेलन बुलाया जाये व उसमें यह स्वीकार किया जाये कि एक गरीब ग्रामीण को गलती से नक्सली समझकर गोली मार दी गयी।

शिवनंदन को इस घटना की जिम्मेदारी लेनी पड़ी। उन्होंने पूरी नागपुर रेंज के सातों जिलों के पुलिसकर्मियों को उस गरीब विधवा के पुनर्स्थापन में समुचित योगदान करने को कहा, चाहे वह एक दिन की पगार ही क्यों न हो। बाद में उस महिला को नौकरी भी दी गई।

ये दोनों उदाहरण एक दूसरे के विपरीत हैं, लेकिन दोनों से एक सीख मिलती है और वह है नेतृत्व की महत्ता। वास्तव में इन दोनों घटनाओं में वर्णित शिवनंदन का नेतृत्व, चाणक्य द्वारा बताये गये नेतृत्व के गुणों का उजागर करता है। आइये देखें कैसे-

बुद्धिमान एवं ऊर्जावान

जब शिवनंदन ने मुम्बई में अंडरवर्ल्ड को तोड़ने का बीड़ा उठाया तो इस कार्य में सफल होने के लिये यह आवश्यक था कि वे बुद्धिमत्ता से, ध्यानपूर्वक तैयार की गई योजना के अनुरूप, उपलब्ध वैध साधनों का रणनीति के अनुसार उपयोग करें। लेकिन मात्र अच्छी योजनाएँ ही परिणाम नहीं देतीं। आपको अपनी योजना को कार्य में बदलना होता है इन दोनों उदाहरणों में शिवनंदन ने कार्य योजना बनाई व उस योजना पर अमल किया। इन योजनाओं में अपने दल में विश्वास पैदा करना, उन्हें समुचित संसाधन व प्रशिक्षण उपलब्ध कराना व दल की समस्याओं का निराकरण करना सम्मिलित था और अंततः सुरक्षित व सम्पन्न मुंबई शहर हमारे सामने है।

सेवानिवृत्त सहायक पुलिस आयुक्त दशरथ अवहद ने शिवनंदन के साथ क्राइम ब्रांच में काम किया है, उनका कहना है, “शिवनंदन महाराष्ट्र पुलिस बल के बेहतरीन अधिकारियों में से एक थे। वे एक ऊर्जावान लीडर थे और हमेशा ही विकट परिस्थितियों का आगे रहकर सामना किया। गैंगस्टर्स से निबटना, सरल नहीं था, किंतु शिवनंदन एक सच्चे नेता थे और उन्होंने कभी अपने अधिकारियों को निराश नहीं किया।”

अनुभवियों का संसर्ग

कार्ययोजना बनाने में शिवनंदन ने सदा अपने सीनियर व विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की सलाह ली। उदाहरण के लिये वे अपने सीनियर अधिकारियों से बराबर मिलते रहे और अंतःप्रेरणा लेते रहे। इनमें शामिल थे, सर्वश्री के.एफ रुस्तम जी, जुलियो रिबेरियो, बीके सराफ, एसवी भावे, एस. रामामूर्ति, एस.के बापट, सतीश साहने, अरविंद इनामदार व एम. आर. रेड्डी व कई अन्य।

सत्यवादिता

उस गरीब ग्रामीण की नक्सलवादी समझकर की गई हत्या के प्रति शिवनंदन की प्रतिक्रिया इस गुण का ज्वलंत उदाहरण है। शिवनंदन के पास सच को छुपाकर उस ग्रामीण को एक नक्सली घोषित करने का अवसर था और वास्तव में इस प्रकार की घटनाओं में ऐसा करने का प्रचलन भी है, लेकिन उन्होंने अपनी भूल स्वीकार की और

सत्यवादिता से काम लिया।

► वचनबद्धता

सबसे बड़ा वचन वह है जो आप स्वयं को देते हैं। शिवनंदन इस बात से प्रसन्न थे कि लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का उनका वचन पूरा हुआ। वे टेलीविजन वाली उस महिला को यादकर आश्चर्य हो जाते थे कि उन्होंने उसके मन से उसके पति की असुरक्षा का भय सफलतापूर्वक दूर कर दिया है। उन्होंने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी तरह निभाया।

कृतज्ञता

शिवनंदन सदा उन लोगों के प्रति कृतज्ञ रहे जिन्होंने लक्ष्य पाने में उनकी सहायता की, चाहे वे उनके दल के सदस्य रहे हों, उनके वे उच्च अधिकारी हों, जिन्होंने उन्हें ताकत दी या फिर वकील व अन्य विशेषज्ञ हों। उन्होंने सदा यह माना कि सभी सफलताओं के पीछे पूरी टीम का प्रयत्न रहता है। इस तरह की विनम्रता ही व्यक्ति को कार्यक्षेत्र में उन्नति देती है। इसके अभाव में वे डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस के पद तक न पहुँचे होते।

सीखने की इच्छा

शिवनंदन सदा कुछ नया सीखने व खोजने को तत्पर रहते हैं। 26/11 को मुम्बई पर हुए हमले के बाद उनका कार्य था भारत में विश्वस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था एवं प्रक्रियाएँ बनाना। इसके लिये उन्होंने इजराइल, आई-बी (इंटेलिजेंस ब्यूरो) व केन्द्रीय पुलिस के अन्य विभागों से विशेषज्ञों को बुलाया। यह एक कदम उनकी अन्य विशेषज्ञों से सीखने की इच्छा दर्शाता है। अपनी नौकरी के दौरान उन्होंने जहाँ भी कार्य किया, वहाँ उन्होंने प्रो. ऋषिकुमार पंडया, एन.एच. अत्रेय, ओम कौल, श्रीमती जयाराव, स्वामी सुखबोधानंद व अन्य प्रेरणादायी वक्ताओं को पुलिस अधिकारियों को संबोधित करने के लिये आमंत्रित किया।

मिलनसार - जिस तक सरलता से पहुँचा जा सके

ए.के.- 47 राइफल्स व डेढ़ से दो लाख रुपये नकद के साथ शिवाजी टुमरेड्डी व उनकी पत्नी का आत्मसमर्पण, शिवानंदन द्वारा उस परिस्थिति को पूरी सक्षमता से संभालने के कारण ही सम्भव हो पाया। यह दर्शाता है कि लोग उनके साथ सहज अनुभव करते थे व उन पर विश्वास भी करते थे। शिवनंदन के पास आम आदमी के साथ जुड़ने की योग्यता है। उनसे पहली बार मिलने पर ही यह स्पष्ट हो जाता है कि उनसे जुड़ना कितना सरल है तथा वे कितनी तत्परता से आपकी समस्याएँ व परेशानियाँ समझ कर उन पर काम करने लगते हैं। यह एक नेता का महत्वपूर्ण गुण है।

★ नेतृत्व के मूल तत्व ★

- अपने मातहतों व दल के लोगों का मनोबल बढ़ाना : वे आपसे इसकी अपेक्षा रखते हैं।
- परंपरागत सोच से हट कर सोचना : नये प्रयोग करने को तैयार रहना।
- चरित्र व आचरण का स्तर ऊँचा रखना : व्यक्तिगत ईमानदारी ही कुंजी है।
- लोगों को संसाधन उपलब्ध कराना : धन, औजार व तकनीक की आवश्यकता प्रत्येक कार्य में होती है।
- गलतियाँ स्वीकारना: उन्हें छुपाने का प्रयत्न न करें।

मेरे भीतर का नेता

This image shows a full page of white paper with horizontal blue or grey ruling lines. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are approximately 20 lines visible. On the left side, there are small black marks that look like staple indentations or punch holes. The paper appears to be from a notebook or a standard sheet of stationery.

अध्याय 2



अमात्य

मंत्री / व्यावस्थापक

स्वामी राजा
अमात्यमंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
दंड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

भाग अ



दूसरा मर्म

मंत्री - व्यवस्थापक

अर्थशास्त्र में एक मंत्री की महत्ता को बारम्बार बताया गया है। वास्तव में पहली पुस्तक के आठवें अध्याय का शीर्षक है 'अमात्योत्पत्ति', अर्थात् मंत्रियों की नियुक्ति। अमात्य कौन है?

उसे एक मंत्री कहा जा सकता है। कॉर्पोरेट जगत में इसका प्रतिरूप एक मैनेजर या व्यवस्थापक है, हालांकि इन दोनों में- एक मैनेजर व मंत्री में समानताएँ भी हैं और अंतर भी। विभिन्न संदर्भों में प्रत्येक नेता किसी के लिये मैनेजर होता है और प्रत्येक मैनेजर किसी के लिए नेता।

आइये एक उदाहरण लें। किसी भी कंपनी का सीईओ, उस कंपनी का नेता होता है। यदि कम्पनी का वाइस प्रेसिडेंट (वी.पी) सी.ई.ओ. के हिस्से का कुछ कार्य सम्भाल रहा है, तो वी.पी. एक अमात्य या व्यवस्थापक बन जाता है। यहाँ, वी.पी. अपनी टीम के सदस्यों के लिये उनका नेता भी होता है। उसके अधीनस्थ जैसे कि असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट, उसके अमात्य बन जाते हैं।

इसी प्रकार, सी.ई.ओ. कंपनी के चेयरमैन का अमात्य या मैनेजर होता है। वह कंपनी बोर्ड को रिपोर्ट करता है तथा संगठन का प्रबंधन करता है। एक होटल का प्रबंधन करने वाला एक कर्मचारी, घर पर एक पति व अपने परिवार का मुखिया होता है। या यूँ कहें कि घर पर वह एक नेता होता है। संभव है कि किसी कंपनी के आई.टी. विभाग में काम करने वाले एक कर्मचारी को कंपनी की वित्त स्थिति की चिन्ता न करनी पड़े, किन्तु घर पर अपने परिवार की व्यवस्था संभालने के लिये उसे वित्त व्यवस्था के मूल सिद्धान्तों की समझ होना आवश्यक है, ताकि वह अपने सभी बिल चुका सके व अन्य खर्चों को संभाल सके। इस प्रकार संदर्भों के अनुरूप सभी मैनेजर नेता होते हैं और सभी नेता मैनेजर।

इस अध्याय में हम एक अमात्य के गुणों की चर्चा करेंगे, जिसे कि हम प्रबंधक के नाम से संबोधित करेंगे। आप जीवन में सफल होने के लिये इन गुणों को विकसित करने की दिशा में काम कर सकते हैं।

यह चर्चा आरम्भ करने से पहले यह जान लें कि कम्पनियों के लिये प्रबंधक अथवा राजा के लिये अमात्य क्यों आवश्यक है। इस प्रश्न का उत्तर यह भी बताता है कि आज मैनेजमेंट डिग्री की इतनी अधिक मांग क्यों है तथा नये मैनेजमेंट ग्रेजुएट्स को ऊँची तनख्वाह वाली अच्छी नौकरियाँ क्यों मिलती हैं, व बी-स्कूल्स का व्यवसाय क्यों फल-फूल रहा है।

अर्थशास्त्र की पहली पुस्तक में सातवें अध्याय के नवें श्लोक में चाणक्य कहते हैं कि “(केवल) सहयोगियों की सहायता से ही सफलतापूर्वक राज चलाया जा सकता है। एक पहिया अकेला आगे नहीं ले जाता। अतः उसे (राजा को) अमात्य नियुक्त करने चाहिए व उनकी राय सुननी चाहिए।”

आइये इस श्लोक की गहराई में जायें।

सहयोगियों की सहायता : राजा की दृष्टि से परिस्थिति को देखें। उसे एक बड़े राज्य का प्रबंधन सम्भालना है, जो कि अकेले कर पाना असम्भव है। जो भी व्यक्ति यह सोचता है कि वह अकेले सभी कुछ कर सकता है, जीवन में कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता। नेता टीमवर्क की महत्ता जानते हैं।

पुराने समय में राजा के पास सहयोगियों के रूप में उसके मित्र, सलाहकार, गुरु, उस्ताद व वरिष्ठ व्यक्ति होते थे। भारत में गुरुओं द्वारा राजा को सलाह देने की परंपरा रही है। ये उनके मजबूत सहयोगी होते हैं।

एक अकेला पहिया आगे नहीं ले जाता : यहाँ चाणक्य, एक उपमा देते हैं। यदि बैलगाड़ी में एक ही पहिया हो तो बैलगाड़ी गोल घूमती रहेगी। इसमें गति रहेगी, किन्तु वह आगे नहीं बढ़ पायेगी। उसमें प्रयत्न तो होगा किन्तु दिशा नहीं होगी।

ऐसा वाहन जिनसे भारी सामान ढोया जाता है व जिनमें बड़ी संख्या में यात्री सवार होते हैं, उनके कई पहिये होते हैं, जितना बड़ा वाहन होगा, उसमें उतने अधिक व मजबूत पहियों की आवश्यकता होगी। कई बड़े ट्रकों में, जिनसे भारी मशीनरी ढोयी जाती है, 40-50 पहिये होते हैं।

याद रखें: एक पहिया अकेला, आगे नहीं ले जा सकता।

अमात्य नियुक्त करें: अतः चाणक्य अमात्य नियुक्त करने की सलाह देते हैं। अमात्यों की संख्या राज्य के आकार व राजा द्वारा सम्भाली जा रही जिम्मेदारियों की संख्या पर निर्भर करती है।

एक इसी प्रकार की स्थिति कारोबार की दुनिया में भी होती है। यदि कोई व्यक्ति एक होटल चला रहा है तो उसे होटल का प्रबंधन सम्भालने के लिये केवल एक ही मैनेजर की आवश्यकता होगी। किन्तु होटलों की शृंखला के मालिक को प्रत्येक होटल व पूरी शृंखला की देखरेख के लिये कई प्रबंधकों की आवश्यकता होगी।

हाँ, कई बार मालिक स्वयं ही प्रबंधक भी होते हैं। विशेषकर पहली पीढ़ी के व्यवसायी मालिक व प्रबंधक का अंतर नहीं समझ पाते, किन्तु एक बार यह अंतर समझते ही आपका व्यवसाय बढ़ने लगता है। उदाहरण के लिये एक रेस्त्राँ का मालिक प्रबंधक ग्राहकों के आर्डर भी लेता है, बिल भी बनाता है और ग्राहकों को भोजन परोसता भी है। आरम्भ में यह ठीक है, जबकि शुरुआत में मालिक को वास्तविकताएँ सीखने के लिये प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है, किन्तु अगला कदम होता है एक प्रबंधक की नियुक्ति जो कि प्रतिदिन का कार्य चला सके ताकि मालिक अपने व्यवसाय के भविष्य पर विचार केन्द्रित कर सके।

एक मालिक को अपने व्यवसाय के विस्तार, व्यवसाय के संभावित मौकों, लागत कम करने, श्रमशक्ति की आपूर्ति, ग्राहकों की संतुष्टि, लाभ बढ़ाने व अन्य कई क्षेत्रों के बारे में विचार करना होता है। यदि वह सुबह से शाम तक अपने रेस्त्राँ में काम करता रहेगा, तो इन महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करने का समय कहाँ निकाल पायेगा? अतः एक प्रबंधक की नियुक्ति जो कि कामकाज की बारीकियों को समझते हुए उसे चला सके, उसके मालिक को “विचार करने का समय” उपलब्ध करा देती है। नेता इसकी महत्ता समझते हैं और इसीलिये वे नेता हैं। हालांकि इसे सम्भव बनाने के लिये पहली आवश्यकता है अपने लोगों पर विश्वास करना यदि आप अपने प्रबंधकों पर विश्वास नहीं करते हैं, तो आप कभी भी उनके साथ अपनी जिम्मेदारियाँ साझा नहीं करेंगे और परिणामस्वरूप आपके पास भी नेता बनने का समय नहीं होगा।

लोगों पर विश्वास करना और अन्य लोग आप पर विश्वास कर सकें, ऐसे महत्वपूर्ण गुण हैं, जिनका विकास एक नेता को करना होता है। इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आप अपने प्रबंधकों को अपने समक्ष समझें चूँकि, वे आपको रिपोर्ट करते हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि वे बुद्धिमान नहीं हैं या आप उनके साथ अपमानजनक व्यवहार कर सकते हैं।

पिछले अध्याय में हमने देखा था कि नेता का एक गुण है, विनम्रता। अपने लोगों के प्रति कृतज्ञ रहे व उनके साथ आदरपूर्वक पेश आयें।

उनकी राय/विचार सुनें: चाणक्य कहते हैं- “अमात्य नियुक्त करें व उनके विचार सुनें”।

प्रबंधकों की महत्ता व आवश्यकता को मान्यता देने के उपरांत अगला कदम है उन्हें सुनना। सुनने व सुन लेने में अंतर है। सुनने का अर्थ है जब कोई व्यक्ति बोल रहा हो तो उसे खुले दिमाग व दृष्टिकोण से सुनना।

हम सभी को एक विशेष प्रकार से सोचने की आदत है। हम अपने अनुभवों के आधार पर अपने जीवन की वास्तविकताएँ गढ़ते हैं। लेकिन सुनते समय आप स्वयं को एक चुनौती दे रहे होते हैं कि आप सामने वाले व्यक्ति को समझने के लिये तैयार हों। आप यह स्वीकार करते हैं कि आप व सामने वाला व्यक्ति दोनों ही सही हो सकते

हैं, अथवा आपका तर्क गलत हों और सामने वाले का सही। आप अपना दिमाग विभिन्न सम्भावनाओं के लिये खोलते हैं।

प्रबंधक कोई मशीन नहीं है। वे भी निरंतर सोचते रहते हैं और पूरे मन व बुद्धि से कार्य करते हैं। उनके पास कुछ अंतर्दृष्टियाँ होती हैं जो वे आपके साथ बांटना चाहते हैं। उनकी जमीनी वास्तविकताओं पर पकड़ होती है। और वे आपके संगठन के आँख व कान होते हैं, किंतु यह सारा अनुभव अनुपयोगी हो जाता है, यदि आप उनकी राय न सुनें।

औद्योगिक युग में उत्पादकता मापने का पैमाना था प्रतिदिन, प्रत्येक मशीन द्वारा उत्पादित इकाईयाँ। गति बहुत महत्वपूर्ण थी। गति पाने के लिये व्यक्ति को सोचना छोड़कर केवल मशीन की तरह कार्य करना होता था। किन्तु टोयोटा ने इस अवधारणा को बदला, जब उन्होंने अपना ध्यान मात्रा से हटाकर गुणवत्ता पर केन्द्रित करना आरम्भ किया। अब असेम्बली लाईन में काम करने वाला कोई भी व्यक्ति असंतोषप्रद गुणवत्ता उत्पादन को अस्वीकृत कर सकता था, यह आवश्यक नहीं था कि उत्पाद क्वालिटी कंट्रोल विभाग के पास निर्णायक जाँच के लिये भेजा जाये और उसके बाद ही वह स्वीकृत या अस्वीकृत किया जाये। इस प्रकार असेम्बली लाईन का प्रत्येक व्यक्ति एक 'विचारवान' (थिंकिंग) व्यक्ति बन गया, जिसकी राय का सम्मान किया जाता था।

आज का युग विचारों व नवाचारों का है। अतः नेता को अपने प्रबंधकों की राय को अवश्य सुनना चाहिये। चाणक्य का यह समय परिक्षित सूत्र आज भी प्रत्येक परिस्थिति में प्रासंगिक है।

जब भी राजा के सामने कोई समस्या आये, तो यह अपेक्षित है कि वह अपने मंत्रियों से मंत्रणा करने के बाद ही कोई निर्णय लेगा। आपने यह कहावत सुनी होगी कि, “एक राजा वैसा ही होगा जैसी की उसे सलाह मिले।” आज की परिस्थिति में भी आपको अपनी टीम के लोगों से मशवरा करने के बाद ही कोई निर्णायक फैसला लेना चाहिये। ये मंत्री व प्रबंधक आपको विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने में सहायता करते हैं, जिसका अभाव, अकेले विश्लेषण करने की परिस्थिति में, आपको हानि पहुँचा सकता है।

पुलिस तंत्र में भी 'अमात्य' होते हैं। पुलिस कमिश्नर के पद पर होते हुए शिवनंदन के पास भी प्रबंधक थे जो कि डीसीपी (डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस) थे व विभिन्न क्षेत्रों का कार्य देखते थे। वह उनसे नियमित मंत्रणा करते थे व उनके द्वारा दी गई जानकारीयों व अंतर्दृष्टियों का उपयोग शहर में होने वाली घटनाओं को समझने में करते थे।

इससे उनका ज्ञान बढ़ा। उन्होंने अपने डीसीपी द्वारा दी गई प्रत्येक रिपोर्ट व जानकारी को गम्भीरता से लिया व इसे अन्य जानकारीयों से जोड़कर एक पूरा परिप्रेक्ष्य बनाया। उनके पास अपने स्वयं के सूचना देने वाले खोत थे, जिनसे वे मिली हुई जानकारी की सत्यता परख लेते थे। इन सभी के मूल में था एक खुला दिमाग रखना व परोक्ष या अपरोक्ष रूप में मिलने वाली प्रत्येक जानकारी का सम्मान करना।

यदि शिवनंदन के साथ उनके सक्षम व प्रभावकारी “अमात्य” न होते, जो कि हर कठिन समय में उनके साथ खड़े रहे तो वे अपने कैरियर में सफल न हुए होते।

एक राजा अपने मंत्रियों के बिना अपूर्ण ही रहता है तथा एक मंत्री भी राजा के बिना कभी पूरा नहीं हो सकता। वे दोनों एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं और एक-दूसरे का प्रतिबिंब होते हैं। उनके बीच का सामंजस्य संगठन को तेजी से विकसित करता है। उनका एक दूसरे में विश्वास ही फल प्राप्ति के प्रयत्नों को आवश्यक गति देता है।

यहाँ यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि प्रत्येक प्रबंधक में नेता बनने की सम्भावना

होती है और प्रत्येक नेता कभी एक अच्छा प्रबंधक रहा होता है। एक अच्छे नेता की शुरुआत एक अच्छे अनुयायी के रूप में होती है।

आईये अब कुछ देर रुकें और आपने जो अब तक पढ़ा, उस पर विचार करें:-

यह पुस्तक आपको “सोचने के लिये” प्रोत्साहित करती है। चाणक्य के अनुसार सोचना, पहला गुण है जिसका विकास प्रत्येक नेता को करना होता है। सोचने की पद्धति का एक और नाम है- आन्विकशिकी, जिसका अर्थ है दर्शन व एक बुद्धिमान व्यक्ति।

इस कुछ देर के विराम में आपके लिये एक प्रश्न है, इस पर विचार करें:- आप दिन का कितना समय सोचने में बिताते हैं? क्या आपने अपने दैनिक कार्यक्रम में से कुछ समय मात्र सोचने के लिए रखा है?

सोचने के बारे में सोचना, आपको एक महान नेता बनाता है।

भाग ब



चाणक्य के अनुसार प्रबंधन

अर्थशास्त्र में पढ़ाने के एक विशिष्ट व दिलचस्प तरीके का प्रयोग किया गया है और वह है सूत्रों द्वारा। ये एकाकी वाक्य अपने आप में उत्कृष्ट व गहरी अंतर्दृष्टियों से परिपूर्ण हैं और यही बात प्रबंधन की परिभाषा पर भी लागू होती है जो कि पहली पुस्तक के पन्द्रहवें अध्याय के बयालिसवें सूत्र में दी गयी है, “कार्य आरम्भ करने के साधन, सामग्री व कार्य में लगे लोगों की उत्कृष्टता, स्थान व समय का (उचित) प्रभाजन, असफलता से निबटने की तैयारी (व), कार्य की संपूर्णता, यही विमर्श (प्रबंधन) के पांच पक्ष हैं।”

इस एक सूत्र में चाणक्य ने प्रबंधन के पाँच सिद्धान्तों को परिभाषित किया है:

- । कार्य/परियोजनाओं को आरम्भ करने के साधन
- । सामग्री व श्रम शक्ति की उत्कृष्टता
- । उचित स्थान व समय,
- । असफलता से निबटने की तैयारी
- । कार्य की संपूर्णता

प्रबंधन के सभी प्रचलित सिद्धान्त व अवधारणाएँ किन्हीं विशिष्ट सिद्धान्तों पर आधारित हैं। ये वे मूल अवधारणाएँ हैं जिनके आधार पर एक प्रबंधक की कार्यकुशलता, संगठन की उत्पादकता व लक्ष्य प्राप्ति में सफलता को मापा जाता है। प्रबंधन को परिभाषित व उसका विस्तृत वर्णन करने वाली कई भारी-भरकम पुस्तकें उपलब्ध हैं, किन्तु चाणक्य ने अपने एक सूत्र में ही प्रबंधन की सर्वाधिक परिष्कृत परिभाषा दे दी है।

आइये चाणक्य द्वारा दिये गये प्रबंधन के पाँच सिद्धान्तों पर दृष्टि डालें:-

► कार्य/परियोजनाओं को आरम्भ करने के साधन

प्रत्येक संगठन को कार्यों व परियोजनाओं की आवश्यकता होती है, जिनका प्रबंधन वे कर सकें। हालांकि सर्वोत्तम प्रबंधक न केवल अपने वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिये गये कार्यों की जिम्मेदारी लेता है, अपितु अपने स्वयं की परियोजनाओं का निर्माण करता है। स्टीवन कोवी अपनी पुस्तक “द सेवन हैबिट्स ऑफ हाइली इफैक्टिव पिपल” में इसके लिये ‘प्रोएक्टिव’ अर्थात् सक्रिय या आगे बढ़कर काम करने वाला, शब्द का प्रयोग करते हैं। यह एक अच्छे नेता व मैनेजर का महत्वपूर्ण गुण है।

► सामग्री व श्रमशक्ति की उत्कृष्टता

एक प्रबंधक को अपना कार्य पूरा करने के लिये संसाधन मुहैया कराये जाते हैं, जिनका उपयोग उसे अपने विवेक

से करना होता है। इन संसाधनों में वे लोग शामिल हैं जो उसके मातहत काम करने वाले हैं तथा वह सामग्री भी जिसका उपयोग उसे व उसकी टीम को करना है। एक अच्छा मैनेजर न केवल अपनी टीम को उत्कृष्ट उत्पादकता वाली बनाता है, अपितु यह भी सुनिश्चित करता है कि उसे उपलब्ध संसाधनों जैसे कि मशीनें, स्थान, बजट आदि का भी समुचित उपयोग हो।

► उचित स्थान व समय

प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, कदम उठाने के लिये सही स्थान व समय के बारे में निर्णय लेना। जैसा कि युद्ध के मैदान में भी होता है। समय बहुत महत्वपूर्ण हैं दुश्मन पर कब हमला बोला जाये? इस प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है। इसके लिये ध्यानपूर्वक तैयार की गई योजना, विश्लेषण व धैर्य की आवश्यकता होती है। “सही समय” की समझ व्यक्ति को अनुभव, ज्ञान व अन्य स्रोतों से मिली जानकारी के द्वारा ही आ पाती है।

► असफलता की तैयारी

प्रत्येक कदम की योजना ध्यानपूर्वक बनायी जानी चाहिये और इसमें दो विकल्पों पर विचार किया जाना चाहिये- सफलता एक बेहतरीन परिदृश्य, जिसमें सब कुछ योजना के अनुरूप हो व कार्य सफल रहें तथा दूसरा सबसे बुरी स्थिति या असफलता जिसमें कुछ भी ठीक न रहे। प्रत्येक कदम के लिये एक अन्य योजना भी होनी चाहिये। व्यक्ति का हर परिस्थिति के लिये तैयार रहना आवश्यक है और असफलता की परिस्थिति के लिये भी उसके पास एक विकल्प होना जरूरी है। एक बार एक उद्योगपति से उसकी सफलता का कारण पूछा गया जिसके उत्तर में उन्होंने कहा- मैं हर कदम पर आ सकने वाली विफलता पर विचार करता हूँ। मैं कार्य आरम्भ करने से पहले ही हर वैकल्पिक कदम की योजना कर लेता हूँ। यह ऐसा ही है कि आप प्लान A, प्लान B व प्लान तैयार करके रखें।

► कार्य की संपूर्णता

आखिरकार, प्रबंधन का उद्देश्य फल पाना ही है। यह बहुत आवश्यक है कि आपके पास आप की उद्देश्य पूर्ति को मापने के पैमाने हों। प्रत्येक परियोजना एक लक्ष्य की रूपरेखा के साथ आरम्भ की जाती है। इस लक्ष्य को पाने की प्रक्रिया का विकास आगे बढ़ते हुए हो सकता है, किन्तु अंततः लक्ष्य की प्राप्ति ही ध्येय है, चाहे उसे पाने के लिये योजनाबद्ध तरीके को छोड़कर कोई अन्य तरीका ही क्यों न अपनाना पड़े।

► चाणक्य के अनुसार अच्छे प्रबंधक के गुण

एक पेशेवर/प्रोफेशनल व्यक्ति मूल रूप से सेवाएँ देने वाला होता है। इस सेवा में उनका पूरा व्यक्तित्व सम्मिलित रहता है। वास्तविक अर्थों में उनकी पेशेवर सेवाएँ उनके व्यक्तिगत अस्तित्व से भिन्न नहीं हो सकतीं। उनके पास बेचने के लिये कोई वस्तु नहीं होती, न ही जोतने के लिए कोई खेत, उनकी एकमात्र पूंजी वे स्वयं ही होते हैं।

यदि वे सत्यनिष्ठ नहीं हैं, तो उनका कोई मूल्य नहीं किन्तु यदि उनमें यह गुण है तो वे अमूल्य हैं। उनकी कीमत या तो कुछ नहीं होती या यह असीमित होती है।

अतः अपना मूल्य तय नहीं करें। अपनी आत्मा का बाज़ार मूल्य तय करके आप स्वयं की कीमत घटा लेते हैं।

प्रेम की तरह प्रतिभा की उपयोगिता भी उसे खर्च करने में है और यह कभी समाप्त नहीं होती।

यह ठीक है कि मनुष्य के लिये भोजन आवश्यक है। अतः अपनी सेवाओं के लिये आप एक उचित मूल्य अवश्य तय करें। लेकिन कभी भी अपने महान कार्य को, मिलने वाले पारिश्रमिक से तोलने के भ्रम में न पड़ें, चाहे यह धन के रूप में हो, शक्ति के या यश के।

- न्यायधीश एल्बर्ट पी. टटल.

एक पेशेवर व्यक्ति प्रत्येक संगठन के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। आधुनिक संगठनों से जुड़े पेशेवर प्रबंधकों के काम में

सत्यनिष्ठा व सेवा उन्मुखता की झलक आवश्यक है। उनकी एकमात्रा संपत्ति वे स्वयं ही है।

हमने पिछले अध्याय में देखा कि नेता को आत्म-प्रेरित व प्रेरणादायक होना चाहिये। वह उस मजबूत चट्टान की तरह है जो तूफान में भी खड़ी रहती है। वह उस प्रकाश स्तंभ की तरह है जो दूसरों को रास्ता बताता है। वह काले बादलों में छुपी उम्मीद की किरण की तरह है।

चाणक्य के अमात्य-प्रबंधक-में भी ये सभी व कुछ अन्य गुण भी होने चाहिए। आइये, फिर से अर्थशास्त्र की ओर चले और जाने कि एक आदर्श प्रबंधक/मंत्री में कौन से गुण होना आवश्यक है।

अर्थशास्त्र की छठी पुस्तक के पहले अध्याय के चौथे से छठे सूत्रों में चाणक्य ने अमात्य के गुणों का वर्णन किया है, वे हैं:-

- ▶ सीखने की इच्छा
- ▶ स्मरण शक्ति
- ▶ पूर्णरूप से समझना
- ▶ सत्य जानने की अभिलाषा
- ▶ सेना का नेतृत्व करने की योग्यता
- ▶ शब्दों की मधुरता

इन गुणों व उनकी महत्ता को समझने के लिये कल्पना करें कि आप एक प्रबंधक हैं। अब सोचें कि क्या आप में उपरोक्त गुण हैं? यदि नहीं, तो आप उनका विकास कैसे करेंगे?

ध्यान दें एक नेता व प्रबंधक के गुणों की तुलना करने पर आप कई समानताएँ पायेंगे। जैसा कि पहले भी कहा गया है, ये दोनों एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं।

▶ सीखने की इच्छा

एक नेता को निरंतर सीखते रहना होता है। इसी गुण का एक प्रबंधक में होना भी अनिवार्य है। इस गुण के अभाव में एक प्रबंधक की व्यावसायिक प्रगति थम जाती है और नीरसता छाने लगती है। कार्यालयों में कई बार लोग यह सोच कर खुश होते हैं, “धन्यवाद ईश्वर, आज शुक्रवार है!” ऐसा क्यों? क्या भगवान ने रविवार व सोमवार में कुछ अंतर रखा है? क्या सूरज कहता है कि, “चूंकि आज रविवार है, इसलिए मेरी चमक अधिक होगी और अन्य दिनों में अपना काम नहीं करूंगा?”

जब आप एक दिनचर्या में बंध जाते हैं, एक ही प्रकार की सोच व कार्य करने के तरीके में फंस जाते हैं और कोई नया ज्ञान या नया सीखने को नहीं है तो एकरसता व ऊब स्वाभाविक है। ऐसे में आपको सप्ताहांत और छुट्टियों की आवश्यकता होती है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि आपको अवकाश नहीं लेना चाहिये या अपने परिवार व मित्रों के साथ समय नहीं बिताना चाहिए, अपितु प्रत्येक दिन उत्सव का दिन हो सकता है। आपका सोमवार भी उतना ही खुशनुमा हो सकता है, जितना कि शनिवार या रविवार।

सत्ताईस वर्ष की आयु से, जब मैंने एक उद्यमकर्त्ता का जीवन आरम्भ किया, मैं सप्ताह के दिनों में अंतर करना भूल गया हूँ।

प्रत्येक दिन एक उत्सव है, क्योंकि मैं प्रत्येक दिन कुछ सीख रहा हूँ और मुझे कभी अपने आप से ऊब नहीं हुई। मुझे उन दिनों से घृणा होती है जब मेरे पास करने को कोई काम नहीं होता। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं एक वर्कोहलिक हूँ या काम करने की आदत से मजबूर हूँ। मैं अपने काम से प्यार करता हूँ और मुझे इसमें खुशी मिलती है। मैं पुस्तकें पढ़ता हूँ, संगीत सुनता हूँ, सिनेमा देखता हूँ और अपने परिवार व मित्रों के साथ लम्बी ड्राइव पर भी जाता हूँ।

एक प्रबंधक भी यह हासिल कर सकता है, यदि वह काम को मात्र पूरी की जाने वाली जिम्मेदारी न समझकर उसे

एक सीखने का मौका माने। लोग यह सोच सकते हैं कि ऐसी सोच तभी बन सकती है जब आप कंपनी के मालिक हों या स्वयं के बॉस हों। यह सच नहीं है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो कि मालिक नहीं हैं, बल्कि प्रोफेशनलस् व मैनेजर हैं। ये लोग अपना जीवन एक वीकएंड से अगले तक, व एक वेतन वृद्धि से अगली या एक नौकरी से दूसरी नौकरी के बीच ही नहीं सीमित रखते हैं।

इन लोगों में सीखने की इच्छा है। वे बहुत मेहनत करते हैं और बहुत कुछ सीखते हैं। वे कामकाज से संबंधित कागज़ों को पढ़कर, अन्य लोगों को सुनकर, यात्रा करते हुए या कंपनी की कोई समस्या सुलझाते हुए सीखते रहते हैं। वे अपने वरिष्ठों व कनिष्ठों के अनुभवों से, अपने बच्चों, परिवारों, मित्रों व उनके परामर्शदाताओं से भी सीखते रहते हैं। वे व्यावसायिक पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, टेलीविजन चैनलों, रेडियो, नाटकों एवं सिनेमा से; बैठकों, सेमिनारों व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से सीखते रहते हैं। वे, उगते सूर्य, उड़ते बादल या तेजी से चलती चींटी को देखकर जीवन के पाठ सीखते हैं। चूँकि उनकी मानसिकता सीखने की होती है। वे हर संभव वस्तु से सीखते रहते हैं। पूरा ब्रह्माण्ड उनकी पाठशाला होता है और इस मानसिक स्थिति में वे गहरे विचारक, चिन्तनशील व गूढ़ समस्याओं के समाधान ढूँढने वाले व्यक्ति बन जाते हैं।

► स्मरण शक्ति

एक सेमिनार में किसी ने मुझसे प्रश्न किया, “आपके जीवन की सबसे बड़ी समस्या क्या है?” मैंने तुरंत उत्तर दिया, “याद न रख पाना और समय आने पर ज्ञान का उपयोग न कर पाना।”

भारत के प्राचीन ग्रंथों में ऐसी कई कहानियाँ हैं, जहाँ एक प्रतिभाशाली छात्र को उसके गुरु ने शाप दिया, “जब ज्ञान को प्रयोग करने का समय आयेगा, तुम सब कुछ भूल जाओगे।” यही अभिशाप महाभारत के महानतम योद्धा कर्ण को उनके गुरु परशुराम ने दिया, जब उन्हें पता चला कि कर्ण ने उनसे झूठ बोला था।

इसी शाप के कारण कर्ण को उनके प्रतिद्वंद्वी अर्जुन ने कम प्रतिभावान होते हुए भी हरा दिया। कर्ण युद्ध विद्या में पारंगत थे, किंतु आवश्यकता पड़ने पर वे जो चाहते थे, याद नहीं कर पाये और इसी कारण उन्हें अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा।

इस प्रकार ज्ञान एकत्रित करना और उसे स्मरण कर उस समय उसका प्रयोग करना, जब उसकी वास्तव में आवश्यकता है, एक ऐसा गुण है जिसका विकास प्रत्येक प्रबंधक को करना होता है। स्वामी चिन्मयानंद हंसते हुए कहते हैं, “परीक्षा से पहले मैं समझदार (वाइज़) होता हूँ, किंतु परीक्षा के दौरान मैं ‘समझ से विरक्त’ (अदरवाइज़) हो जाता हूँ।”

स्मरण शक्ति मात्र याद रखने की योग्यता या सीखा हुआ दोहराना नहीं है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें आप अपने पुराने डेटाबेस में जाते हैं, वह चीज़ चुनते हैं, जिसकी वास्तव में आवश्यकता है, मौजूदा समस्या को जांचते हैं, सुसंगत उपाय चुनते हैं और एक कार्ययोजना बनाते हैं और यह सब कम से कम समय में करना होता है। फाइटर पायलटों को एक सेकेण्ड से कम समय में फैसले लेने होते हैं। पुलिसकर्मियों को कार्यवाही करने का फैसला घटनास्थल पर ही तुरंत करना होता है।

क्या आपके जीवन में कभी ऐसा मौका आया है, जब आप एक कठिन परिस्थिति में बिल्कुल एकाकी हो और जब आपका पूरा प्रशिक्षण, किताबी ज्ञान, दूसरों से मिली सलाह, सभी कुछ आपके काम आये हों और आपने उनके अनुरूप उसी क्षण कोई फैसला लिया हो?

वास्तविक अर्थों में यही स्मरणशक्ति है। यह बुद्धिमानी का कार्यरूप है। ऐसे में न तो संदर्भ देखने का समय होता है, न सलाह लेने का और न ही मिलकर विचार करना सम्भव होता है। ऐसे में केवल आप होते हैं और आपकी परीक्षा की घड़ी। आप एक महत्वपूर्ण फैसला लेते हैं और आगे में कूद पड़ते हैं, और फिर आप में एक अनजानी शक्ति का उदय होता है। आपके भीतर का नेता जन्म लेता है।

► पूर्णरूप से समझना

आपसी तालमेल विस्तृत व संपूर्ण होना चाहिए। युवा प्रेमी अक्सर “मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूँ।” जैसे वाक्यों

का प्रयोग करते हैं, किंतु ये मात्रा सतही शब्द होते हैं। वास्तविक प्रेम एक-दूसरे को पूरी तरह समझने व बिना शर्त स्वीकार करने का ही नाम है। एक वृद्ध दम्पति प्रेम का वास्तविक अर्थ समझते हैं। जब वृद्ध को भूख लगती है तो उसकी पत्नी जानती है। उसे भोजन मांगना नहीं पड़ता। जब वह खिन्न होती है तो वह समझता है। उन दोनों के बीच पूरा मानसिक सामंजस्य होता है।

इसी प्रकार एक नेता व प्रबंधक के बीच पूरा तालमेल होना चाहिए। यह सामंजस्य पहले दिन से नहीं आता। इसके लिए एक-दूसरे के साथ समय बिताना व लम्बे समय तक एक साथ काम करना आवश्यक है। किन्तु जब यह आपसी समझ परिपक्व हो जाती है तो आपस में संवादहीनता की स्थिति समाप्त हो जाती है, न 'क्यों', पूछा जाता है और न ही 'यदि' कहा जाता है, "उसने किया, मैंने नहीं" जैसी, कोई शिकायत नहीं होती। इस स्थिति पर पहुंचकर दोनों के बीच केवल मौन व एक गहरी शांति ही होती है।

राजा व अमात्य, या नेता व प्रबंधक को परिपक्वता के इसी स्तर पर पहुंचना होता है। वे दोनों मिलकर एक ऊंचे उद्देश्य के लिए काम करते हैं। दोनों के परिश्रम का लक्ष्य एक ही होता है। सम्भव है कि वे उद्देश्य तक पहुंचने के मार्ग पर एक-दूसरे से सहमत न हो व उनके मत अलग-अलग हो, किन्तु उनका लक्ष्य कभी विस्मृत नहीं होता।

दो व्यक्तियों के असहमत होने का अर्थ यह नहीं कि वे एक-दूसरे को नहीं समझते। वास्तव में जैसे कि आदित्य बिरला ग्रुप के सनतुप्त मिसरा, फिल्म चाणक्य स्पीक में कहते हैं, "यदि राजा व अमात्य एक विषय पर सहमत हों, तो इसका अर्थ है कि दोनों में से किसी एक की उपयोगिता समाप्त हो चुकी है।" "शक्ति का निवास विभिन्नताओं में है, समानताओं में नहीं।" यह मानना है मैनेजमेंट गुरु स्टीवन कोवी का।

► सत्य के प्रति उत्सुकता

सत्य एक ही है किन्तु उसके कई पहलू हैं। एक सच्चा प्रबंधक सदा पूरे सत्य को समझने का प्रयत्न करेगा। यहां हाथी व पांच दृष्टिहीनों की कहानी प्रसंगोचित है। इस कहानी में प्रत्येक दृष्टिहीन ने हाथी के एक अलग हिस्से को छुआ और उसका वर्णन भी अलग किया। किसी को वह स्तंभ लगा, किसी को झाड़ू, किसी को पंखा और किसी को दीवार, यह सुनकर एक अच्छी आंखों वाले व्यक्ति ने कहा, "अपनी- अपनी जगह आप सभी ठीक हैं, किन्तु हाथी फिर भी अलग ही है।" प्रत्येक के पास अपना अलग दृष्टिकोण था, किन्तु वे विस्तृत परिदृश्य से पूरी तरह अनभिज्ञ थे। पूरी सच्चाई देखने के लिए एक संपूर्ण दृष्टि वाले विवेकपूर्ण व्यक्ति की आवश्यकता थी।

एक प्रबंधक को इसी 'विस्तृत परिदृश्यों' वाले दृष्टिकोण के विकास की आवश्यकता होती है। सामने आयी एक समस्या के प्रति विभिन्न व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण रखते हैं। इस स्थिति में उसे सारी जानकारी एकत्र कर उसे एक बड़ी कथा में पिरोना होता है। इसी प्रक्रिया में सच सामने आ जाता है।

अच्छे प्रबंधकों के लिए आवश्यक है कि उन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों का ज्ञान हो और वे उनका सम्मान भी करें। किन्तु उनका अभिप्राय सत्य होना चाहिए तथा उन्हें सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपना उद्देश्य न भूलें।

सत्य जानने का अर्थ अगला कदम उठाना भी है। यदि सत्य जानने के बाद आप इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि एक विशेष कार्यवाही की आवश्यकता है तो एक प्रबंधक होने के नाते आपके लिये अपने निर्णय को कार्यान्वित करना आवश्यक है।

उदाहरण के लिए महात्मा गांधी को विश्वास था कि स्वतंत्रता अहिंसा द्वारा ही पायी जा सकती है। किन्तु उनके सिद्धांत पर किसी ने विश्वास न किया होता, यदि वे अपने प्रयत्न में असफल रहे होते। उन्हें "सत्य के साथ उनके प्रयोगों" को अपने विचारों व क्रियाओं में प्रदर्शित करना पड़ा। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में निभाई अपनी भूमिका द्वारा उन्होंने यह सिद्ध किया और भारत व पूरे विश्व में यश तथा सम्मान पाया। उनका कहना था, "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।"

► एक सेना का नेतृत्व करने में सक्षम

प्रबंधक की एक टीम होती है जो कार्यों का संपादन करती है। अमात्य को यह सुनिश्चित करना होता है कि उसकी टीम राजा के निर्णय को क्रियान्वित करे। किन्तु टीम के सदस्य यह तभी करेंगे जब वे अमात्य या प्रबंधक को

अपना नेता मानें।

अतः एक प्रबंधक अथवा अमात्य का एक प्रेरणादायी नेता होना अनिवार्य है।

वास्तविक नेतृत्व प्रेरक होता है। एक प्रबंधक अपने वरिष्ठों से यह नहीं कह सकता कि, “मेरी टीम मेरी बात नहीं सुनती, कृपया सहायता करें।” एक प्रबंधक एक नेता होता है अतः वह अपना दुखड़ा नहीं रो सकता।

नेतृत्व सदा पाया जाता है मांगा नहीं जाता। प्रभुत्व व प्रभाव कभी भी थोपे नहीं जाने चाहिए; लोगों को उन्हें स्वेच्छा से स्वीकार करना चाहिए।

आपको उस बांसुरी वाले की तरह होना चाहिए जो बारी-बारी से चूहों व बच्चों को बांसुरी की धुन से बांध कर ले गया था आपकी टीम आपके स्वप्न व दूरदर्शिता के संगीत से सम्मोहित हो आपके आदेश पर कुछ भी करने को तैयार होनी चाहिए। यह है चमत्कारी नेतृत्व। यह है रूपांतरकारी नेतृत्व। ये वे गुण हैं, जिनका विकास प्रबंधक को स्वयं में करना चाहिए।

एक प्रसिद्ध उक्ति याद करें, “लोग संगठन नहीं छोड़ते हैं, वे अपने बॉस/प्रबंधक छोड़ते हैं।” अर्थात् उनका बॉस/प्रबंधक इतना प्रेरणादायी नहीं था कि वे कंपनी में बने रहते।

ऐसे प्रबंधक बने जिसके पास एक ऐसी सेना का नेतृत्व करने की क्षमता है जो किसी भी चुनौती का सामना करने को हरदम तत्पर है। आपके भीतर के प्रबंधक को एक नेता में रूपांतरित करने की आवश्यकता है।

► मृदुभाषी

मृदुभाषी होने का अर्थ यह नहीं है कि आप प्रत्येक व्यक्ति से भले बने रहें पुलिस बल में जहां आपको कानून व व्यवस्था की स्थिति बनाये रखनी होती है तथा आतंकवाद व संगठित अपराधों जैसी चुनौतियों का सामना करना होता है, व्यक्ति सदा मृदुभाषी नहीं बना रह सकता। किन्तु जहां भी सम्भव हो यह आवश्यक है कि सामान्य रूप से बात करें, कठिनतम परिस्थितियों को भी मीडिया व पुलिस बल द्वारा लोगों के सामने सरलता पूर्वक प्रस्तुत करें।

संगठन के प्रत्येक व्यक्ति के पास नेता की बात समझने की योग्यता नहीं होती। ऐसे में प्रबंधक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रबंधक, वरिष्ठ प्रबंधकों अथवा बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स व कर्मचारियों तथा श्रमिकों के बीच सेतु का कार्य करता है। मैनेजर एक सैंडविच के भरावन की तरह है। जी हां, भरावन ही सैंडविच को विशिष्ट बनाती है।

इसी प्रकार प्रबंधक को भी एक मोटी भरावन की तरह होना चाहिए। संगठन की आवश्यकताएं व अपेक्षाएं प्रत्येक कर्मी तक पहुंचाना उसी का उत्तरदायित्व है। जब तक आपके दल का प्रत्येक सदस्य संगठन के लक्ष्य व दृष्टिकोण से जुड़ा नहीं होगा, वे अपने कार्य का निष्पादन नहीं कर पायेंगे।

पुलिस बल में एक कांस्टेबल को भी भारतीय संविधान उसी तरह पढ़ाया जाता है जैसे कि डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस को। इससे टीम के शीर्ष से लेकर अंतिम व्यक्ति तक सभी एक समान उद्देश्य से जुड़ जाते हैं।

दूसरी ओर कर्मचारियों व पैदल सैनिकों की समस्याओं से वरिष्ठ अधिकारियों का अवगत होना भी आवश्यक है। यहां भी प्रबंधक एक महत्वपूर्ण व नाजुक भूमिका अदा करता है। अपनी टीम की समस्याओं को वरिष्ठ अधिकारियों के सामने उनके हल सहित रखना व उसके लिए उनका अनुमोदन ले लेना अपने आप में एक कौशल से कम नहीं, फिर चाहे वह बजट का अनुमोदन हो अथवा पिकनिक का आयोजन। यह करवा लेना व अपने दल को प्रसन्न रखना प्रबंधन व नेतृत्व का आवश्यक तत्व है।

आने वाले अध्यायों में हम उन उदाहरणों पर चर्चा करेंगे कि शिवनंदन ने किस प्रकार पुलिस बल में अपनी टीम से अपने लिए कार्य करवाया। किन्तु इसके लिए उन्हें गृहमंत्री तथा सरकार से कई परियोजनाओं की अनुमति लेनी पड़ी। और यह करने के लिए उन्हें उत्कृष्ट संप्रेषण का प्रयोग भी करना पड़ा।

सत्य महत्वपूर्ण हैं किन्तु सत्य को ऐसे प्रस्तुत करना कि लोग उसे आसानी से स्वीकार कर लें, अधिक महत्वपूर्ण है।

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन

दो लाख कर्मचारियोंवाले पुलिस बल का प्रबंधन

एक नेता के रूप में शिवनंदन का कार्य था महाराष्ट्र में पुलिसबल के दो लाख महिला व पुरुष कर्मियों का प्रबंधन। पुलिस बल के लिये वह एक नेता थे, किन्तु सरकार के लिए वे एक प्रबंधक थे जिनका काम कानून व व्यवस्था की स्थिति का प्रबंधन देखना था। अपने जीवन का सबसे लम्बा व अच्छा समय उन्होंने महाराष्ट्र सरकार के साथ कार्य करने में बिताया व सेवानिवृत्ति के समय वे राज्य के सर्वोच्च पुलिस पद डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (डी.जी.पी.) के पद पर थे।

शिवनंदन स्वीकार करते हैं, “जब मैं अपने बीते कार्यकाल पर नज़र डालता हूं तो विभिन्न सरकारी कर्मचारियों, राजनीतिज्ञों, व स्थानीय, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत उन सभी, सरकारी अधिकारियों को धन्यवाद देते नहीं थकता जिन्होंने मुझे असीमित समर्थन दिया। मुझे मिले परिणामों से मैं इतना अभिभूत हूं कि यदि मुझे फिर से मौका मिले तो मैं फिर इसी तरह, इस पुलिस बल के साथ कार्य करना चाहूंगा।”

अधिकांश आई.पी.एस. अधिकारी अत्यंत बुद्धिमान लोग होते हैं, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में आने का निर्णय लिया। उन्हें एक बड़े कार्यबल को चलाने व उसका प्रबंधन करने के लिए विश्वस्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है। एक नेता व प्रबंधक के पद पर होते हुए उनके कार्य की तुलना एक बहुराष्ट्रीय संगठन को चलाने के कार्यभार से की जा सकती है, फिर भी कारपोरेट करियर की तुलना में यहां अपार चुनौतियां हैं।

शिवनंदन बताते हैं कि उन्होंने उन चुनौतियों का मुकाबला कैसे किया। “मेरे लिये ‘वास्तविक प्रबंधन’ की शुरुआत ‘कार्मिक प्रबंधन’ व ‘जैसे-जैसे परिवर्तन आये उसे स्वीकार करने’ से होती है। परिवर्तन का विरोध हमारी उन्नति रोक देता है।”

आइये देखें कि किस प्रकार चाणक्य द्वारा बताये गये एक नेता व अच्छे प्रबंधक के गुण शिवनंदन के अनुभवों में प्रदर्शित होते हैं।

► सीखने की इच्छा

सबसे बड़ी चुनौती है हर स्थानांतरण के साथ आने वाले प्रबल परिवर्तनों से मुकाबला करना। एक कॉर्पोरेट करियर के विपरित, जहां आप अपनी कंपनी व वरिष्ठ अधिकारियों से परिचित होते हैं व आप अपने मातहतों को साक्षात्कार द्वारा चुन भी सकते हैं, एक आई.पी.एस. अधिकारी के लिए सभी कुछ अनजान होता है। उसे अचानक ही एक सुबह सूचित किया जाता है कि एक मैट्रो शहर से उसका स्थानांतरण नक्सल प्रभावित इलाके के जंगल में कर दिया गया है और उसे नये स्थान की संस्कृति व वातावरण के बारे में कोई जानकारी नहीं होती।

नये स्थान पर राजनैतिक अधिकार या सत्ता पिछली जगह से भिन्न हो सकती है। वे किसी अन्य दल अथवा पृष्ठभूमि से हो सकते हैं। हो सकता है कि आपका निकटतम वरिष्ठ अधिकारी, जिसे आप रिपोर्ट करते थे, उसी का स्थानांतरण अथवा पदोन्नति हो जाये। हो सकता है कि उनके मातहत कार्य करने वाले वहां 20-20 वर्षों से कार्य कर रहे हों, जबकि वह क्षेत्र अधिकारी के लिए बिल्कुल नया हो।

इसके अतिरिक्त अधिकारी के परिवार को भी इन स्थानांतरणों से मेल बिठाना होता है। मौजूदा घर छोड़ने व नये स्थान पर कार्यभार ग्रहण करने के लिए बहुत कम समय मिलता है। ये स्थितियां परिवार के लिए भी कई चुनौतियां लाती हैं। स्थानांतरण का आदेश मात्रा कागज़ का टुकड़ा नहीं होता, यह एक आदेश होता है जो जीवन के हर पक्ष को प्रभावित कर सकता है। एक अधिकारी के कार्यकाल में कई बार उसके वरिष्ठ अधिकारी उसका स्थानांतरण करते हैं। और कई बार अधिकारी को उसके मातहत कार्य करने वाले हजारों स्त्री-पुरुषों के स्थानांतरण संबंधी निर्णय लेने होते हैं।

किन्तु पुलिसबल को इस वास्तविकता का सामना करने व स्वीकार करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। जो प्रत्येक नये कार्यभार व चुनौती को मुस्कुरा कर स्वीकार करते हैं, वे सदा अप्रभावित रहते हैं। वे जिस स्थान पर भी जाते हैं, वहां परिणाम देते हैं। यह वैसा ही है जैसे कि हर बार एक नयी पेंटिंग बनाना क्योंकि केनवास ही नया है। यह संभव बनाने के लिए आपका एक कलाकार व एक नीतिज्ञ होना आवश्यक है।

अपने अनुभव को ब्रश की तरह और नयी टीम को रंगों की तरह प्रयोग कर, वह अपने नये केनवास या नये कार्यभार की ओर बढ़ता है- एक नये दृष्टिकोण व इस आशा के साथ कि आप इस स्थान को पूरी तरह रूपांतरित कर देंगे।

जब एक नया पुलिस अधिकारी एक नये स्थान पर जाता है तो चुनौतियां मात्रा उसी के लिए नहीं होती अपितु वहां कार्य कर रहे लोगों को भी परिवर्तन के लिए तैयार रहना होता है। वे आने वाले अधिकारी, उसकी कार्यप्रणाली व प्राथमिकताओं के बारे में विचार कर रहे होते हैं। वह व्यक्ति उनके मौजूदा तन्त्र में एक बाहरी तत्व की तरह होता है। आरम्भ में प्रतिरोध होता है और वह स्वाभाविक भी है। किन्तु यह अधिकारी हर स्थान पर सकारात्मक परिवर्तन लाने वाला बन जाये तो उसके अगले स्थानांतरण तक वहां के लोग आशा करने लगते हैं कि काश यह कुछ दिन और ठहर जाये। किसी भी अधिकारी के सेवानिवृत्त होने या स्थानांतरण के समय दिया जाने वाला यह सबसे अच्छा उपहार होता है।

शिवनंदन कहते हैं, “मेरे 36 वर्ष के कार्यकाल में स्थानांतरण की जानकारी मिलने पर मैंने कभी अपना संतुलन नहीं खोया। मैं सदा अपने परिवार के साथ अपना बोरिया-बिस्तर बांध कर एक अनजान किन्तु सकारात्मक भविष्य में जाने को तैयार रहता था। मेरे बीस स्थानांतरण हुए और मैंने छब्बीस घर बदले।” इस अनुभव से शिवनंदन व उनका परिवार मजबूत भी हुआ व उनकी स्वयं की परिस्थिति के अनुरूप ढालने की क्षमता का भी विकास हुआ। इससे उन्होंने नई भाषाएं सीखीं, व नई संस्कृतियों व समूहों से उनका परिचय भी बढ़ा।

कई स्थानांतरणों के बावजूद उनमें प्रत्येक स्थानांतरण के अनुभव से कुछ नया सीखने की प्रवृत्ति बनी रही। इस तरह हर स्थानांतरण व नये कार्यभार के साथ उन्होंने अपनी प्रबंधन व नेतृत्व की क्षमताओं का विकास किया। अपनी व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करने के अतिरिक्त एक अधिकारी का मुख्य कार्य है नये स्थान पर अपने कार्यबल का प्रबंधन।

पुलिस बल की सबसे बड़ी चुनौती है- प्रशासन। एक सरकारी विभाग होने के नाते प्रशासन एक बड़ी मशीन की तरह है जो कि उसकी रीढ़ की हड्डी की तरह काम करता है। यदि आप कभी पुलिस थाने गये हैं तो आपने अनुभव किया होगा कि इस विभाग को कैसी प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करना होता है। यद्यपि प्रशासनिक सुधार जारी है किन्तु उनकी गति बहुत धीमी है। हालांकि, आज ई-शासन व कागज़ रहित (पेपर लैस) कार्यालयों की चर्चा होती है, किन्तु वास्तविक स्थिति इससे बहुत भिन्न है। यद्यपि टेक्नालॉजी के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाता है, किन्तु बारह घंटे ड्यूटी पर रहने वाले पुलिस कर्मियों के पास नये कोर्स में उपस्थित होकर नयी टेक्नालॉजी सीखने का समय ही नहीं होता।

एक प्रबंधन अनुसंधानकर्ता के रूप में यह मेरा व्यक्तिगत मत है कि प्रशासन का आरंभ दल के नेता व प्रबंधक से ही होता है। यह सिर्फ कागज़ी कार्यवाही ही नहीं होती, अपितु उसका संबंध कार्यालय के रूख व दृष्टिकोण से होता है। विशेषकर सरकारी कार्यालयों में यदि वरिष्ठ अधिकारी आपकी सहायता करने का निर्णय ले लेता है वो समस्या कुछ मिनटों में ही हल हो जाती है। यदि नहीं तो वर्षों तक आपको आवश्यक कागज़ या अनुमति नहीं मिलेगी। यदि आई.पी.एस या आई.ए.एस अधिकारी निर्णय कर लें तो वह पूरे स्थान का रूपांतरण कर सकता है। अन्यथा यह एक और स्थानांतरण होता है और अधिकारी यह कह कर मुक्ति पाना चाहते हैं कि “हमारा सिस्टम ही ऐसा है; मैं क्या कर सकता हूं।”

शिवनंदन की सीखने की इच्छा यहां भी काम आयी। उन्हें इस बात का श्रेय दिया जाता है कि उन्होंने अपने पूरे कार्यकाल में इस बात पर जोर दिया कि प्रशासन प्रणाली को आम आदमी के लिए सरल बनाया जाये। वे विश्वस्तरीय प्रशासन में विश्वास करते थे और अपने बनाये कई संस्थानों के लिए विश्वस्तरीय प्रणालियों व आई.एस.ओ जैसे प्रमाणपत्र भी हासिल किये। उन्होंने ठाणे जिले के आठ पुलिस थानों को आई.एस.ओ प्रमाणपत्र दिलवाये। इन संस्थानों में मानक संचालन प्रक्रियाओं (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसिजर्स- एस.ओ.पी) का पालन किया गया जो आने वाली कई पीढ़ियों को लाभान्वित करेगा।

आव्रजनप्रक्रिया के प्रभारी के पद पर रहते हुए (1987-91) उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी, उस ठेठ पुलिसिया अंदाज वाले कार्यालय में प्रचलित 'ना-ना' वाले वातावरण को 'हां-हां' वाले वातावरण में बदलना। इस बदलाव से शिवनंदन लाखों लोगों को पासपोर्ट, वीजा व अन्य पंजीकरण करवाने का लाभ दे पाये। सच्चाई यह है कि यहां मौजूद सभी विदेशी अपना वीजा बढ़वाने के लिए उनके पास जाते थे। इससे उन्हें ख्याति भी मिली व कई विदेशी मित्र भी।

सेंट जेवियर कॉलेज के पीछे स्थित स्पेशल ब्रांच 2 का कार्यालय, एक आम सरकारी कार्यालय जैसा ही था- धूल भरी फाइलों से भरा हुआ। जिसमें से आप सरलता से कोई फाइल नहीं निकाल सकते थे। वहां आगतुकों को बैठाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। यह वह कार्यालय था जहां मुंबई में रहने वाले सभी विदेशी अपना वीजा बढ़वाने व आवासीय परमिट बनवाने आते थे। इस कार्यालय का विदेशियों पर बहुत खराब प्रभाव पड़ता था। अतः शिवनंदन ने सबसे पहले इस कार्यालय का चेहरा बदलने के लिए एक सुसज्जित आगंतुक कक्ष का निर्माण किया व उसके रिसेप्शन के संचालन का दायित्व सुप्रशिक्षित महिला कर्मचारियों को सौंपा। उन्होंने एक रिकॉर्ड रूम भी बनवाया जहां सभी फाइलों को कायदे से रखा गया, ताकि समय पड़ने पर आवश्यक फाइल आसानी से मिल सके। कम अवधि हेतु वीजा बढ़ाने के लिए उन्होंने एक प्रणाली विकसित की जिसके अंतर्गत आवेदनकर्ता को सरलता पूर्वक कार्यालय के भूतल पर स्थित एक ही खिड़की से, चौबीस घंटे के भीतर अनुमति मिल जाती थी।

इससे पहले वीजा केवल तीन माह के लिए बढ़ाया जा सकता था और सभी विदेशियों को हर बार देश छोड़ते समय अपना आवासीय परमिट हवाई अड्डे पर स्थित आव्रजन कार्यालय में जमा कराना होता था। शिवनंदन ने इस परमिट का रंग- रूप बदल कर एक नया परमिट बनाया जो देखने में पासपोर्ट जैसा था और विदेशियों को उसे बार-बार जमा कराने की आवश्यकता नहीं थी। वे उसे अपने पास रख सकते थे। विदेशियों को वीजा लम्बे समय के लिए बढ़वाने की अनुमति भी दी गई। इससे उस कार्यालय के आसपास जमा हो जाने वाली विदेशियों की भीड़ काफी हद तक कम हो गयी। इसके साथ ही, पहली बार कार्यालय के रिकॉर्ड भी कम्प्यूटरीकृत किये गये।

शिवनंदन के इस कार्यकाल की कई घटनाएं यहां वर्णन करने योग्य हैं। एक बार उन्हें सूचना मिली की जापान की रेड आर्मी की कुछ लड़कियां हवाई अड्डे से गुजरने वाली हैं। शिवनंदन ने स्वयं उस जांच दल का नेतृत्व किया जो इन लड़कियों की जांच करने वाला था। जांच दल ने पाया कि पांच मित्रो लड़कियां ब्राऊन शुगर लेकर, झूठे पासपोर्ट पर मैड्रिड जा रही थीं। जब इन लड़कियों का सामना एक जापानी यात्री से कराया गया जिसने इनसे जापानी में प्रश्न किये तो सच्चाई सामने आ गयी। उनके सामान की तलाशी लेने पर 60 किलो आपत्तिजनक सामान पकड़ा गया।

एक अन्य अवसर पर एक हत्यारे ने जो कि कथित तौर पर अबू निडाल समूह का था, गैर कानूनी रूप से मुम्बई में प्रवेश कर एयर फ्रांस के चालक दल पर उनकी बस में घुसकर खतरनाक यूजी बन्दूक से हमला कर दिया। उसने बस में पांच हथगोले भी फेंके। इस हमले में पायलट के पेट में गोली लगी, किन्तु हमलावर को दो हिम्मती आव्रजन अधिकारियों ने सहार अंतर्राष्ट्रिय हवाई अड्डे पर पकड़ लिया। लगातार जांच व पूछताछ के आधार पर उस विदेशी को टाडा के अंतर्गत सज़ा दी गई।

शिवनंदन ने कुछ चुने हुए अधिकारियों का एक विशेष जांच दल बनाया। इन अधिकारियों ने प्रतिवर्ष 350 श्रीलंकाईयों को झूठे पासपोर्ट पर यूरोप जाते हुए पकड़ा। इन्होंने कई भारतीयों को भी झूठे पासपोर्ट पर अमेरिका जाने का प्रयत्न करते पकड़ा। इन प्रयासों से अमेरिकी सरकार इतनी प्रसन्न हुई कि उन्होंने अपने डिप्टी सेक्रेटरी जेम्स वार्डन को व्यक्तिगत रूप से अमेरिकी सरकार की कृतज्ञता व सराहना प्रकट करने के लिए भेजा।

शिवनंदन ने आव्रजन अधिकारियों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किये। इन कार्यक्रमों में सॉफ्ट स्किल जैसे कि विदेशियों का उन्हीं की भाषा में अभिवादन करना, उन्हें तुरंत क्लीअरेंस व एक विशेष रूप से

तैयार करवाया गया हैंड आउट, जिसमें नियमों व कानूनों की पूरी जानकारी थी देना, शामिल है।

आव्रजन अधिकारियों के उस भगीरथी प्रयास को कौन भूल सकता है जो उन्होंने कुवैत युद्ध के दौरान वहां फंसे भारतीयों को निकालने के लिए किया।

पुलिस कार्यालय में आज भी एक कॉरपोरेट ऑफिस का वातावरण है, जहां पुलिस अधिकारी टाई लगाते हैं और सब मुस्कुरा कर आपकी सहायता करने को तत्पर रहते हैं। हवाई अड्डे पर भी चीजों में बहुत सुधार आया है।

शिवनंदन की एडीशनल कमिश्नर ऑफ पुलिस (क्राइम) के पद पर कार्य करते हुए एक और बड़ी उपलब्धि थी-कम्प्यूटरीकरण। इस कार्य में ढाई करोड़ रुपये की लागत से मुंबई पुलिस के सभी कम्प्यूटर नेटवर्कों को एक इकाई में बदला गया। उनकी एक अन्य महान उपलब्धि रही है- अपराध के आंकड़ों का आधुनिकरण या अपडेट करना। इस प्रकार अपराधों की सूचना, जो पहले हाथ से लिखी जाती थी, उसे अब कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया, जिससे अब वह संगठन की स्मृति का भाग बन गई है।

शिवनंदन ने अपने कार्यकाल के दौरान यह भी सुनिश्चित किया कि विभाग का आंतरिक प्रशासन सुचारू रूप से चले, वेतन समय पर बांटा जाये तथा स्थानांतरण व पदोन्नतियों में भी देर न हो। इसका प्रभाव न केवल पूरे विभाग की सक्षमता व कार्यसम्पादन पर पड़ा अपितु इससे पुलिस बल का मनोबल भी बढ़ा।

► स्मरण शक्ति

एक नेता व प्रबंधक को यह सुनिश्चित करना होता है कि सभी तंत्र सुचारू रूप से कार्य करें किन्तु इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि वे व्यक्तिगत स्तर पर लोगों से जुड़ें। एक कार्यालय का प्रबंधन संभालने के लिए मानवीय भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता का होना आवश्यक है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अकेले नहीं रह सकता तथा उसे प्रशंसा व प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

पाश्चात्य समाज की एक बड़ी चुनौती है उनकी व्यक्तिपरक संस्कृति। एक विदेश यात्रा के दौरान, मेरी मुलाकात एक स्थानीय व्यक्ति से हुई, उसने मुझे बताया, “हमारी यातायात निरीक्षण प्रणाली इतनी सक्षम है कि यदि कोई दुर्घटना हो जाये तो एम्बुलेंस दो मिनट से कम समय में वहां पहुंच जाती है।” “सच तो यह है कि किसी को तनिक भी असुविधा नहीं होती, क्योंकि वे जानते हैं कि मदद पहुंचने ही वाली है।”

शिवनंदन बताते हैं कि वे इस मानवीय अहसास को अपने व्यवहार में कैसे उतार पाये। उन्होंने सदा यह प्रयत्न किया कि उन्हें अपने दल के सभी सदस्यों के नाम याद रहें। “मैं प्रत्येक को उसके नाम से पुकारता था। मैंने प्रयत्न कर हर एक का पहला नाम याद किया। लोग पूछते हैं कि क्या दो लाख पुलिसकर्मियों के नाम याद रख पाना संभव है? बिल्कुल नहीं। मैं यह नहीं कहता हूं कि प्रत्येक को एक कम्प्यूटर की तरह लोगों के नाम याद रखने चाहिए। किन्तु आप कम से कम उन लोगों के नाम याद रखने का प्रयत्न कर सकते हैं जो आपको रिपोर्ट करते हैं।” कहा जाता है कि किसी भी व्यक्ति के लिए मधुरतम शब्द उसका नाम ही होता है। अपने सहकर्मियों के नाम याद रखना व्यवहार कुशलता की निशानी है। शिवनंदन बड़े प्रेम से एक किस्सा याद करते हैं। उनके मातहत कार्य करने वाले एक युवा कांस्टेबल की शादी थी। वे उसमें भाग लेने के लिए नागपुर से मुंबई आये। विवाह समारोह में उन्हें पहली पंक्ति में बैठा देख उस युवा कांस्टेबल की प्रसन्नता का कोई पार न रहा।

► पूर्णरूप से समझना

जो लोग सीधे आपको रिपोर्ट करते हैं वे आपके अमात्य हैं। अपने अमात्यों और पुलिस बल के प्रति शिवनंदन की पॉलिसी सीधी व स्पष्ट थी, मैं उन्हें इतना अच्छा प्रशिक्षित करूंगा कि वे कानून व व्यवस्था की स्थिति का प्रबंधन अच्छी तरह करेंगे व अपराध नियंत्रण को प्रभावी ढंग से संभालेंगे।

शिवनंदन को इस चीज़ की बहुत अच्छी समझ थी कि मनुष्य क्या चाहता है। जब किसी व्यक्ति को जीवन की मूल आवश्यकताओं की चिन्ता न हो तो उसका पूरा ध्यान अपने काम पर केन्द्रित रहता है और वह परिणाम भी देते हैं। समय पर तनख्वाह मिलना, आवास, भोजन व बच्चों की पढ़ाई हर व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण है। जब आप इनका प्रबंध संभाल लेते हैं तो वे आपका काम संभाल लेते हैं।

शिवनंदन ने पुलिस कर्मियों के बच्चों की शिक्षा के लिए सब्सिडी का प्रबंध किया, सुरक्षित पुलिस थाने बनवाये, ठाणे के अतिरिक्त गढ़चिरोली, चंद्रपुर व अन्य नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी विद्यालयों का निर्माण करवाया।

इन्हीं कारणों से उनके मातहत उन्हें ऐसा नेता मानते थे जो उनका ध्यान रखता था, जो उनकी समस्याएँ समझता था और उनके हल भी सुझाता था, जो सिर्फ बात ही नहीं करता था, अपितु कार्रवाई भी करता था।

लोग नहीं समझते कि आपके मन व हृदय में क्या है। वे केवल यह समझते हैं कि आपने क्या दिया, आप उनके लिये क्या करते हैं। यदि आप ऐसा वातावरण बनाते हैं जिसमें उनका ध्यान रखा जाता है, तो कर्मचारी भी अधिक प्रतिबद्धता से काम करते हैं।

► सत्य जानने की अभिलाषा

जब कुछ देने का समय आता है तो बात घुमाने-फिराने से काम नहीं चलता। शिवनंदन को केवल अपराधियों को ही नहीं, अपितु अपने लोगों को संभालने में भी काफी मुश्किलें आयीं। वे स्पष्टवादी थे और आवश्यक होने पर वे अपने दल के सदस्यों को भी निलंबित या बर्खास्त कर सकते थे।

सेवा निवृत्त ए.सी.पी. दशरथ अवहद कहते हैं, “क्राइम ब्रांच का काम बिना किसी रुकावट के चले इसलिए उन अफसरों की बदली कर दी गई, जिनका आचरण अच्छा नहीं था।”

शिवनंदन ने एक बार एक वरिष्ठ इंस्पेक्टर को संविधान की धाराओं के अंतर्गत बर्खास्त कर दिया। वे कहते हैं कि, “जैसे शरीर से कैंसर को निकाला जाना आवश्यक है, उसी तरह दल के वे सदस्य जो कि ‘संगठन के लिये कैंसर’ हो गये हैं, उन्हें टीम का स्वास्थ्य व प्रभावशीलता बनाये रखने के लिये हटाना आवश्यक है।”

► सेना का नेतृत्व करने की योग्यता

अगला कदम है, अपने मातहतों को सशक्त बनाना ताकि वे कार्य का प्रभार ले सकें। एक अच्छा नेता कभी भी शक्ति को अपने तक सीमित नहीं रखता। वह समझता है कि वास्तविक शक्ति अन्यो को सशक्त बनाने से मिलती है। आजकल प्रचलित शब्द है- विकेन्द्रीकरण। सरकारी व सार्वजनिक प्रतिष्ठान भी तभी विकास करते हैं, जब कनिष्ठ अधिकारियों पर रोक न लगाई जाये बल्कि उन्हें मौके पर निर्णय लेने दिये जायें। जितनी महत्ता हम सिर को देते हैं, उतनी ही पैर के अंगूठे को भी देनी चाहिए। आज की दुनिया में जब विचार की गति व सूचना फैलने की गति में कोई अंतर नहीं है तब यह आवश्यक है कि आपके मातहत भी तेजी से फैसले लें।

हाँ, किन्तु जब कार्य सिद्ध न हो रहे हों, तब जिम्मेदारी स्वयं पर लेना और अपने कनिष्ठों की गलतियों को अपनी गलती मानना ही नेतृत्व है।

शिवनंदन कहते हैं-“जब मेरी टीम गैंगस्टरों को निष्प्रभावी बनाने में लगी हुई थी, तब मैं उन्हें तुरंत फैसले लेने की शक्ति दे रहा था। मैंने उन्हें यह साहस और विश्वास भी दिया कि मैं उनके साथ हूँ- यह मानसिक संबल अनिवार्य है।”

► शब्दों की मधुरता

शिवनंदन में मधुर व प्रभावी वार्तालाप करने की योग्यता है, चाहे वे अपने मातहतों से बात कर रहे हों, प्रेस या अपने वरिष्ठ अधिकारियों से। मधुरता से बात करने का अर्थ यह नहीं है कि आप मीठे शब्दों अथवा विशेषणों का प्रयोग करें। इसका अर्थ है, प्रभावी किन्तु व्यवहारकुशल तरीके से सच बोलना।

जब किसी अनुमोदन की आवश्यकता हो, उदाहरण के लिये कोई नया कानून बनाने के लिये आवेदन करना, तब नये कानून की आवश्यकता बताने के लिए प्रभावी संप्रेषण आवश्यक है। संप्रेषण के मामले में शिवनंदन की सफलता का अंदाजा उन नयी नीतियों से लगाया जा सकता है जो वे अपने पूरे कार्यकाल में पुलिस बल के लिये लाये।

उनके मधुर व प्रभावी सम्प्रेषण का एक और उदाहरण उस समय का है, जब वे पुलिस चीफ थे। पुराने दिनों को

याद करते हुए वे बताते हैं कि एक बार उनसे मिलने आयी एक महिला को उन्होंने बैठने के लिये कहा, किन्तु उसने मना कर दिया। जब उन्होंने उसे फिर से बैठकर बात करने को कहा तो उसने कहा, “सर मैं आपके सामने कैसे बैठ सकती हूँ?” उन्होंने उससे न बैठने का कारण पूछा तो उसने धीमी आवाज में कहा, “सर, मैं एक वेश्या हूँ। मैं आपसे बराबरी नहीं कर सकती।” उन्होंने कहा “जब तक आप बैठकर एक कप चाय नहीं पियेंगी, मैं आपकी बात नहीं सुनूँगा।” वह अपने पति के दुर्व्यवहार की शिकायत करने आयी थी। उसे शांत कर व उसके साथ आदरपूर्वक बात करके, शिवनंदन उसकी मदद कर पाये।

उनके पास बहुत से लोग, बहुत सी समस्याएँ लेकर आते थे- इनमें फिल्मी सितारे, धनी व्यापारी, सामाजिक नेता और विद्यार्थी भी होते थे। उनके दरवाजे सभी के लिये खुले थे और वे प्रत्येक से आदरपूर्वक बात करते थे। शिवनंदन का अपनी टीम व काम को संभालने का यही तरीका था।

★ अच्छे प्रबंधन के नुस्खे ★

- बदलाव के लिये तैयार रहें- कभी भी नये कार्य व परियोजनाओं का विरोध न करें।
- सर्वप्रथम स्वयं व्यवस्थित रहें- दूसरों का प्रबंधन करने के लिए स्व-प्रबंधन आवश्यक है।
- अच्छे प्रशासन को प्रोत्साहित करें। सभी तंत्र व व्यवस्थाएँ कार्यरूप में होनी चाहिये।
- लोगों को उनके नाम से जानें- इससे निजता बढ़ती है व लोग आपसे जुड़ते हैं।
- लोगों का सशक्तिकरण- अपने मातहतों को निर्णय लेने के लिये प्रोत्साहित करें।

मेरे भीतर का नेता

This image shows a full page of white paper with horizontal blue or grey ruling lines. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are approximately 20 lines visible. On the left side, there are small black marks that look like staple indentations or punch holes. The paper appears to be from a notebook or a standard sheet of stationery.

अध्याय 3



जनपद

नागरिक / ग्राहक

स्वामी राजा
अमात्यमंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
दंड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

भाग अ



तीसरा मर्म

जनपद : नागरिक अथवा ग्राहक

सुराज की विस्तारित चर्चा में कहा गया है, “जब तक अंतिम गाँव का अंतिम व्यक्ति प्रसन्न नहीं है, सरकार का काम अपूर्ण रहता है।” इसी प्रकार जब तक प्रत्येक नागरिक सकुशल व सुरक्षित अनुभव नहीं करता, पुलिस का कार्य पूरा नहीं होता।

एक बार राजा चन्द्रगुप्त मौर्य इस तथ्य पर विचार कर रहे थे कि उनके जीवन की प्रत्येक वस्तु चाणक्य द्वारा निर्देशित व नियंत्रित है। उनकी पूरी दिनचर्या- क्या करना है, किससे मिलना है, क्या भोजना करना है, यहाँ तक कि किससे विवाह करना है, जैसे महत्वपूर्ण निर्णय भी उनके गुरु ही करते थे।

चन्द्रगुप्त का अपना व्यक्तिगत जीवन कुछ भी नहीं था। एक दिन अत्यधिक हताशा में उन्होंने चाणक्य से कहा कि अब वे उनकी बात नहीं मानेंगे। वे अपनी निजता व स्वतंत्रता चाहते हैं। यद्यपि वे एक राजा थे, किन्तु फिर भी वे एक मनुष्य थे जिसकी व्यक्तिगत आकांक्षाएँ थीं। उन्होंने चाणक्य से पूछा कि उनका प्रत्येक कार्य चाहे वह सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत, उस पर नियंत्रण क्यों है?

उत्तर में चाणक्य ने अपने योग्य शिष्य को याद दिलाया। “इस संसार में दो तरह के लोग ऐसे हैं जिनके भाग्य में व्यक्तिगत प्रसन्नता नहीं है, वे हैं राजा एवं शिक्षक। जब तक राज्य का प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न नहीं होता वे विश्राम नहीं कर सकते।”

कोई व्यक्तिगत जीवन न होना एक नेता के लिये बहुत ही दृढ़ व कठोर कथन हो सकता है। लेकिन ध्यान दें, गुरु चाणक्य ने यह नियम स्वयं पर भी लागू किया।

गुरु और राजा दोनों से अपेक्षित है कि वे अपना जीवन समाज कल्याण को अर्पित करें। कंपनियों में आयोजित किये जाने वाले कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों में काम व जीवन में एक संतुलन की बात की जाती है, किन्तु सत्य यह है कि एक नेता को अपने कार्य व जीवन में अंतर नहीं करना चाहिए।

प्रख्यात मैनेजमेंट गुरु व विश्व के कई प्रमुख नेताओं के सलाहकार श्री जगदीश सेठ के साथ हुई, एक मुलाकात में हमने नेतृत्व पर चर्चा की। इस चर्चा में उन्होंने भी इस बात पर जोर दिया कि “आज के समय में विशेष कर जब मीडिया एक नेता का पीछा हर समय कर रहा होता है, तब उसके सार्वजनिक व व्यक्तिगत जीवन में कोई अंतर नहीं हो सकता। जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्तिगत निष्ठा महत्वपूर्ण है और जब यह हो तो नेता के मन में कोई अंतर्द्वंद नहीं रहता और वह अपना काम अधिक अच्छी तरह करता है और अपने काम पर उसका ध्यान भी अधिक केन्द्रित रहता है।

नेतृत्व का पालन दिन के चौबीसों घंटे, सप्ताह के सातों दिन व वर्ष के पूरे तीन सौ पैंसठ दिनों किया जाना होता है। यह प्रतिबद्धता नेता को आजीवन निभानी होती है।

अतएव नेतृत्व, नेता के मात्र सार्वजनिक या प्रदर्शित व्यवहार से ही नहीं जुड़ा है, अपितु उसका व्यक्तिगत व निजी आचरण भी इसका भाग होता है। इसका अर्थ है अपने अंतःकरण के प्रति निष्ठावान होना।

नेता का अपना व्यक्तिगत जीवन होता है, किन्तु वह इसे आम जन से छुपाकर नहीं रख सकता। चूंकि नेता स्वयं

एक उदाहरण होता है, वह एक अनुकरणीय व्यक्ति बन जाता है। इसीलिए कहा जाता है ‘यथा राजा तथा प्रजा’।

अब हम नेतृत्व के तीसरे व सबसे महत्वपूर्ण भाग ‘जनपद’ पर आते हैं। जनपद का तात्पर्य राष्ट्र के नागरिकों से है। उनके बिना राज्य पूरा नहीं होता। क्या जनता के बिना एक राष्ट्र या अनुयायियों के बिना एक नेता की कल्पना की जा सकती है? यदि शासित करने के लिये कोई नहीं है तो फिर एक राजा का क्या औचित्य?

कॉरपोरेट वर्ल्ड के संदर्भ में ‘जनपद’ का तात्पर्य ग्राहक से है। एक कंपनी की प्राथमिकता अपने ग्राहकों की सेवा करना है। मार्केटिंग का एक प्रचलित वाक्य है- ‘कस्टमर राजा है।’ गांधी जी ने भी इस बारे में बहुत अच्छा कहा है, “ग्राहक हमारे परिसर का सबसे महत्वपूर्ण आगंतुक है। वह हम पर निर्भर नहीं है, अपितु हम उस पर निर्भर हैं। वह हमारे कार्य में व्यवधान नहीं, बल्कि हमारे कार्य का उद्देश्य है, हम उसकी सेवा कर उस पर कोई एहसान नहीं करते। वह हमें सेवा का मौका देकर हम पर मेहरबानी करता है।”

यहाँ मूल प्रश्न है क्या आपने अपने ग्राहक को पूरी सेवा दी है, क्या आपने उसका ठीक से ध्यान रखा है। आज अधिकांश कंपनियों में ग्राहक सेवा विभाग होते हैं। आरम्भ में ग्राहक सेवा का केन्द्र, उत्पाद या सेवाएँ बेचना होता था, किन्तु आज बिक्री के बाद दी जाने वाली सेवाएँ इसका महत्वपूर्ण अंग हैं। एक खुली अर्थव्यवस्था में ग्राहक-सेवा का स्तर ऊँचा होना अति आवश्यक है, क्योंकि ग्राहकों को आपकी प्रतिद्वंदी कंपनी द्वारा दी जा रही सेवाओं के स्तर की पूरी जानकारी होती है। अतः यदि आपकी ग्राहक-सेवा जैसी होनी चाहिए, वैसी नहीं है, तो कंपनी के लिये ग्राहकों को जोड़े रखना ही एक चुनौती बन जाता है। अपने ग्राहकों के नियमित संपर्क में रहना, एक नेता के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आप एवं आपके ग्राहक की सोच एक सी है तो आप हमेशा अपने व्यवसाय में मार्केट लीडर रहेंगे।

शासन में भी चुनौती यही है कि नागरिक कैसे सोचते हैं। यदि आप उनकी पसंद-नापसंद, आदतों, संस्कृति, मूल्यों एवं आकांक्षाओं को समझ सकते हैं और उन्हें वह सब दे सकते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता है, तो आपको आने वाले चुनावों में अपने प्रदर्शन की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

कई राजनीतिज्ञ जिन्होंने नागरिकों का मनोविज्ञान समझ लिया है, वे चुनाव, दर-चुनाव सफल रहते हैं। यहां तक कि उनकी अगली पीढ़ियाँ भी चुनाव जीतती रहती हैं। यह सब लोगों से झूठे वायदे कर उन्हें बेवकूफ बनाने के कारण संभव नहीं होता। लोग जो चाहते हैं, वह उन्हें बिना मांगे ही दे देने का गुण ही इस लगातार मिलने वाली सफलता के मूल में है।

एक नेता बनने के लिये व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि नेता कैसे सोचते हैं और एक नेता कैसे सोचता है, यह समझने के लिये यह जानना होगा कि नागरिक कैसे सोचते हैं।

महाभारत में भी इसी विचार को दोहराया गया है, जब भीष्म युधिष्ठिर को सुशासन के बारे में समझाते हैं, वे कहते हैं- राजा का पूरा ध्यान अपनी प्रजा पर केन्द्रित होना चाहिए, न कि अपने सिंहासन पर। यदि प्रजा नहीं होगी तो सिंहासन भी नहीं होगा।”

राजा की मनोवृत्ति कैसी होनी चाहिए?

अर्थशास्त्र की पहली पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय के चौतीसवें सूत्र में चाणक्य कहते हैं-

“राजा की प्रसन्नता, प्रजा की प्रसन्नता में ही है, जिसमें भी प्रजा का भला है, वही राजा के लिए भी लाभकारी है। यह आवश्यक नहीं कि उसकी हर व्यक्तिगत प्रिय वस्तु राजा के लिये लाभकारी हो, किन्तु जो भी प्रजा को प्रिय है, वह उसके लिये लाभकारी है।”

मार्केटिंग व सुशासन के सभी सिद्धांतों की परिणति इस शक्तिशाली उक्ति में होती है। चाणक्य का यह सर्वाधिक प्रचलित व मान्य सिद्धान्त इसी बात पर जोर देता है कि प्रजा की प्रसन्नता ही राजा की प्रसन्नता है।

आइये इस सूत्र के महत्वपूर्ण भागों पर चर्चा करें।

► प्रजा की प्रसन्नता

प्रजा मनुष्य की बहुत बड़ी उपलब्धि है। सभी राष्ट्र और संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे वैश्विक संगठन, इस बात को समझने

व परिभाषित करने में लगे हैं कि नागरिकों के लिये प्रसन्नता क्या है?

प्रसन्नता के विभिन्न आयाम हैं - शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक।

शारीरिक : जो व्यक्ति शारीरिक रूप से तन्दरुस्त नहीं है, वह प्रसन्न नहीं रह सकता। जब आप अस्वस्थ होते हैं तो प्रसन्नता आपके मन से कोसों दूर रहती है। एक कहावत है, “स्वास्थ्य ही संपत्ति है।” इसी दृष्टिकोण व उद्देश्य के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन ने संसार के प्रत्येक नागरिक के लिए प्रसन्नता हासिल करने का लक्ष्य रखा है।

शारीरिक प्रसन्नता का अगला स्तर है समुचित भोजन व पानी की उपलब्धता। पोषक आहार व अच्छा व्यायाम शरीर को मज़बूत व चुस्त रखता है।

शारीरिक सुख भी प्रसन्नता के लिये आवश्यक है। बाह्य वातावरण भी आपको प्रसन्न रखने में सहायक होना चाहिए। यदि गर्मी बहुत अधिक है तो आपको सुखद अनुभूति के लिए एयरकंडीशनर की आवश्यकता होगी। यदि बाहर का तापमान बहुत कम हो तो आपको गर्म कपड़ों की ज़रूरत होती है। यदि आप टूटी कुर्सी पर बैठे हैं तो आपको न तो आराम मिलेगा न ही आप प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

ध्यान दें, कई बार इस शारीरिक सुख को ही लोग वास्तविक प्रसन्नता समझ लेते हैं। स्वामी चिन्मयानन्द के शब्दों में कहें तो- “भोग-विलास की प्रत्येक वस्तु होने के बावजूद आप अप्रसन्न हो सकते हैं- विलासपूर्ण अप्रसन्न।”

प्रसन्नता का अगला आयाम है मानसिक प्रसन्नता।

मानसिक : मानसिक स्तर पर प्रसन्नता का दूसरा नाम है ‘मानसिक स्वास्थ्य’। एक नेता को यह समझना आवश्यक है कि मनुष्य एक भावपूर्ण प्राणी है तथा उसका भावनात्मक रूप से ध्यान रखा जाना आवश्यक है। इसके लिये एक नेता को अपनी भावनात्मक बुद्धि का विकास करने की आवश्यकता होती है।

आधुनिक जीवन में बढ़ता तनाव ही मानसिक रोगों का कारण है। यदि सही समय पर मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर ध्यान न दिया जाये तो या तो व्यक्ति पागल खाने पहुँच जायेगा या फिर आत्महत्या कर लेगा, जैसा कि देश में छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की बढ़ती घटनाओं से स्पष्ट है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक संवेदनशील व स्वीकार करने वाले वातावरण का निर्माण करने की आवश्यकता होती है। परिवार में यह आवश्यक है कि माता-पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा भावनात्मक बंधन बनायें जिससे कि वे सुरक्षित अनुभव करें। बच्चों में सच बोलने या असफलता का भय नहीं होना चाहिए। परिवार को बच्चों के मन में आत्मविश्वास पैदा करने में सक्षम होना चाहिए, जिससे कि वे असफलताओं को पीछे छोड़कर आगे बढ़ सकें और जीवन में बेहतर प्रदर्शन कर सकें।

एक संगठन में नेता को ऐसा वातावरण बनाने का प्रयत्न करना चाहिए जो कर्मचारियों व श्रमिकों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करें। ऐसे वातावरण में गलतियाँ करना सीखने का द्योतक हैं, व्यक्ति को कभी गलतियाँ के लिये दोषी नहीं ठहराया जाता, व टीम के कार्य को एक व्यक्ति के प्रदर्शन से अधिक महत्व दिया जाता है। लोग भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़ते चले जाते हैं व कार्यालय, मानों दूसरा घर बन जाता है। कई संगठनों में तो लोग इतने प्रसन्न रहते हैं कि अधिक समय काम करना भी परेशान नहीं करता है।

आध्यात्मिक : यह प्रसन्नता का उच्चतम स्तर है, जिसे हम वास्तविक अर्थों में प्रसन्नता कह सकते हैं। यदि आप आध्यात्मिक रूप से प्रसन्न हैं तो कोई चीज़ आपको परेशान नहीं कर सकती। बाह्य समस्याएँ आपके लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि यह प्रसन्नता बाहर से नहीं अपितु आपके भीतर से आती है।

आध्यात्मिक स्तर पर होते हुए आप शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक गतिविधियों पर निर्भर नहीं होते। आप स्वयं से संतुष्ट होते हैं। यहाँ तक कि मृत्यु भी आपका प्रसन्न अस्तित्व नहीं छीन सकती।

एक बार मृत्यु एक आध्यात्मिक गुरु के पास पहुँची और बोली, “मैं तुम्हें लेने आयी हूँ।” गुरु ने मुस्कुराकर कहा, “मैं तो बहुत पहले मर चुका हूँ, तुम तो केवल मेरे शरीर को मार सकती हो।”

आध्यात्मिक प्रसन्नता हमारे जीवन के सबसे बड़े शत्रु अहंकार को मारने से मिलती है। एक बार अहंकार का नाश हो जाने पर कोई भी चीज़ आपको स्थायी प्रसन्नता पाने से नहीं रोक सकती।

भारत में आध्यात्मिक प्रसन्नता का महत्व आदिकाल से रहा है। हमारा इतिहास ऐसे राजाओं की कहानियों से भरा

हुआ है, जिन्होंने सच्ची प्रसन्नता की खोज में अपने राज त्याग दिये। वे नेता जो आध्यात्मिक प्रसन्नता को समझ लेते हैं, वास्तविक नेता बन जाते हैं।

एक भयमुक्त भारत विश्व मंच पर आत्मनिर्भरता के रूप में खड़ा हो, इसके लिये हमें अपने इतिहास में दबी आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ना होगा। नेतृत्व में भी हमें एक बड़ी व ऊँची छलांग लगानी होगी- जी हाँ, आध्यात्मिक नेतृत्व की ओर।

हमने देखा कि विभिन्न स्तरों पर प्रसन्नता पाना ही वास्तविक प्रसन्नता है और यह प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि राजा या नेता सफलता के सभी आयामों को समझें। एक नेता लोगों को भोजन, कपड़ा व मकान के रूप में शारीरिक सुख देने की अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकता, न ही वह लोगों के मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा यह कहकर कर सकता है कि वास्तविक प्रसन्नता तो आध्यात्मिक प्रसन्नता है। ऐसा करना सच्चाई से मुँह मोड़ना होगा।

जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों का लालन-पालन करते हैं, उसी प्रकार एक राजा को अपनी प्रजा का ध्यान रखना चाहिए। सबसे पहले बच्चों की भोजन व अन्य भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर उन्हें शारीरिक स्तर पर सुविधाएँ व संतोष दिया जाता है, उसके बाद परिवार के सभी लोग प्रेमपूर्वक उनका ध्यान रखकर, उनकी शिक्षा व सुरक्षा का प्रबंध कर, उन्हें मानसिक व बौद्धिक स्तर पर संतुष्ट व सुखी रखते हैं और अंत में उन्हें आध्यात्मिक मूल्य सिखाये जाते हैं जो उन्हें जीवन में आने वाली चुनौतियों में दृढ़ रहने में सहायक होंगे।

अधिकांश, विकासशील एवं विकसित देशों के लिये प्रसन्नता का शारीरिक घटक ही महत्वपूर्ण है। उनका ध्यान, सभी के लिये-भोजन, मकान, स्वास्थ्य, सड़क सुरक्षा, नौकरियों आदि पर रहता है। किन्तु सरकार का काम यहाँ समाप्त नहीं होता। आर्थिक रूप से समृद्ध कई देशों में आत्महत्या की दर बहुत ऊँची है, सामाजिक मूल्यों का हास हुआ है व एकाकीपन का एहसास दूर-दूर तक फैला हुआ है। हालांकि इन देशों के नागरिक भौतिक व शारीरिक प्रसन्नता पा चुके हैं, किन्तु उन्हें मानसिक व आध्यात्मिक प्रसन्नता पाने की दिशा में अभी और प्रगति करनी है।

एक बार टाटा समूह के भूतपूर्व अध्यक्ष जे.आर.डी.टाटा से किसी ने पूछा, “क्या आप चाहते हैं कि भारत एक आर्थिक शक्ति बने?” उस महान व्यक्ति का उत्तर था- “नहीं, मैं चाहता हूँ कि भारत एक प्रसन्न राष्ट्र बने।”

स्वतंत्रता प्राप्ति के छः दशकों बाद, आज भारत एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण स्थिति में है। हमारे समाज का एक हिस्सा आर्थिक रूप से फल-फूल रहा है, उसके पास अच्छे घर, शिक्षा, नौकरियाँ व वे सभी भत्ते व लाभ हैं, जो इनके साथ आते हैं। जबकि दूसरी ओर समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा अभी भी बुनियादी अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। आरम्भ में यह संघर्ष रोटी, कपड़ा व मकान के लिये था और आज इस सूची में बिजली, सड़क व पानी भी सम्मिलित हो गये हैं।

इन चुनौतियों का मुकाबला करने के लिये सरकार कई परियोजनाओं में निवेश कर रही है, जैसे कि सर्वशिक्षा अभियान, ग्रामीण स्वास्थ्य विकास कार्यक्रम व अन्य।

हालाँकि, यह सुनिश्चित करने के लिए भारत एक प्रसन्न राष्ट्र बने, जैसा कि जे.आर.डी. टाटा भी चाहते थे, नेताओं को लोगों की संपूर्ण प्रसन्नता के बारे में विचार करना होगा जिसमें कि उनकी आध्यात्मिक प्रसन्नता भी शामिल है और यही एक व्यक्ति के जीवन का वास्तविक लक्ष्य भी है।

► राजा का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण

‘लोगों की प्रसन्नता’ के अतिरिक्त चाणक्य शासन में प्रसन्नता के एक और पहलू का उल्लेख करते हैं और वह है राजा का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण। क्या ‘वास्तविक लोकतंत्र’ शासन की एक शैली मात्र है या इससे अधिक भी कुछ है? आज भी संसार के कई देशों में राजतंत्र है। वहाँ राजा या रानी शासन चला रहे हैं, किन्तु उनके नागरिक प्रसन्न हैं। उनके नेता प्रगतिशील विचारक हैं और वे अपनी योजनाओं व विकास की रूपरेखा तैयार करने में सभी को सम्मिलित करते हैं। दूसरी ओर कुछ राष्ट्र ऐसे भी हैं जहाँ प्रजातंत्र है, किन्तु नागरिक प्रसन्न नहीं हैं। दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र भारत, एक ऐसा ही देश है।

हमारी शासन की शैली दुनिया में सबसे अच्छी है। हम अपने नेता व शासन करने वाली राजनैतिक पार्टी का चुनाव हर पांचवें वर्ष करते हैं। हमारा संविधान दुनिया के सबसे अच्छे संविधानों में से एक है। हमारे प्रत्येक

नागरिक को वोट देने का अधिकार है, चाहे उसका लिंग, जाति या धर्म कुछ भी हो। हमारा कानून सबकी बात सुनता है और हमारे न्यायालय क्रूरतम अपराधियों को भी कोर्ट में निष्पक्ष सुनवाई का मौका देते हैं। संसार के कई देशों में ऐसे अधिकार नागरिकों की कल्पना में ही है, फिर भी लोग अप्रसन्न हैं।

इसका केवल एक ही कारण है, भारत में अच्छे नेताओं का अभाव। “प्रजा की प्रसन्नता में ही राजा की प्रसन्नता होती है।” यही वास्तविक प्रजातंत्र है। यदि नेता यह समझता है तो वह अपने देश को प्रसन्न राष्ट्र बनायेगा, किन्तु अधिकांश नेता केवल अपनी खुशी के बारे में ही सोचते हैं, और यह आवश्यक नहीं कि जो राजा को प्रसन्नता दे, वही प्रजा को भी प्रसन्न करे। लेकिन जो लोगों को प्रसन्नता दे उससे राजा को भी प्रसन्न होना चाहिए।

यदि आप एक माता-पिता की तरह सोचें, तो यह समझना कठिन नहीं है। यदि बच्चा किसी दुःख से रो रहा हो तो माता-पिता उसकी सहायता करने के लिये हर प्रयत्न करते हैं, जैसे ही बच्चे की तकलीफ समाप्त होती है और उसके चेहरे की मुस्कान लौटती है तो माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य भी प्रसन्न हो जाते हैं। बच्चे की खुशी में ही उसके पालकों की खुशी होती है।

इस दृष्टिकोण का विकास तभी संभव है जब नेता स्वार्थी न हो। न ही वह अपने विचार एक आज्ञा के रूप में दूसरों पर थोपता हो। नेता के पास समानुभूति, देखभाल व प्रेम करने का गुण होना अनिवार्य है। तभी एक नेता नागरिकों का दुःख व अप्रसन्नता अनुभव कर सकता है और उनकी समस्याओं का हल ढूँढने के लिए अथक प्रयत्न भी करता है।

एक ऐसा देश जहाँ के नेता सौदेबाज बन गये हों और केवल अपनी जेबें भरने के बारे में सोचते हों, ऐसा दृष्टिकोण विकसित नहीं किया जा सकता।

► आत्म रुचि व प्रजा की रुचि

चाणक्य का कहना है, “यह आवश्यक नहीं कि एक राजा के लिये उसकी व्यक्तिगत रुचि लाभकारी हो।” नेता आराम से बैठकर सुस्ता नहीं सकता। यह आवश्यक है कि वह अपनी आरामगाह से बाहर निकले और अपने कार्यों के दीर्घकालिक लाभों पर नज़र रखते हुए कठिन कार्यों का बीड़ा उठाये। सम्भव है इन कार्यों से उसे कोई व्यक्तिगत लाभ न हो, किन्तु यदि आम लोग इससे लाभान्वित होते हैं तो उसे ये काम करने चाहिए, चाहे वे उसे पसंद हो या नापसंद।

चाणक्य आगे कहते हैं- “राजा के लिये वही लाभकारी है, जिस पर उसकी प्रजा का ध्यान केन्द्रित है।” समय के साथ हमें यह भान होता है कि हम दूसरों के लिये जो भी कार्य करते हैं, वास्तव में उसका लाभ हमें ही मिलता है।

संसार की कोई भी क्रिया प्रभावहीन नहीं है। कोई भी अच्छा काम उपेक्षित नहीं रहता। एक नेता को व्यक्तिगत लाभों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये, किन्तु भगवान आपको किसी न किसी प्रकार से समुचित लाभ देता है।

नेताओं को समझना चाहिए कि कोई भी कार्य बड़ा या छोटा नहीं होता। आप जिस मानसिकता से कार्य करते हैं, अंततोगत्वा वही महत्वपूर्ण होता है। नेतृत्व के क्रियान्वयन में एक तुच्छ शुरुआत ही महान होती है।

अतः प्रत्येक ग्राहक को सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्राहक मानें, प्रत्येक नागरिक को राजा, प्रत्येक बालक को अपना बालक व दूसरों की प्रत्येक समस्या को अपनी समस्या। सम्भव है आपके पास हर समस्या का समाधान न हो, किन्तु आपने समस्या को किस तरह सम्भाला, यह महत्वपूर्ण है। आपके सामने आई हुई प्रत्येक समस्या भगवान का भेजा वह संदेश है जिसमें वे आपसे योगदान की अपेक्षा करते हैं। आप एक ऐसी छोटी सी तरंग पैदा कर सकते हैं जो एक बड़ी क्रांति का आधार बन जाये।

आगे बढ़कर अपना सर्वोत्तम प्रयास दें व विश्व पर अपनी छाप छोड़ें।

भाग ब



चाणक्य के अनुसार अच्छे नागरिक के गुण

नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना नेता का पहला कर्तव्य है। एक संगठन के सीईओ पर अपने कर्मचारियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। इसीलिये उन कंपनियों व कारखानों में जहाँ कर्मचारियों की आवश्यकता दिन के चौबीसों घंटे होती है, जैसे कि बिजनेस प्रॉसेस आउट सोर्सिंग इंडस्ट्री (बी.पी.ओ.) में, कानून कंपनी से अपेक्षा करता है कि वह अपने कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। कंपनी को यह सुनिश्चित करना होता है कि उनके कर्मचारी काम पर व वापस घर सुरक्षित पहुंचें। इसीलिए आजकल कई कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को यातायात के वाहनों की सुविधा प्रदान करती हैं।

इसी प्रकार कारखानों में भी कंपनियाँ सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये मशीनों पर सुरक्षा चेतावनियाँ लगाती हैं, कार्य स्थल पर भी सुरक्षा उपायों से संबंधित पोस्टर लगाये जाते हैं तथा वे अपने श्रमिकों व प्रबंधकों को सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण भी देती हैं।

इसी प्रकार एक नेता को भी उस पर निर्भर लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होती है। एक राष्ट्र का भीतरी व बाह्य हमलों से सुरक्षित रहना अनिवार्य है। एक नेता को इस मामले में बहुत गंभीरता रखनी होती है, क्योंकि यदि सुरक्षा में कोई कमी आई तो राजा अपना सिंहासन खो सकता है।

जन साधारण के जागृत होने की सभी घटनाओं के वर्णनों में लोगों की असुरक्षा की भावना गुथी हुई है।

लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना नेता के लिये चिन्ता का विषय नहीं होना चाहिए, अपितु यह उसके लिये महत्व व रुचि का विषय होना चाहिए। चिंतित होने व महत्ता समझने में अन्तर है। एक चिन्तित व्यक्ति को समस्या दिखायी देती हैं, जबकि महत्ता समझने वाला व्यक्ति समस्या को हल करता है।

यदि आप जानते हैं कि कोई खतरा संभावित है या सुरक्षा संबंधित किसी मुद्दे पर ध्यान दिया जाना है, तो उस पर कार्य करें। निष्क्रिय न बैठे रहें।

एक बार नेता अपने मन में स्पष्ट निर्णय ले ले तो बहुत तेजी से आगे बढ़ा जा सकता है। यह निर्णय लेने में उनकी मदद ले जो आप से पहले इस अनुभव से गुज़र चुके हैं। उन अनुभवियों की सलाह लें। अपनी स्पष्ट योजना बनायें। एक लक्ष्य तय करें व इस पर दृढ़ रहें। जब तक आप लक्ष्य पाने में सफल न हों, छोड़े नहीं।

जब आपको एक नेता के रूप में नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक हो, तो इस ध्येय को पाने के लिये गंभीरता व ध्यान से कार्य करें तथा प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान रखें, चाहे वह कोई भी हो- नर, नारी, बच्चा, वृद्ध, युवा, शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग, कामकाजी या बेरोज़गार।

अर्थशास्त्र बारंबार यह कहता है कि राजा को अपने नागरिकों को प्रसन्न व सुरक्षित रखना चाहिए। यह बताते हुए चाणक्य उन गुणों को परिभाषित करते हैं जिनसे प्रजा सुरक्षित रहती है। (पुस्तक 6, अध्याय 1, सूत्र 8)

एक जनपद (नागरिक)/ ग्राहक के गुण हैं:

- देश के केन्द्र व सीमाओं की मजबूती

- ▶ संकट के समय अक्षुण्णता बनाये रखना
- ▶ त्वरित व समुचित सुरक्षा एवं संरक्षण
- ▶ उत्कृष्ट रोजगार जनक
- ▶ कर व दंड चुकाने में सक्षम

आइये इनमें से प्रत्येक गुण पर चर्चा करें।

- ▶ देश के केन्द्र व सीमाओं की मजबूती

चाणक्य द्वारा अपने विद्यार्थियों को युद्ध की रणनीति सिखाने से संबंधित एक प्रसिद्ध कथा है। एक थाली गर्मागर्म चावल की कल्पना कीजिए। आप बिना अपनी ऊँगलियाँ जलाये उसे कैसे खायेंगे। यदि आप अपनी ऊँगलियाँ चावल के बीचों-बीच डालेंगे तो वे जल जायेंगी। इसके बदले यदि आप थाली के किनारों की तरफ के चावल में से थोड़ा-थोड़ा लेंगे तो पायेंगे कि चावल कम गर्म और खाने योग्य है।

यह युद्धनीति की एक उपमा है। आप कभी भी किसी राज्य के केन्द्र- उसकी राजधानी पर सीधे आक्रमण नहीं करते, क्योंकि वहाँ की सुरक्षा व्यवस्था सर्वाधिक कड़ी होती है। वह चारों ओर से सैनिकों द्वारा घिरी होती है, क्योंकि वहाँ शक्ति का केन्द्र व राजनिवास है।

जो भी व्यक्ति सीधे शक्ति के केन्द्र पर आक्रमण करता है, उसका मारा जाना निश्चित है, अतः पहले सीमाओं पर आक्रमण की नीति अपनाई जानी चाहिए। इस प्रकार धीमे-धीमे व सतत कम शक्तिशाली लोगों को हटाते हुए आप केन्द्र तक पहुँच सकते हैं।

अतः एक प्रभावी रक्षा नीति को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि केवल केन्द्र को ही सुरक्षित न बनाया जाये, अपितु सीमावर्ती क्षेत्रों को भी मजबूत रखा जाये। यदि शत्रु सीधे केन्द्र पर आक्रमण करता है तो सेना बचाव करने व लड़ने को तैयार रहती है।

जी हाँ, सीमावर्ती क्षेत्रों की रक्षा करना अधिक महत्वपूर्ण है। घुसपैठ किसी भी देश की सीमाओं से ही आरम्भ होती है। विभिन्न देशों की सीमाएँ भी भिन्न-भिन्न हैं, कहीं पर सीमा क्षेत्र पर्वतीय है तो कहीं रेगिस्तान है, कहीं वन क्षेत्र है तो कहीं समुद्र। चाणक्य सलाह देते हैं कि सभी सीमा बिन्दुओं पर दुर्गों का निर्माण करें।

अर्थशास्त्र में हमें विभिन्न प्रकार के किलों का वर्णन भी मिलता है जो शत्रु के हमलों से नागरिकों की सुरक्षा करने के लिये बनाये गये थे। महाराष्ट्र के एक बहुत सफल राजा शिवाजी महाराज ने अर्थशास्त्र का अध्ययन कर इन रणनीतियों का प्रयोग अपने युद्ध की योजनाएँ बनाने में किया। महाराष्ट्र में करीब चार सौ किले हैं, जिनका निर्माण शिवाजी महाराज ने सामरिक महत्व के स्थानों पर करवाया। यह अर्थशास्त्र में दिये ज्ञान का कार्यकारी उदाहरण है। आज भी शिवाजी की युद्धनीतियाँ आधुनिक सैन्य विज्ञान की प्रामाणिक नीतियाँ हैं।

घुसपैठ रोकने की प्रक्रिया सीमा पर बैठे शत्रुओं से रक्षा करने में सहायक होती है। बाहरी शत्रुओं की पहचान सरलता से की जा सकती है, क्योंकि सीमाओं से देशों में प्रवेश करने वालों पर पैनी नज़र रखी जा सकती है। बाह्य आक्रमणों व घुसपैठ से बचाव के लिये चाणक्य ने कई नाकों (चैक-पोस्ट), पासपोर्ट व वीज़ा जैसी प्रणालियों का भी आरम्भ किया।

किन्तु हर राज्य में भीतरी शत्रु भी होते हैं, जो उसकी सीमाओं के भीतर ही कार्यरत रहते हैं। ये भीतरी शत्रु प्रतिद्वंद्वी देशों के जासूस हो सकते हैं जो कि गैरकानूनी मार्गों से देश में घुसकर उसका विनाश करने लगते हैं या भविष्य में युद्ध आरम्भ करने के लिये जानकारी जुटाने में लगे होते हैं।

आंतरिक शत्रु देशद्रोही भी हो सकते हैं जो शत्रु राष्ट्रों के लिए काम करते हैं। यद्यपि ये लोग राज्य के ही नागरिक होते हैं, किन्तु उन्हें धन व सहायता शत्रु राष्ट्रों से मिलती है और वे उन्हीं के लिये कार्य करते हैं।

नेता की युद्धनीति में इन सभी पहलुओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। चाणक्य ने अपने समय में गुप्तचरों का एक मजबूत दल बताया था। इनमें विषकन्या नामक महिला गुप्तचरों का दल भी था। इस दल की महिलाएँ व कन्याएँ अत्यंत बुद्धिमान व प्रशिक्षित थीं तथा राज्य की कर्मचारी थीं। इनका कार्य शत्रु के ठिकानों से जानकारी एकत्रित

करना था। गुप्तचरों का यह जाल अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी ऐसी युद्धनीतियाँ बनाने में सक्षम था जो युद्ध का पांसा ही पलट दें।

चाणक्य ने सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए एक अन्य दल भी बनाया था जिसमें हिजड़े, भिखारी, पुजारी, बूढ़ी महिलाएँ व सामाजिक नेता सम्मिलित थे। सूचनाएँ ही रणनीति का आधार हैं।

आज प्रत्येक देश का अपना गुप्तचर तंत्र है। ये एजेंसियाँ नागरिकों की सुरक्षा के लिये चौबीस घंटे काम करती हैं। ये पूरी गोपनीयता से काम करते हैं और इनमें से कईयों का जीवन भी दांव पर लगा होता है। कई बार इनका परिवार भी इनके वास्तविक कार्य से पूरी तरह अनभिज्ञ होता है। इन एजेंसियों के अतिरिक्त पुलिस बल भी आंतरिक शत्रुओं व असामाजिक तत्वों का सफाया करने व राष्ट्र की सीमाओं के भीतर काम कर रहे शत्रुओं के बारे में जानकारी एकत्रित करने जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राष्ट्र को एक और खतरा उन लोगों से होता है जो अपने ही देश के विरुद्ध जाकर शत्रुओं के लिये कार्य करने लगते हैं। अतः चाणक्य ने जवाबी-गुप्तचरों के एक अन्य तंत्र का निर्माण किया। जब प्रत्येक गुप्तचर शत्रु पर नजर रखे हुए हों व जानकारीएँ एकत्र करने में व्यस्त हों, तब कोई अन्य गुप्तचर उन पर नजर रखे होता है और उनके बारे में जानकारी एकत्र कर रहा होता है।

यह सब भ्रामक लग सकता है और साथ ही अपने साथ के ही लोगों पर अविश्वास की वृत्ति भी दर्शाता है, किन्तु यही नेता का वास्तविक काम है। आपको लोगों पर विश्वास होना चाहिये, किन्तु अंधविश्वास नहीं और इसका कारण है कि राष्ट्रीय सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं हो सकता। नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है।

► संकट के समय अक्षुण्णता बनाये रखना

बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी का फटना व सूखा आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जो बिना किसी पूर्व सूचना के आती हैं व देश भर में कहर बरपा जाती हैं। एक नेता को समझना चाहिए कि जन कल्याण की योजनाएँ बनाते समय इन सभी का ध्यान रखें। सरकारों ने इन आपदाओं से निबटने के लिये आपदा प्रबंधन समूहों की स्थापना करना आरम्भ कर दिया है।

इन परिस्थितियों के लिये विशेष बजट, प्रावधानों व विशेषज्ञों का इंतजाम होना चाहिए जो समय पड़ने पर तुरंत हरकत में आ सकें। इन प्राकृतिक आपदाओं का प्रबंधन भी युद्ध स्तर पर किया जाना चाहिये।

इसलिए चाणक्य का मानना है कि एक अच्छा नेता वह है जो आपदाओं में से सकुशल निकल आये।

संभावित प्राकृतिक आपदाओं की तैयारी करना कठिन मालूम पड़ता है, क्योंकि इनसे संबंधित कोई विश्वस्त भविष्यवाणी उपलब्ध नहीं होती, किन्तु किसी क्षेत्र विशेष द्वारा बीते समय में झेली गई प्राकृतिक आपदाओं के अध्ययन से हमें इनके रूझानों की जानकारी मिल जाती है। मुम्बई जैसे शहर में मानसून के दिनों में जल-भराव की समस्या सामान्य है। ओडिशा जैसे राज्यों को प्रति वर्ष बाढ़ का सामना करना पड़ता है। जापान में भूकंप आना आम बात है।

इन परिस्थितियों का अध्ययन कर एक नेता यह योजना बना सकता है कि इनकी पुनरावृत्ति होने पर वह उनका सामना कैसे करेगा। पिछली भूलों से सीखकर अपने भविष्य की योजनाओं का निर्माण करें।

यहाँ महत्वपूर्ण शब्द है अक्षुण्णता या संरक्षण। यदि नेता इन विपदाओं के समय लोगों का ध्यान नहीं रखता तो वे ऐसे स्थानों पर चले जायेंगे, जहाँ वे अधिक सुरक्षित अनुभव करते हैं।

वैश्वीकरण के इस युग में एक जगह से दूसरी जगह या विदेशों में जा बसना कठिन नहीं है। लोग अधिकतर ऐसा तब करते हैं जब उनका नेतृत्व से विश्वास उठ जाता है। संकट के समय भी लोग स्थानांतरण के बारे में नहीं सोचते हैं, यदि उन्हें अपने नेता पर विश्वास हो। संकट के समय नेता व उसकी योग्यताओं पर विश्वास ही नेतृत्व की अग्रि परीक्षा है।

यह कहा जाता है “जब समय कठिन व बलवान हो तो केवल बलवान व मजबूत व्यक्ति ही टिक पाते हैं। यही नेतृत्व है। कठिनतम परिस्थितियों में भी नेता आशा का संचार करने में सक्षम होता है।”

कॉरपोरेट जगत के नेताओं ने भी इस कथन को चरितार्थ किया है। जब पूरे विश्व को यह लगने लगता है कि कठिनाईयों से मुक्ति असम्भव है, ऐसे में एक नेता आता है और एक संबल देने वाला संदेश देता है, “हम सब साथ रहेंगे और जीतेंगे।” ऐसे नेता लोगों का मनोबल बढ़ाते हैं व उन्हें कठिनाईयों से उबरने का रास्ता भी दिखाते हैं। उनका प्रभाव आने वाली कई पीढ़ियों तक रहता है।

► त्वरित व समुचित सुरक्षा एवं संरक्षण

नागरिक सुरक्षित अनुभव करते हैं, यदि उन्हें संरक्षण तुरंत मिल जाये। अतएव शासन तंत्र को अनुक्रिया में कम से कम समय लेना चाहिए। नेता का अत्यंत कुशल होना व अपने लोगों की सरलता से सुरक्षा कर पाना आवश्यक है।

एक ऐसी स्थिति की कल्पना कीजिए जब आपने आपातकालीन सहायता का नंबर घुमाया हो और दूसरी ओर से कोई प्रतिक्रिया न हुई हो। सबसे पहले अनुभूति असुरक्षा की होती है, किन्तु यदि किसी ने पहली घंटी पर ही फोन का उत्तर दे दिया हो और व्यक्ति कुछ ही मिनटों में आप तक पहुँच गया हो तो आप सुरक्षित व आश्वस्त अनुभव करते हैं।

जब एक माँ अपने बच्चे की सुरक्षा चाहती है तो वह यह सुनिश्चित करती है कि उसके व बच्चे के बीच की दूरी यथा संभव कम हो। जब वह रसोई में काम कर रही होती है, तब भी उसकी आंख और कान बच्चे पर ही होते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वह तुरंत बच्चे के पास जा सकती है। वह हमेशा इस बात के प्रति सजग रहती है कि बच्चे को तुरंत सुरक्षा दी जा सके। उसे पता होता है कि बच्चे को किस चीज़ से खतरा हो सकता है और वह बच्चे को उनसे दूर रखने का प्रयास करती है। वह सुनिश्चित करती है कि बच्चे के आसपास कोई नुकसानदायक वस्तु न हो, फर्श बहुत चिकना न हो व घर में आपातकालीन दवाईयाँ उपलब्ध हों। वह यह भी पक्का करती है कि आवश्यकता पड़ने पर डॉक्टर से तुरंत संपर्क किया जा सके और उसके बड़े-बुजुर्ग या अन्य मददगार सदा उपलब्ध हों।

बच्चे को इन सभी चीज़ों का भान नहीं होता, किन्तु माँ ने बहुत ध्यान से अपने बच्चे की सुरक्षा व संरक्षण योजना तय की होती है, क्योंकि वह निरंतर अपने बच्चे की भलाई के बारे में ही सोचती रहती है। सोते हुए भी माँ का अवचेतन मन बच्चे को लेकर सतर्क रहता है। जब भी कोई समस्या आती है, वह उससे निबटने के लिये पूरी तरह तैयार होती है। चाहे कुछ भी हो जाये, उसे हमेशा याद रहता है कि बच्चे की सुरक्षा व संरक्षण उसका पहला कर्तव्य है और इसीलिए वह हमेशा ध्यान रखती है कि बच्चे को तत्परता व सरलता से सुरक्षा दी जा सके।

एक नेता की भी अपनी जनता के लिये वही भूमिका होना चाहिए जो इस माँ की अपने बच्चे के लिये है।

► उत्कृष्ट रोजगार के जनक

प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार दिलवाना किसी भी नेता या सरकार के प्रमुख परिणाम क्षेत्र में आता है। मनुष्य व समाज का अर्थशास्त्र से गहरा नाता है। हमारे जीवन में प्रतिदिन के लेन-देन के लिये पैसा आवश्यक है। अतः एक अच्छे नेता के लिए आवश्यक है कि वह उसके राज्य में प्रत्येक के लिये रोजगार के उत्कृष्ट साधनों का इंतजाम करे। ध्यान दें यहाँ चाणक्य मात्र जीवनयापन या बुनियादी अस्तित्व बनाये रखने के लिये धन की बात नहीं करते, अपितु वे जीवन में रोजगार के उत्कृष्ट विकल्पों की बात करते हैं अर्थात् इतना पैसा कि व्यक्ति साधन-सम्पन्न गुणवत्तापूर्ण जीवन जी सके।

गुणवत्तापूर्ण जीवन तभी सम्भव है जब व्यक्ति की कमाई उसके रोज़मर्रा के खर्चों से अधिक हो। भारतीय संस्कृति के अनुरूप परिवार व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। हमें अपने भाई-बहनों, बच्चों व माता-पिता की सेवा करने व उनका ध्यान रखने की सीख दी जाती है। हमें समाज व सामाजिक कल्याण में सहयोग करने को कहा जाता है।

इन सभी के लिये धन की आवश्यकता होती है। एक नेता को यह तथ्य समझना चाहिए कि एक व्यक्ति को जितना खर्च करने की आवश्यकता है, वह उससे अधिक कमा सकता है। नियमित धन आगमन व्यक्ति, उसके परिवार व संगठन को आर्थिक स्वतंत्रता व सुरक्षा देता है। इसके साथ ही अच्छे बीमें व निवेश की योजना भी जुड़ी होनी चाहिए। जब धनागमन अच्छा हो तो उसमें से कुछ अनजाने भविष्य के लिये बचाकर रखना चाहिए।

नियमित व अच्छी आमदनी प्रत्येक व्यक्ति में विश्वास का संचार करती है। अच्छा वेतन देना भी अच्छे नेतृत्व का गुण है। कई सफल कंपनियों में कर्मचारियों को अच्छा वेतन दिया जाता है। वे देश जो अपने वैज्ञानिकों, अध्यापकों, विचारकों, कलाकारों, पुलिस कर्मचारियों व सैनिकों को अच्छा वेतन देते हैं, उनके यहाँ जीवन भी गुणवत्तापूर्ण होता है।

अतः नागरिकों की प्रसन्नता के लिये आवश्यक है कि नेता आर्थिक योजनाओं पर ध्यान दें।

► कर व दंड भरने में सक्षम

कर व दंड ही सरकार का राजस्व है। इस तरह एकत्रित किये गये धन का उपयोग कर्मचारियों के वेतन, रक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे के विकास व अन्य सामाजिक व राष्ट्रीय विकास की परियोजनाओं पर खर्च करने में किया जाता है।

अतः समय पर कर चुकाना नागरिकों का कर्तव्य है। अर्थशास्त्र में चाणक्य कहते हैं कि जो व्यक्ति समय पर कर नहीं देता है, वह पाप का भागी बनता है। कर न देना पाप माना गया है। करों व दण्ड के बारे में चाणक्य का मत संतुलित है। वे कहते हैं कि कर व दंड इतने ही लगाये जाने चाहिये जो कि लोगों की देने की क्षमता के भीतर हो। यह नीति सभी के लिये जीत की स्थिति सुनिश्चित करती है। सरकार को राजस्व प्राप्त होता है तथा जनता भी देकर प्रसन्न रहती है, क्योंकि कर उनके देने की क्षमता के अनुरूप था।

ऐसा समाज एक प्रसन्न समाज होता है।

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन नागरिकों का ध्यान रखना

समाज की प्रसन्नता व सुरक्षा वे चीजें हैं जो सभी राजनैतिक संस्थाओं का लक्ष्य है व इस उद्देश्य हेतु ऐसी सभी संस्थाओं की कुर्बानी दी जा सकती है।

- जेम्स मैडीसन, अमेरिका के चौथे राष्ट्रपति

एक राष्ट्र के नागरिकों का ध्यान रखने में पुलिस बल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक अच्छी प्रणाली समाज में शांति व विकास सुनिश्चित करती है। पुलिस सरकार का कठोर भाग है। वे समाज के उस हिस्से को सम्भालते हैं, जिससे अधिकांश लोग दूर रहना चाहते हैं। एक पुलिस कर्मचारी को अपने प्रतिदिन के कार्य में हत्या, बलात्कार व दुर्घटनाओं से निबटना होता है। दूसरी ओर वे समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से भी मिलते हैं, जैसे कि राजनीतिज्ञ, व्यापारी, कलाकार, सुप्रसिद्ध व्यक्ति व आम आदमी। यह एक बहुआयामी कार्य है। ये वास्तव में चाणक्य के सिद्धान्तों का प्रयोग करते हैं और नागरिकों की सुरक्षा के लिये उनकी साम-दाम-दंड-भेद की नीति का वाकई उपयोग करते हैं।

साम का अर्थ है बातचीत व सलाह की प्रक्रिया का उपयोग। यदि आप किसी पुलिस वाले को थाने में देखें तो आप पायेंगे कि वह कई बार एक काउंसलर की भूमिका में होता है। उदाहरण के लिये जब दो लोग आपस में लड़ते हुए पुलिस थाने में पहुँचते हैं। पुलिस को ऐसे लोगों को शांत करने व उचित सलाह देने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे कि समस्या तुरंत सुलझ जाये।

भारत जैसे देश में जहाँ अदालती मामले वर्षों चलते हैं, पुलिस समस्या को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए मूल्यवान सुझाव देती है, बजाय अदालत का दरवाजा खटखटाने के जो कि समय लेने वाला, परेशान करने वाला व महंगा रास्ता है।

दाम: इसका अर्थ है लाभ। पुलिस शांतिपूर्वक हल निकाल लेने के लाभ बताती है। शांतिपूर्वक निकाला गया हल उन लड़ाईयों से कहीं बेहतर है जो सालों-साल, पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं। लाभ समझ लेने पर कई बार व्यक्ति दोबारा सोचता है और काम करने का कोई दूसरा तरीका खोज लेता है।

शांति एक ऐसा रास्ता है जिसके कई लाभ हैं पुलिसकर्मी यह सुनिश्चित करते हैं कि वे संदेश सही समय पर दें न कि तब जब लड़ने वाली पार्टियाँ बहुत सा समय व शक्ति गंवा चुकी हैं।

दंड का अर्थ है डंडा दिखाना या सख्ती बरतना। एक पुलिसकर्मी को पता होता है कि डंडा कब प्रयोग करना है और उन्हें इसका प्रयोग करने हेतु सशक्त भी किया गया है। चाणक्य इसे “दण्ड नीति” कहते हैं। समाज में उपस्थित असामाजिक तत्वों को नियंत्रित करने का यह एक और तरीका है जिसका अर्थशास्त्र में विस्तृत वर्णन किया गया है।

डंडा शक्ति व भय का चिन्ह है। इसका सीधा संदेश है कि गलत कार्य करने वाले अपनी मर्जी से काम नहीं चला सकते। यदि कोई व्यक्ति समाज व कानून की सीमा तोड़ता है तो पुलिसकर्मी डंडे का प्रयोग कर अनुशासन बहाल

करते हैं।

भेद: इसका अर्थ है निष्क्रिय कर देना। जब सीधे व अच्छे तरीकों से काम नहीं बनता है, तब गलत काम करने वालों को निष्क्रिय करने का सख्त निर्णय लेना होता है। डंडा दिखाने व बंदूक प्रयोग करने में अंतर है। यदि कोई आतंकवादी या गैंगेस्टर भीड़ पर हमला कर रहा है तो पुलिस के पास और कोई चारा नहीं होता, सिवा इसके कि वह उन्हें दी गई शक्ति का प्रयोग करे, और यह शक्ति है, जान से मार देना।

ऐसी पुलिस कार्यवाहियों की आवश्यकता तभी होती है जब स्थिति हाथ से बाहर निकल जाये। व्यक्ति का एक हाथ या पैर सड़ जाने पर कई बार डॉक्टर उस अंग को काट देने की सलाह देते हैं, ताकि पूरे शरीर को बचाया जा सके। इसी प्रकार जब कोई और तरीका काम नहीं करता तो देश को हानि पहुँचाने वाले लोगों को निष्क्रिय करना ही होता है।

नागरिकों का ध्यान रखते हुए शिवनंदन ने सिद्ध किया कि चाणक्य के सिद्धान्तों का किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है। आइये देखें उन्होंने यह कैसे किया?

► केन्द्र व सीमाओं की मजबूत स्थिति

शिवनंदन मानते हैं कि उनकी भूमिका एक ऐसे नेता की रही जो जनता का ध्यान रखता है। “मुझे हमेशा स्पष्ट था कि अपने लोगों का विश्वास जीतने के बाद मुझे आम नागरिकों के साथ जुड़ना है। आम आदमी से जुड़े रहना ही मेरी भूमिका थी।” अपने सेवाकाल में वे जहाँ कहीं भी रहे, उन्होंने हमेशा आम आदमी से जुड़ने का प्रयास किया।

इस प्रकार उनके पास वैचारिक स्पष्टता व पूरी मानसिक सुदृढ़ता थी कि उन्हें, ‘लोगों के बीच रहना’ व उन्हें आंतरिक (केन्द्रीय) व बाह्य (सीमाओं पर) शत्रुओं से बचाना है। उनकी यह मानसिकता हमें पुलिस फोर्स की देश को भविष्य में किसी आतंकी हमले से बचाने की तैयारी में दिखाई देती है।

शिवनंदन लोगों को सशक्त बनाने में विश्वास करते थे ताकि वे स्वयं की सुरक्षा का ध्यान रख सकें। अपने कार्यकाल में उन्होंने अनुभव किया कि कई घटनाओं में आम नागरिक को भी वही प्रशिक्षण दिया जा सकता है जो कि एक पुलिसकर्मी को दिया जाता है, जिससे कि वे स्वयं पुलिस की भूमिका निभा सकें। एक प्रचलित कहावत है, “यदि आप आदमी को एक मछली देते हैं तो आप उसे एक दिन का भोजन देते हैं, किन्तु यदि आप उसे मछली पकड़ना सिखा देते हैं तो आपने उसे जीवनभर भोजन पाने का तरीका सिखा दिया है।” यह है लोगों को सशक्त बनाना।

एक और उदाहरण है- इण्डियन होटल एवं रेस्टोरेंट एसोसिएशन ने मुंबई पुलिस से संपर्क कर शिकायत दर्ज करवायी कि उन्हें धमकी भरे फोन आ रहे हैं। शिवनंदन की सिफारिश पर एसोसिएशन के पदाधिकारियों को बंदूक के लाइसेंस दिये गये व साथ ही उन्हें फोन पर बातचीत रिकॉर्ड करने का तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया गया। उन्होंने इस प्रशिक्षण का प्रयोग कर उन्हें धमकी देने वाले अपराधियों को पकड़ने में सफलता पाई।

इस प्रकार कॉल रिकॉर्ड करने का हुनर पीड़ित लोगों को सिखाने से उनकी पुलिस पर निर्भरता कम हो गयी। अब वे “जीवन भर मछली पकड़ने” में सक्षम थे।

► संकट के समय स्थिरता

किसी भी आपातस्थिति या संकट में शिवनंदन उपलब्ध रहते थे। इसके अतिरिक्त त्वरित कार्रवाई ने लोगों के मन में विश्वास की भावना भी पैदा की। आपातकाल से निबटने की योग्यता का निर्माण कई प्रक्रियाओं द्वारा किया गया।

वे बताते हैं, “मेरा मोबाईल नम्बर बेहिचक सभी को दिया गया। इसकी घोषणा समाचार पत्रों व मीडिया में की गई। एक आम आदमी को मुझ तक पहुँचने से रोकने वाला कोई अधिकारी हमारे बीच नहीं था। कोई भी व्यक्ति मुझे सीधे ई-मेल लिख सकता था। निर्णय तुरंत लिये जाते थे और उचित व्यक्ति को कार्यान्वित करने के लिये सौंप दिये जाते थे, ताकि परिणाम भी तेजी से मिलें।”

शिवनंदन ने समाज के विभिन्न समूहों से संपर्क स्थापित करने के लिये विभिन्न तरीकों का प्रयोग किया। उन्होंने

युवाओं, बच्चों, महिलाओं व वृद्धजनों से संपर्क बढ़ाने के लिये कई कदम उठाये।

इसका एक तरीका था वेबसाइट का प्रयोग कर लोगों तक पहुँचना। उनके द्वारा आरम्भ की गई कुछ वेबसाइट्स हैं-

www.copconnect.in

www.hamarisuraksha.com

www.nagpurpolice.org

www.thanepolice.org

www.mumbaipolice.org

ये सभी वेबसाइट्स इंटरएक्टिव थीं, जहाँ पर नागरिक शिवनंदन व पुलिस बल से संपर्क कर सकते थे। इस प्रकार पुलिस व आम आदमी के बीच टूटता होता सम्प्रेशन फिर जुड़ने लगा।

► सरल सुरक्षा

आम आदमी को पुलिस सुरक्षा सरलता से उपलब्ध करवा कर शिवनंदन ने सुनिश्चित किया कि नागरिकों को संरक्षण देना सरल हो जाये।

जनता को सतत संप्रेषण व विश्वास बढ़ाने वाले उपायों की आवश्यकता होती है। जब आप ये कदम उठाते हैं, नागरिक आपसे जुड़ने लगते हैं और अनुभव करते हैं कि आप उन्हें सुरक्षित रखने के लिये मौजूद हैं। आरम्भ में ये उपाय तुच्छ लगते हैं, किन्तु उनका प्रभाव विशाल होता है।

विश्वास बढ़ाने की इस प्रक्रिया में मीडिया की भूमिका को नहीं नकारा जा सकता। शिवनंदन कहते हैं- मैं मीडिया को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे यह संदेश कई लोगों तक इतने विशाल रूप में ले जाने में सहायता की। मीडिया यदि अपनी पूरी शक्ति के साथ हमारे साथ मिलकर चले तो वह अद्भुत चमत्कार कर सकता है। अपने कार्यकाल में शिवनंदन ने कई टेलीविजन इण्टरव्यू, रेडियो शोज़, समाचार पत्रों के संवाददाताओं से मुलाकात व वेबकास्ट किये। इसके अतिरिक्त उन्होंने रोटरी एवं लायंस क्लब, कॉलेजों व स्कूलों में व्याख्यान दिये ताकि वे प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच सके।

उन्होंने अपने कार्यालय में भी खुले-दरवाजे की नीति अपनाई ताकि वे हर व्यक्ति की पहुँच में रहे। इसका बहुत प्रभाव रहा।

उनका उद्देश्य था पुलिस की छवि में सकारात्मक बदलाव लाना। अभी तक अपराधी समझते थे कि वे पुलिस के साथ कुछ भी कर सकते हैं, और आम आदमी उनसे दूर ही रहता था। वे चाहते थे कि अपराधी व गैंगेस्टर पुलिस से डरें व आम आदमी पुलिस पर विश्वास करना आरम्भ करें।

शिवनंदन स्पष्ट करते हैं कि पुलिस सदा ही आम आदमी के साथ होती है। वे अच्छा काम करते भी हैं और करने में सहायता भी करते हैं। केवल कुछ पुलिस वालों के गलत कार्यों के कारण पूरे विभाग की छवि खराब हुई है। लेकिन एक पुलिस वाले के लिये सबसे बड़ी अभिप्रेरणा आम आदमी द्वारा की गई प्रशंसा व उनके द्वारा दिया गया सम्मान है। कभी-कभी पुलिस द्वारा आम आदमी की सुरक्षा के लिये की गई कार्यवाही पर समाचार पत्रों द्वारा की गई चर्चा भी पुलिस का मनोबल बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

शिवनंदन ने एक और पहल की, वह थी युवाओं से जुड़ना। युवा देश की ऊर्जा व आशा के प्रतीक हैं। यदि हमारे युवाओं को सही मूल्य व दिशा मिले तो हमारा देश पूरी तरह से परिवर्तित देश होगा।

चूँकि फिल्मी सितारों का युवाओं पर बहुत प्रभाव होता है, शिवनंदन ने फिल्मी सितारों को साथ लिया ताकि वे युवाओं से जुड़ सकें। उन्होंने शाहरुख खान के साथ एक लघु फिल्म का निर्माण किया, जिसमें पुलिस के साथ जुड़ने का संदेश था।

यह वह समय था, जब मुम्बई में अकेले रहने वाले बुजुर्गों की मौत के मामले बढ़ रहे थे। इस कमजोर वर्ग के सदस्य

अधिकतर अपने बच्चों या किसी अन्य की सहायता पर निर्भर होते हैं, उनकी समस्याओं का समाधान करने हेतु शिवनंदन ने पहल कर एक हेल्पलाइन नंबर (103) की शुरुआत की, वृद्ध, महिलाएँ व बच्चे आपातकाल में इस नम्बर पर संपर्क कर सकते थे। उन्होंने एक वेबसाइट भी आरम्भ की- www.hamarisuraksha.com इसका उद्देश्य मुंबई पुलिस व एनजीओज़ को वृद्ध नागरिकों की सुरक्षा देने में मदद करना था। इस वेबसाइट के उद्घाटन के लिये उन्होंने फिल्म अभिनेत्री सिमी ग्रैवाल को बुलाया व इसका उद्घाटन मालाबार हिल क्लब में किया गया।

26/11 के मुंबई आतंकी हमले के बाद कई कदम उठाये गये जिनका उद्देश्य सुरक्षा को और कड़ा बनाना व ऐसे हमलों से निबटने के लिये बेहतर तैयारी रखना था, किन्तु सिर्फ ये कदम उठाना ही काफी नहीं था, शिवनंदन चाहते थे कि आम आदमी यह समझे कि अब पुलिस पहले से बेहतर तैयारी में है, ताकि उनमें सुरक्षा की भावना पैदा की जा सके। अतः 26 नवम्बर, 2009 को मुंबई हमलों की पहली वर्षगांठ पर उन्होंने मुंबई ट्रायडेंट होटल से गिरगांव चौपाटी तक एक परेड का आयोजन किया। इस परेड द्वारा आम जनता को प्रदर्शित किया गया कि पुलिस के पास बेहतर आयुध उपकरण व सुप्रशिक्षित पुलिसकर्मी हैं। “आपकी सुरक्षा, हमारी जिम्मेदारी” यह संदेश सभी को पहुँचाया गया।

इस तरह शिवनंदन ने सुनिश्चित किया कि नागरिकों की सुरक्षा पुलिस की पहली जिम्मेदारी है। उन्होंने जानकारी बढ़ाने के लिये दो प्रोफेशनल पत्रिकाएँ ‘प्रोटेक्टर’ व ‘संवाद’ भी आरंभ की। इन पत्रिकाओं में पुलिस की आंतरिक कार्यप्रणाली व कार्य का विवरण होता है।

व्यक्तिगत स्तर पर भी शिवनंदन का झुकाव आम आदमी को समझने की ओर ही था। उदाहरणार्थ- एक बार उन्होंने तेजाब के हमले की शिकार एक लड़की की पुनःस्थापना का खर्च उठाया।

भिवंडी चिल्ड्रेन्स रिमांड होम

आजकल कॉर्पोरेट सोशल रिसर्पोसेबिलिटी, (सी.एस.आर.) एक लोकप्रिय विषय है, किन्तु इससे अधिक महत्वपूर्ण है पर्सनल सोशल रिसर्पोसेबिलिटी- पी.एस.आर। एक पुलिस प्रमुख के पद पर होते हुए शिवनंदन को न केवल पुलिस बल के लिये निर्णय लेने होते थे, किन्तु उन्हें समाज की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित करने की आवश्यकता थी।

यहाँ हम एक और घटना की चर्चा करेंगे जिसमें शिवनंदन ने एक पुलिसकर्मी के निर्धारित उत्तरदायित्व से आगे जाकर नागरिकों की सहायता की। यह घटना भिवंडी के चिल्ड्रेन्स रिमांड होम के रूपांतरण की है। शिवनंदन को लगा इन बच्चों को एक सुरक्षित वातावरण व प्रेम की आवश्यकता है। अतः उन्होंने डेलॉइट जैसी सलाहकार कंपनी से उनके सी.एस.आर. के कार्यक्रम ‘इम्पेक्ट डे’ द्वारा इस कार्य से जुड़ने का अनुरोध किया। इसके अंतर्गत रिमांड होम को एक नया चेहरा मिल गया, वहाँ की दीवारों पर नया रंग-रोगन किया गया, आंतरिक सज्जा ठीक की गई व बेहतर सेवाएँ भी जोड़ी गई। शिवनंदन ने इसमें आर्थिक योगदान भी किया और रिमांड होम को आई.एस.ओ. 9001 स्तर का संगठन बनाने के लिये सक्रिय प्रयत्न भी किये। उन्होंने रिमांड होम की एक बच्ची को भी गोद लिया जो कि मूक-बधिर थी। उन्होंने उसके इलाज व विशेष शिक्षा का खर्चा भी उठाया।

शिवनंदन के कमिश्नर ऑफ पुलिस के कार्यकाल में, ठाणे जिले में स्थित भिवंडी के बच्चों के रिमांड होम में आमूल-चूल परिवर्तन आया। रिमांड होम में कार्य करने वाली स्नेहा जोशी बताती हैं- “एक दिन शिवनंदन सर, अचानक ही हमारे केन्द्र में आये। पुलिस विभाग का व्यक्ति होने के नाते उनकी एकमात्र जिम्मेदारी केन्द्र के बच्चों को पुलिस सुरक्षा उपलब्ध करवाना था। जब उन्होंने बच्चों से बात करना आरम्भ किया तो उनकी मुलाकात ममता से हुई- जो बोल व सुन नहीं सकती थी। उस बच्ची की विकलांगता ने उन्हें भीतर तक छू लिया और उन्होंने उसी दिन से उसके पूरे इलाज, शिक्षा व अन्य आवश्यकताओं की जिम्मेदारी ले ली। उन्होंने उसका ऐसा ध्यान रखा मानों वह उनकी अपनी बेटी हो।”

शिवनंदन के नेतृत्व में रिमांड केन्द्र पूरी तरह से बदल गया। उन्होंने उसके लिए फंड इकट्ठा किये। बच्चों द्वारा बनाई गई ड्राइंग व ग्रीटिंग कार्ड, प्रदर्शनियाँ लगाकर बेचे गये। केन्द्र को दवाईयाँ व अन्य आवश्यक चीजें मुहैया करवाई। उन्होंने वहाँ एक होम थियेटर का निर्माण भी करवाया, क्योंकि बच्चों को मनोरंजन के सार्वजनिक स्थलों पर जाने के मौके बहुत कम मिलते थे। उन्होंने उनके लिये खेलों का आयोजन किया, इनाम बांटे व वर्ष में एक दिन उनके साथ व्यतीत किया। उन्होंने बच्चों के लिये योग व काउंसलिंग के सत्र भी आयोजित किये ताकि रिमांड होम से

बाहर जाने पर उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य मिले।

इनमें से कुछ बच्चे भविष्य में पक्के अपराधी बन सकते थे। शिवनंदन को कहीं गहरे इस चीज़ की आवश्यकता अनुभव होती थी कि समाज अभी तक उपेक्षित इन बच्चों की यहाँ से बाहर निकलने पर ठीक से देखभाल करे।

अनाथों व उपेक्षित बच्चों के भविष्य में निवेश करने वाला समाज, पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण करता है।

► रोज़गार के उत्कृष्ट साधन देना

अपनी कार्यशैली के बारे में शिवनंदन कहते हैं- “मैं कम से कम कागज़ी कार्रवाई में विश्वास करता था और मेरी मेज हमेशा साफ़ रहती थी। एक सरकारी विभाग में रुकी हुई फाइल का अर्थ होता है रुका हुआ फैसला। आपके रुके हुए कार्य का प्रभाव आम आदमी पर कभी भी नहीं पड़ना चाहिए।

पुलिस बल का नेता होने के नाते, शिवनंदन के लिए लोगों को समय पर पैसे देना महत्वपूर्ण था। चाहे यह पुलिसकर्मी के वेतन से संबंधित हो; जिससे वे अपना जीवन यापन ठीक से कर पायें या किसी वेंडर का बिल पास करना हो। अपनी प्रशासकीय कुशलता, कागज़ी कार्रवाई की दक्षता व निर्णय लेने की अच्छी क्षमता के चलते उन्होंने सुनिश्चित किया कि प्रत्येक व्यक्ति को उसका पैसा समय पर मिले।

► कर व दंड भरने में सक्षम

सरकार द्वारा लगाये गये कर व दंड ही राजस्व के स्रोत हैं, किन्तु लोग कर तभी दे पाते हैं, जब उनका व्यापार अच्छा चल रहा हो, और व्यापारिक गतिविधियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण अनिवार्य है। शिवनंदन व उनकी टीम द्वारा मुंबई पर अंडरवर्ल्ड की पकड़ समाप्त करने के बाद ही सरकार पर व्यवसायियों का विश्वास पुनर्स्थापित हो पाया। शहर की आर्थिक गतिविधि के पुनरुत्थान में शिवनंदन ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और समुचित मात्रा में कर व दंड जमा कर सरकारी राजस्व में वृद्धि भी सुनिश्चित की।

★ नागरिकों को प्रसन्न रखने के नुस्खे ★

- लोगों से संपर्क रखें: यदि आपको पता नहीं चल पा रहा है तो लोगों के पास जायें।
- मीडिया की ताकत का प्रयोग करें: अच्छा काम करने के लिये यह एक बढ़िया साझेदारी है।
- अपना कार्य प्रदर्शित करें: आपके ग्राहकों/नागरिकों को हर उस कदम की जानकारी होनी चाहिए जो आपने उनकी प्रसन्नता व सुरक्षा के लिये उठाया है।
- खुले-दरवाजे की नीति रखें: आप हर किसी के लिये उपलब्ध हो सकें।
- ग्राहकों/नागरिकों का सशक्तिकरण: उन्हें भी अपने कौशल का प्रशिक्षण दें।

मेरे भीतर का नेता

[illegible]

अध्याय 4



दुर्ग

किला / बुनियादी ढांचा

स्वामी राजा
अमात्य मंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
दंड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

भाग अ



चौथा मर्म

दुर्ग: बुनियादी ढांचा

प्राचीन काल में दुर्ग अथवा किले के कई उपयोग थे। किले सामरिक महत्व के बिन्दुओं पर स्थित थे- जैसे पहाड़ की चोटी या समुद्र का किनारा और वे राजाओं को अपने शत्रु पर नजर रखने में सहायता करते थे। किलों का आकार छोटा या बड़ा होता था और यह उनके निर्माण की जगह व उद्देश्य पर निर्भर करता था।

कुछ किले बहुत बड़े होते थे, पूरा शहर गढ़ या किले की चारदीवारी के भीतर होता था। एक पूरी सभ्यता दुर्ग के अंदर रहती थी। उसकी ऊँची चारदीवारी दुर्ग के अंदर रहने वाले नागरिकों को बाहरी खतरों से सुरक्षित रखती थी।

दुर्ग के भीतर सभी प्रकार के लोग रहते थे, राजा व उनके मंत्रियों से लेकर, राज्य के आम नागरिक भी। यह राज्य की राजधानी के समान होता था और यहाँ प्रवेश करने के लिये हर बाहरी व्यक्ति को विशेष अनुमति लेनी होती थी। यह वैसा ही था जैसे किसी नये देश में प्रवेश के लिये वीज़ा की आवश्यकता होती है।

इन गढ़ वाले शहरों में विभिन्न सुविधाएँ होती थीं, जैसे कि पानी की टंकियाँ, सड़कें, बढियाँ बने हुए मकान, अनाज के भण्डार, जल-निकासी की व्यवस्था, बाजार आदि। दुर्ग के भीतर मंदिरों, मनोरंजन स्थलों, बगीचों व खेलने के मैदानों का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुरूप किया जाता था।

यही कारण है कि चाणक्य ने दुर्ग को राज्य का महत्वपूर्ण स्तंभ कहा है। दुर्ग नागरिकों की रक्षा करने के साथ ही उनके विकास के पर्याप्त साधन देता था। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि सभ्यता के विकास को समझने के लिये दुर्गों का अध्ययन आवश्यक है।

आधुनिक वास्तुशास्त्री (आर्किटेक्ट) भी पुराना नगर नियोजन समझने के लिये दुर्गों का अध्ययन करते हैं।

दुर्गों के बुनियादी ढांचों से मिलने वाली सबसे बड़ी शिक्षा है- सबसे अच्छे व सबसे बुरे परिदृश्यों के लिये योजना बनाना और किसी भी स्थिति का सामना करने के लिये पूरी तरह तैयार रहना। बुनियादी ढांचे की योजना बनाते समय प्राकृतिक व मानवीय दोनों प्रकार के कारणों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

अर्थशास्त्र की आठवीं पुस्तक के पहले अध्याय के दूसरे सूत्र में चाणक्य कहते हैं- “किसी घटक के कारण आयी आपदा, चाहे वह मानवीय हो या दैवीय, या तो दुर्भाग्य से उपजती है या दोषपूर्ण नीतियों से।”

प्रबंधकों के लिए आयोजित की गई एक कार्यशाला में पूछा गया, “कल्पना कीजिए इस होटल में आग लग जाती है और अग्नि सुरक्षा प्रणाली के होते हुए पचास लोग मारे जाते हैं। इसके लिये कौन उत्तरदायी होगा?”

लोगों ने दो प्रकार के उत्तर दिये। पहले समूह ने कहा- “होटल प्रबंधन इसके लिये जिम्मेदार ठहराया जायेगा क्योंकि उनके पास अग्नि से सुरक्षा के पर्याप्त उपाय नहीं थे। आग से बचने के लिये बाहर निकलने के रास्ते नियमानुसार नहीं बनाये गये थे या उन्हें समयानुसार सुधारा नहीं गया था।”

दूसरे समूह ने कहा, “यह दुर्भाग्य है। एक मजबूत अग्नि सुरक्षा नीति होते हुए पचास लोग मारे गये।”

चाणक्य भी बिल्कुल यही कहते हैं। कोई भी आपदा या तो दुर्भाग्यवश आती है अथवा दोषपूर्ण नीति के कारण।

आइये, दुर्भाग्य का अर्थ समझें। आप कितनी ही योजनाएँ बनायें, किन्तु जीवन में कुछ गलत हो ही सकता है। मानव ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कला दी हो, विश्वस्तरीय प्रणालियाँ स्थापित की हों, फिर भी कोई अनजाना, अनपेक्षित कारण पूरी योजना को चौपट कर सकता है।

इसका एक उदाहरण है उपग्रह का प्रक्षेपण या मिसाइल का परीक्षण। इन दोनों के लिये ही वर्षों के अनुसंधान व खर्चों रुपये लगाये जाते हैं। हजारों वैज्ञानिक चौबीसों घण्टे काम करके एक दोषहीन प्रक्षेपण की तैयारी करते हैं। फिर भी जब उपग्रह या मिसाइल को छोड़ा जाता है, तो यह निश्चित नहीं होता कि प्रक्षेपण सफल रहेगा।

यदि यह सफल रहता है तो प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न होता है, किन्तु यदि यह असफल रहे तो किसे दोष दिया जायेगा? इसे दुर्भाग्य कहते हैं। पूरा दल गलतियों से सीखने का प्रयास करता है और फिर से योजना बनाने का कार्य आरम्भ करता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसे कई उदाहरण मिल जायेंगे, जब सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न भी अंतिम क्षण पर पहुँच कर असफल हो जाते हैं। खिलाड़ियों का एक दल पूरे वर्ष अभ्यास करने के बाद फाइनल मैच में एक कमजोर विरोधी टीम से हार जाता है। दुनिया का सबसे अनुभवी डॉक्टर ऑपरेशन थियेटर में एक मरीज को नहीं बचा पाता, यह दुर्भाग्य है।

किन्तु आप उचित योजना व प्रयत्न के अभाव में भाग्य को दोष नहीं दे सकते। कोई भी व्यक्ति परीक्षा भवन में बिना तैयारी के नहीं जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति को बहुत मेहनत करनी होती है और अपने सौ प्रतिशत से अधिक का योगदान करना होता है। दुनिया के किसी भी सफल व्यक्ति का जीवन देख लें, चाहे वह एक ओलंपिक विजेता हो, एक सफल बिज़नेसमैन या पुलिस अधिकारी, इन सभी ने कई रातें जीत की तैयारी करने में जागते हुए काटी हैं।

चुनौती स्वीकार कर लेना किन्तु उसके लिये तैयार न होना और फिर असफलता को दूसरों के सिर मढ़ना अच्छे नेतृत्व का गुण नहीं है। यह दोषपूर्ण नीति है, चूँकि इसमें न तो पूर्वयोजना थी और न ही क्रियान्वयन।

एक नेता होते हुए हमें यह समझना चाहिए कि उचित नीति में गहरी योजनाएँ व उनका क्रियान्वयन ही रहता है।

आप अनजान व अनपेक्षित के घटने की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी किसी संभावना के लिये पहले से तैयारी करनी होती है और इसके लिए आपको वैसी अनजान सम्भावनाओं के प्रति अति सतर्क रहने की आवश्यकता है।

आपदाएँ या प्रकोप दो तरह के होते हैं: दैवीय या मानवीय। प्राकृतिक विपदाएँ जैसे कि बाढ़, भूकंप, तूफान व सूखा, दैवीय प्रकृति की होती हैं, मानव का इन पर पूरा नियंत्रण नहीं होता, किन्तु वह इतिहास से सीख लेकर इन प्राकृतिक विपदाओं से बचने की योजना बना सकता है।

आतंकवाद या राष्ट्र के नेताओं द्वारा करवाये गये सामूहिक हत्याकांड मानव निर्मित आपदाएँ हैं। ध्यानपूर्वक योजना बनाकर इन्हें रोका या टाला जा सकता है।

उदाहरण के लिये 21 जून 2012 को महाराष्ट्र में मंत्रालय में लगी आग ने यह उजागर कर दिया कि इस महत्वपूर्ण भवन में ऐसी आपदा झेलने के लिये कोई विशेष तैयारी नहीं थी, किन्तु इसके बाद बृहन् मुम्बई म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन (बी.एम.सी.) ने भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के कदम उठाने शुरू कर दिये। शहर की विभिन्न सोसाइटियों में आकस्मिक जांच की जा रही है व जिन सोसाइटियों ने अग्नि सुरक्षा नियमों का पालन नहीं किया है, उनके विरुद्ध आवश्यक कार्रवाही की जा रही है।

मुम्बई जैसे शहर में बहुत कम भूकंप आते हैं, किन्तु सरकारी अधिकारियों ने यह सुनिश्चित किया है कि सभी नवनिर्मित भवन भूकंप रोधी हों, उनमें पानी की आपूर्ति समुचित हो तथा किसी भी अन्य अनपेक्षित आपदा से निबटने की योजना हो। महाराष्ट्र के कई जिलों में सूखा पड़ना आम बात है। इन जिलों में आपदा प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण भाग है पानी की उपलब्धि के लिए योजना बनाना।

पुलिसकर्मियों को मानवीय व प्राकृतिक दोनों तरह की आपदाओं को संभालना रहता है। प्रत्येक क्षेत्र में पुलिस बल व आवश्यक सामग्री की आपूर्ति की योजना बनाते समय उस क्षेत्र में प्राकृतिक व मानवीय आपदाओं के इतिहास का ध्यान रखा जाता है। जिन जगहों पर सांप्रदायिक दंगों का इतिहास हो, सांप्रदायिक सद्भावना बनाये रखने के

लिए किये जाने वाले प्रयत्न योजना का भाग होते हैं। जिन स्थानों पर वर्षा कम होती है, वहां पानी की किल्लत कानून व व्यवस्था की समस्या का कारण बन सकती है। इन क्षेत्रों के लिए पुलिस अलग तरह से योजना बनाती है। अतएव, एक नेता को बुनियादी ढांचे की ऐसी योजना बनाने की सलाह दी जाती है जिससे मानव-रचित व प्राकृतिक, दोनों प्रकार की आपदाओं को रोका जा सके।

व्यापार की दुनिया में दुर्ग क्या है?

अपना व्यवसाय सफलतापूर्वक चलाने के लिये व्यवसायियों को भी अच्छे बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। हाँ, व्यवसाय में दुर्ग की परिभाषा व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार बदल जाती है। कम्पनी का मुख्यालय जहाँ से उनका सी.ई.ओ. अपना कार्य संभालता है, उसे कंट्रोल टावर कहा जा सकता है।

यदि आपका व्यवसाय मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र का है, तो आपका कारखाना, जिसमें कि प्लांट, मशीनरी व अन्य उपकरण आते हैं, बुनियादी ढांचे का भाग हो जाता है। एक ऐसी फैक्ट्री जिसका निर्माण सावधानीपूर्वक किया गया है तथा जिसमें सुरक्षा व स्वच्छता का ध्यान रखा गया है -जो अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करती हो, वह अपनी कंपनी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा कर सकती है। आईये अब दुर्ग की अवधारणा को थोड़ा बढ़ाकर आधुनिक राष्ट्र के संदर्भ में देखें। देश के निर्माण में अच्छी सड़कें, फ्लाईओवर, पुल व मकान सभी महत्वपूर्ण हैं। भारत की ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में सकल घरेलू उत्पाद का 9 प्रतिशत बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये रखा गया है। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में भी बुनियादी ढांचे के विकास को राष्ट्रीय बजट के मुख्य घटक के रूप में शामिल किया गया है।

पुलिस के संदर्भ में देखें तो पुलिस थाने, हथियार, गाड़ियाँ व अन्य बहुत कुछ बुनियादी ढांचे का भाग है। इस अध्याय की केस स्टडी में आप पढ़ेंगे कि किस प्रकार बुनियादी ढांचे में परिवर्तन ने पुलिस बल को कार्य करने के लिये एक उत्पादक व सकारात्मक वातावरण दिया।

आधुनिक संसार में बुनियादी ढांचे से तात्पर्य केवल भौतिक वस्तुओं से ही नहीं है, अपितु इसमें डिजिटल ढांचा भी सम्मिलित है। आज के समय में एक अच्छे ऑफिस में डिजिटल ढांचे अर्थात् कम्प्यूटर, इंटरनेट व मोबाईल, फोन आदि का होना भी महत्वपूर्ण है। घर से काम करने व फोन पर अधिक से अधिक बातचीत कर लेने के बढ़ते चलन के कारण डिजिटल ढांचे की महत्ता और बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त आज यह सुविधा सभी जगह उपलब्ध है, चाहे वह हवाई अड्डे हों, कॉफी शॉप्स, होटल, रेस्त्राँ और यहाँ तक कि बस के अंदर भी। इसकी सरल उपलब्धता ने इसे और अधिक प्रचलित किया है। अतः जब आप डिजिटल ढांचे में निवेश करते हैं तो यह सुनिश्चित करें कि जिन कर्मचारियों को आवश्यकता हो, वे इसके द्वारा टेलिकम्प्यूटिंग कर पायें।

एक नेता होने के नाते, यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने संगठन के लिये विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे का प्रबंध करें। समय के साथ चलें और जो भी सर्वश्रेष्ठ चीज़ें उपलब्ध हों, उन्हीं का प्रयोग करें।

एक नेता होते हुए अपने संगठन के लिये बुनियादी ढाँचा सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। समय के साथ चलें और जो भी नया उपलब्ध है उसमें से सर्वश्रेष्ठ चुनें। याद रखें आज के डिजिटल तकनीक से जुड़े इस संसार में तकनीक ही योग्यता बढ़ाने का सबसे प्रभावी साधन है। अतः उपलब्ध तकनीकों में से उसी में निवेश करें जो सर्वश्रेष्ठ है व आपकी आवश्यकताएँ पूरी करती हैं।

यदि आपने अपने दुर्ग का निर्माण ठीक नहीं किया तो आपकी टीम हतोत्साहित हो जायेगी। अब वे दिन नहीं हैं, जब लोग जीवन भर एक ही संगठन से जुड़े रहते थे। आज प्रत्येक व्यक्ति के पास कई अवसर हैं और उनमें से चुनाव करने के मौके भी। अतः काम करने के लिये अच्छी परिस्थितियों का निर्माण करना हर उस संगठन के लिये आवश्यक है जो अपने कर्मचारियों को रोके रखना चाहता है।

मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने नौकरी इसलिये छोड़ दी क्योंकि उनकी कंपनी के शौचालय ठीक नहीं थे। इसी तरह अच्छी कुर्سيयाँ, उचित वायुसंचार, अच्छी साज- सज्जा, समुचित प्रकाश व कैटीन आदि सुविधाएँ आवश्यक हैं। वे नेता जो विश्वस्तरीय संगठनों का निर्माण करना चाहते हैं, उनके लिये सीसीटीवी व आपातकालीन निकास जैसे सुरक्षा उपाय महत्वपूर्ण होते हैं।

पुलिस विभाग में शिवनंदन ने कार्यस्थल में परिवर्तन लाने पर कार्य किया। कार्यस्थल पर उनके द्वारा किये गये

कुछ प्रयोगों को अन्य पुलिस अधिकारी मापदंड मानते हैं।

शिवनंदन का विश्वास है कि नेतृत्व का एक पहलू है किसी प्रवृत्ति या मानक की स्थापना करना जिसे लोग प्रेम से दोहराये। आज जब वे अपने बीते हुए करियर पर नजर डालते हैं और जब नौजवान आई.पी.एस. अधिकारी उनके पास सलाह व चर्चा के लिये आते हैं, तो उन्हें यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि आने वाली पीढ़ी चीजों को और बेहतर बनाना चाहती है और उनके द्वारा स्थापित मानकों को आगे के जाना चाहते हैं।

भाग ब



चाणक्य के अनुसार उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे के गुण

एक उत्कृष्ट बुनियादी ढांचा तैयार करने की पहली आवश्यकता है, एक मूलयोजना या खाके का निर्माण। यदि आपने एक अच्छी योजना तैयार कर ली है तो ढांचे का निर्माण सरल हो जाता है। कई बार आप एक अच्छी योजना से आरम्भ करते हैं, किन्तु जैसे-जैसे आप उसकी बारीकियों पर गहराई से काम करने लगते हैं तथा इसमें आपके सहयोगी भी योगदान करने लगते हैं तो विकसित होते हुए आपकी योजना का रूप भी बदलने लगता है। आरम्भिक स्तर पर आप योजना की बारीकियों पर जितना अधिक काम करेंगे, अंत तक आते हुए वह उतनी ही बेहतर हो जायेगी।

जब शिवनंदन ने अपने विभाग का बुनियादी ढांचा तैयार करना शुरू किया, उन्होंने हर उस चीज के बारे में सोचा, जिसकी इच्छा पुलिस बल के कर्मचारियों को हो सकती है, जैसे कि अच्छे घर, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएँ। यदि आपने योजना तैयार करने में अधिक से अधिक मतों व हितों को समाहित करने का प्रयास किया है, तो आपके द्वारा निर्मित ढांचे से अधिकाधिक लोग लाभान्वित होंगे। आधारभूत संरचनाएँ चिर-स्थायी होनी चाहियें।

एक नेता के रूप में जब आपको एक अच्छे कार्यालय का निर्माण करना हो, तब आपके सामने दो परिस्थितियाँ आ सकती हैं।

पहली परिस्थिति में आपको ढांचे का निर्माण शून्य से आरम्भ करते हुए करना है। इसे ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट कहा जाता है।

तुलनात्मक रूप से ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट सरल होते हैं, क्योंकि यह ऐसा ही है जैसे खाली कैनवास पर पेंटिंग बनाना। आज अपनी इच्छानुसार कोई भी पेंटिंग बना सकते हैं। आपके पास असीमित विकल्प होते हैं, यदि कोई चीज सीमित होती है तो वह है आपकी कल्पना व आपका बजट। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति को ज़मीन का एक टुकड़ा देकर उस पर पुलिस कर्मियों के लिये मकान बनाने को कहा जाये तो अंतिम निर्माण 'नवाचार व रचनात्मकता' पर आधारित होगा।

इसका निर्माण मौजूदा पुलिस क्वार्टर्स की तरह किया जा सकता है, ये किसी दूसरे देश के अधिक खूबसूरत दिखने वाले पुलिस क्वार्टर्स की तरह भी बनाये जा सकते हैं, ये अपने आप में अनोखे व एक नया मापदंड स्थापित करने वाले पुलिस क्वार्टर्स भी हो सकते हैं।

दूसरी परिस्थिति वह है जब आपको एक मौजूदा ढांचे का नवीनीकरण करना हो। इसे ब्राउन फील्ड प्रोजेक्ट कहा जाता है, जिसमें आपको एक मौजूदा, प्रयोग में आ रहे ढांचे को लेकर उसी जगह एक नये प्रोजेक्ट का निर्माण करना है और वह भी ऐसे कि मौजूदा ढांचे में कम से कम बदलाव करने पड़े। इस मामले में चुनौतियाँ बिल्कुल भिन्न होती हैं। आइये उन पचास वर्ष पुराने पुलिस क्वार्टर्स का ही उदाहरण लें, जहाँ लोग रह रहे हैं और स्कूल, बाजार व अस्पताल जैसी सुविधाएँ भी मौजूद हैं। इस ढांचे को गिराकर फिर से बनाना है, क्योंकि पांच दशक पुरानी योजना आज की आवश्यकताओं के लिये काफी नहीं है, इसके अतिरिक्त मौजूदा ढांचे की नींवें कमजोर हो गयी हैं और बिल्डिंग भी जीर्ण-शीर्ण है।

इस स्थिति में प्रोजेक्ट लीडर को बुनियादी ढांचे के लिए योजना बनाते समय मौजूदा आवश्यकताओं पर ध्यान देना होगा। उनके लिए ध्यान देने योग्य मुद्दे हैं, वहां के निवासियों के रहने के लिये किसी अन्य जगह की व्यवस्था करना क्योंकि बिल्डिंग को गिराना अनिवार्य है, दूसरी जगह पर उनके बच्चों की शिक्षा हेतु नये स्कूल का इंतजाम करना, नये निर्माण से संबंधित नियम कानूनों पर ध्यान देना, रहने वाले लोगों को पुर्ननिर्माण की आवश्यकता समझाना व जब निवासी नये आवासों में रहने आये तो उन्हें बड़ा हुआ रख-रखाव शुल्क देने के लिये मनाना व यदि वे उसका विरोध करें तो उसे संभालना।

इन्हीं कारणों से मुंबई जैसे शहर में गंदी बस्तियों (स्लम) के विकास में पूर्व नियोजित समय से अधिक समय लग रहा है। नेता को योजना बनाते समय, लोगों का पक्ष सुनना चाहिए। कई बार मौजूदा स्थिति को ज्यों का त्यों रखकर पुर्ननिर्माण का कार्य कई चरणों में करना होता है।

नये ढांचे का निर्माण करते समय एक डिज़ाइनर व आर्किटेक्ट की तरह सोचें, स्वयं से निम्नलिखित प्रश्न पूछें-

- ▶ मैं कैसी आकृति चाहता हूँ?
- ▶ लोग इसके बारे में कैसा अनुभव करेंगे?
- ▶ क्या मैंने अन्य लोगों के विचारों पर ध्यान दिया है?
- ▶ क्या मैंने इसका निर्माण करते हुए आगामी समय पर विचार किया है?
- ▶ मैं बजट के अनुसार कैसे चलूँ?
- ▶ क्या लोग बदलाव का विरोध करेंगे?
- ▶ नव-निर्माण के लिये कौन-सी अनुमति लेनी होगी?
- ▶ मैं इसका निर्माण कितनी जल्दी कर सकता हूँ?

कागज पर योजना बनायें। समस्याएँ व उनके वैकल्पिक हल लिखें। फिर प्रत्येक समस्या के संभावित हल पर विचार करें। अन्यो से सलाह लें, लीक से हटकर सोचें, बदलाव लाने हेतु सोचने की दिशा बदलें (लेटरल थिंकिंग)। इस प्रकार अपनी बुद्धि का प्रयोग कर आप सर्वोत्तम ढांचा विकसित कर सकते हैं।

इस अध्याय में आप 'ठाणे पब्लिक स्कूल' के निर्माण की कहानी भी पढ़ेंगे- एक ऐसा भवन जिसका कोई अस्तित्व नहीं था और अब यह कई पुलिस अधिकारियों की प्रेरणा है।

किन्तु इसके पहले आइये हम आधारभूत संरचनाओं (बुनियादी ढांचे) के बारे में चाणक्य के विचार जानें।

अर्थशास्त्र की छठी पुस्तक के पहले अध्याय के आठवें सूत्र में चाणक्य ने दुर्ग के निम्नलिखित गुण बताये हैं।

- ▶ सौंदर्य बोध की दृष्टि से मन को भाने वाला।
- ▶ मनुष्यों के लिये उपयोगी

साथ ही जो लोग देश के बुनियादी ढांचे का भाग होते हैं, उनमें नीचे दिये गुण होने चाहिए।

- ▶ कार्य के प्रति समर्पण
- ▶ निष्ठा व ईमानदारी

एक उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे के ये स्थायी गुण हैं। चाणक्य ने कई अन्य गुण भी सूचीबद्ध किये हैं, किन्तु हम अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन चार पर ही चर्चा करेंगे। पहले दो गुण ठोस अथवा मूर्त बुनियादी ढांचे से संबंधित हैं अर्थात् वह ढांचा जो लोग इंद्रियों द्वारा अनुभव कर सकें। शेष दोनों गुण संगठन के जैसे कि संगठन में कार्यरत लोगों का दृष्टिकोण। अमूर्त बुनियादी ढांचे से जुड़े हैं, जैसे कि संगठन में कार्यरत लोगों का दृष्टिकोण।

भौतिक बुनियादी ढांचे का निर्माण करने में नेता पहले दो गुणों पर ध्यान देता है। जबकि अगले दो गुणों का विकास लोगों को स्वयं करना होता है। हालांकि, यह भी सच है कि अपने सहयोगियों व सहकर्मियों को इन गुणों का विकास करने हेतु प्रेरित करने में एक नेता की भूमिका अहम होती है। जैसे कि हमने पिछले अध्यायों में भी देखा है- एक स्वप्रेरित नेता ही, एक प्रेरक कार्य संस्कृति का निर्माण कर सकता है।

► सौन्दर्यबोध की दृष्टि से आकर्षक

आप जिस भी आधारभूत संरचना (बुनियादी ढांचे) का निर्माण करें, वह आकर्षक व शांतिमय होना चाहिये। वह देखने में सुंदर हो तथा आगंतुकों व कर्मचारियों को सुरक्षा व संरक्षित होने का भान कराये। याद करें, एक पांच सितारा होटल में जाने पर आप कैसा अनुभव करते हैं- वहाँ की बेहतरीन डिज़ाइन व अनुरक्षित वातावरण तथा विनम्र कर्मचारी आपको भान कराते हैं कि आप स्वागततुल्य हैं एवं वे आपका ध्यान रख रहे हैं। एक उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे का उद्देश्य यही है।

आकर्षक होने के अतिरिक्त बुनियादी ढांचे को कार्य की दृष्टि से भी उपयोगी होना चाहिए। वहाँ आने वाले व्यक्तियों को वह जगह भूल-भुलैया न लगे एवं वे वहाँ आकर अवांछित अनुभव न करें। वहाँ काम करने वाले कर्मचारी विनम्र हों व जिस उद्देश्य से लोग वहाँ आये हैं, वह कार्य पूर्ण करने में सहायता करने वाले हों। आब्रजन (इमिग्रेशन) प्रमुख के पद के अपने कार्यकाल (1987-91) के दौरान शिवनंदन की सबसे बड़ी सफलता यही थी। जैसा कि पहले कहा जा चुका है वे कार्यालय को एक सकारात्मक कार्यक्षेत्र में बदलने में सफल रहे। उनके कार्यालय में ऐसा अनुभव होता था मानो आप किसी कॉर्पोरेट ऑफिस में आये हैं, जहाँ लोग पूरी गंभीरता से आपकी बात सुनकर उसका हल निकालने का प्रयास करते हैं। ऐसे वातावरण का निर्माण कर उन्होंने पुलिस विभाग की सबसे बड़ी सफलता हासिल की थी।

बुनियादी ढांचे को आकर्षक बनाने पर खर्च करें। सही रंग चुनें व अच्छी सामग्री व उत्कृष्ट डिज़ाइनों का प्रयोग करें। आज जब हर चीज का उत्पादन बड़े स्तर पर किया जाता है, आपको उत्कृष्ट गुणवत्ता की वस्तुएँ कम दामों में मिल जाती हैं। थोड़े सा अध्ययन व अनुसंधान करें, वेबसाइट्स देखें, डिज़ाइनरों से प्रश्न पूछें और बाजार में उपलब्ध विभिन्न उत्पादों को देखें।

इन सारे प्रयत्नों के परिणामस्वरूप आप ऐसे बुनियादी ढाँचे का निर्माण कर पायेंगे जो देखने में आकर्षक हैं व जहाँ आकर आपके कर्मचारी व आगंतुक दोनों ही प्रसन्न रहें।

► मनुष्य के लिए उपयोगी

बुनियादी ढांचे के निर्माण में उन लोगों की राय ली जानी चाहिये जो उसका उपयोग करने वाले हैं। यदि आप इन लोगों को सम्मिलित करते हैं और उनकी समस्याएँ समझते हैं तो आधारभूत संरचना का निर्माण ऐसा होगा जो उनकी समस्याओं का समाधान कर सके।

उदाहरण के लिये, एक बहुराष्ट्रीय सॉफ्टवेयर निर्माता कंपनी के कर्मचारियों का एक सर्वे किया गया, जिसकी रिपोर्ट में बताया गया कि कर्मचारियों में थकान की अधिकता व ऊर्जा की कमी है। यह भी सामने आया कि अपनी ऊर्जा बढ़ाने व थकान कम करने के लिये कर्मचारियों को थोड़े-थोड़े अंतराल से कुछ खाने की इच्छा होती है।

किन्तु उनका कार्यस्थल कैंटीन से बहुत दूर था। इसलिए लोग केवल भोजन अवकाश में वहाँ जाते थे और भूख लगने के बावजूद भोजन अवकाश की प्रतीक्षा करते रहते थे। इस कारण कर्मचारियों की उत्पादकता काफी हद तक प्रभावित होती थी।

एक बार कंपनी को उनकी समस्या समझ आ जाने पर कंपनी ने नये आधारभूत ढांचे का निर्माण किया ताकि समस्या को हल किया जा सके। कई फ्रिज व भोजन रखने की अलमारियाँ खरीदीं व उन्हें ऊर्जा देने वाले पेयों व पौष्टिक भोजन से भर दिया गया। इन्हें पूरे ऑफिस में ऐसी जगहों पर रख दिया गया, जहाँ तक पहुँचने के लिये किसी भी कर्मचारी को बीस कदम से अधिक न चलना पड़े। कर्मचारियों को पूरे दिन असीमित भोजन उपलब्ध था और वह भी मुफ्त!

इस पहल का परिणाम था कर्मचारियों के ऊर्जा स्तर, उत्पादकता व क्षमता में वृद्धि। यहाँ हम एक और उदाहरण लेते हैं। एक समय शिवनंदन ठाणे के पुलिस कमिश्नर के पद पर थे। वे अक्सर सड़क के किनारों पर बनी चाय की दुकानों पर पुलिस वालों की चाय पीते देखा करते। उन्होंने उस क्षेत्र में एक रेस्टोरेंट के निर्माण का निर्णय लिया, जहाँ पुलिसकर्मी अपने सहयोगियों से बातचीत कर सकें व उन्हें हल्का नाश्ता भी मिल सके और इस प्रकार 'ऊर्जिता' रेस्टोरेंट व लंच होम अस्तित्व में आया। इसकी महत्ता एक पुलिस वाले व सॉफ्टवेयर इंजीनियर के लिये

समान ही है। आखिर पुलिसकर्मी भी पूरा दिन शरीर व दिमाग दोनों से मेहनत करते हैं। और सॉफ्टवेयर इंजीनियरों के विपरीत, जिनका कार्य केवल उनकी मेज तक सीमित रहता है, पुलिसकर्मियों को कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों में ऊँचे शोर व दूषित हवा में रहते हुए कार्य करना होता है।

अतः एक नेता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका कार्य स्थल स्वयं उनके व उनके मातहतों व अन्य कर्मचारियों के लिये प्रेरक हो। चूंकि आजकल लोग एक लम्बा समय अपने कार्यालय में बिताते हैं, अतः कार्यालय की संरचना, उन्हें घर पर होने का एहसास देने वाली होनी चाहिए।

► कार्य के प्रति समर्पण

पहला कदम है अच्छे बुनियादी ढांचे का निर्माण। अगला कदम है, ऐसे लोगों को कार्य पर रखना जिनमें अपने कार्य के प्रति समर्पण हो।

भ्रष्ट, लालची व स्वार्थी लोग कार्यालय के ढांचे का प्रयोग अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये करने लगते हैं। आप कई शक्तिशाली कार्यालयों में ऐसा होते हुए देख सकते हैं, जहाँ के कर्मचारी जन-सेवक (पब्लिक सर्वेंट) होते हुए भी, जनता से अपनी सेवा करवाते हैं।

आपके संगठन में कार्य करने वाले लोग 'जीवन मूल्यों' में विश्वास करने वाले होने चाहिए। इसका आरंभ फिर से उसी नेता से होता है जो अपने संगठन के प्रति समर्पित है। यदि वह अपने पद की शक्ति का प्रयोग समुचित कारणों के अनुरूप ही करता है, तो उसके मातहत कभी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं कर पायेंगे।

यदि किसी अच्छे आदमी को बुरे तंत्र में डाल दिया जाये तो वह स्वयं भी भ्रष्ट हो सकता है, किन्तु यदि नेता को भ्रष्ट ही नहीं किया जा सकता तो ऐसे तंत्र में भ्रष्ट व्यक्ति काम नहीं कर पायेगा। एक नीतिपरक नेता की महत्ता यही है।

इसके अतिरिक्त संगठन में कार्य करने वाले लोगों में नेता के सपनों व परिकल्पनाओं को स्वीकार करने व उनसे जुड़ने की योग्यता होना अनिवार्य है।

उदाहरण के लिये, एक कंपनी बीस वर्षों से एक छोटी सी जगह से कार्य कर रही थी। अंततः वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद उस कंपनी के मालिक (नेता) का एक बड़े ऑफिस का निर्माण करने का सपना साकार हुआ।

जब उस ऑफिस का उद्घाटन हुआ तो कंपनी के चपरासी ने कहा, “मेरा भी पिछले 20 वर्षों से यही स्वप्न था कि हमारी कंपनी के पास एक ऑफिस हो।”

वह एक व्यक्ति है जो अपने कार्य को समर्पित है। चपरासी ने कोई बड़ी तनख्वाह का सपना नहीं देखा था। वह संगठन के साथ बढ़ा था और अपने नेता के स्वप्न से जुड़ने लगा था। यह चपरासी अपनी व्यक्तिगत सफलता से कहीं अधिक अपनी कंपनी की सफलता चाहने लगा था। यदि एक नेता अपने स्वप्न को अपने मातहतों का स्वप्न बनाने में सफल हो जायें तो समझे उसने अपने नेतृत्व का परिचय दे दिया है और तब उस संगठन का प्रत्येक व्यक्ति एक बड़े लक्ष्य की प्राप्ति की प्रेरणा से कार्य करता है। समर्पण एक मानसिक स्थिति है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति का कार्य कंपनी या समाज के उत्थान जैसे किसी बड़े उद्देश्य को समर्पित रहता है।

► निष्ठा व ईमानदारी

कई बार अच्छी तनख्वाह पाने के बाद भी कर्मचारी कार्यालयों में छोटी-मोटी चोरी व अन्य ओछे व्यवहार से बाज़ नहीं आते हैं, जैसे कि माउस पैड या कार्यालय से अन्य उपकरण चुराना। इसे बदलना एक कठिन समस्या बन जाती है।

कंपनी में कर्मचारियों की निष्ठा हासिल करना, एक अच्छे नेता की भूमिका का महत्वपूर्ण भाग है। जो लोग बार-बार काम बदलते हैं, उनके लिये नौकरी देने वाली कम्पनियों को अपनी निष्ठा या कुशलता का विश्वास दिलाना कठिन रहता है।

निष्ठा के लाभ लम्बे समय बाद ही मिलते हैं। यदि आप ईमानदारी से कड़ी मेहनत करते हैं तो उसका ईनाम

अवश्य मिलता है। लोगों में उद्देश्य व नीयत की ईमानदारी का विकास करना आवश्यक है। यदि नेता, पुलिस कमिश्नर या सेना का कमांडर स्वयं एक अनुकरणीय उदाहरण है तो विभिन्न कॉर्पोरेशन्स या कंपनियों, पुलिस बल, सेना व अर्द्धसैनिक बलों में इस आधार मूल्य का विकास किया जा सकता है।

यदि संकट के समय नेता अपने दल के साथ एक मित्र, दार्शनिक व सलाहकार के रूप में खड़ा रहे, तो इस तरह की निष्ठा का निर्माण करना सरल होता है।

इस प्रकार लोगों के अंतःकरण व बाह्य वातावरण में उत्कृष्ट बुनियादी ढांचों का निर्माण कर महान संगठन बनाये जा सकते हैं।

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे का निर्माण

एक राष्ट्र, समाज, परिवार व व्यक्ति के रूप में हमें अपने महान पूर्वजों का आभारी होना चाहिए, जिन्होंने अपना जीवन उस मूलभूत संरचना के निर्माण को अर्पित कर दिया, जिसपर आज हमारी आजीविका टिकी हुई है। आईये, हम उसी पथ पर चलें व उस निर्माण को और उन्नत बनायें।”

मास्टर जिन क्रॉन

इस केस स्टडी में आप शिवनंदन की उन पहलों के बारे में जानेंगे जो उन्होंने अपने विभिन्न नियुक्तियों पर बुनियादी ढांचे निर्मित करने के लिये कीं।

26 नवंबर 2008 को मुंबई पर हुए आतंकवादी हमले के तुरंत बाद ही, जून 2009 में शिवनंदन को मुंबई पुलिस का कमिश्नर नियुक्त किया गया।

यह वह समय था, जब आतंकी हमले के बाद, पूरा विश्व मुंबई व भारत की ओर देख रहा था। जिस प्रकार इस आतंकी हमले से निबटा गया, उससे पूरे देश की जनता में आक्रोश था। राष्ट्रीय सुरक्षा व पुलिस की कार्य कुशलता को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूक्ष्मता से जांचा जा रहा था। आम आदमी का सरकार पर से विश्वास उठ चुका था। मुंबई व पूरे देश में कई दल, शासन तंत्र के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने के लिये सड़कों पर उतर आये थे। इसके परिणामस्वरूप महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री व गृहमंत्री को त्याग पत्र देना पड़ा।

शिवनंदन के कार्यकाल के अंतिम पड़ाव पर एक ऐसा कार्य आ गया था जिसे पूरा किया जाना था। उन्होंने जब यह पद ग्रहण किया, सभी की दृष्टि उनकी ओर थी, उनके पास समय सीमित था, जनता नाराज थी व सरकार को पता नहीं था कि क्या कदम उठाये जाने चाहिये।

एक संवाददाता ने उनसे उनकी प्राथमिकताओं के बारे में प्रश्न किया। उनका उत्तर स्पष्ट था, “केवल एक एजेंडा है- आतंकवाद से मुकाबला।”

एक नेता होने के नाते आप प्रत्येक चीज़ के लिये उत्तरदायी होते हैं, किन्तु आपको मौजूदा स्थिति समझने व मूल समस्या पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि आप अन्य समस्याओं की उपेक्षा करें। आपको सभी समस्याओं का भान होता है, किन्तु आपको ध्यान मूल समस्या पर केन्द्रित करना होता है।

यहाँ 80-20 का सिद्धांत लागू होता है : आपकी ऊर्जा का 80% मूल समस्या पर खर्च होना चाहिए जबकि बचा हुआ 20% अन्य मुद्दों पर लगाया जा सकता है। शिवनंदन के लिए उनकी 80% ऊर्जा आतंकवाद से मुकाबला करने पर केन्द्रित थी व बची हुई 20% अन्य समस्याओं के लिये थी, जैसे कि पुलिसकर्मियों के लिये घर, पदोन्नतियाँ व वेतन का प्रबंध करना। एक साथ कई कर्तव्यों का निर्वाहन व अपनी मानसिक एकाग्रता के बीच संतुलन बनाये रखना ही नेतृत्व है।

1990 के दशक में जब उन्होंने अंडरवर्ल्ड की आंतरिक सांठ-गांठ को तोड़ा, तब परिदृश्य अलग था। उन्होंने तब जो किया आज वे उसे दोहरा नहीं सकते थे। बीस वर्षों बाद आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या बन गया था और

उसकी गतिविधियों का फैलाव भी विश्वव्यापी था। फिर भी 1990 के अंडरवल्ड के दबदबे से मुकाबला करने व 2008 के आतंकवादी हमले के बाद की स्थिति में कुछ समानताएँ थी। शिवनंदन को लोगों में विश्वास का निर्माण करना था, कम से कम समय में सरकार का अनुमोदन लेना था और सर्वाधिक महत्वपूर्ण था, पुलिस के मनोबल का निर्माण।

जब समस्या पाकिस्तान जैसे देश से आरम्भ हो तो उसका हल सरल नहीं होता। 1947 के बाद से दोनों देशों ने एक-दूसरे से युद्ध भी किये हैं (1947, 1965, 1971, 1979) और शांतिपूर्ण हल निकालने के प्रयत्न भी।

दोनों देशों ने अपनी समस्याओं को राष्ट्राध्यक्ष की बीच हुई कूटनीतिक मुलाकातों द्वारा सुलझाने का प्रयत्न कई बार किया है, यहाँ तक कि आर्थिक हल भी निकाले गये। सांस्कृतिक कार्यक्रम, कलाकारों व संगीतकारों का सांस्कृतिक आदान-प्रदान व दोनों देशों के बीच क्रिकेट के टूर्नामेंट भी दोनों देशों में आयोजित किये गये। एक-दूसरे का विश्वास जगाने के लिये भी कई कदम उठाये गये, लेकिन फिर भी इस कैसर का कोई स्थायी इलाज नहीं मिल पा रहा है।

दूसरी ओर पुलिस, थलसेना, जलसेना, वायुसेना, सीमा सुरक्षा बल व भारतीय तट रक्षक दल जैसे संगठन शांति का रास्ता नहीं अपना सकते। उन्हें सबसे बुरी स्थिति- युद्ध के लिये तैयार रहना होता है।

26/11 के आतंकी हमले ने मुंबई पुलिस को एक मूल्यवान शिक्षा दी। यद्यपि उन्हें एक निश्चित भूगोलीय क्षेत्र में सीमित संसाधनों के साथ वहाँ की कानून व व्यवस्था की स्थिति संभालनी थी, किन्तु अब उन्हें एक निम्न लागत (लो-कॉस्ट) युद्ध के लिये भी सदा तैयार रहना था।

अधिकतर यह भूमिका सेना व अन्य संगठन निभाते हैं जिनके पास समुचित संसाधन व प्रशिक्षण होता है। उन्हें पहले दिन से ही सीमा पर मौजूद शत्रु को मारने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जबकि पुलिस बल को अपराधियों से निबटने, ट्रैफिक का प्रबंधन करने, वयोवृद्ध नागरिकों की देखभाल व डकैती एवं हत्या के मामलों की छानबीन करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह सब, एक राष्ट्रीय युद्ध के लिये दिये जाने वाले प्रशिक्षण से बहुत भिन्न है।

किन्तु एक नेता होते हुए शिवनंदन ने निर्णय लिया कि वे पीछे नहीं हटेंगे और यह कहकर सरकार पर दोषारोपण नहीं करेंगे कि, “यह मेरा काम नहीं था”, या “अपर्याप्त बुलेट प्रूफ जैकेटों व आयुधों के साथ, आप हमसे कैसे यह आशा करते हैं कि हम एक ऐसा युद्ध लड़ेंगे, जो आमतौर पर सेना द्वारा लड़ा जाता है?”

इसके विपरीत उन्होंने सोचा कि परिवर्तन का समय आ गया है।

महाराष्ट्र पुलिस को अब एक राष्ट्रीय बल के रूप में विकसित होना होगा और सेना की तरह मजबूत बनना होगा, यह परिवर्तन पुलिस की कार्य प्रणाली में एक मापदंड बनेगा। उन्होंने अपनी योजना सरकार के सामने पूरी स्पष्टता से रखी। जो अभी तक नहीं किया गया था, वह अब किया जाना आवश्यक था ताकि भविष्य में उभरने वाली समस्याओं से मुकाबला किया जा सके।

उन्हें पुलिस की छवि बदलनी थी और उसे पूरी तरह नया बना देना था।

महाराष्ट्र पुलिस के इतिहास में निम्नलिखित कदम पहली बार उठाये गये:-

- ▶ सरकार ने, उसे दिये गये विभिन्न प्रस्तावों के आधार पर 126 करोड़ रूपयों की मंजूरी दी।
- ▶ कई स्पीड बोट्स खरीदी गईं। पुलिस ने भारतीय तट रक्षक सेना के साथ मिलकर काम करना आरम्भ किया, क्योंकि आतंकवादी समुद्र के रास्ते आये थे।
- ▶ 1500 एमपी3 व एमपी4 बंदूकें व गोलियाँ खरीदी गईं।
- ▶ 40 मार्क्स मैन, बुलेट प्रूफ जीपें व आमने-सामने की लड़ाई में काम आने वाले कई छोटे वाहन खरीदे गये।
- ▶ पाँच सिमुलेटर्स खरीदे गये ताकि पुलिसकर्मी शहरी व ग्रामीण स्थितियों में गोली चलाने का अभ्यास कर सकें। आर.डी. प्रधान कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि पुलिस बल के पास अभ्यास करने के लिए पर्याप्त आयुध नहीं है। सिमुलेटर्स की खरीद ने इस अवरोध का निवारण कर दिया।
- ▶ कई नयी संस्थाएँ भी अस्तित्व में आयीं जैसे कि फोर्स-1, जो कि एन.एस.जी. कमांडोज़ की श्रेणी में आती हैं और क्विक रिसपोंस टीम (QRT) जिसमें पंद्रह सौ पुलिसकर्मी हैं। पुलिसकर्मियों के लिये विश्वस्तरीय प्रशिक्षण

कार्यक्रम आयोजित किये गये। उदाहरण के लिये QRT सर्वोत्कृष्ट कमांडों द्वारा प्रशिक्षित है।

अगला कदम था पुलिस द्वारा उठाये गये इन कदमों से आम आदमी को अवगत कराना, ताकि वह सुरक्षित अनुभव कर सके। इसके लिये शिवनंदन ने न केवल युद्ध जैसी स्थिति का मुकाबला करने वाले पुलिस बल का गठन किया, अपितु उन्होंने नागरिकों से सतत संवाद स्थापित किया व उन्हें पुलिस द्वारा उठाये गये कदमों की जानकारी देते रहे।

यह संवाद स्थापित करने के लिये उन्होंने निम्नलिखित तरीके अपनाये:-

- ▶ मीडिया का उपयोग: पुलिस द्वारा उठाये गये कदमों का संदेश मीडिया ने केवल स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में बहुत मदद की।
- ▶ भाषणों के दौर: शिवनंदन ने व्यक्तिगत रूप में कई क्लबों, सामुदायिक सभाओं, स्कूलों व कॉलेजों में उद्बोधन दिये, ऐसे में उनके भीतर का प्रोफेसर जीवंत हो उठता था। उनका मूल संदेश होता था “आपकी सुरक्षा - हमारा दायित्व”।
- ▶ सेमिनारों का आयोजन: उन्होंने सामरिक नीतियाँ बनाने वाले कई विशेषज्ञों को राष्ट्रीय सुरक्षा पर अपने विचार बांटने के लिये आमंत्रित किया। इन लोगों में शामिल थे सर्वश्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, एम.के. नारायणन, जूलियो रिबेरो, अजय साहनी, अनिल काकोडकर, आर. माशेलकर, श्यामल दत्ता, एम.जे. अकबर, संदीप वास्लेकर एवं के.पी.एस. गिला। इन आयोजनों के पीछे शिवनंदन का उद्देश्य था, पुलिस बल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों से मिलाने को प्रोत्साहित करना ताकि उन्हें नये विचार सुनने को मिलें और वे प्रोत्साहित हों एवं उनमें आशा का संचार हो - न कि 26/11 के अनुभव से हतोत्साहित हो, वे अपने खोल में दुबके रहें।
- ▶ मेमोरियल परेड का आयोजन: 26/11 की पहली वर्षगांठ पर सन् 2009 में होटल ओबेरॉय ट्रायडेंट से गिरगाम चौपाटी तक परेड निकाली गयी। इस परेड का उद्देश्य था, नये खरीदे गये उपकरणों व दिये गये प्रशिक्षण का प्रदर्शन करना। यह परेड करीब-करीब गणतंत्र दिवस परेड जैसी थी, जिसमें राष्ट्र की शक्ति प्रदर्शित की गयी थी।
- ▶ पुलिस थानों के साथ जानकारी बांटना: पुलिस बल का आत्मविश्वास व मनोबल बढ़ाने के लिये किये गये उपायों में से एक था, नये खरीदे गये उपकरणों, प्रशिक्षण व सुरक्षा के उपायों से संबंधित पोस्टर बनाना व उन्हें सभी पुलिस थानों में लगाना।

यद्यपि डीजीपी का पद शिवनंदन के कार्यकाल का अंतिम पद था, जिस पर रहते हुए उनकी अधिकांश ऊर्जा व संसाधन एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे के निर्माण में खर्च हुए, किन्तु ऐसे दीर्घकाल तक टिकने वाले आधारभूत ढांचे बनाना, सदा ही शिवनंदन की नेतृत्व शैली की विशेषता रही। नेताओं को समझना चाहिए कि बुनियादी ढांचे, आकर्षक आंतरिक साज-सज्जा से कहीं अधिक होते हैं। यह एक संदेश होता है जो आप लोगों तक पहुँचाते हैं कि हम विश्वस्तरीय बनने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। हम अपने कार्य के प्रति गम्भीर हैं और सर्वाधिक महत्वपूर्ण तो यह है कि हम आपका ध्यान रखते हैं।

आइये अब एक नजर उन बुनियादी ढांचों पर डाले जिनका निर्माण शिवनंदन ने अपने कार्यकाल में किया। आप पायेंगे कि चाणक्य ने उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे के जिन गुणों का वर्णन किया है, वे सभी यहाँ मौजूद हैं।

▶ सौंदर्य बोध की दृष्टि से मोहक

व्यायाम शालाएँ: पुलिस बल में भी शिवनंदन ने अपने लोगों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी। उन्होंने पुलिस थानों में 25 विश्वस्तरीय व्यायामशालाओं का निर्माण किया और इनमें सर्वोत्तम उपलब्ध उपकरण लगाये। व्यायामशालाओं के बुनियादी ढांचे में सुधार के बाद इनका उपयोग करने वाले पुलिसकर्मियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई।

शिवनंदन ने जो व्यायामशालाएँ बनवाई, वे देखने में आकर्षक थीं और उनमें विश्वस्तरीय उपकरण थे। प्रत्येक व्यक्ति को इन व्यायामशालाओं का उपयोग कर गर्व की अनुभूति होती थी।

► मनुष्य के लिये उपयोगी

विश्वस्तरीय अस्पताल व प्रशिक्षण केन्द्र बनाने के अतिरिक्त शिवनंदन ने पुलिस थानों के बुनियादी ढांचे में भी महत्वपूर्ण सुधार किये। ये पूरा बुनियादी ढांचा पुलिस बल के लिये उपयोगी है।

अस्पताल: अस्पताल मात्र वे स्थान नहीं है, जहाँ डॉक्टर व नर्सें पाये जायें। यह प्रत्येक के लिये आशा लाने वाला स्थान है। जब एक व्यक्ति अस्पताल में आता है, तब उसके मन में भय व आशा के भावों का मिश्रण होता है। एक उत्कृष्ट व स्वच्छ अस्पताल, जहाँ ध्यान रखने वाले डाक्टर हों, वहाँ आने वाले मरीजों व उनके परिवारों को आश्वस्त करता है उनमें फिर से स्वस्थ हो जाने का विश्वास जगाता है और सोने पर सुहागा तो तब है जब ऐसे किसी अस्पताल में इलाज पर खर्चा भी न हो। शिवनंदन ने ऐसे ही अस्पताल व स्वास्थ्य सेवा केन्द्र बनाने की एक प्रणाली पर कार्य किया।

उनकी प्राथमिकता एक ऐसा आधुनिक अस्पताल बनाने की थी, जो पुलिसकर्मियों को सस्ती दरों पर सुविधाएँ मुहैया कराये, इसका कारण था मौजूदा पुराने अस्पताल की जीर्ण-शीर्ण स्थिति। शिवनंदन ने 2.5 करोड़ रुपये की लागत वाले एक विशाल खेल स्टेडियम के निर्माण की जिम्मेदारी ली। इस स्टेडियम में स्टेट बैंक के ए.टी.एम. के अलावा पुलिस परिवारों के लिये एक किराना स्टोर व एक अस्पताल रखा गया, जिसमें सात एयरकंडीशन कमरे, वोकहार्ट अस्पताल के सुपरस्पेशलिटी डाक्टरों को दिये गये, जिनके साथ दस वर्षों का एम.ओ.यू. (मैमोरेन्डम ऑफ अंडरस्टैंडिंग) साइन किया गया है। कई कॉरपोरेट हाउसेज़ ने कई प्रकार के महंगे उपकरण भी इस अस्पताल को दान किये, जिनमें एक डेंटल चेअर, एक कलर डॉपलर मशीन, नेत्र चिकित्सा विभाग के काम आने वाले उपकरण व एक पूर्ण सुसज्जित एम्बुलेंस भी है।

यह शिवनंदन की परिकल्पना ही थी कि 7000 पुलिस कर्मी व उनके परिवार जो कि अभी तक सरकारी अस्पतालों में उपेक्षित होते थे अब तुरंत लाभान्वित होने वाले थे।

शिवनंदन ने पुलिस बल के लिये एक स्वास्थ्य संदर्भ पुस्तिका का निर्माण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस पुस्तिका की चालीस हजार प्रतियाँ छपवायी गईं व प्रत्येक पुलिसकर्मी को दी गईं। सभी पुलिसकर्मियों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और अस्वस्थ पाये जाने पर प्रत्येक पुलिसकर्मी पर ध्यान दिया गया।

योग, खेल प्रतियोगिताएँ तथा भोजन व पौष्टिकता जैसे विषयों पर विशेषज्ञों की सलाह से कई कार्यक्रम बनाये व आयोजित किये गये। इन सभी का एक ही उद्देश्य था पुलिस बल को स्वस्थ रखना।

इस प्रकार शिवनंदन ने सुनिश्चित किया कि उनकी फोर्स के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाये।

अस्पतालों, व्यायामशालाओं तथा स्वास्थ्य केन्द्रों का निर्माण, ठोस/मूर्त बुनियादी ढांचे के अंतर्गत आता है तथा स्वास्थ्य व सुरक्षा के लिये वातावरण का निर्माण, सॉफ्ट/अमूर्त बुनियादी ढांचे का निर्माण है।

पुलिस थानों में सुधार:- पुलिसकर्मियों के लिये पुलिस थाना ऊर्जा पाने का स्थान है। जिस प्रकार एक मोबाईल फोन को समय-समय पर बिजली के प्वाइंट पर लगा कर चार्ज करने की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार पुलिस थाना वह जगह है जहाँ पुलिसकर्मी कठिन परिश्रम करने तो आते ही है, परन्तु साथ ही वे यहाँ अपने संघर्षपूर्ण कार्य दिवस के दौरान चार्ज होने व फिर से तरोताजा होने भी आते हैं। जैसे कि हमने पहले भी कहा है, एक कॉरपोरेट्स जॉब के विपरीत, जहाँ कर्मचारी चारदिवारी के भीतर ही कार्य करते हैं, पुलिसकर्मी को अपनी गतिविधियाँ थाने के बाहर भी बनाये रखनी होती है। पुलिस थाना वह जगह है, जहाँ वे अपने लम्बे व थकाने वाले दिन में एक छोटा विराम लेने के लिए आ जाते हैं।

शिवनंदन ने पुलिस थानों को पुलिसकर्मियों के लिये ऊर्जा पूर्ति स्थल बनाने के लिये कड़ी मेहनत की। महिला पुलिसकर्मियों की बढ़ती संख्या के कारण यह महत्वपूर्ण हो गया था कि थानों में उनके लिये विशेष सुविधाएँ हों, व ऐसे बुनियादी ढांचे बनाये जायें जो उनके अनुकूल हों। अतः शौचालयों, प्रसाधन कक्षों, भोजन करने व सहकर्मियों से बातचीत करने के लिये उपयुक्त स्थानों का निर्माण किया गया।

पुलिसकर्मियों का खान-पान, सड़क किनारे बनी छोटी दुकानों पर ही होता था। अतः सीपी ऑफिस के अंदर एक पुलिस कैफे का निर्माण किया गया। पद्मश्री प्रेमा पुरव ने पुलिसकर्मियों की पत्नियों को प्रशिक्षण दिया, व इन महिलाओं ने ही यह कैफे चलाया व मुनाफा कमाया। इस कैफे में पूरा पूंजीगत निवेश महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ

हाउसिंग इंडस्ट्रीज ने किया।

पुलिस क्वार्टर्स में एक रेस्टोरेंट की आवश्यकता भी अनुभव की जा रही थी। अतः ऊर्जिता नाम से एक रेस्टोरेंट बनाया गया व उसे एक स्थानीय रेस्टोरेंट चलाने वाले को किराये पर दे दिया गया। इससे होने वाली मासिक आय पुलिस वेलफेयर फंड में जमा की जाती है।

पुलिस थानों के प्रशासकीय विभाग को भी उन्नत बनाने के लिये कम्प्यूटर्स, यूजर- फ्रेंडली-टेक्नोलॉजी व पुलिस-सम्बंधी-कार्य के लिये विशेष रूप से बनाये गये सॉफ्टवेयर लगाये गये। नेशनल असोसिएशन आफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विसेज कम्पनीज़ (NASSCOM) के सहयोग से, अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी पर आधारित एक साइबर क्राइम लैब भी सीपी कार्यालय में, 75 लाख रुपये की लागत से बनायी गयी। इस लैब में अब तक 2,600 पुलिस कर्मियों को साइबर क्राइम पता लगाने व उसकी जांच करने का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। मैनेजमेंट इनफॉर्मेशन सिस्टम्स (एम आय एस) को भी अधिक तेज व कार्यकुशल बनाने हेतु उन्नत किया गया।

प्रशिक्षण केन्द्र: किसी भी संस्था का विकास इस पर निर्भर करता है कि वहाँ कार्यरत व्यक्तियों को दिये गये प्रशिक्षण की गुणवत्ता कैसी है। पुलिस कर्मचारियों को भी नियमित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। भर्ती के समय पुलिसकर्मियों को दिया गया प्रशिक्षण समय के साथ पुराना व अनुपयोगी हो जाता है।

पुलिस बल को कुशल व प्रभावकारी बनाने के लिये आवश्यक है कि उनका तकनीकी ज्ञान बढ़ाया जाये व उनकी सॉफ्टस्किल्स का विकास किया जाये।

इसके लिये शिवनंदन ने पूरे राज्य में प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये। एक विशाल व अत्याधुनिक प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण घोडबन्दर रोड स्थित सिनेमा थियेटर कॉम्प्लेक्स में किया गया। जहाँ एक विशाल कमरा ठाणे म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन ने पुलिस विभाग को उपहारस्वरूप दिया था। इसे सुसज्जित कर नाम दिया गया 'मथन', जिसका अर्थ है- आंदोलित करना (विचारों को)। कई सफल प्रशिक्षण कार्यक्रम यहाँ आयोजित किये गये व अभी भी किये जा रहे हैं। प्रशिक्षण के लिये आवश्यक संसाधनों से सुसज्जित एक अन्य ऑडिटोरियम 'प्रेरणा' का निर्माण मुम्बई पुलिस जिमखाना में किया गया।

पुणे स्थित महाराष्ट्र इंटेलिजेंस एकेडमी एक अन्य अत्याधुनिक संसाधनों वाला प्रशिक्षण केन्द्र है, जहाँ जानकारीयों एकत्रित करने की निपुणता को निखारा जाता है।

► कार्य के प्रति समर्पण:

ठाणे पुलिस स्कूल : शिवनंदन ने अपने कार्यकाल के दौरान जितने भी ढांचे तैयार किये उनमें उनका सबसे प्रिय है- ठाणे पुलिस स्कूल। इस भवन का निर्माण करने पर उन्हें बहुत गर्व है। यह भवन पुलिसकर्मियों के लिये है और आने वाली कई पीढ़ियों को लाभान्वित करेगा। नागपुर रेंज के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल (पुलिस) के अपने कार्यकाल के दौरान, गढ़चिरौली व चन्द्रपुर में वे दो पुलिस स्कूलों का निर्माण कर चुके थे।

इस बात की गारंटी कोई कैसे ले सकता है कि कोई कर्मचारी अपने कार्य के प्रति समर्पित रहेगा? धन देकर या कानून के पालन द्वारा यह नहीं हो सकता। यह केवल तभी होता है जब कर्मचारी यह अनुभव करता है कि कोई उसका ध्यान रख रहा है, कि कोई उन मुद्दों को महत्वपूर्ण समझता है जो उसके लिये महत्वपूर्ण हैं।

इस स्कूल के पुर्ननिर्माण की कहानी आशा व परिकल्पना, रूपांतरण व समस्या के भीतर ही हल खोजने की कहानी है।

यह सन् 2005 का वाक्या है जब शिवनंदन न ठाणे के पुलिस कमिश्नर थे। वे अपने कार्यालय य में अपना रोजमर्रा का काम कर रहे थे कि एक महिला उनसे मिलने आई। वह ठाणे के पुलिस स्कूल में अध्यापिका थीं व अपने पद से त्याग-पत्र देना चाहती थी।

उसने कहा कि स्कूल बदहाल था और वहाँ की खराब परिस्थितियों के कारण उसका मोहभंग हो चुका था। वह स्कूल की एकमात्र अध्यापिका थी और स्कूल में कोई सुविधाएँ नहीं थी। इस कारण कोई नया बच्चा स्कूल में प्रवेश नहीं ले रहा था।

शिवनंदन के भीतर के अध्यापक ने इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने तुरंत स्कूल देखने का निर्णय लिया, जो

कि सीपी कार्यालय के सामने सड़क के दूसरी ओर था। वे उस अध्यापिका के साथ ही स्कूल गये।

यह स्कूल 1920 में बना था। उसमें एक ही कमरा था जिसमें अस्सी बच्चे व स्कूल की एकमात्र अध्यापिका बैठते थे। न शौचालय था, न पंखे व न ही बत्ती। निसंदेह, उन्हें बेहतर सुविधाएँ मिलनी चाहिए थीं।

उन्होंने जो देखा वह समस्या नहीं अपितु उसका निदान था। जिस विशाल मैदान में स्कूल स्थित था, वह पुलिस विभाग का था। शिवनंदन ने उस खस्ता हाल स्कूल को एक विश्वस्तरीय सुविधा में बदलने की परिकल्पना की।

इस मैदान का पुलिस सम्पत्ति होना एक ऐसा सिरा था, जिससे अच्छी शुरुआत की जा सकती थी। वे जान गये थे कि पुलिस कर्मियों की अगली पीढ़ी के निर्माण का यह एक स्वर्णिम मौका था। किन्तु खान से सोना निकालने के लिये परिश्रम व सही प्रक्रिया आवश्यक है। बिना समय गंवाये उन्होंने योजना बनाना व काम करना आरम्भ कर दिया।

उन्होंने कुछ फोन किये व संबंधित कानूनी प्रावधानों को जांचा। उन्होंने आर्थिक गणना की और जो लोग इस कार्य में उनकी सहायता कर सकते थे, उनके नामों पर विचार किया। कुछ ही दिनों में उनकी कल्पना पूरी तरह स्पष्ट हो गयी थी। अब यह संभव था।

उन्होंने सरकारी अनुमति, स्कूल की सम्बद्धता व इस उद्देश्यपूर्ति में उनका साथ देने वाले लोगों का इंतजाम किया। उन्होंने मार्च 1, 2005 से यह कार्य आरम्भ किया और जून 15, को स्कूल आरम्भ हो गया। दिसम्बर 19, 2005 को शियामक डावर के नृत्य कार्यक्रम द्वारा जनता से 3.5 करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई। अगस्त 15, 2006 तक स्कूल भवन अपने 40,000 स्क्वेयर फीट के साथ गर्व से सिर उठाये खड़ा था। तत्कालीन गृहमंत्री श्री आर.आर. पाटिल ने प्रभारी मंत्री श्री गणेश नाईक व अन्य सभी जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में इसका उद्घाटन किया। अंततः अब पुलिसकर्मियों के पास उनका अपना स्कूल था। मात्र कुछ ही महीनों में पूर्ण सुविधायुक्त स्कूल तैयार था।

जब स्कूल शुरू हुआ तो यह पिछले स्कूल से कहीं बड़ा व सुविधापूर्ण था। अतः यह निर्णय लिया गया कि इस स्कूल की आधी सीटें पुलिसकर्मियों के बच्चों के लिये रियायती शुल्क पर आरक्षित रखी जायेंगी। आज उस स्कूल में करीब 3000 बच्चे पढ़ते हैं। पुलिसकर्मियों के बच्चे केवल 25% फीस ही देते हैं। किसी से कोई डोनेशन या सहयोग राशि नहीं ली जाती। पिछले चार वर्षों से स्कूल की दसवीं कक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है और छात्रों ने प्रथम श्रेणी व विशेष योग्यताएँ पाई हैं।

स्कूल में प्रवेश लेने के इच्छुक बच्चों की बढ़ती संख्या के कारण भवन में चार मंजिलें और जोड़ी गई। स्कूल में प्रवेश के लिये भारी भीड़ होती है तथा पुलिस कर्मियों के अतिरिक्त अन्य लोगों के बच्चे भी यहाँ प्रवेश चाहते हैं और प्रवेश के इच्छुक लोगों की प्रतीक्षा सूची बढ़ती जा रही है।

समय के साथ स्कूल ने उन्नति की है और आज वह ठाणे के सर्वाधिक प्रसिद्ध स्कूलों में से एक है। स्कूल के छात्रों ने खेल एवं पढ़ाई दोनों में ही प्रवीणता पाई है, व उनके माता-पिता को अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल दिखता है। शिवनंदन द्वारा बनायी गयी स्कूल की वेबसाइट www.thanepoliceschool.com पर आप इस स्कूल के बारे में अधिक जानकारी पा सकते हैं।

शिवनंदन के लिए सर्वाधिक प्रसन्नता का क्षण वह था जब उनके मातहत ने उन्हें फोन पर कहा, “सर, पुलिसकर्मियों की पत्नियाँ व बच्चे बहुत नाराज हैं, क्योंकि उनके बच्चों को इस स्कूल में प्रवेश नहीं मिल रहा है। 50 प्रतिशत सीटों पर दिया गया आरक्षण आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पा रहा है। वे चाहते हैं कि बाहरी बच्चों को प्रवेश न दिया जाये। हम पूरी 100 प्रतिशत सीटें पुलिसकर्मियों के बच्चों के लिये चाहते हैं।”

शिवनंदन मुस्कराये। उन्हें वह दिन याद आया। जब नौकरी छोड़ देने पर दृढ़, एक अध्यापिका उनके कार्यालय में आई थी और आज वे गौरवान्वित व प्रसन्न थे कि एक पुलिसकर्मी उन्हें फोन कर और बच्चों को प्रवेश देने के लिये और सीटें मांग रहा है। उनका स्वप्न वास्तविकता में बदल गया था।

► निष्ठा व ईमानदारी

पुस्तकें जानकारी, ज्ञान व बुद्धिमानी का स्रोत है। अधिकांश पुलिस थानों में पुस्तकें होती हैं किन्तु इनमें से

अधिकतर टेक्निकल या पुलिसकर्मियों के काम से संबंधित होती हैं। जैसे कि पुलिस मैनुअल, भारतीय दंड संहिता, भारतीय संविधान और विभिन्न कानूनी व अन्य संदर्भ पुस्तकें। हालांकि मानसिक व बौद्धिक उन्नति के लिये पुलिसकर्मियों को आत्म-विश्वास, प्रबंधन, कथा-साहित्य व प्रेरणादायी लोगों की जीवनियाँ भी पढ़ने की आवश्यकता होती है।

इसी उद्देश्य से शिवनंदन ने जहाँ भी कार्य किया, वहाँ पुलिसकर्मियों के लिये पुस्तकालय बनाये। करीब 10,000 प्रेरणादायी पुस्तकें खरीदी गईं व पुलिस कर्मियों को उन्हें पढ़ने व उनमें से नये विचार ढूँढने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

शिवनंदन स्वयं भी किताबें पढ़ने के शौकीन हैं, तथा उनकी दोनों बेटियों में भी यह गुण मौजूद है। उनके हर स्थानान्तरण के समय उनकी पत्नी की दुविधा होती थी, कौन-सी पुस्तक रखें और कौन-सी छोड़ दें। उनका घर पुस्तकों से भरा रहता था और वे हमेशा खुले दिल से पुस्तकें बांटते थे, लोगों को पढ़ने व बढ़ने के लिये प्रोत्साहित करते हुए।

उन्होंने पुलिस विभाग में भी पुस्तकालय बनवा कर इसी वातावरण का निर्माण किया। उनके विचार से पुस्तकें एक पुलिसकर्मी को अधिक विवेकपूर्ण व समझदार बनाती हैं, न कि केवल वे परिस्थितियाँ जिनका सामना उसे अपनी वर्दी पहनते ही करना होता है।

पढ़ने की संस्कृति के निर्माण की शिवनंदन की योजना बहुत नीतिपूर्ण है। एक बार व्यक्ति महान लोगों के जीवन व विचारों को पढ़ना आरम्भ कर दे तो उनके विचार उसके अपने विचार होने लगते हैं और निष्ठा व ईमानदारी जैसे मूल्य धीमे-धीमे पाठक के विचारों व मानसिकता का भाग बन जाते हैं।

आप भी किसी भी स्थिति को पूरी तरह परिवर्तित कर सकते हैं, यदि आपके पास एक परिकल्पना व ऊँचा ध्येय है। कोई भी समस्या, समस्या नहीं होती, जब तक कि आप स्वयं उसे न देख लें। एक बार देख लेने पर आप उनका हल निकालने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं और अनजाने में ही आप असम्भव को सम्भव बनाने लगते हैं। आप स्वयं परिवर्तन बन जाते हैं और परिवर्तन का निर्माण करते हैं।

अभी तक इस पुस्तक में हमने विभिन्न परियोजनाओं का कार्यान्वयन देखा है। किन्तु कोई भी परियोजना चाहे उसके पीछे कितनी ही मजबूत संकल्पना हो बिना आर्थिक सहयोग के सफल नहीं हो सकती।

अगले अध्याय में हम देखेंगे कि एक नेता इस चुनौती का मुकाबला कैसे करता है। चाणक्य के अनुसार यही नेतृत्व का अगला मर्म है- कोष (पूँजी या कोषागार)।

★ उत्कृष्ट बुनियादी ढांचा बनाने के नुस्खे ★

- विश्वस्तरीय साधनों का निर्माण: समझौता न करें। चुनौतियाँ स्वीकार करें।
- मूर्त व अमूर्त (हार्ड एंड सॉफ्ट) बुनियादी ढांचे: बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित करें; उत्कृष्ट व गुणवत्तापूर्ण वातावरण का निर्माण करें।
- सहायता लें: अन्य लोगों की सहायता लेकर आप अधिक तीव्रता से बेहतर निर्माण कर सकते हैं।
- आपकी परिकल्पना सतत बनी रहनी चाहिए : यदि आप अपने निर्माण से लाभान्वित हुए हैं तो वह अन्यो के लिए भी करें।
- ऐतिहासिक परियोजनाओं का निर्माण करें : समस्या का हल समस्या में ही होता है।

मेरे भीतर का नेता

This image shows a full page of white paper with horizontal blue or grey ruling lines. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are approximately 20 lines visible. On the left side, there are small black marks that look like staple indentations or punch holes. The paper appears to be from a notebook or a standard sheet of stationery.

अध्याय 5



कोष

कोषागार - पूंजी

स्वामी राजा
अमात्यमंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
/ पूंजी
दंड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

भाग अ



पांचवां मर्म

कोषः पूंजी

धन या कोषागार का दूसरा नाम है- कोष, जिससे राज्य ठीक से चलता है। चाणक्य कहते हैं कि राजा को अपना ध्यान कोष एकत्रित करने, उसे विकसित करने व उसका विस्तार करने पर केन्द्रित करना चाहिए।

कोष अथवा धन राज्य के रख-रखाव के लिए आवश्यक है। यह उसके विकास व विस्तार में सहायक हैं।

अर्थशास्त्र में चाणक्य सुझाते हैं कि राजा को अर्थशास्त्र (इकोनॉमिक्स) का गहरा ज्ञान होना चाहिए, राजा द्वारा सीखे जाने वाली विद्याओं में यह पहली होनी चाहिए। राजा की दिनचर्या में पहली गतिविधि राज्य के बही खाते की जांच होनी चाहिए।

कोषाध्यक्ष अथवा वित्त विभाग के प्रमुख को राजा के सामने सबसे पहले प्रतिदिन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना चाहिए व उसे राज्य की आर्थिक स्थिति की जानकारी देनी चाहिए। राजा अर्थव्यवस्था से ध्यान नहीं हटा सकता।

‘अर्थ’ का तात्पर्य है धन, व शास्त्र का अर्थ है ग्रंथ। इस प्रकार अर्थशास्त्र का अर्थ हुआ धन का ग्रंथ। विद्वानों ने इसे इकोनॉमिक्स की पुस्तक कहा है जिसमें माइक्रोइकोनॉमिक्स, मैक्रोइकोनॉमिक्स, अकाउंटिंग की प्रणालियाँ, ऑडिटिंग के नियम, कर व दंड की वसूली तथा लोक निधि का राज्य के विकास में उपयोग आदि विषय दिये गये हैं।

यह धारणा सही नहीं है कि भारत एवं भारतीयों को धन, इकोनॉमिक्स एवं व्यावहारिक जीवन का ज्ञान नहीं है। अधिकतर यह जाना जाता है कि भारतीय आध्यात्मिक होते हैं, तथा वे मृत्यु के बाद का जीवन, स्वर्ग, मोक्ष आदि विषयों पर धन व मौलिक सुख-साधनों से अधिक विचार करते हैं।

जबकि सच्चाई यह है कि भारत एवं भारतीय पैसे व धन को जिस तरह से समझते हैं वैसा कोई अन्य संस्कृति नहीं समझती। हम इसका व्यावहारिक मूल्य भी जानते हैं और सीमाएँ भी। आखिर हम संसार का सबसे समृद्ध देश व संसार भर के आक्रमणकारियों के निशाने पर क्यों थे? हजारों वर्षों तक हम सबसे धनी देश रहे व इकोनॉमिक्स के एक सिद्धांत के जन्मदाता भी जिसे आज का पश्चिमी संसार समझ भी नहीं पाया है।

अर्थशास्त्र इसी का प्रमाण है। यह पुस्तक धन व इसके प्रबंधन के बारे में है। इसमें धन का ज्ञान दिया गया है और पुस्तक ज्ञान का भंडार है। अर्थशास्त्र का अध्ययन हमें हमारे गौरवपूर्ण इतिहास को समझने में मदद करता है। अर्थशास्त्र में वर्णित धन के सिद्धांतों का प्रयोग आधुनिक परिस्थितियों में भी सीधे किया जा सकता है।

वित्त सदा ही व्यवसाय की रीढ़ रहा है, चाहे काल आधुनिक हो या आदि रहा हो। प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज, संगठन व राष्ट्र धन व वित्त पर निर्भर है। एक मजबूत व सुव्यवस्थित कोष प्रत्येक संगठन का हृदय है।

सरकार राष्ट्रीय व राज्यों के बजट कोष के आधार पर ही बनाती है। बजट बनाना एक अत्यधिक विशेष क्रिया है जिसमें विशेषज्ञों की राय व आर्थिक नीति पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिये गये दिशा निर्देशों का समन्वय होता है।

अच्छी आर्थिक नीतियाँ, रोजगार के साथ व्यापार व्यवसाय व उद्यमिता के विकास में सहायक वातावरण का

निर्माण करती हैं।

इस प्रकार कोष पर अच्छा नियंत्रण व प्रबंधन राजा, नागरिकों व राज्य को समृद्ध करता है।

एक बार एक मां अपने पुत्र की खराब हालत से परेशान होकर एक आश्रम में गयी। उसने आश्रम प्रमुख से कहा, “गुरुजी मेरा बेटा पढ़ाई में ठीक नहीं था, उसे अपने जीवनयापन के लिये कोई अच्छी नौकरी भी नहीं मिली। अतः अब कोई उससे शादी करने को भी तैयार नहीं है। चूंकि वह दुनियादारी के मामले में असफल रहा है, मैं सोचती हूँ कि वह साधु बन सकता है। मैं चाहती हूँ कि वह आपके आश्रम में आ जाये।”

आश्रम प्रमुख ने उत्तर दिया, “श्रीमती जी, साधु बनना दुनिया की सच्चाईयों से बच निकलने का रास्ता नहीं है। यह मार्ग उनके लिये है जिन्होंने दुनिया में सफलता हासिल कर ली है और अब वे उससे आगे जाना चाहते हैं। जो व्यक्ति स्वयं को बाहरी दुनिया में सिद्ध नहीं कर पाया, वह अपने भीतर की दुनिया को नहीं जीत सकता।”

अतः इस दुनिया में सफल होने के लिये व्यक्ति को कठिन परिश्रम कर स्वयं को सिद्ध करना होता है और पैसा कमाना होता है। इसके पहले कि व्यक्ति धन व शक्ति का त्याग करे, उसे यह पाना होता है।

एक बार एक बहुत दुबला व्यक्ति कुश्ती देख रहा था। मैच के अंत में विजेता ने दर्शकों को चुनौती देते हुए कहा, “कोई है जो मुझसे लड़ेगा?”

उत्तेजित हो दुबले आदमी ने चुनौती स्वीकार कर ली। किन्तु जब वह अखाड़े में पहुँचा तो उसे अपनी भयानक गलती का भान हुआ। उसका प्रतिद्वंदी बहुत लम्बा, चौड़ा व सुगठित शरीर वाला था। उसके पहले वार से ही दुबला आदमी अखाड़े के बाहर जा गिरता।

दर्शक हंस रहे थे और दुबले आदमी के टुकड़े-टुकड़े हो जाने की प्रतीक्षा में थे। अपनी जान बचाने के लिए दुबले आदमी को एक युक्ति सूझी। जैसे ही मैच आरम्भ होने को हुआ उसने अपने प्रतिद्वंदी से कहा, “कृपा कर यहाँ से चले जायें, मैंने आपको माफ किया, मैं आपसे नहीं लड़ूँगा।” और वह वहाँ से भाग गया।

हममें से कई लोग इस दुबले आदमी जैसे हैं। चुनौतियाँ तो हमें उत्तेजित करती हैं, किन्तु वास्तविकता का सामना करना कठिन होता है। जीवन का एक बहुत बड़ा सत्य है पैसा कमाना। अतः जिन लोगों में पैसा कमाने की योग्यता नहीं है, उनका स्पष्टीकरण होता है, “मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं है, “पैसा बुरी चीज है,” या, “सभी पैसे वाले चोर होते हैं” यह वैसा ही है जैसा लोमड़ी का अंगूरों को खट्टा कहना। एक नेता पैसे की महत्ता समझता है। एक जिम्मेदार व्यक्ति कभी पैसे के मूल्य को कम नहीं आकेगा।

पैसे का एक और पहलू है, “मनी कांशस” अर्थात् पैसे के प्रति जागरूक होना। ना कि “मनी माइंडेड” यानि पैसे का जुनून होना। एक मनी कांशस व्यक्ति पैसे की महत्ता समझता है और उसे जीवन में सही स्थान व मूल्य देता है।

एक “मनी माइंडेड” व्यक्ति दुनिया की ओर पैसे की दृष्टि से ही देखता है। प्रत्येक परियोजना में उनका दृष्टिकोण होता है आर ओ आय (रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट)। उनका रवैया होता है, मुझे इसमें से क्या मिलेगा?

मनीमाइंडेड व्यक्ति समाज कार्य की परियोजनाओं पर कार्य करते हुए भी यही सोचते हैं कि मुझे इसमें से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्या मिलेगा। उनके लिये प्रत्येक चीज का आदि व अंत पैसा ही है। उन्हें शक्ति बैंक बैलेंस से ही मिलती है और वे हर व्यक्ति का मूल्य उसकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप लगाते हैं। संसार उनके लिए एक ऐसा मंच है, जहाँ सौदा किया जाता है।

मनी कांशस लोगों के लिए पैसा एक संसाधन है। यह उद्देश्य हासिल करने का एक साधन है न कि स्वयं उद्देश्य। वे धन का सम्मान करते हैं। वे अपने वित्त प्रबंधन पर कार्य करते हैं किन्तु वे ये भी जानते हैं कि किसी भी परियोजना में दृष्टि वित्त से अधिक महत्वपूर्ण होती है।

ये मेहनती लोग होते हैं, वे खतरा मोल लेने वाले होते हैं, वे समाज के भले के लिये कार्य करते हैं। वे एक नेता व अनुकरणीय व्यक्ति होते हैं तथा सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं।

अर्थशास्त्र में एक वित्तीय मॉडल- धन के चार चरण, का वर्णन है। इस प्रतिरूप को एक व्यक्ति व एक संगठन दोनों से ही जोड़ा जा सकता है।

धन के चार चरण हैं:-

- धन की पहचान
- धन का निर्माण
- धन का प्रबंधन
- धन का वितरण

ये चारों उस यात्रा के पड़ाव हैं जिसके द्वारा हम धन के सभी पहलुओं को समझते हैं।

यह सभी वित्तीय पाठ्यक्रमों का सार हैं।

आइये धन के प्रत्येक चरण की चर्चा करें:-

1. धन की पहचान (अभिज्ञान)

आरम्भिक बिन्दु है धन की पहचान। इसे पूरी तरह समझने के लिये आइये एक उदाहरण लें। मान लें आप एक कुआँ खोदना चाहते हैं। इसके लिये आपको एक वैज्ञानिक व तर्कसम्मत प्रक्रिया को अपनाना पड़ेगा। जिससे आप समझ सकें कि पानी का स्तर जमीन के नीचे कहाँ है, जमीन की स्थिति कैसी है, पानी कितनी गहराई पर मिल सकता है आदि। जब आप यह सारा ज्ञान एकत्र कर कुआँ खोदने निकलते हैं तो यह निश्चित है कि आपको पानी मिलेगा।

इसी प्रकार, यदि आप धनी बनना चाहते हैं तो आपको शोध कर उन क्षेत्रों का पता लगाना होगा जहाँ धन का निर्माण किया जा सकता है। आप इसके लिए विशेषज्ञों की सहायता ले सकते हैं। सही दिशा व पथ पर चलना जल्दी उद्देश्य पाने के लिए महत्वपूर्ण है।

व्यवसायी हमेशा अपना व्यापार बढ़ाने की संभावनाएँ तलाशते रहते हैं। आर्थिक निवेशक उन नये क्षेत्रों व उद्योगों की खोज में रहते हैं जो उनके निवेश पर अच्छा लाभ दे सकें। सेल्समैन अपना उत्पाद बेचने के लिये नये बाजारों को ढूँढने का प्रयत्न करते हैं। ये सभी धन की पहचान के उदाहरण हैं।

कई बार छात्र अपने शिक्षकों से उन पाठ्यक्रमों के बारे में पूछते हैं, जिसमें प्रवेश लेकर वे एक अच्छे भविष्य का निर्माण कर सकें। इस उदाहरण में भी छात्र एक दीर्घकालिक कार्य की संभावना को पहचानने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अतः पहचान करना पहला कदम है। किन्तु मात्र पहचान कर लेना कि धन कहाँ है, यह गारंटी नहीं करता कि धन आपको मिल ही जायेगा। पानी के स्तर (वाटर बेंड) की पहचान कर लेने के बाद अगला कदम है, कुएँ की खुदाई आरम्भ करना।

2. धन निर्माण

धन के निर्माण का दूसरा नाम कड़ी मेहनत है। यह एक कठिन परिश्रम वाला काम है जिसमें धैर्य व दीर्घ-कालिक परिदृश्य आवश्यक है।

जब आप कुआँ खोदना आरम्भ करते हैं तब आप एक अनजाने भविष्य के लिए काम कर रहे होते हैं। कई बार आप आत्मशंका में घिर जाते हैं कि क्या आप सही दिशा में काम कर रहे हैं और क्या आप सफल होंगे। आप अन्य लोगों की छानबीन व उपहास के पात्र भी बन जाते हैं। इस बिन्दु पर आत्मप्रेरणा महत्वपूर्ण हो जाती है।

एक प्रसिद्ध कहावत, “जीतने वाले कभी पीछे नहीं हटते और पीछे हटने वाले कभी नहीं जीतते।” यहाँ उपयोगी है। एक बार ध्यानपूर्वक अपने विकल्पों पर विचार कर व अपने इच्छित धन की पहचान कर लेने के बाद आपको उस दिशा में कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होती है। यह एक लम्बी व थका देने वाली यात्रा है, किन्तु रूकावटों के बावजूद आपका परिश्रम काम आयेगा और आप सफल होंगे।

जब हम सफल लोगों के जीवन के बारे में पढ़ते हैं तो हम उनकी सफलता से प्रभावित होते हैं। किन्तु, जहाँ आज वे हैं, उस स्थान पर पहुँचने के लिये उन्होंने जो कठिन परिश्रम किया, उसे हम कई बार भूल जाते हैं।

एक बार एक संवाददाता ने एक सफल व्यक्ति से पूछा, “सर, आप रातों-रात सफल हो गये, आपने यह कैसे किया,” उन्होंने उत्तर दिया, “जीहाँ, मैं रातोंरात सफल हुआ। किन्तु वह रात बहुत लम्बी थी।”

प्रत्येक व्यक्ति धनी होना चाहता है, लेकिन धन का निर्माण कठिन प्रक्रिया है। यदि आप धनी बनना चाहते हैं तो याद रखें, “सफलता का कोई शॉर्ट कट नहीं है।”

एक बार आप सफल हुए, एक बार आपने धन का निर्माण कर लिया तो पूरा संसार बदल जाता है। आपने सफलता का स्वाद चख लिया है, अब आप पहुँचे हुए हैं।

3. धन का प्रबंधन

एक समस्या का अंत दूसरी का आरंभ होता है। एक बार आप धन का निर्माण करने में सफल हो गये तो आपके सामने नयी चुनौती का खड़ी होती है, अब इस धन का क्या करें।

पहले आप धन के पीछे भागते थे, अब धन आपके पीछे आता है। अब बाजी पलट चुकी है।

सफलता कई चीज़ों से संबंधित होती है। यहाँ तक की नए संबंधी भी ले आती है। लोग आपसे जुड़ना चाहते हैं। आप नये मित्रों से घिरे रहते हैं। संसार आपकी सफलता को मान देता है और आपके साथ घनिष्ठता चाहता है। बैंकर्स व वित्त विशेषज्ञ आपके धन का प्रबंधन करने को तत्पर रहते हैं और आपको निवेश के विभिन्न विकल्प सुझाते रहते हैं।

वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद आपने सफलता व धन अर्जित किया है। आपको उसका भोग करना चाहिये, किन्तु एक सीमा के बाद, गहन व गंभीर चिंतन का समय आता है।

अब चुनौती अपने धन को बनाये रखने की है, ताकि आप उसे कायम रख सकें। अब आपको अपना अस्तित्व या जीवन बचाये रखने की चिन्ता नहीं करनी है, आपको आवश्यकता है अपना ध्यान, अपने धन को बनाये रखने पर केन्द्रित करने की।

यहीं आपको धन प्रबंधन की आवश्यकता होती है। उचित योजना व अच्छी सलाह द्वारा आप उज्ज्वल भविष्य के पथ पर अग्रसर होने लगते हैं। धन का प्रबंधन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका निर्माण। यदि अन्य धनी व्यक्तियों की तरह आप अपना धन उतनी ही तेजी से खर्च कर देते हैं जितनी तेजी से आपने उसे कमाया था तो आप जल्द ही उस स्थान पर पहुँच जायेंगे जहाँ से आपने यात्रा आरम्भ की थी। इसके बदले आपको बचत, निवेश व अपने धन का प्रबंधन करना चाहिए।

4. धन का वितरण

चाणक्य कहते हैं, जिस धन व संपत्ति का आपने निर्माण किया है उसे वितरित कर दें, उसे वंचितों को दे दें। किसी जरूरतमंद की सहायता करें, किसी ऐसे उद्यमी की जिसने नया व्यवसाय आरम्भ किया है, किसी सामाजिक निमित्त हेतु, किसी कलाकार को, किसी बच्चे की शिक्षा हेतु या किसी गरीब व्यक्ति के स्वास्थ्य हेतु धन का प्रयोग करें।

यह कहना सरल है, किंतु करना कठिन। जब आप धन के साथ आये यश व शक्ति का उपभोग कर चुके हों तो उसे छोड़ पाना सरल नहीं होता। आपको पता भी नहीं चलता और आपकी आवश्यकता लालच में बदल जाती है।

किन्तु एक उत्कृष्ट व सफल जीवन जीने के बाद एक नयी चुनौती स्वीकारें, लोगों को वही पाने में सहायता करें जो आपने पाया है।

वास्तविक समाज सेवा अन्यो की मदद करने में नहीं अपितु अपने स्वामित्व का त्याग कर स्वयं के आध्यात्मिक विकास के लिये, स्वयं की ही सहायता करने में है। अपनी सफलता का रहस्य लोगों के साथ बाँटे, उनकी सफलता आपकी सफलता बन जानी चाहिए।

हालांकि, उस दुबले आदमी की कहानी याद रखें, जिसने पहलवान से कहा था, “मैं तुझे माफ करता हूँ।” आप धन का वितरण तब तक नहीं कर सकते जब तक आपने उसे पहचाना न हो, निर्मित न किया हो और उसका प्रबंधन न

किया हो।

एक बार जब आप उपरोक्त तीन चरणों को पार कर लेने के बाद अपने धन का वितरण करते हैं, तो यह आपको आंतरिक संतोष देगा, ना कि दुःख।

भारत में हम धन को देवता की श्रेणी में रखते हैं, उसे देवी लक्ष्मी के नाम से पुकारते हैं और उसकी पूजा करते हैं। हमारा देश संसार का एकमात्र देश है जिसने धन को आध्यात्मिक रूप दिया है। हम उसे सौभाग्य व आशीर्वाद का प्रतीक मानते हैं। अपने निर्मित धन से अपनी कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सेबिलिटी (सी एस आर) व पर्सनल सोशल रिस्पॉन्सेबिलिटी (पी.एस.आर.) पूरी करें। तभी आप अपनी आध्यात्मिक रिस्पॉन्सेबिलिटी (एस.आर) पूरी कर पायेंगे।

वित्त के मामले में चाणक्य हमें एक शानदार सलाह देते हैं। अर्थशास्त्र की दूसरी पुस्तक के आठवें अध्याय के पहले व दूसरे सूत्र में वे कहते हैं, “सभी उपक्रमों की पहली निर्भरता कोष पर है। अतः उसे (राजा को) सबसे पहले कोष की ओर देखना चाहिए।”

प्रत्येक परियोजना अथवा कार्य वित्त पर निर्भर है। महान विचार आवश्यक वित्त के अभाव में वास्तविकता में नहीं बदले जा सकते। “सभी उपक्रम” बहुत महत्वपूर्ण शब्द हैं। चाहे सड़क व पुलों के निर्माण जैसी राष्ट्रीय परियोजनाएँ हों, या घर पर किया गया एक छोटा आयोजन जैसे जन्मदिन की पार्टी या फिर टेलीविजन की खरीद, ये सभी कोष अथवा वित्त पर निर्भर है।

और तब चाणक्य नेता को सलाह देते हैं, “अतएव उसे सर्वप्रथम कोष की ओर देखना चाहिए।” कोष में क्या उपलब्ध है, उस पर नेता का ध्यान होना चाहिए। उदाहरण के लिये खरीददारी करने जाने से पहले आपको पता होना चाहिए कि आपके बैंक में कितने पैसे हैं, ताकि आप उसके अनुरूप निर्णय ले सकें, कि आप कितना खर्च कर सकते हैं।

क्रेडिट कार्ड के आने से इस मानसिकता में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। आज हमारी प्रवृत्ति पहले वस्तु की ओर देखने की है, न कि कोष, क्योंकि हम यह मानकर चलते हैं कि हम वस्तु की कीमत बाद में चुका सकते हैं। जबकि चाणक्य के अनुसार वस्तु खरीदने का निर्णय हमें कोष की ओर देखने के बाद करना चाहिये।

एक संगठन में कर्मचारियों की विभिन्न योजनाएँ व इच्छाएँ होती हैं, जैसे कि पार्टी का आयोजन व नया कार्यालय। यद्यपि उनका उत्साह महत्वपूर्ण है, किन्तु नेता को अपनी गणना करनी होती है व वित्त की ओर ध्यान देना होता है।

फिर भी, यदि आप जानते हो कि आपके मातहतों द्वारा सुझाये गये व संगठन के लिये लाभकारी परियोजनाओं के लिये वित्त उपलब्ध नहीं है, तो भी सीधे मना न करें। “यह संभव नहीं है कि क्योंकि हमारे पास पैसा नहीं है” या “हमने कभी इतनी बड़ी परियोजना पर कार्य नहीं किया” जैसे उत्तर कर्मचारियों की अभिप्रेरणा समाप्त कर उनमें आपके साथ विचार बाँटने का उत्साह समाप्त कर देते हैं। एक नेता होते हुए आपका कर्तव्य है अपने संगठन में नवनिर्माण व सृजनात्मकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना, न कि उसे हतोत्साहित कर समाप्त करना।

अतएव, यदि परियोजना सार्थक लगे तो उसके लिये धन की व्यवस्था करें। नेतृत्व की यही महत्ता है- असंभव को संभव बनाना। जैसा कि प्रख्यात विशेषज्ञ व धन, पैसा व निवेश जैसे विषयों के लेखक, रॉबर्ट कियोसाकी कहते हैं, “उस धन के निर्माण के बारे में सोचें, जिसकी आपको आवश्यकता है, किन्तु जो आपके पास नहीं है।”

धन की व्यवस्था करने या धन का निर्माण करने की दिशा में पहला कदम है अनुमान लगाना और बजट बनाना। यह एक बहुत बड़ा कदम है। इसकी महत्ता आपको नीचे वर्णित घटना से स्पष्ट हो जायेगी।

एक बार एक धनवान व्यक्ति ने एक सृजनात्मक लड़के को एक इंजिनियरिंग के मॉडल पर काम करते देखा। वह व्यक्ति उस लड़के के पास गया व बोला, “मैं तुम्हें आर्थिक सहायता देने को तैयार हूँ। तुम्हें कितने पैसे की आवश्यकता है, मुझे बताओ। उस लड़के के लिये यह एक सपना सच होने जैसा था।”

किन्तु उस लड़के को आर्थिक दृष्टिकोण से सोचने का प्रशिक्षण नहीं मिला था। अतः वह अनुमान नहीं लगा पाया कि उसे कितने धन की आवश्यकता होगी। वह आश्चर्यचकित था कि कोई व्यक्ति उसकी परियोजना में पैसा लगाने को इतना तत्पर होगा, किन्तु उसे यह धक्का भी लगा कि वह स्वयं नहीं जानता था कि इसकी लागत क्या होगी।

उसने धनी व्यक्ति से एक दिन का समय मांगा। अपनी गणना करने के बाद, अगले दिन उसने अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट उस व्यक्ति को सौंप दी। कुछ ही मिनटों में उसे पूरी राशि का चेक मिल गया।

जिस परिकल्पना व सृजनात्मकता के साथ बजट नहीं होता, वह कोरी कल्पना व हवाई किलों से अधिक नहीं होती। समुचित धन का इंतजाम करना अपने स्वप्न पूरे करने की दिशा में एक कदम बढ़ाना है।

उभरते हुए उद्यमियों को अर्थ व बजट बनाने की महत्ता बताने वाला एक और प्रकरण यहाँ प्रस्तुत है।

एक व्यवसायी बहुत कठिन दौर से गुजर रहा था। उसे नये ऑर्डर नहीं मिल रहे थे और वह मौजूदा ऑर्डर भी पूरे नहीं कर पा रहा था। वह कच्चा माल देने वाले लोगों के पैसे भी नहीं चुका पा रहा था, जिससे उसे कच्चा माल मिलने में भी बाधा आ रही थी। बेचे गये उत्पाद की गुणवत्ता से असंतुष्ट उसके ग्राहक भी उसे समय पर पैसा नहीं दे रहे थे। तनख्वाह न मिलने से उसके कर्मचारी भी काम छोड़ कर जा रहे थे।

कठिन आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव उसके घरेलू जीवन पर भी पड़ रहा था और वह दोनों समय का भोजन नहीं जुटा पा रहा था। प्रयत्न करने के बाद भी उसका संकट समाप्त नहीं हो रहा था। एक दिन हताशा में उसने अपनी सभी समस्याओं को समाप्त करने का अंतिम निर्णय लिया। अपनी इहलीला समाप्त करने का।

अतः रोज की तरह, एक सुबह अपने परिवार से विदा ले वह घर से कार्यालय के लिये निकला। किन्तु कार्यालय के स्थान पर वह समुद्र के किनारे पहुँचा। अपना जीवन समाप्त करना बहुत कठिन था किन्तु इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता भी नजर नहीं आ रहा था।

उसने एक छोटी चिट्ठी लिखी, जिसमें स्वयं को ही इस कृत्य के लिये जिम्मेदार बताया और अब वह जल समाधि लेने के लिये तैयार था, एक ऐसा कदम जो उसे सांसारिक जिम्मेदारियों से सदा के लिये दूर ले जाने वाला था।

जैसे ही उसने पहला कदम उठाया, उसने अपने सामने एक वृद्ध व्यक्ति को खड़े देखा, जिसके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान थी।

उसने सोचा, क्या यह व्यक्ति उसके लेनदारों में से कोई है और यह मुस्करा क्यों रहा है? वृद्ध उसके निकट आया और अपनी आंखों में चमक के साथ पूछा, “आत्महत्या?”

व्यावसायी ने सोचा, “मैं तुम्हारा जीवन दर्शन सुनने के मूड में नहीं हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे जीवन की अमूल्यता पर भाषण दो। मैं सभी प्रयत्न कर चुका हूँ और अब यही एक रास्ता बचा है।”

जैसे कि वह यह सब उस बूढ़े व्यक्ति को कहने वाला था, उसने जोड़ा, “चलो, सीधे मुद्दे पर आते हैं। तुम आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त हो और तुम्हें बाहर निकलने का रास्ता नहीं सूझ रहा है। ठीक है ना?”

उस व्यक्ति ने आश्चर्यचकित हो सोचा, “यह वृद्ध कौन है? इसे तो मेरी समस्या सीधे समझ आ गयी।”

“हे भगवान! यह व्यक्ति या तो बीमा एजेंट हैं, या आर्थिक सलाहकार, दफा हो जाओ! तुम्हारी विशिष्ट सलाह सुनने के लिये न तो मेरे पास समय है और न ही ऊर्जा,” उस व्यक्ति ने क्रोधित हो सोचा। “लोग आपको शांति से मरने क्यों नहीं देते? हे भगवान! यह बिल्कुल ठीक नहीं है।”

“तुम्हें कितने पैसे की जरूरत है?” वृद्ध ने प्रश्न किया।

“क्या?” अंततः उस व्यवसायी का बोल फूटा। “लेकिन सर, मैं आपको नहीं पहचानता।”

“उससे कोई फर्क नहीं पड़ता”, वृद्ध व्यक्ति ने कहा। “मैं भी एक व्यवसायी हूँ और सीधे मुद्दे की बात करना पसंद करता हूँ। क्या हम बात कर सकते हैं?”

वे दोनों समुद्र के किनारे बैठ गये। आज बहुत समय बाद व्यापारी इस स्थिति में था कि वह चिन्ता करने की जगह सोच सकता था। उसे एक ऐसा व्यक्ति मिला था जो योगदान कर सकता था।

अब वह व्यवसायी पूरे ध्यान से सुन रहा था। वृद्ध ने बोलना आरम्भ किया, “पैसा कभी भी अच्छे या बुरे का कारण नहीं होता। यह तो तटस्थ होता है। यदि यह बुरे व्यक्तियों के हाथ पड़ जाये तो यह गंदा धन बन जाता है और विध्वंस का कारण बन सकता है। अच्छे लोगों के हाथ में होने पर इसका उपयोग अच्छे कार्यों में होता है और यह ईश्वर स्वरूप हो जाता है।”

“धन की समझ हमें बुद्धिमान बनाती है। यदि कोई आर्थिक समस्या है तो उसका सामना करना आवश्यक है। व्यवहारिक होना व हल ढूंढना महत्वपूर्ण है,” उसने कहना जारी रखा।

“हर उस व्यक्ति के लिए ध्यानपूर्वक धन का अर्जन व प्रबंधन महत्वपूर्ण है जो घर, संगठन या देश चलाता है। यदि उसने नींव ही ठीक नहीं डाली तो यह एक आपदा को जन्म दे सकती है और व्यक्ति को आत्महत्या के विचार तक ले जा सकती है।” उसने अपनी शरारतपूर्ण मुस्कान के साथ कहना जारी रखा।

उसने व्यवसायी को सोचने के लिये थोड़ा सा विराम दिया और फिर पूछा, “तुम्हें कितना पैसा चाहिए?”

“सर, मैं नहीं जानता”, व्यवसायी ने धीमी आवाज में उत्तर दिया।

“क्या तुमने हिसाब लगाया है कि तुम्हें अपने उत्पाद बनाकर देने वालों, कच्चा माल सप्लाय करने वालों, कर्मचारियों, व घर के बिल सब मिलाकर कुल कितना पैसा देना है?”

“नहीं सर, मैंने नहीं सोचा, लेकिन अब कोई उम्मीद नहीं बची है।”

“बात यह नहीं है। क्या तुमने हिसाब लगाया”, वृद्ध व्यक्ति ने सख्ती से पूछा। “इस मानसिक स्थिति में तुम यह काम अकेले नहीं कर सकते। आओ, हम दोनों साथ में करें। यह रहा एक कागज और पेन, चलो लिखना शुरू करो।”

अपने नये संरक्षक की इच्छाओं के सामने हथियार डालते हुए उस व्यवसायी ने अपनी देनदारियों की सूची बनायी, जो कि दो करोड़ रुपयों तक जा पहुँची।

उस व्यक्ति ने कहा, “बढ़िया, हमने पहला चरण पूरा कर लिया है। जब जीवन हमारे सामने कठिन समस्याएँ प्रस्तुत करें तो कागज पर लिखकर सोचो। उसके बाद उनके व्यावहारिक हल ढूँढो।”

“अब अगला कदम है धन के स्रोतों के बारे में सोचना”, वृद्ध व्यक्ति ने कहना जारी रखा।

उस व्यवसायी ने कहा, “सर!, मैंने हर संभव प्रयत्न कर लिया है- वेंडर्स से अधिक क्रेडिट समय मांगा, बैंकों से कार्यगत पूंजी (वैकिंग कैपिटल) मांगी- सब कुछ! किंतु अब सब खत्म हो गया है।”

“और यदि मैं तुम्हें पैसा दूँ?”

व्यवसायी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। यह वृद्ध एक अनजान व्यक्ति की मदद क्यों करना चाहता है और वह भी पैसा वापिस होने की गारंटी के बिना?

किंतु उस वृद्ध ने कहना जारी रखा, “मैं तुम्हें आवश्यक पैसा दूंगा, बदले में बिना किसी चीज़ की अपेक्षा किये, कोई ब्याज या गारंटी नहीं, ना ही किसी बांड या ऋण- पत्र पर हस्ताक्षर करने हैं।” यह सुनकर वह व्यवसायी हक्का-बक्का रह गया।

उस वृद्ध व्यक्ति ने अपना परिचय दिया। उन्होंने अपना नाम प्रवीण छेडा बताया और साथ ही यह भी कि वे गुरुदेव स्टील इंडस्ट्री के चेयरमैन थे। “अपने पचास साल के लंबे कार्यकाल में मैंने एक साम्राज्य खड़ा कर लिया है। मैंने कई व्यवसायियों को विश्वास खोकर आत्महत्या करते देखा है, क्योंकि उन्हें कठिन समय में आर्थिक सहायता नहीं मिली”, उन्होंने स्पष्ट किया। उन्होंने आगे कहा, “भाग्य से, जिन दिनों मैं संघर्ष कर रहा था, अन्य धनवान व्यवसायियों ने मेरी सहायता की। आज मैं भी वही करता हूँ, उन लोगों को धन्यवाद स्वरूप जिन्होंने मेरी सहायता की।”

“किन्तु एक अंतर है। मैं अनजान व्यक्तियों की मदद भी करता हूँ। मेरे कई मित्र मुझे अनजान व्यक्तियों पर विश्वास न करने की सलाह देते हैं। किन्तु मैंने हमेशा खतरे उठाये हैं- कई बार अनुमान लगाकर और कई बार अपने सहज बोध से।”

एक धनी व्यक्ति को कैसे सोचना चाहिए, इस बारे में उन्होंने एक अन्तर्दृष्टि दी, “कई बार आप खतरा उठाते हैं, पर हार जाते हैं। आप पैसा गंवा देते हैं। किन्तु मैं एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में सोचता हूँ। यदि मेरे द्वारा सहायता किये गये दस लोगों में से एक भी सफल हो जाता है, तो मेरा कार्य पूर्ण हुआ।”

उन्होंने बताया कि उनके पास आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे दूसरे व्यवसायियों की मदद करने का एक वार्षिक

बजट है। “मैं इसे कॉन्फिडेंस बिलिंग बजट (सी.बी.डी.) कहता हूँ”, उन्होंने कहा।

यद्यपि वह व्यवसायी इस पेशकश के प्रति शंका लु था, फिर भी श्री छेडा ने उसे वहीं ढाई करोड़ रुपये का चेक देने का प्रस्ताव दिया। “यह अतिरिक्त धन अनापेक्षित खर्चों के लिये है। इसे ले लो और इसे लौटाने की चिन्ता मत करना। अपने व्यवसाय के पुर्ननिर्माण व उन्नति पर ध्यान देना।”

“लेकिन सर, यह मेरे लिये बहुत बड़ी राशि है और मैं इसे न लौटाने के बारे में नहीं सोच सकता,” उस व्यवसायी ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

“और मेरे लिये किसी का जीवन बचाने व उसके व्यवसाय के पुर्ननिर्माण की दृष्टि से यह एक बहुत छोटी राशि है”, श्री छेडा ने प्रत्युत्तर में कहा। उन्होंने उस व्यवसायी को शुभकामनाएँ दी और कहा, “हम यहाँ छः माह बाद समीक्षा करने के लिये फिर मिलेंगे।”

महीनों की निराशा व हताशा के बाद, अंततः व्यवसायी का भाग्य जागा था। अब हाथ में पैसा आ जाने के बाद उसे विश्वास होने लगा था कि वह अपने डूबते हुए भविष्य को बचा लेगा।

उस दिन ऑफिस जाने के बदले उसने घर जाने व शेष दिन अपने परिवार के साथ बिताने का निर्णय लिया। उसके परिवार ने भी अनुभव किया कि वह शांत एवं तनावरहित था, उसकी लम्बे समय से चली आ रही चिड़चिड़ाहट व हताशा गायब थी।

फिर उसने सोचा यह वाकई बढ़िया रहेगा यदि उसे यह पैसा इस्तेमाल ही न करना पड़े बल्कि छः माह बाद वह इस चेक के साथ अपनी कमाई का एक और चेक जोड़कर वृद्ध व्यक्ति को लौटा दें। इससे उस वृद्ध व्यक्ति ने उस पर जो विश्वास किया है, वह सही सिद्ध हो जायेगा।

हालांकि उसे अपने ऋण चकाने के लिये पैसों की बहुत सख्त आवश्यकता थी। उसने स्वयं से कहा, “मैंने इतने दिन कठिनाईयाँ झेली हैं। मैं अपने पर थोड़ा और जोर डालता हूँ, यदि स्थिति और खराब होती है तो मैं यह चैक किसी भी समय जमा करा सकता हूँ।”

यह देखने के लिये कि क्या वह अपना व्यवसाय बिना उस चेक का प्रयोग करे पुर्नजीवित कर सकता है, उसने एक कार्य योजना बनाई।

सबसे पहले स्थिति से भागने की बजाय उसने अपने सभी कर्मचारियों को बुलाया और उन्हें वास्तविकता से परिचित कराया। “हम बहुत कठिन दौर से गुजर रहे हैं और मैं जानता हूँ कि आपकी तनख्वाह देने में भी देर हो गयी है। किन्तु मेरी आपसे एक प्रार्थना है- क्या आप सिर्फ एक माह और मेरे साथ सहयोग करेंगे?”

“हम अपना सर्वोत्कृष्ट प्रयत्न करेंगे। कृपया थोड़ी और मेहनत के साथ अपना कार्य जारी रखें, मैं आपसे वायदा करता हूँ कि स्थितियाँ बेहतर हो जायेंगी। हम सभी ने वर्षों तक मिलकर मेहनत की है और हमें अपने व्यवसाय की साख बनाने में वर्षों लगे हैं। आइये, हम अपने व्यवसाय को फिर से बनाने का प्रयत्न करें मैं आपसे वादा करता हूँ कि मैं आपकी बची हुई तनख्वाह बोनस के साथ दूंगा।”

“आपके पास अपनी बची हुई तनख्वाह लेकर अभी काम छोड़ देने का विकल्प भी है।” उसे सिर्फ वह चेक बैंक में जमा कराना था। “मैं निर्णय आप पर छोड़ता हूँ,” यह कहकर उसने अपनी बात समाप्त की।

उसके सीधे नजर मिलाकर बात करने में कर्मचारियों को उसकी गम्भीरता व ईमानदारी नजर आई। वे सभी एक महीना और काम करने के लिए राजी हो गये।

आपकी टीम की प्रतिबद्धता आपका मनोबल बढ़ाती है। कुछ अवसरों पर नेता अपनी टीम में विश्वास जगाता है और कई बार टीम अपने नेता में लक्ष्य प्राप्ति का विश्वास जगाती है।

अगला फोन उसने अपने सबसे पुराने वेन्डर को किया “सर मैं जानता हूँ मुझे आपको बहुत पैसे देने हैं। लेकिन यदि आप कच्चे माल की सिर्फ एक और खेप तुरंत भेज देंगे तो मैं अपने बकाया ऑर्डर पूरे कर सकूंगा। मैं वादा करता हूँ जैसे ही मुझे ग्राहक से पहला चेक मिलेगा, मैं आपको पैसा देना शुरू कर दूंगा।”

वेन्डर यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि अभी तक व्यवसायी बकाया पेमेंट के लिए किये गये उसके फोन कॉल ले ही नहीं रहा था। अब उसने स्वयं फोन किया था और सहयोग मांगने के साथ ही पैसे देने का आश्वासन भी

दे रहा था। उसके साथ के अपने लंबे व्यवसायिक रिश्ते का ध्यान रखते हुए, वेन्डर ने कच्चा माल भेजने का निर्णय किया।

व्यवसायी का तीसरा कार्य या उस ग्राहक से बात करना जिसने गुणवत्ता कारणों से उसके कई ऑर्डर रिजेक्ट कर दिये थे और पैसे भी रोक लिये थे। व्यवसायी ने उससे गुणवत्ता कारणों व ऑर्डर में हुई चूक के लिये माफी मांगी।

फिर उसने आत्मविश्वास से बोलना जारी रखा, “सर, कई वर्षों पूर्व आपकी कम्पनी ने मुझे मेरा पहला ऑर्डर दिया था और मैं आपकी वजह से ही आगे बढ़ पाया हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप एक बार फिर मेरे साथ सहयोग करें।” व्यवसायी ने उस ग्राहक को अपनी धनापूर्ति की समस्या बताई और उनसे ऑन अकाउंट कुछ पैसे देने की विनती की। “इससे मैं उत्पादन फिर आरम्भ कर पाऊँगा और आपकी अपेक्षित गुणवत्ता के अनुसार अधूरे ऑर्डर भी पूरे कर दूँगा।”

उस ग्राहक ने उसके शब्दों में ईमानदारी अनुभव की और उसकी सहायता करने का निर्णय किया। उसने अपने अकाउंटेंट को बुलाया व 20 लाख रुपये का चैक जारी करवाया।

कुछ ही मिनटों में व्यवसायी ने महत्वपूर्ण मुद्दों को नियंत्रित कर लिया था। उसने तुरंत कार्य आरम्भ कर दिया और उसकी टीम- कर्मचारी, सेल्समैन, क्वालिटी कंट्रोल वालों ने भी कंपनी के पुर्ननिर्माण के लिये उसके साथ दिन-रात एक कर दिया।

एक ही महीने में स्थित पलट गयी थी। ऑर्डर की पहली खेप पाकर उनका ग्राहक बहुत संतुष्ट था और उसने खुश होकर और पैसा जारी कर दिया। उस व्यवसायी ने पुराने रिजेक्ट किये गये माल की जाँच के लिये विशेषज्ञों की सहायता ली ताकि गुणवत्ता के मुद्दे सुलझाये जा सकें। इसके बाद उसने वह माल ग्राहकों को वापस भेजा और इस बार उनकी अपेक्षित गुणवत्ता के अनुरूप।

ग्राहक बहुत प्रसन्न था। नये ऑर्डर मिलने लगे थे। बाजार में उन्हीं की चर्चा थी। नये ग्राहक सीधे व्यवसायी से संपर्क कर रहे थे। सेल्स टीम ने प्रोडक्शन विभाग के साथ मिलकर कार्य करना आरम्भ कर दिया था और उन्होंने पांसा पलट दिया।

हर सुबह व्यवसायी वृद्ध व्यक्ति द्वारा दिये गये चेक को देखता। वह प्रसन्न था कि उसे वह चेक जमा नहीं करवाना पड़ा।

समय के साथ व्यवसाय को एक के बाद दूसरी सफलता मिलती गई। व्यवसायी ने अपने वायदे के अनुसार कर्मचारियों को पूरा पैसा दिया, बोनस व ब्याज सहित। अब वह एक और कारखाना लगाने व और लोगों को काम पर रखने की योजना बना रहा था।

श्री छेड़ा के साथ हुई उसकी पहली मुलाकात के छह माह बाद, व्यवसायी अपने वायदे के अनुसार, समुद्र तट पर उनसे मिलने पहुँचा। वह श्री छेड़ा को उनके द्वारा दिये सहयोग का धन्यवाद देने के लिये अपने साथ पुराना चेक व एक नया चेक भी लेकर आया था।

जब श्री छेड़ा वहाँ पहुँचे तो उसने उनके चरण स्पर्श किये और कहा, “सर सहायता के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं वाकई बहुत प्रसन्न हूँ कि आपने मेरे जीवन व व्यवसाय को बचा लिया।” उसने ढाई करोड़ का पुराना चेक व उसके साथ पच्चीस लाख का एक और चेक धन्यवाद के रूप में उन्हें सौंप दिये।

किन्तु श्री छेड़ा ने कहा, “दूसरा चेक अपने पास रखो। इस पैसे से किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता करना जो आर्थिक परेशानियों से गुजर रहे हो, जैसे छः माह पूर्व तुम गुजर रहे थे और जब तुम यह पैसा दो तो बदले में कोई अपेक्षा मत रखना।”

व्यवसायी इसके लिये सहमत हो गया। लेकिन बहुत समय से उसके मन में एक प्रश्न था, जो उसने वृद्ध व्यक्ति से पूछने का निर्णय लिया।

“सर छः माह पूर्व जब मैं आपसे मिला था, मेरे पास पैसा नहीं था और मैंने आपका पैसा भी इस्तेमाल नहीं किया। जहाँ तक धन का प्रश्न है मेरी स्थिति वही थी तो पिछले छः माह में क्या बदला जिससे मेरा व्यवसाय पुनर्जीवित हो उठा?”

श्री छेड़ा ने अपने जीवन में कई लोगों की परिस्थितियाँ बदलते देखी थीं। अतः उनके लिये इस प्रश्न का उत्तर देना सरल था। उन्होंने कहा, “पैसा एक औजार है। पैसे का प्रयोग करने वाला व्यक्ति पैसे से अधिक महत्वपूर्ण है, किन्तु अपनी आर्थिक स्थिति का अच्छा अनुमान आपको शुरुआत करने के लिए एक अच्छा बिन्दु दे देता है।”

“तुम्हारे मामले में आत्मविश्वास की कमी थी और पैसे की आवश्यकता आत्मविश्वास का निर्माण करने के लिये थी। मैंने तुम्हें पैसा दिया और तुम्हारा आत्म विश्वास लौट आया। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि इस विश्वास से तुमने अपने व्यवसाय का पुनर्निर्माण किया न कि उस पैसे से जो मैंने तुम्हें दिया।”

श्री छेड़ा ने कहना जारी रखा, “व्यापार में इसे कॉल-मनी कहते हैं। आमतौर पर कॉल-मनी का प्रयोग सामुदायिक व्यापार या ग्रामीण क्षेत्रों में होता है। तुम जानते हो, जब कोई युवा कारोबारी कोई नया उद्यम आरम्भ करता है तो उसे सहयोग की आवश्यकता होती है।”

वे उस व्यवसायी को एक ऐसे रहस्य की ओर ले जा रहे थे जिससे कई प्राफेशनल एमबीए भी अपरिचित हैं। “सबसे बड़ा सहयोग तब मिलता है जब एक समूह आपके विचार अथवा आइडिया का समर्थन करता है। यह व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है। अधिकतर मामलों में, सम्भव है, कोई व्यक्ति आपको काम आरम्भ करने हेतु पैसा न दे, किन्तु जब कोई कहता है, ‘मैं तुम्हारे साथ हूँ’, तो वह अपने आप में ही एक अद्भुत शुरुआती बिन्दु हो जाता है।”

उन्होंने आगे स्पष्ट किया, “मान लो एक परियोजना के लिये एक करोड़ रुपये की आवश्यकता है तो पांच लोग मौखिक रूप से 20 लाख रुपये प्रति व्यक्ति उस उद्यमी को देने का वादा कर लेंगे। यह कॉल-मनी है। यह वादा ही उस उद्यमी को उचित राह पर सुदृढ़ करने के लिए काफी होता है।”

“वह उद्यमी, आवश्यक धन का इंतजाम बैंक के ऋण लेकर या अन्य स्रोतों द्वारा ही करता है किन्तु यदि इन स्रोतों से पैसा नहीं मिला तो वह जानता है कि इन पांचों व्यवसायियों में से किसी से भी सहायता मिल सकती है।”

“अधिकतर मामलों में उद्यमी को कुछ सहायता मिल जाती है। यह सहायता धन के रूप में भी हो सकती है और किसी अन्य रूप में भी जैसे कि कार्यालय की जगह, कच्चे माल की एक खेप या पहला ऑर्डर। इस प्रकार युवा उद्यमी का काम आरम्भ हो जाता है। अधिकतर मामलों में ‘कॉल-मनी’ बिल्कुल भी प्रयोग नहीं की जाती।”

और फिर वे अपनी बात के सबसे महत्वपूर्ण भाग पर आये, “कॉल-मनी कभी भी वास्तविक पैसा नहीं होता। यह केवल एक मनःस्थिति है।” मुस्कुराते हुए उन्होंने कहना जारी रखा, “और फिर जीवन में वास्तविक आवश्यकता तो पैसे के आत्मविश्वास की होती है ना कि पैसे की।”

यह कहानी युवा उद्यमियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई आइडिया है तो किसी वरिष्ठ व्यवसायी के पास जायें व अपनी अवधारणा स्पष्ट करें। उनके आशीर्वाद ही काफी हैं। भारत में यह प्रथा कई पीढ़ियों से चली आ रही है।

आधुनिक व्यवसाय में ‘कॉल-मनी’ को ‘फायनेन्शियल-क्लोजर’ भी कहते हैं। जब प्रोजेक्ट की योजना व लागत का अनुमान तय हो जाते हैं तो परियोजना विभिन्न लोगों को घोषित की जाती है, इनमें से कुछ उस परियोजना में धन देने को राजी हो जाते हैं। एक बार वित्त व्यवस्था पूरी हो जाने पर पूरी गति से कार्य शुरू किया जा सकता है।

भाग ब



चाणक्य के अनुसार उत्कृष्ट कोष के गुण

अर्थशास्त्र की पुस्तक छः के पहले अध्याय के दसवें सूत्र में चाणक्य कहते हैं, कोष में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:-

- ▶ पूर्वजों द्वारा या स्वयंमेव विधिसम्मत तरीके से अर्जित किया गया,
- ▶ आपात स्थिति में दृढ़ रहने वाला,
- ▶ लम्बे समय तक कोई आय न होने की स्थिति में भी अखंडित रहने वाला

अर्थशास्त्र की रचना लगभग 2,400 वर्ष पहले की गयी। तब से अब तक, वित्तीय मॉडलों में, संस्थाओं व लेन-देन के तरीकों में कई बदलाव आये हैं। कई वित्तीय संस्थाएँ जैसे बैंक आदि अस्तित्व में आ गई हैं। हम सिक्कों से करंसी नोटों पर, चेक बुक्स पर और प्लास्टिक कार्ड्स पर आ गये हैं। आज इंटरनेट हमें इ-बैंकिंग व मोबाईल बैंकिंग में सहायता करता है।

फिर भी पैसे व संपत्ति के सिद्धांत समय के साथ परिवर्तित नहीं होते। ये सिद्धांत शाश्वत, अपरिवर्तनीय व सर्वकालिक हैं।

अर्थशास्त्र, रामायण, महाभारत व थिरुकुरल जैसे प्राचीन ग्रंथों का आधुनिक काल में लोकप्रिय होना व आज की पूरा विश्व घूमने वाली व आधुनिक तकनीक में पारंगत पीढ़ी द्वारा इन ग्रंथों को पढ़ने व उनके उद्धरण देने के पीछे कुछ कारण हैं। इन ग्रंथों में वर्णित नियम व सिद्धांत आज भी पूरे संसार में उपयोगी हैं।

आइये अब इस जानकारी के साथ हम चाणक्य द्वारा दिये गये कोष के वर्णन को निकट से देखें।

- ▶ पूर्वजों द्वारा या स्वयंमेव, विधिसम्मत तरीके से अर्जित

यह धन का पहला सिद्धांत है। धन विधिसम्मत तरीके से अर्जित किया जाना चाहिए।

अवैध अथवा अनैतिक तरीकों से अर्जित किया गया धन अधिक समय नहीं टिकता। यदि यह आपके पास रह भी जाये तो आप अपनी मानसिक शांति खो देते हैं। धन का उपभोग करने के लिए, उसका वैध व नैतिक तरीकों से अर्जन आवश्यक है। अधिक धन कमाना बुरा नहीं है, जब तक उसे कमाने के तरीके उचित हों। इसमें देय कर चुकाना और अन्यो को धोखा न देना सम्मिलित है।

धनवान होना व जल्दी पैसा कमाना आज का प्रचलन है। कई लोग धन पाने के तरीकों पर ध्यान नहीं देते हैं। किन्तु याद रखें, सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। एक वित्त विशेषज्ञ रामदेव अग्रवाल फिल्म ‘चाणक्य स्पीक्स’ में कहते हैं, “जिस धन को पाने में लम्बा समय लगता है, वह लम्बे समय तक टिकता है।”

अतः जो धन जल्दी आता है, वह जल्दी चला जाता है। किन्तु मेहनत करके कमाई गई सम्पत्ति ही वास्तविक सम्पत्ति है। यह भी सम्भव है कि सम्पत्ति आपके पुरखों ने कमाई हो और यह आपका सौभाग्य है कि यह आपको

विरासत में मिली। अपने पिछले जीवन में कमाये गये पुण्य के कारण कई लोगों का जन्म ही धनी परिवारों में होता है।

जी हाँ, लेकिन यदि धन आपको विरासत में मिला है तो इसका अर्थ यह नहीं कि आप उसका अपव्यय करें। चाणक्य सलाह देते हैं कि विरासत में मिले धन को बढ़ाया जाना चाहिए, न कि कम किया जाना। आपको जो मिला है, वह आपके पुरखों का दिया उपहार है, यदि आप उसमें वृद्धि करते हैं तो आपके पुरखे प्रसन्न होंगे। यह बच्चों की जिम्मेदारी है कि वे माता-पिता द्वारा दी गई सम्पत्ति को बढ़ावें।

यदि आपको एक सौ करोड़ की कंपनी मिली है तो प्रयत्न कर उसे पांच सौ करोड़ की बनायें, न कि उसकी कीमत घटकर 50 करोड़ रह जाये। कुमार मंगलम बिरला मात्र छब्बीस वर्ष के थे, जब उनके पिता की असामयिक मृत्यु के बाद, उनकी कंपनी उन्हें विरासत में मिली। आज आदित्य बिरला समूह की कीमत उनके पिता के समय की कीमत से कई गुना अधिक है। क्या इसमें कोई संदेह है कि ऐसा पुत्र व्यावसायिक घरानों में पैदा हुए बच्चों के लिये अनुकरणीय होगा?

खूब पैसा कमाइये, किन्तु सही रास्ते से। धीमे, किन्तु सुनिश्चित। सम्भव है कि आप अपने पहले प्रयत्नों में असफल रहें, किन्तु हतोत्साहित न हों। प्रयत्न करते रहें, गलती करने से डरें नहीं। चाणक्य कहते हैं, “सौ प्रयत्नों के बाद आप सफल होंगे ही।”

► आपात स्थिति में दृढ़ रहने वाला

चाहे व्यक्ति धनी हो या निर्धन, आर्थिक उतार-चढ़ाव प्रत्येक के जीवन का हिस्सा है। निर्धनों के लिये आर्थिक समस्याएँ जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से जुड़ी होती हैं, और धनवानों के लिये वे सम्पत्ति बनाये रखने व उसे बढ़ाने से संबंधित होती हैं।

अतएव, अपनी आर्थिक योजना ऐसे बनायें कि आप आपत्ति के समय का सामना कर सकें। इसके लिये दूरगामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है न कि त्वरित तुष्टि की। आपको अपना धन भविष्य के लिये रखना है।

यहाँ भारतीय संस्कृति में चली आ रही ‘बचत’ की अवधारणा लागू होती है। वैश्विक आर्थिक मंदी के दौर से भारत को सिर्फ सरकार द्वारा उठाये गये कदमों या अर्थशास्त्रियों की सलाह ने ही नहीं बचाया अपितु इसके पीछे लोगों की बचत की आदत भी थी।

भारतीय संस्कृति बचत में विश्वास करती है। एक कृषि प्रधान व मानसून पर निर्भर रहने वाला देश होने के कारण, हम सदा ही अपना अनाज वर्ष के शेष दिनों के लिये बचाकर रखते हैं। आर्थिक विकास के चलते लोगों ने अन्न के अतिरिक्त धन अथवा सोने की बचत भी आरम्भ कर दी। बचत व निवेश में अंतर है। बचत पहला कदम है व निवेश अगला स्तर। कठिन दिनों के लिए बचायें व विकास के लिये निवेश करें।

निवेश व बचत में अंतर बहुत सूक्ष्म किन्तु गहरा है। एक निर्धन व्यक्ति विकास के लिये निवेश नहीं कर सकता उसे अपने अगले भोजन के लिये बचत करनी होती है। जीवन की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद बचे धन का ही निवेश किया जा सकता है।

निवेश, अपने आप में एक विज्ञान है। एक सफल निवेशक होने के लिए एक अलग मानसिकता व दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। सफल निवेशक वे विचारक होते हैं जो सोच-समझकर जोखिम उठाते हैं। निवेश का निर्णय कभी भी आवेगजनित नहीं होना चाहिये। यह हमेशा ध्यान से सोच-विचार कर उठाया गया कदम होना चाहिए। अपने गाढ़े पसीने की कमाई का निवेश आपको सही स्थान, सही समय व सही व्यक्ति में करना चाहिए।

बीमा, एक अवधारणा है, जिसे समझना यहाँ आवश्यक है, हो सकता है आपके पास निवेश के लिए धन न हो किन्तु आपको अपना जीवन बीमा अवश्य करवाना चाहिए। एक निर्धन व्यक्ति निवेश करने में अक्षम हो सकता है किन्तु उसे अपना व अपने परिवार का बीमा अवश्य करवाना चाहिए। जीवन बीमा व स्वास्थ्य बीमा सर्कस की सुरक्षा जालियों की तरह है, जो कठिनाई के दिनों में आपकी व आपके परिवार की सुरक्षा करती है।

पूरे संसार की सरकारें अपने लोगों को बीमा सुविधाएँ देने के लिये कार्य कर रही हैं। कंपनियाँ भी अपने कर्मचारियों का बीमा करवाती हैं। एक व्यक्ति को अपने परिवार, संपत्ति एवं जमीन-जायदाद का बीमा करवाना

चाहिए। बीमे पर किया गया निवेश, आपात स्थिति में उससे मिलने वाले लाभ से बहुत कम होता है।
बचत - रक्षित (बीमाकृत) - निवेश। यही वे तीन चरण हैं जो आपको संकट का सामना करने में मदद करेंगे।

► लम्बे समय तक कोई आय न होने पर भी अखंडित रहने वाला।

कई बार जीवन में दुर्भाग्य की अवधि बहुत लम्बी होती है। उदाहरण के लिये, यदि एक निर्धन व अशिक्षित महिला अचानक अपना पति खो दे और उसके पास अन्य कोई सामाजिक सम्बल न हो, ऐसी स्थिति में उसे कड़ी मेहनत करनी होगी, अपना घर संभालना होगा और अपने बच्चों को भी शिक्षित करना होगा।

सम्भव है कि वह जानती हो कि उसके पास पैसे कमाने की योग्यता कम है, क्योंकि वह अधिक शिक्षित नहीं है। अतः अपने परिवार की स्थिति सुधारने का उसके पास एक ही रास्ता है, अपने बच्चों को शिक्षित कर उनके लिये अच्छे कैरियर की सम्भावनाएँ बढ़ाना।

यह अर्थसमायोजन की दूरगामी योजना है। यदि वह छोटा रास्ता अपनाते हुए उन्हें कोई नौकरी ले लेने को कहे तो यह उनके भविष्य से समझौता करना होगा।

आर्थिक समझदारी, कड़ी मेहनत करने में ही है, चाहे निकट भविष्य में कोई आमदनी न हो। समय के साथ मेहनत रंग लायेगी और अच्छे दिन लौट आयेंगे।

कई व्यवसाय सीजनल होते हैं यानि किसी ऋतु या पर्व विशेष पर ही आमदनी होती है। किन्तु कर्मचारियों को तनखाह हर माह देनी होती है। उदाहरण के लिये दीवाली पर पटाखों, कपड़ों व कारों की बिक्री कई गुना बढ़ जाती है। कई कंपनियाँ दीवाली सीजन सेल की तैयारी छः माह पहले ही आरम्भ कर देती हैं।

इन छः महीनों में जब वस्तुओं का उत्पादन हो रहा होता है, तब उन्हें उत्पादन की लागत व कर्मचारियों की तनखाह, दोनों का खर्च उठाना होता है। और वह भी बिना किसी आय के। इन कंपनियों के मालिक अपनी कोई भी देनदारी अपने उत्पाद की बिक्री होने तक नहीं रोक सकते। अंततः बिक्री के सीजन में उनकी आय खर्चों से कहीं अधिक होती है।

इस तरह की दूरगामी योजनाओं के लिए धैर्य और वित्तीय समझदारी की आवश्यकता होती है।

एक प्रचलित उक्ति है, “एक व्यवसायी को आने वाले दशक की योजना तैयार करनी चाहिए, एक राजनीतिज्ञ को आने वाली एक पीढ़ी की और एक अध्यापक को आने वाली शताब्दी की।”

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन वित्तीय प्रबंधन ही सफलता की कुंजी है

धन, मनुष्य की सोचने की क्षमता का उत्पाद है।

आयन रैंड - 'एटलस थ्रग्ड' में

धनोपार्जन कई तरह से किया जा सकता है। इस केस स्टडी में हम देखेंगे कि कैसे शिवनंदन द्वारा संचालित परियोजनाओं का वित्तीय प्रबंधन, चाणक्य द्वारा वर्णित उत्कृष्ट कोष के गुणों का चमकता उदाहरण है।

► पूर्वजों द्वारा या स्वयमेव विधि सम्मत तरीके से अर्जित

शिवनंदन ने सदा यह सुनिश्चित किया कि परियोजनाओं पर खर्च किया जाने वाले धन के स्रोत वैध हों। पुलिस विभाग के मामले में दो वैध स्रोत हैं- सरकारी अनुदान व बजट तथा सामाजिक सहायता अर्थात् धन एकत्रित करके देने वाले आयोजन व विभिन्न कंपनियों द्वारा कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियाँ। शिवनंदन ने इन दोनों का समुचित उपयोग किया।

हालांकि, उनके लिये सबसे बड़ी चुनौती थी कि इस कार्य में दोनों को लाभ हो - देने वाले को भी और लेने वाले को भी।

सीएसआर गतिविधियों के सहयोग से उन्होंने स्कूल, अस्पताल, रेस्टोरेंट, प्रशिक्षण केन्द्र, व्यायामशालाएँ व स्टेडियम बनवाये। इसके साथ एक साइबर क्राइम सैल की स्थापना भी की गई व आतंक विरोधी सेमिनार भी आयोजित किये गये।

कुछ परियोजनाएँ अपने आप में मील का पत्थर सिद्ध हुईं। इनमें से एक है - 'मंथन' ठाणे स्थित पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र। कुछ समयपूर्व ठाणे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन द्वारा संचालित एक वेस्ट मॅनेजमेंट परियोजना के कारण कानून व व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। तब ठाणे पुलिस ने टीएमसी को यह स्थिति संभालने में सहायता की थी। आमारस्वरुप टीएमसी ने यह हॉल ठाणे पुलिस को भेंट किया। 'मंथन' में दो सौ लोगों के बैठने की व्यवस्था है व प्रशिक्षण की अत्याधुनिक सुविधाएँ भी। इस केन्द्र पर करीब तीन करोड़ रूपयों की लागत आई। दूसरा उदाहरण है प्रशिक्षण केन्द्र 'प्रेरणा' का, जिसका निर्माण दक्षिणी मुम्बई में कई शुभचिन्तकों के सहयोग से किया गया।

उन्हें जिस चीज़ के लिये आवश्यकता अनुभव हुई, उन्होंने न केवल धन की व्यवस्था की अपितु किये गये कार्य के बारे में लोगों से बराबर उनके विचार जानते रहे और कार्य में सुधार के लिये उनके सुझाव भी लेते रहे। एक ट्रैफिक पुलिसमैन ने एक बार उन्हें पुलिस वालों के लिये ऑक्सीजन बूथ बनाने का सुझाव दिया, विशेषकर उन पुलिस वालों के लिये जो भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर अत्यधिक वायु प्रदूषण के बीच कार्य करते हैं।

अगले दस दिनों में शिवनंदन ने धन का इंतजाम कर लिया। उन्होंने एस्सेल वल्ड को ऑक्सीजन बूथ स्पॉन्सर करने के लिये राजी कर लिया जिसकी कीमत थी 65,000 रुपये।

ठाणे में आधुनिकतम तकनीक वाले अस्पताल की लागत थी 1.5 करोड़ रुपये। अस्पताल के दंत चिकित्सा विभाग की मशीनें एक कॉरपोरेट हाउस द्वारा स्पांसर की गई थी। शिवनंदन ने बोर्खाड ग्रुप ऑफ हास्पिटल्स से बातचीत कर इस अस्पताल को पुलिस के लिये चलाने का इंतजाम किया। इस अस्पताल की सभी सुविधाएं ठाणे पुलिस के छः हजार पुलिस परिवारों को बिना किसी शुल्क के उपलब्ध हैं।

उनके उदात्त विचारों से प्रभावित हो कई व्यक्तियों व संगठनों ने शिवनंदन को आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव रखा। योगा क्लासेज़ और आर्ट ऑफ लिविंग जैसे संगठनों ने पुलिसकर्मियों के लिये मुफ्त कार्यशालाएँ आयोजित कीं।

► आपात स्थिति में दृढ़ रहने वाला

ठाणे नगर के सीपी के पद पर रहते हुए (2005-08) उन्होंने अपने कार्यालय में साइबर क्राइम सैल व साइबर क्राइम लैब की स्थापना की। इसके लिये नेसकॉम ने 17 लाख रुपये लगाये। बाद में ऐसा ही सैल मुंबई पुलिस के लिये भी बनाया गया।

भविष्य में अपराधों का झुकाव किस ओर रहेगा, इस पर नजर रखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस जानकारी के आधार पर आने वाली आपातस्थितियों के लिये योजनाएँ बनाई जा सकती हैं। शिवनंदन की साइबर क्राइम सैल बनाने की योजना भविष्य में साइबर क्राइम से उत्पन्न हो सकने वाली आपात स्थितियों का उत्तर है।

► लम्बे समय तक कोई आय न होने की स्थिति में भी अखंडित रहने वाला

अपने मातहतों के साथ हुई मुलाकातों के दौरान शिवनंदन ने अपने बल के लिये कुछ प्रोत्साहन योजनाएँ तैयार की। किन्तु उन्होंने अनुभव किया कि यदि एक पुलिसकर्मी को अतिरिक्त दो हजार रुपये दे दिये जाते हैं तो वह या तो उससे मोबाईल खरीद लेगा या बाईक या फिर उसे शराब व अन्य व्यर्थ से कार्यों में खर्च कर देगा। अतः पुलिस कर्मियों के बच्चों को अच्छी शिक्षा देना एक बेहतर विकल्प था।

उन्होंने यह भी जाना कि जो पुलिसकर्मी अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में प्रवेश दिलवाना चाहते थे उन्हें पचास हजार से एक लाख रुपये तक की डोनेशन देनी पड़ती थी, जो कई देने में सक्षम नहीं थे।

वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पुलिसकर्मियों को गरीबी के चक्रव्यूह से आजाद कराने का एकमात्र रास्ता शिक्षा है। अतः उन्हें अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने से बेहतर होगा कि उनके लिये विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थानों का निर्माण करें। ठाणे पुलिस स्कूल के पीछे यही प्रेरणा थी।

शिवनंदन के पास दूरदृष्टि थी। उन्हें अनुभव हुआ कि पुलिस वालों की गरीबी की समस्या को उन्हें मात्र पैसे देकर नहीं सुलझाया जा सकता। मूल विचार गरीबी ही हटाने का था। शिक्षण संस्थाओं का निर्माण एक दीर्घकालिक उपाय था, जो एक लम्बे समय के लिए आय सुनिश्चित करता है।

ठाणे स्कूल का डिजाइन बनाते समय शिवनंदन ने सभी साधन व सुविधाएँ आरम्भ से ही देने का निर्णय लिया। उन्होंने स्कूल को टुकड़ों में बढ़ाने व सुविधाएँ देने का दृष्टिकोण नहीं रखा। उनके लिए समय बहुत महत्वपूर्ण था, वे चाहते कि उनके अगले स्थानान्तरण से पहले स्कूल पूरी तरह कार्य करने लगे।

इस भव्य स्वप्न को पूरा करने के लिये दिसम्बर 2005 में शिवनंदन ने शियामक डावर का एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसका उद्देश्य अनुदान एकत्रित करना था। हालांकि, अभी उन्हें ठाणे में आये दस ही माह हुए थे, किन्तु उन्हें जनता से ज़रबदस्त प्रतिक्रिया मिली। यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा और उन्होंने करीब साढ़े तीन करोड़ रुपये कमाये। इस लाभ का प्रयोग स्कूल बनाने में किया गया। स्कूल के निर्माण की कहानी देखने के लिए आप स्कूल की वेबसाइट www.thanepoliceschool.org पर जायें। यह स्कूल गोयनका एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा चलाया जा रहा है। यह इस क्षेत्र का सबसे अच्छा स्कूल है, जहाँ अत्याधुनिक सुविधाओं वाला आधारभूत ढांचा है और स्कूल विद्यार्थियों को प्रवेश देने के लिये कोई दान या डोनेशन स्वीकार नहीं करता।

यद्यपि शिवनंदन ने धन एकत्रित किया और अपने ठाणे के कार्यकाल में अन्य कई सुविधाओं का निर्माण किया, पर साथ ही उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि उनके उत्तराधिकारी भी इन सुविधाओं को इसी तरह बनाये रखें।

इसके लिए लम्बे समय तक धन की आवश्यकता पड़ने वाली थी। अतः एक पुलिस कल्याण फण्ड बनाया गया। 'ऊर्जिता' रेस्टोरेंट जो कि पुलिस कर्मियों को उत्तम गुणवत्ता का भोजन, साफ व सुंदर जगह पर परोसने की दृष्टि से ठाणे मुख्यालय में बनाया गया था, उसे एक प्राइवेट होटल चलाने वाले को करीब एक लाख रुपया प्रतिमाह के किराये पर दे दिया गया। यह किराया पुलिस कल्याण फण्ड को जाने लगा। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष करीब 12 लाख रुपये फण्ड के लिए मात्र किराये से मिलने लगे।

कल्याण फण्ड के निर्माण से शिवनंदन के उत्तराधिकारी, उनके द्वारा बनाये गये स्कूल, स्टेडियम व अन्य कई संरचनाओं का रखरखाव कर पाये। इस प्रकार दीर्घकालीन वित्त योजना ने इस बुनियादी ढांचे के निर्माण व रखरखाव में सहयोग किया।

जैसा कि हमने देखा, धन मात्र एक औजार है। एक माध्यम जो आपको एक लक्ष्य तक पहुंचाता है। शिवनंदन ने इसका संचय विभिन्न स्रोतों से किया व इसका प्रयोग पुलिस बल के लिये यथा संभव अच्छी सुविधाएँ बनाने में किया।

धन के मामले में भी अपनी टीम को प्रेरणा व श्रेय देना महत्वपूर्ण है। आइये इस अध्याय का अंत एक ऐसी घटना से करें जो अपना पैसा व सफलता अपनी टीम से बांटने के बारे में है। अगले अध्याय में हम इस पर और विस्तार से चर्चा करेंगे।

एक बार शिवनंदन को लायंस क्लब द्वारा आमंत्रित किया गया, जिसने उन्हें एक पुलिस वीरता पदक के लिये नामांकित किया था। शिवनंदन ने वह पदक स्वयं न लेकर, एक हवलदार संजय मानचेकर को देने को कहा। उन्हें लगा कि मानचेकर ने एक मामले में वाकई अनुकरणीय वीरता दिखाई है और वे इसके असली हकदार हैं।

हवलदार मानचेकर मुलुंड में एक होटल पर तैनात थे, उन्हें होटल के मालिकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई थी, चार गैंगस्टर्स का एक समूह होटल मालिकों को गोली मारने आया। मानचेकर तुरंत मैदान में कूद पड़े। गैंगस्टर्स ने मानचेकर पर गोली चलायी और एक ऑटो में भाग खड़े हुए। मानचेकर ने स्वयं एक दूसरे ऑटो से गैंगस्टर्स का पीछा किया और चार राउण्ड फायरिंग के बाद अंततः उन्हें पकड़ने में सफल रहे, इस पूरे प्रकरण में स्वयं उनका जीवन दांव पर लगा रहा। शिवनंदन ने अनुभव किया कि हवलदार को इस कार्य के लिए पुरस्कार मिलना वाकई महत्वपूर्ण है। अप्रैल 25, 1999 को लायंस क्लब द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में मानचेकर को पुलिस वीरता पदक से सम्मानित किया गया, सम्मान पत्र के साथ उन्हें पांच हजार रुपये का चेक भी दिया गया। उनके व उनके परिवार के लिये यह एक अत्यंत गर्व का अवसर था। पुराने दिनों की यादों में खोते हुए मानचेकर कहते हैं, “वह मेरे लिये यादगार क्षण था। इससे मेरा मनोबल बढ़ा और मुझे पुलिस बल का भाग होने पर बहुत गर्व हुआ।”

शिवनंदन ने पुलिस कमिश्नर से भी बात की और उन्हें पच्चीस हजार रुपये का नकद इनाम दिलवाया जो कि उस समय एक बहुत बड़ी रकम थी। मानचेकर को डीजी का बिल्ला भी दिया गया।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग यह है कि हवलदार संजय मानचेकर उनकी टीम का भाग नहीं थे।

जी हाँ, तो भी शिवनंदन को यह सम्मान व प्रशंसा देने की आवश्यकता अनुभव हुई। पुलिस बल जिसमें लाखों हवलदार हैं, वहाँ यह सम्मान पाना मानचेकर के लिये यादगार उपलब्धि थी।

अपने लोगों को प्रोत्साहित करने का, यह शिवनंदन का एक तरीका था।

★ वित्तीय प्रबंधन के नुस्खे ★

विभिन्न स्रोतों का प्रयोग: आपके पास धन जुटाने के कई स्रोत होने चाहिए।

साख महत्वपूर्ण है : साख के साथ आपकी व्यक्तिगत निष्ठा महत्वपूर्ण है।

दूसरों के लिये कार्य करें : ऐसी परियोजनाओं में निवेश करें, जिनसे प्रत्येक लाभान्वित हों।

दूरदर्शी बनें : वित्तीय योजना में सृजन व रख-रखाव दोनों सम्मिलित होने चाहिए।

अपना धन साझा रखें : इसे अपनी टीम के अन्य सदस्यों के साथ बांटे, जिन्हें अन्यथा टीम की उपलब्धियों का श्रेय कभी नहीं मिलता।

मेरे भीतर का नेता

[illegible]

अध्याय 6



दण्ड

सेना - टीम

स्वामी राजा
अमात्यमंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
दण्ड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

भाग अ



छठा मर्म

दण्डः आपकी टीम

किसी भी राज्य का छठा स्तंभ सेना है। यह राष्ट्र की ताकत का द्योतक है और नागरिकों को बाहरी खतरों से बचाती है। बाहरी शत्रुओं से युद्ध करने के अतिरिक्त सेना अन्य आपातकालों जैसे कि बाढ़ या गृह युद्ध जैसे आंतरिक संकटों में भी सहायता के लिये बुलाई जाती है। सीमाओं पर तैनात सुरक्षा बलों के अतिरिक्त पुलिस बल राष्ट्र की भीतरी सेना का कार्य भी करता है।

सेना प्रशिक्षित लोगों का एक दल है जो किसी भी खतरे का सामना करने को तैयार रहता है। सही व्यक्तियों का चुनाव व उनका समुचित प्रशिक्षण एक मजबूत सेना के निर्माण के लिये अति आवश्यक है, इसके अतिरिक्त उतने ही महत्वपूर्ण है सैनिकों की प्रतिबद्धता व निष्ठा।

इस पुस्तक में “सेना” का अर्थ “टीम” लिया गया है।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। एक युद्ध हमेशा एक टीम द्वारा ही जीता जाता है। उदाहरण के लिये, यद्यपि सत्यजीत रे ने उनकी फिल्म निर्माण की कला के प्रति रही आजीवन निष्ठा के लिये ऑस्कर पुरस्कार जीता, किन्तु यह भी वास्तविकता है कि उनके इस प्रयास में कैमरामैन, निवेशकों, टेक्नीशियंस, कलाकारों व स्पॉट ब्वायज़ की एक पूरी टीम ने निरंतर उनके साथ काम किया। अतः उनकी टीम उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितने कि सत्यजीत रे स्वयं।

इसी प्रकार एक क्रिकेट टीम में एक खिलाड़ी शतक लगा सकता है, अंतिम गेंद पर छक्का मार दे, मैच जीत जाये और उसे मैन ऑफ द मैच का ईनाम भी मिले। किन्तु एक टीम अपने सभी खिलाड़ियों के प्रयत्न से ही जीतती है, जिसमें क्षेत्ररक्षक, गेंदबाज व अन्य बल्लेबाजों ने मैच जीतने में अपनी भूमिका निभायी होती है।

हालांकि किसी एक व्यक्ति को असाधारण प्रदर्शन का श्रेय मिलता है, फिर भी यह टीम वर्क ही होता है जो एक व्यक्ति को विजेता बनाता है।

एक संगठन में उसका चेयरमैन ही शीर्ष पर होता है और अन्य लोगों को मार्गदर्शन व निर्देश देता है, किन्तु फिर भी प्रबंधकों, कर्मचारियों, माल सप्लाई करने वालों ऑफिस ब्वायज़ व ड्राइवर्स सभी मिलकर कंपनी के विकास, सफलता व उद्देश्य पूर्ति के लिये कार्य करते हैं।

टीम का कप्तान होने के नाते सदा एक नेता को ही टीम की सफलताओं का श्रेय दिया जाता है। किन्तु नेता को यह नहीं भूलना चाहिए कि उसे अपनी सफलता का श्रेय टीम के सदस्यों के साथ बांटना है। यही वास्तविक नेतृत्व है- अपनी सफलता अन्य लोगों के साथ बांटना।

एक टीम में विभिन्न मनोवृत्तियों वाले लोग होते हैं। वास्तव में एक टीम की ताकत उसकी विभिन्नता में ही होती है न कि उसके सदस्यों की समानता में। जब दल के सदस्य किसी मुद्दे पर विभिन्न दृष्टिकोण से विचार करते हैं, तभी वास्तविक विचार-विमर्श व विकास होता है।

उदाहरण के लिये, एक टीम एक नया उत्पाद बाजार में लाने की तैयारी कर रही है, व टीम का नेता अपने दल के सदस्यों से उनकी राय पूछता है। प्रत्येक सदस्य का एक इस बारे में अलग विचार होगा। एक व्यक्ति बजट को

महत्व देगा, तो दूसरा उत्पाद को बाजार में उतारने के लिये सही समय को आवश्यक समझेगा, तीसरा व्यक्ति मार्केट सेगमेंट्स पर ध्यान केन्द्रित करेगा जबकि चौथे व्यक्ति के लिये आकर्षक पैकेजिंग बहुत आवश्यक होगी। ये सभी दृष्टिकोण उत्पाद को सफलतापूर्वक बाजार में उतारने में सहायक होंगे।

यदि दल के सभी सदस्य विभिन्न तरीकों से सोचते हैं, फिर दल में समान क्या है? वह क्या है, जो दल को बांधे रखता है? दल को जोड़े रखने वाली वस्तु है उनका उद्देश्य। एक क्रिकेट टीम का उद्देश्य है मैच जीतना, एक बिज़नेस टीम का उद्देश्य है अपने उत्पाद व सेवाओं की बिक्री के द्वारा मुनाफा कमाना, एक पुलिस दल का लक्ष्य है कानून व व्यवस्था की स्थिति बनाये रखना।

इस प्रकार यदि दल के विभिन्न सदस्यों का ध्यान अपने विभिन्न मतों के वावजूद मूल मुद्दों पर केन्द्रित रहता है तो वे जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु साथ आये हैं उसे पाने के लिए जुड़े रहेंगे।

टीम वर्क का आरम्भ नेता से होता है। नेता को टीम वर्क की महत्ता समझ कर, अपनी टीम में उत्कृष्ट टीम वर्क के मूल्य स्थापित करने चाहिए।

सेना में एक प्रचलित कथन है “आपके राष्ट्र की सुरक्षा, सम्मान व कल्याण सर्वोपरि है, सदा व सदैव। आप जिन्हें कमांड करते हैं, उनका सम्मान, कल्याण और सुख अगली प्राथमिकता है। स्वयं आपका सुख, सुविधाएँ व सुरक्षा अंत में है, सदा व सदैव।”

इस कथन में सेना का लक्ष्य समुचित रूप से समाहित है। सेना सबसे पहले सामूहिक रूप में पूरे देश लिये कार्य करती है। अगली प्राथमिकता दल के सदस्य होते हैं जो एक दूसरे के लिये त्याग करने को तैयार हों। इसके बाद ही प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुरक्षा व आराम के बारे में सोच सकता है।

एक टीम में प्रत्येक सदस्य की विशेषताएँ व कमजोरियाँ अलग-अलग होती हैं। एक नेता को दल के प्रत्येक सदस्य के गुण व कमियाँ समझकर उन्हें उसी के अनुरूप काम देना चाहिए।

यदि दल में किसी ने अपेक्षा अनुरूप काम पूरा नहीं किया है तो नेता को स्वयं से प्रश्न करना चाहिये कि, “क्या मैंने उचित व्यक्ति को काम सौंपा था? क्या कोई अन्य व्यक्ति इसे बेहतर कर पाता? मेरी टीम में और कौन व्यक्ति इसे अच्छी तरह करने में सक्षम है?”

एक अच्छा नेता वह है जो उन लोगों से काम करवा ले जो यह सोच भी नहीं सकते थे कि वे यह कार्य कर सकते हैं। अतः नेता के पास एक व्यक्ति को स्वयं उससे बेहतर रूप में समझने की दृष्टि होनी चाहिए।

कार्य सौंपने के बाद नेता को उसका सतत निरीक्षण करना चाहिए। नेता कार्य सौंप सकता है किन्तु जिम्मेदारी नहीं। यदि टीम अपने कार्यों में असफल रहती है तो नेता को उसकी जिम्मेदारी उठानी चाहिए।

एक डूबते हुए जहाज का कप्तान, जहाज छोड़ने वाला अंतिम व्यक्ति होता है, जी हाँ जहाज पर मौजूद हर व्यक्ति को बचा लिये जाने के बाद ही वह जहाज छोड़ता है।

इसी कारण अर्थशास्त्र में चाणक्य इस बात पर जोर देते हैं कि एक नेता को पूर्णतः सजग रहते हुए अपने दल के सदस्यों द्वारा किये जाने वाले कार्य पर नजर रखनी चाहिए।

इस हेतु वह अपने मातहतों को समय-समय पर कार्य स्थिति की रिपोर्ट देने के लिए कह सकता है। आज इन रिपोर्टों को मैनेजमेंट इनफरमेशन सिस्टम कहा जाता है और इन्हें भरने के लिये वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक अथवा दैनिक प्रारूप हो सकते हैं।

पुलिस विभाग में नेता के दैनिक कार्यों में से एक है, इन रिपोर्टों का अध्ययन। नेता को अपनी टीम की प्रत्येक जानकारी होनी चाहिए। टीम के प्रत्येक सदस्य की उपस्थिति से लेकर तो वह क्या कार्य कर रहा है, इस तक की जानकारी नेता के पास होनी चाहिये। यदि नेता इन चीजों का ध्यान नहीं रख पायेगा तो उसके लिये योजनाएँ व रणनीतियाँ बनाना कठिन हो जायेगा तथा वह व उसकी टीम लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पायेगी।

एक अच्छी टीम अथवा निष्ठावान व्यक्तियों की सेना कैसे बनाई जा सकती है?

पहला कदम है उचित व्यक्तियों का चुनाव, जिनके पास उस कार्य के लिये आवश्यक गुण व योग्यताएँ हों। एक किसान को बुआई करने से पहले अच्छे बीजों का चुनाव करना होता है। अतः सबसे पहले यह सुनिश्चित करें कि

आपके दल में आने वाला व्यक्ति उस कार्य के लिए उपयुक्त है। चयन प्रक्रिया के दौरान सही व्यक्ति की पहचान कर लेना ही सफलता की कुंजी है।

अगला कदम है उस व्यक्ति को प्रशिक्षित करना। चुना गया व्यक्ति प्रशिक्षित किये जाने योग्य होना चाहिए, अर्थात् वह बदलाव के लिये तैयार होना चाहिए। संभव है चुने गये व्यक्ति के पास योग्यता हो, किन्तु वह काम में नया हो। ऐसे व्यक्ति से आप पहले दिन से ही उत्पादकता की आशा नहीं कर सकते। आपको उसे प्रशिक्षित करना होगा और कार्य करते हुए भी सीखने के अवसर देने होंगे।

अर्थशास्त्र की प्रथम पुस्तक में, पांचवें अध्याय के छठे सूत्र में चाणक्य ने प्रशिक्षण की प्रक्रिया का वर्णन किया है:-

“अध्यापक की अपने विषय में पारंगतता स्वीकार करने पर ही प्रशिक्षण व अनुशासन पाया जा सकता है। ”

आइये, इस सूत्र का विश्लेषण करें:-

► प्रशिक्षण

एक अच्छी टीम के निर्माण के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसी कारण संगठनों में आगमन (इंडक्शन) कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं और पुलिस बल अपने नये रंगरूटों को प्रवेश स्तर का प्रशिक्षण देता है।

अधिकतर लोगों को अपने प्रशिक्षण के दिन जीवन के सबसे अच्छे दिन लगते हैं क्योंकि इन दिनों वे कोई नया काम सीखते हैं और इसलिए भी इन दिनों जिम्मेदारियाँ कम होती हैं, और मौज-मस्ती अधिक।

► अनुशासन

प्रशिक्षु को प्रशिक्षण के उद्देश्य पर ध्यान देना चाहिए व उसे लापरवाही से नहीं लेना चाहिए।

प्रशिक्षण के दौरान, प्रशिक्षु के पास कोई कार्य संबंधी उत्तरदायित्व नहीं होता, किन्तु उसे याद रखना चाहिये कि इस दौरान वह भविष्य की कई जिम्मेदारियों के लिए तैयार हो रहा है। अतः आरम्भ से ही अनुशासित रहना चाहिए।

अनुशासन के दो प्रकार हैं- बाहरी व भीतरी। बाहरी अनुशासन अध्यापकों व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा लागू किया जाता है। प्रशिक्षुओं को एक आचार संहिता का पालन करना होता है और नियम तोड़ने पर उन्हें सजा भी भुगतनी पड़ती है।

बाहरी अनुशासन, भीतरी अनुशासन या आत्म-अनुशासन को जन्म देता है। प्रशिक्षुओं को वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति या सजा के भय से अनुशासित व्यवहार प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

प्रशिक्षण व अनुशासन, प्रशिक्षु को सदा याद रखने चाहिए।

अनुशासन चरित्र निर्माण में मदद करता है। यह एक आभामण्डल है जो आप जहाँ जाते हैं, अपने साथ लेकर चलते हैं। पुलिस बल में भी अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है। समय की पाबंदी, व्यवस्थित पोशाक, वरिष्ठों की आज्ञा का पालन और कोई भी निर्णय लंबित न रखना, अनुशासन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। एक अनुशासित व्यक्ति हर जगह सम्मानित होता है, क्योंकि वह कुछ मूल्यों व सिद्धांतों का जीता-जागता प्रतिरूप होता है और अपना जीवन उन्हीं के अनुरूप जीता है।

► शिक्षकों का अधिकार स्वीकार करना

अनुशासित होना सरल भी हो सकता है और कठिन भी।

चाणक्य कहते हैं कि अध्यापक को स्वीकार कर इसे सरलता से पाया जा सकता है। यानि प्रशिक्षुओं को अध्यापक या प्रशिक्षक को पूरी तरह स्वीकार करना चाहिए व उसकी परिपक्वता व अनुभव पर विश्वास करना चाहिए।

प्रशिक्षण के दौरान आपको अध्यापक के ज्ञान पर तनिक भी अविश्वास नहीं होना चाहिये। यदि आपके मन में

थोड़ी भी दुविधा हो, जैसे कि, “क्या मेरा अध्यापक सही बात कह रहा है?” या “मुझे नहीं लगता, इस अधिकारी या प्रशिक्षक की विषय पर अच्छी पकड़ है”, तो कहीं कुछ गड़बड़ है।

प्रशिक्षु का दृष्टिकोण उस बालक की तरह होना चाहिए जो अपनी माता से सीख रहा होता है। माता जो भी कहती है- बालक उसे परम सत्य मानकर स्वीकार कर लेता है। उसके मन में तिलभर भी संदेह नहीं होता। प्रशिक्षु व प्रशिक्षक के बीच इस तरह का संबंध सीखने की गति बढ़ा देता है।

यदि प्रशिक्षु प्रशिक्षण के पहले स्तर पर ही प्रशिक्षक की योग्यता पर प्रश्न करने लगे तो कोई उन्नति नहीं हो सकती। जब प्रशिक्षु कुछ अनुभव व परिपक्वता पा ले, उसके बाद ही प्रश्न किये जाने चाहिए क्योंकि तभी वह प्रशिक्षक के उत्तर ठीक से समझ पाएगा।

जब प्रशिक्षु स्वयं को अध्यापक की मानसिक रूझान के साथ समायोजित (ट्यून) कर लेता है तो उसके भीतर एक परिवर्तन आने लगता है। यह वैसा ही है जैसे रेडियो, रेडियो स्टेशन से समायोजित (ट्यूनड) होता है। इसके बाद कोई बाधा नहीं आती, संगीत स्पष्ट होता है और आप उसे घंटो सुन सकते हैं।

अध्यापक के साथ समायोजित (ट्यून) होने के इस गुण को संस्कृत में श्रद्धा कहते हैं। अंग्रेजी में इसके लिये कोई शब्द नहीं है। यह विश्वास या आत्मसमर्पण नहीं है, न ही यह अधविश्वास है। यह अध्यापक व विद्यार्थी के बीच एक सुंदर संबंध है।

प्रशिक्षण के दौरान यह महत्वपूर्ण है कि प्रशिक्षु पूरी तरह से प्रशिक्षक के साथ समायोजित (ट्यूनड) हो और उसे अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ माने।

छात्र कई बार अध्यापकों पर ठीक से न पढ़ाने का दोष लगाते हैं। इसमें कुछ सच्चाई भी हो सकती है, किंतु विद्यार्थियों को भी स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या वे एक अच्छे विद्यार्थी थे।

एक दिन एक बच्चा बहुत नाराज व परेशान हो घर आया और अपनी मां से कहा, “हमारी भूगोल की अध्यापिका बहुत बोर करती है, वह ठीक से नहीं पढ़ाती। स्कूल में मेरे सभी मित्र उनसे नफरत करते हैं।” यह सुनकर उसकी मां ने समझाया, “बेटा तुम्हारे जीवन में और भी बहुत से अध्यापक आयेंगे। कुछ का सम्प्रेषण अच्छा होगा, कुछ में यह योग्यता कम होगी। प्रत्येक अध्यापक के पढ़ाने का तरीका अलग होता है। सिर्फ इसलिए कि आपको उनके पढ़ाने का तरीका पसंद नहीं, वे बुरी अध्यापिका नहीं हो जातीं। आज के बाद से आपको भूगोल का एक अच्छा विद्यार्थी बनना है।”

उन्होंने बच्चे को कक्षा में कैसे सोचना है, इसका एक बिल्कुल नया दृष्टिकोण दिया। अगले दिन से वह अध्यापिका के साथ इतनी अच्छी तरह समायोजित (ट्यूनड) था कि सत्र के अंत में उसने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पाया।

► संबंधित क्षेत्र (विषय)

अध्यापक चाहे स्कूल के हों या कॉलेज के, वे अलग-अलग विषय पढ़ाते हैं। अर्थात्, वे उस क्षेत्र/विषय के ज्ञाता हैं। कुछ प्रशिक्षक मात्र अध्यापक होते हैं और कुछ विशेषज्ञ अध्यापक। उदाहरण के लिए एक संस्कृत के अध्यापक आधारभूत भाषा पढ़ा देंगे जबकि संस्कृत व्याकरण के अध्यापक इस विषय को और गहराई से पढ़ावेंगे।

आज की सुपर स्पेशलाइजेशन की पीढ़ी के लिए तो यह और भी आवश्यक है कि वे प्रत्येक अध्यापक को सुनें व स्वीकार करें।

पुलिस की नौकरी में आने से पहले शिवनंदन अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे। उन्हें पढ़ाने में मजा आता था और उन्होंने अपना यह शौक जीवन भर जारी रखा। आज भी वह इस पुस्तक के रूप में ऐसे भी कई लोगों तक पहुंच रहा है जो उन्हें पहचानते भी नहीं हैं।

भारतीय पुलिस सेवा में आने के बाद, उनके प्रशिक्षण के दिनों में उन्हें विभिन्न क्षेत्रों से विशेषज्ञ पढ़ाने आते थे। बाद में, जब शिवनंदन स्वयं एक नेता बन गये तो उन्होंने पुलिस बल को विश्वस्तरीय अध्यापकों की सहायता से पढ़ाना जारी रखा।

इस पुस्तक के अगले भाग में आप शिवनंदन द्वारा आरम्भ किये गये उन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में पढ़ेंगे जो

उन्होंने एक मजबूत टीम बनाने के लिये आयोजित किये।

एक समय था जब लोग नौकरी पाने के लिए पढ़ाई करते थे। आज लोग अपनी नौकरी बचाये रखने के लिये पढ़ाई करते हैं। आज के समय में सतत प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है।

स्कूल व कॉलेज के दिनों में लोग परीक्षा में पास होने के लिये पाठ्य पुस्तकें पढ़ते हैं। किन्तु वास्तव में अच्छी पुस्तकें पढ़ने व आजीवन ज्ञान प्राप्त करने की आदत का विकास किया जाना चाहिये। आपकी मानसिकता उस विद्यार्थी की होनी चाहिए जो सीखने के लिये सदा तत्पर हैं। आप अपने जीवन में आने वाले हर व्यक्ति से सीखें।

यदि नेता का ध्यान प्रशिक्षण व विकास पर केन्द्रित है तो टीम वर्क सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। आज विभिन्न संगठनों के पास प्रशिक्षण केन्द्र है और उनमें पुलिस बल भी शामिल है। ये केन्द्र वास्तव में शैक्षणिक संस्थाएँ हैं, जो टीम के साथ ज्ञान साझा करती हैं ताकि वे और अच्छा प्रदर्शन करें।

जैसा कि टीम शब्द की परिभाषा से स्पष्ट है Together Each one Achieves More, साथ मिलकर चलने से प्रत्येक व्यक्ति अधिक पाता है।

संभव है, एक अकेला व्यक्ति मजबूत न हो, लेकिन दस कमजोर व्यक्तियों का साथ आ जाना मजबूती है। अच्छे टीम वर्क में अच्छा तालमेल देखने को मिलता है (Synergy)। तालमेल (Synergy) की अवधारणा के अनुसार एक और एक दो से अधिक होते हैं। दो विचारों को साथ लाने से मिलने वाला फल एक अकेले विचार के निष्पादन से मिलने वाले फल से बेहतर होता है।

(टीम वर्क) सामूहिक कार्य में प्रसन्नता है हताशा नहीं, सहयोग है प्रतिद्वंद्विता नहीं तथा स्वीकृति है, अस्वीकृति नहीं। नेता टीम के एक-एक सदस्य को साथ ला लक्ष्य पा लेता है और तब वे अपनी सामूहिक सफलता का जश्न मनाते हैं।

भाग ब



चाणक्य के अनुसार उत्कृष्ट टीम के गुण

टीम वर्क सीखने का सबसे अच्छा तरीका है, प्रकृति को देखना। जहां आपको टीम वर्क के कई उदाहरण देखने को मिलेंगे।

आकाश में पक्षियों का एक झुण्ड अपने टीम वर्क में एयरोडायनेमिक्स के सिद्धांतों का प्रयोग करता है। पक्षी उड़ते हुए V आकार बनाते हैं। वे एक-दूसरे से समायोजित (ट्यून्ड) होते हैं और नेता के पीछे उड़ते हैं। जब वह नेता थक जाता है तो वह पीछे चला जाता है और उसकी जगह दूसरा पक्षी नेता बन जाता है। वे अपनी लंबी उड़ानें एक दूसरे की सहायता से शांतिपूर्वक पूरी कर लेते हैं।

चींटियां भी समूहों में काम करती हैं। एक परेड की तरह सीधी पंक्ति में चलते हुए वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक मार्चिंग करती हैं। यदि ब्रेड का एक बड़ा टुकड़ा मिल जाये, जिसे एक चींटी अकेले नहीं उठा सकती, तो वे एक दूसरे की सहायता करती हैं। चींटियों की बाम्बी जिसे 'एंट हिल' के नाम से भी जाना जाता है, उनका सामुदायिक घर होता है। वे अच्छे मौसम में कड़ी मेहनत करके भोजन जमा करती हैं और बुरे समय में जमा किया गया भोजन मिलकर खाती हैं।

कौवे भी दल में कार्य करते हैं। जब एक कौवा भोजन देखता है तो वह अन्य कौवों को भी बुला लेता है और वे मिलकर भोजन करते हैं और यदि कोई कौवा मुसीबत में हो तो वह अन्य कौवों को बुलाता है। वे उसे सुरक्षा देते हैं और सुरक्षित स्थान पर ले जाते हैं।

मनुष्यों का टीम वर्क देखने की सबसे अच्छी जगह है- गाँव। गाँव व शहर का अंतर बताते हुए कहा जाता है, “गांवों में पहला आदमी आखिरी आदमी को जानता है और शहर का आदमी अपने पड़ोसी को भी नहीं जानता।”

गाँव को सौहार्द व सहअस्तित्व का सटीक उदाहरण कहा जा सकता है। यदि गांव में कोई नया व्यक्ति आता है तो प्रत्येक गांववासी जानता है कि वह मित्र है या शत्रु। किसी शत्रु का सामना करने के लिये पूरा गांव एक हो जाता है, इसी प्रकार एक मित्र का स्वागत करने को भी पूरा गांव एकजुट रहता है।

विवाह भी गांवों में एक सामुदायिक आयोजन होता है। गांव वाले विवाह की जिम्मेदारियाँ भी आपस में बांटते हैं। कोई व्यक्ति भोजन का इंतजाम करता है तो कोई सजावट का, एक तीसरा व्यक्ति गाड़ियों की व्यवस्था कर देता है। इस आयोजन के लिये पूरा गांव एक टीम के रूप में काम करता है।

एक बार एक गांव से एक बारात बिना शादी किये वापस लौट रही थी, तभी किसी ने इसका कारण पूछा तो बारातियों में से किसी ने उत्तर दिया कि बारातियों ने शादी के ठीक पहले दहेज की मांग की थी। हालांकि दहेज लेना व देना दोनों गैरकानूनी है, लेकिन फिर भी कुछ क्षेत्रों में यह प्रथा अभी भी प्रचलित है।

इस घटना से दुल्हन के पिता बहुत परेशान थे। अचानक गांव के एक धनी व्यक्ति ने घोषणा की कि, “लड़के और उसके परिवार को बुलाओ और पंडित को शादी कराने के लिए कहो। मैं अभी यहीं दहेज दूंगा।” उसने कहना जारी रखा “आज तक इस गांव से कोई बारात बिना शादी किये नहीं लौटी है और इस बार भी ऐसा नहीं होगा।”

यह उस समुदाय में लोगों के बीच के संबंधों का उदाहरण है। वहां सभी एक दूसरे से इसी प्रकार जुड़े होते हैं। वे

अपनी खुशियों में सभी को सम्मिलित करते हैं व लोगों को एक दूसरे के दुःख बांटने में भी संकोच नहीं होता।

टीम वर्क का एक और उदाहरण है भारत में प्रचलित संयुक्त परिवार प्रणाली। यदि किसी परिवार में चार बेटे हैं तो वे चारों अपनी पत्नियों व बच्चों के साथ एक ही छत के नीचे एक साथ रहते हैं। घर चलाना सभी की सम्मिलित जिम्मेदारी होती है।

वे सभी एक ही भोजन करते हैं, बिना इस बात की परवाह किये कि कौन कितना कमाता है। यदि कोई भाई बीमारी या अपंगता की वजह से कमा नहीं पा रहा है, तो बाकी भाई उसकी व उसके परिवार की देखभाल सुनिश्चित करते हैं। इन परिवारों में बच्चों की परवरिश, शिक्षा एवं विवाह एक साथ मिलजुल कर होते हैं।

संयुक्त परिवार प्रणाली सुरक्षा भी देती है। ऐसे परिवारों में बच्चों का ध्यान रखने के लिए बाहर से किसी (बेबी सिटर) को नौकरी देने की आवश्यकता नहीं होती। दादा- दादी, बुआएँ व चाचियाँ तथा बड़े भाई-बहन छोटे बच्चों का ध्यान रखते हैं। बच्चों को घर में ही मित्र मिल जाते हैं। वे साथ ही पढ़ते व खेलते हैं। एक दूसरे की पुस्तकें व कपड़े प्रयोग करते हैं व त्यौहार भी साथ ही मनाते हैं। यह वास्तविक टीम-वर्क है।

टीम वर्क का अर्थ स्वीकार करना भी है। आपको अपने दल के सदस्यों की कमियों की उपेक्षा करनी होती है और उनके गुणों की ओर देखते हुए जीवन में आगे बढ़ना होता है। इसका मूल सूत्र है, “हम साथ में सफल हों।”

एक आदर्श टीम के अपेक्षित गुणों को चाणक्य ने अर्थशास्त्र (पुस्तक 6, अध्याय 1, सूत्र-11) में इस तरह वर्णित किया है।

- ▶ आज्ञा पालक
- ▶ प्रतिदिन के अरुचिकर कार्यों से हताश न होने वाली
- ▶ चुनौतियों का सामना करने में सक्षम
- ▶ युद्ध करने का अनुभव
- ▶ युद्ध विद्या व शस्त्र प्रयोग में पारंगत
- ▶ कोई अलग व्यक्तिगत स्वार्थ न होना।

यदि आप एक अच्छी टीम निर्मित करना चाहते हों तो अपनी टीम में इन गुणों को विकसित करें। यदि आपकी टीम में ये गुण विद्यमान हैं तो आप एक उत्कृष्ट व अनुकरणनीय टीम है।

एक अच्छी टीम का आरम्भ एक अच्छे नेता से होता है। यदि एक अच्छी टीम का नेता बुरा है तो टीम हतोत्साहित हो जायेगी। दूसरी ओर एक अच्छा नेता, एक साधारण टीम को भी सक्षम टीम में रूपांतरित कर सकता है।

आइये, एक उत्कृष्ट टीम के गुणों की विस्तृत चर्चा करें।

▶ आज्ञा पालक

टीम में सदस्यों के सैकड़ों विचार व मत हो सकते हैं, किन्तु निर्णय एक ही होना चाहिए।

एक आदर्श टीम आज्ञापालक होती है और नेता का निर्णय स्वीकार करती है। इसका अर्थ है कि टीम विश्वास करती है कि नेता का निर्णय सभी के भले के लिये है। टीम अपने नेता के विवेक पर विश्वास करती है और जानती है कि वह ऐसा निर्णय लेगा जो सभी के लिये ठीक होगा।

यदि नेता एक निष्ठावान व सही जीवन मूल्यों से प्रेरित व्यक्ति है तो वह बड़े परिदृश्य को सामने रखकर प्रत्येक के लाभ पर ध्यान देगा।

कई नेता ऐसे निर्णय लेने का प्रयास करते हैं जो उन्हें अधिक लोकप्रिय बनायें किन्तु नेतृत्व का एक पक्ष ऐसे निर्णय लेना भी है जो कड़े व कड़वे हैं।

पुलिस प्रशिक्षण के दौरान अवज्ञा करने वाले व्यक्ति को सजा दी जाती है। इस सजा का औचित्य आज्ञापालन की गुणवत्ता बढ़ाना है। एक अच्छा नेता बनने से पहले व्यक्ति को अच्छा शिष्य बनना होता है। आप में नेतृत्व तभी

जागेगा जब आप एक आज्ञाकारी शिष्य होंगे।

यह फिर से श्रद्धा या संपूर्ण आज्ञापालन के गुण के कारण संभव होता है। आरम्भ में आप नहीं समझ पाते कि कोई निर्णय विशेष क्यों लिया गया। आपको उसमें तर्क की कमी नजर आ सकती है और आप अपने नेता से इतने सहमत नहीं होते कि उसकी आज्ञा का पालन करें। किंतु समय बीतने के साथ आप जान जाते हैं कि वह निर्णय सर्वोचित था।

स्वामी चिन्मयानंद के एक शिष्य, जिन्होंने इस महान आध्यात्मिक नेता के साथ कार्य किया है, याद करते हुए कहते हैं, “मैंने उनके साथ दशकों तक, आश्रम के प्रबंधक के रूप में कार्य किया। हमारी बैठकों में वे ऐसे निर्णय लेते थे जो हमारी समझ से परे होते थे। कई बार मैं अपने भीतर से विद्रोह भी करता। किन्तु मैं जानता था कि वे मेरे गुरु हैं और इसी कारण मैं बिना कोई प्रश्न किये उनका अनुसरण करता था। समय के साथ मुझे उनके कारण समझ में आने लगे।” उन्होंने आगे कहा, “मैं कभी भी उन्हें गलत सिद्ध नहीं कर पाया।”

नेता अलग सोचते हैं। उन्होंने मसलों को कई बार देखा व समझा होता है और वह भी हमसे कई गुना बेहतर तरीके से। उनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है और वे बड़ा सोचते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि अनुसरणकर्ता का अपना कोई मत नहीं होना चाहिए, किन्तु यह भी सच है कि अनुसरणकर्ताओं की अपनी सीमाएँ होती हैं और इस सीमित दृष्टिकोण से लिये गये निर्णय का अवांछित प्रभाव हो सकता है। जब एक अनुयायी असमंजस में हो और यह नहीं जानता हो कि उसे क्या करना है तो उसे एक ही चीज याद रखनी चाहिए : नेता के आदेश का पालन करें।

► प्रतिदिन के अरुचिकर कार्यों से हताश न होना

एक सैनिक ने एक बार कहा, “बिना युद्ध लड़े सेवा निवृत्त हो जाना सबसे बड़ी त्रासदी है।” एक सैनिक जिसने जीवन भर शत्रु से लड़ने का प्रशिक्षण लिया हो, उसे यदि बिना युद्ध लड़े सेवा निवृत्त होना पड़े तो उसे अपना पूरा जीवन व्यर्थ प्रतीत होने लगता है, आखिर उसने अपने ज्ञान व हुनर का कहीं प्रयोग जो नहीं किया।

पुलिस विभाग में भी यह एक दुःखद स्थिति मानी जाती है, यदि व्यक्ति कोई भी सकारात्मक प्रभाव छोड़े बिना सेवानिवृत्त हो जाये। जब कभी शिवनंदन का स्थानांतरण हुआ अथवा उन्होंने कोई पद ग्रहण किया, उन्होंने इस अवसर को एक चुनौती के रूप में लिया।

ऐसे भी लोग होते हैं, जो परेशानियों से भाग खड़े होते हैं। किन्तु चुनौतियों से हताश हो जाने से पूरे दल का हुनर व्यर्थ हो जाता है। एक टीम सदा आगे बढ़ने के लिये तत्पर होनी चाहिए न कि पीछे हटने के लिये। उसे पहल कर आक्रमण करना चाहिए।

टीम वर्क की वास्तविक परीक्षा दुर्दिनों में ही होती है। महाभारत में भी अर्जुन युद्ध के मैदान में थे जब उन्होंने घबराकर युद्ध करने से मना कर दिया था, क्योंकि वे अपने परिवार व मित्रों से नहीं लड़ सकते थे। उन्हें होश में लाने व युद्ध के लिये तैयार करने के लिये, श्रीकृष्ण ने उन्हें जो मनोवैज्ञानिक सलाह दी, वह भगवद् गीता के रूप में आज भी उपलब्ध है।

जब युद्ध का समय आये तो किसी भी कारण से, चाहे वह स्वास्थ्य हो या कोई अन्य, छुट्टी के लिये आवेदन न करें। जब युद्ध का बुलावा आये तो अपने सुख साधन छोड़कर शस्त्र उठायें व भगवान से प्रार्थना करें कि वह आपको शक्ति दें, तनकर खड़े हो जायें और आदेश की प्रतीक्षा करें।

और तब, नेता के आदेश पर आगे बढ़ें व अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दें। जब तक आप युद्ध जीत न लें, पीछे न मुड़ें। जैसे की कहा जाता है, “हमारा धर्म नहीं उत्तर देना, न हमने कारण जाना है, करना है हमें तो युद्ध मात्र, और वीरगति को पाना है।”

► चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम

युद्ध क्षेत्र में मात्र जाना ही युद्ध जीतना नहीं होता। आप जैसे ही रणक्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो पाते हैं कि वहाँ

संभालने के लिये कई चुनौतियाँ हैं। अतः टीम को इन चुनौतियों का सामना करने के लिये आवश्यक गुणों का विकास करना होता है।

टीम के लिये आवश्यक है कि वह उन्हें मिलने वाली चुनौतियों का मुकाबला करें और तब तक करती रहें, जब तक वह अपना लक्ष्य नहीं पा लेती। आप एक रणनीति के अनुरूप युद्ध आरम्भ करते हैं किंतु रणक्षेत्र में पहुँचने पर संभव है, आपको शत्रु की रणनीति को निष्क्रिय करने के लिये अपनी रणनीति बदलनी पड़े और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक कोई जीत नहीं जाता।

लगातार चुनौतियों का सामना करना शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार से थकाने वाला काम है। फिर भी नेता अपनी टीम को प्रोत्साहित कर प्रेरणा देता रहता है। कभी वह उन्हें प्रेरणादायी भाषण देता है, तो कभी स्वयं उदाहरण बनकर उनका नेतृत्व करता है। टीम के लिये अपनी प्रेरणा व मनोबल का सर्वोच्च स्तर बनाये रखना आवश्यक होता है।

प्रेरणा ईंधन है, जिसकी ऊर्जा से टीम कठिन समय में भी आगे बढ़ती रहती है। ऐसे समय में टीम का प्रत्येक सदस्य जीत के लिये बलिदान देने को तैयार रहता है।

युद्ध के दौरान, सेना योग्य नौजवानों की खोज में रहती है व उन्हें सेना में भर्ती होने के लिये आमंत्रित करती रहती है। एक विधवा के तीन बेटे थे। सबसे बड़ा बेटा एक सैनिक के रूप में सेना में भर्ती हो गया। वह युद्ध में मारा गया। अपने बड़े भाई से प्रेरणा लेकर दूसरा लड़का भी सेना में जाना चाहता था, लेकिन पड़ोसियों ने विधवा को समझाया कि वह उसे सेना में जाने की आज्ञा न दे, किन्तु उसने उनकी बात नहीं मानी। उसके दूसरे लड़के ने भी युद्ध में अपना बलिदान दिया। सबसे छोटे बेटे ने भी सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया और अपनी माँ का आशीर्वाद लेकर वह भी युद्ध में चला गया। दोनों भाईयों की तरह वह युद्ध में मारा गया।

पड़ोसियों ने वृद्धा से कहा, “देखा, तुमने अपने तीनों बेटे को खो दिये। क्या हमने तुमसे नहीं कहा था कि उन्हें सेना में न जाने दो, अब तुम सारा जीवन पछताओगी।” उस वृद्ध स्त्री ने उत्तर दिया, “मुझे तो सिर्फ एक चीज का पछतावा है, मेरा कोई चौथा बेटा नहीं है, नहीं तो मैं उसे भी युद्ध में भेजती।” यह है सच्ची देशभक्ति, एक व्यक्ति का किसी बड़े लक्ष्य के लिये अपनी व्यक्तिगत सुख सुविधाओं की उपेक्षा करना। एक उत्कृष्ट टीम में वे लोग होते हैं जो अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों को छोड़कर पूरा ध्यान इस पर केन्द्रित करते हैं कि वे अपनी टीम की लक्ष्य प्राप्ति में क्या भूमिका निभा सकते हैं।

► युद्ध कौशल में अनुभवी/पारंगत

युद्ध एक सैनिक को वास्तविक संसार की चुनौतियों से परिचित कराता है। यह व्यावहारिक ज्ञान कक्षा में बैठकर सीखे गये सिद्धान्तों से अधिक उपयोगी होता है। अतः जब चुनौती पूरी हो जाती है और सेना युद्ध जीत जाती है तो सैनिक पहले से अधिक प्रसन्न और अधिक शक्तिशाली अनुभव करता हुआ युद्ध क्षेत्र से वापस लौटता है।

इस परिस्थिति में सैनिक उस टीम का सदस्य रहा है जिसने सफलता हासिल की है। उसने कल्पना को यथार्थ में जीया है। उसके पास लोगों के साथ बांटने के लिये वास्तविक अनुभव होते हैं। अब वह अन्य लोगों का मार्गदर्शन कर सकता है और उन्हें पथ व पथ पर मिलने वाली कठिनाईयों से परिचित करवा सकता है।

अतः एक अच्छी टीम में वरिष्ठ अनुभवी सदस्य होने चाहिए। वे नये सैनिकों के साथ अपनी पिछली लड़ाईयों के अनुभव बांट सकते हैं।

अधिकांश सरकारी संगठनों में तीन पीढ़ियाँ साथ काम करती हैं वरिष्ठतम पीढ़ी जो कि बुद्धिमान व अनुभवी है तथा जिनकी आयु पचास वर्ष या अधिक है। दूसरी पीढ़ी में वे लोग हैं जिन्होंने जीवन के तीन दशक पूरे कर लिये हैं तथा जो अनुभवी तो हैं किन्तु उन्हें अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी है। तीसरी पीढ़ी में नयी भर्ती में आये लोग होते हैं जो बीस से तीस वर्ष की आयु के होते हैं और उन्हें अभी वास्तविक चुनौतियों को समझना है।

एक अच्छा संगठन यह सुनिश्चित करता है कि तीनों पीढ़ियाँ एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करें। अनुभवी सदस्य अपना अनुभव व ज्ञान युवा सदस्यों के साथ बांटते हैं तथा युवा सदस्य टीम में नये विचार व दृष्टिकोण लेकर आते हैं।

इसका सटीक उदाहरण है कम्प्यूटर का युग। पुरानी पीढ़ी आधुनिक तकनीक की आदी नहीं है व इसका प्रयोग सहज रूप से नहीं कर पाती। ऐसे में संगठन के युवा सदस्य जो नयी टेक्नोलॉजी से भलीभांति परिचित हैं, अपने वरिष्ठ साथियों की सहायता इसे सीखने में कर सकते हैं।

► रणनीति व शस्त्र प्रयोग में पारंगत

शस्त्रों के बिना कोई भी युद्ध नहीं लड़ा जा सकता। फिर भी मशीन चलाने वाला व्यक्ति मशीन से अधिक महत्वपूर्ण होता है। एक उत्कृष्ट टीम को नीति व संसाधनों के मिश्रण की आवश्यकता होती है। अपनी टीम के लिये इन दोनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, नेता का कर्तव्य है।

संभव है टीम के पास शस्त्र हों किन्तु उसे उनका प्रयोग करना न आता हो। ऐसी स्थिति में नेता को यह सुनिश्चित करना होता है कि उसकी टीम को समुचित प्रशिक्षण मिले।

उदाहरण के लिये कई संगठन आधुनिकतम कम्प्यूटर खरीदते हैं किन्तु उनके पुराने कर्मचारी टेक्नोलॉजी के भय से, काम चलाते रहने के दृष्टिकोण के कारण या अपनी सुख-सुविधाएँ छोड़ने की अनिच्छा के कारण अथवा सीखने की इच्छा में कमी के कारण, इनका प्रयोग नहीं कर पाते। ऐसे में संगठन के नेताओं को इन अवरोधों के पार जाने का हल निकाल कर अपने कर्मचारियों को नया हुनर सीखने में सहायता करनी चाहिए।

कई बार एक टीम अपने संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं कर पाती। उदाहरण के लिये, आधुनिक मोबाईल फोनों में नये फंक्शनों की भरमार है, किन्तु एक सर्वे से पता चला कि इनमें से 90 प्रतिशत फोन-उपभोक्ताओं द्वारा प्रयोग नहीं किये जाते। इसी प्रकार माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल जैसा एक सरल कम्प्यूटर प्रोग्राम जिसका उपयोग प्रोग्रामिंग में किया जा सकता है, अधिकतर एक कैलकुलेटर के रूप में ही प्रयोग होता है।

हालांकि हम मोबाईल या कम्प्यूटर पर उपलब्ध सभी एप्लीकेशंस का उपयोग नहीं कर सकते किन्तु एक आदर्श परिस्थिति के अनुरूप इनमें से कम से कम कुछ का प्रयोग तो हमें करना चाहिए।

जो व्यक्ति रणनीति में माहिर हैं अर्थात् जो युक्तिपूर्वक कार्य करते हैं, उन्हें अपने विचार लिखकर संजो लेने चाहिए तथा अन्यो के साथ बांटना चाहिए। कुछ लोगों के पास बात की तह तक तुरंत पहुँच जाने का गुण होता है। यदि दल में किसी के पास ऐसे गुण हैं तो उसे ये अन्यो के साथ साझा करने चाहिए व टीम को इस हुनर के विकास में सहायता देनी चाहिए।

एक अच्छी टीम वह है जो समस्या को समझ कर तुरंत उसका हल निकाले ले। उदाहरण के लिये, पुलिस बल में किसी मामले की जांच एक टीम वर्क है, जहाँ टीम अपने विभिन्न सदस्यों व विशेषज्ञों की सहायता, अपराधी को जल्द से जल्द पकड़ने में लेती है।

► कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न होना

टीम के सभी सदस्यों को टीम के लक्ष्य से जुड़ा होना चाहिये। यदि एक भी व्यक्ति स्वार्थी होगा तो पूरी योजना नष्ट हो जायेगी। एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

नेता के पास गंदी मछली को उठाकर बाहर फेंकने की योग्यता होनी चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का तंत्र में बना रहना गंभीर नुक्सान पहुंचा सकता है। इसका एक उदाहरण फिल्म 'कंपनी' में देखने को मिलता है। इस फिल्म में पुलिस अधिकारी शिवनंदन का किरदार एक्टर मोहन लाल ने निभाया है। फिल्म में पुलिस अधिकारी की टीम का एक इंस्पेक्टर अंडरवर्ल्ड को सूचनाएँ देने का काम करता है। पुलिस अधिकारी उसका फोन टेप कर उसे पकड़ लेता है और गंदी मछली को टीम से बाहर फेंक देता है।

सरकार व व्यावसायिक संगठनों, दोनों में भ्रष्टाचार का एक ही कारण है, ऊँचे ओहदों पर बैठे लोगों द्वारा अपना उत्तरदायित्व भूलकर अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर स्वयं के स्वार्थ सिद्ध करना। वे रिश्तत लेने लगते हैं। यदि नेता रिश्तत लेने लगे तो उसकी टीम के लिये रिश्तत लेना और सरल हो जाता है।

अच्छी टीमों उन लोगों द्वारा बनायी जाती हैं जिसके पास सेवा भाव होता है - दूसरों को सेवा देने का दृष्टिकोण।

यदि हम यह गुण अपनी पीढ़ी में ले आ आयें तो हमारे देश का भविष्य सुनहरा होगा और इतिहास भी हमारी ओर गर्व व उत्साह से देखेगा।

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन अपनी टीम को प्रेरणा देना

साथ आना शुरुआत है
साथ बने रहना उन्नति है
साथ काम करना सफलता है।

- हेनरी फोर्ड

शिवनंदन के करियर से स्पष्ट होता है कि एक प्रभावकारी टीम ही सफलता की कुंजी है। एक नेता को ऐसी ही टीम का निर्माण करना होता है। एक व्यक्ति अकेले कार्य आरम्भ कर सकता है, किन्तु सफलता टीमवर्क से ही मिलती है।

यदि आप किसी उत्कृष्ट टीम को देखें तो पायेंगे कि वहाँ एक महान नेता है जो टीम की अगुवाई कर रहा है। शिवनंदन के जीवन में भी उनकी सफलता का श्रेय उनके वरिष्ठ अधिकारियों को जाता है जिन्होंने उन्हें हाथ में लिये कार्य को सम्पादित करने दिया और बेहतर कार्य करने के लिये प्रोत्साहित किया।

उन्होंने आगे बढ़कर मीडिया का उपयोग किया और अपने कार्यकाल के दौरान मीडिया में छाये रहे। फिर भी उनके वरिष्ठ अधिकारियों में से किसी को भी यह नहीं लगा कि वे प्रसिद्धि पाने के लिये यह सब कर रहे हैं। वे सभी उनके लिये अनुसरणीय थे जैसे वे अपने मातहतों के लिये थे।

एक अच्छी टीम का निर्माण करना एक नेता के लिये आवश्यक है। इतिहास का अध्ययन भी हमें यही बताता है कि महान दलों के नेता भी महान थे। अकबर के दल का नाम 'नवरत्न' था- नौ बहुमूल्य रत्न, उनका विचार मंच। यह दल एक विशेषज्ञों का समूह था जिसमें वीरबल जैसे चतुर मंत्री भी थे और तानसेन जैसे प्रख्यात गायक भी।

शिवाजी के पास भी मंत्रियों का एक उत्कृष्ट दल था, जो कि 'अष्ट-अध्यक्ष' कहलाते थे। ये आठों मंत्री उनके लक्ष्य के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। शिवाजी के प्रत्येक कार्य में इनका महत्वपूर्ण योगदान था।

इन्हीं की तरह शिवनंदन की टीम में भी ऐसे ही समर्पित सदस्य थे जिनकी सहायता से उन्हें सफलताएँ मिलीं। उनकी टीम व टीम बनाने की योग्यता किस प्रकार चाणक्य द्वारा वर्णित उत्कृष्ट टीम का प्रतिरूप है, आइये देखें।

► आज्ञाकारी

एक 'दंड' अथवा सेना का निर्माण ऐसा ही है जैसे- बच्चों के एक समूह को प्रेम, संरक्षण व ध्यान से पालना। प्रत्येक बच्चा भिन्न होता है और उसे अलग तरह से ही संभालना होता है। खिलाड़ी दल के प्रशिक्षक की तरह नेता को भी बहुत ध्यानपूर्वक अपने खिलाड़ी चुनने होते हैं। अगला कदम होता है 'अभ्यास करने व प्रशिक्षित करने का। इसके लिये आवश्यक है कि उन्हें बढ़िया व सतत अभ्यास मिले।

जब भी आवश्यकता हो थोड़ा 'दंड' भी दिया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करें कि दल के सदस्य प्रत्येक चीज़ का महत्व समझें। हाथ में लिये गये कार्य को गम्भीरता से करने के लिये अनुशासन आवश्यक है। अंततः मौका पड़ने पर उनका ध्यान पूरी तरह लक्ष्य पर केन्द्रित हो और वे एक मजबूत इकाई के रूप में कार्य करें।

शिवनंदन जानते थे कि टीम में आज्ञाकारी लोगों का होना अच्छा है। अनुशासनहीनता नजर आने पर, वे जानते थे कि अनुशासन कई तरीकों से लाया जा सकता है, जिनमें से एक है दंड देना।

दशरथ अवहट्ट, सेवानिवृत्त असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस जिन्होंने शिवनंदन के साथ कार्य किया है, उनकी टीम निर्माण की योग्यता के बारे में कहते हैं, “एक नेता के रूप में वे गलतियाँ माफ कर देते थे और अपनी टीम के अधिकारियों को उन्हें सुधारने का समय भी देते थे। वे उनका उत्साहवर्धन भी करते थे। उनका एक नियम सुस्पष्ट था, जब वे क्रोधित होते तब किसी भी अधिकारी से कम या बिल्कुल बात नहीं करते तथा उसकी रिपोर्ट पर शायद ही टिप्पणी करते। वे कुछ समय का विराम लेते, अपना क्रोध शांत हो जाने देते और फिर अपनी टिप्पणी लिखते। उनका कोई भी कार्य तात्कालिक नहीं होता था। उनका दृष्टिकोण बहुत संतुलित होता था।”

“पुलिस बल का कल्याण भी उनके सबसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों में से एक था। वे सभी पुलिसकर्मियों का सम्मान करते थे, चाहे वह किसी भी पद पर हों। वे विशेषकर कांस्टेबलों का बहुत ध्यान रखते थे, जो कि संगठन के सबसे निचले पद पर कार्य करते थे, तथा जो अधिकतर सबसे अधिक उपेक्षित भी थे। वे जहाँ कहीं भी पदस्थ रहे, उन्होंने कांस्टेबलों के कल्याण का ध्यान सर्वाधिक रखा। उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले। वे उन्हें हमेशा पढ़ने व जीवन में आगे बढ़ने को प्रेरित करते थे।”

इस प्रकार, अपनी टीम को प्रोत्साहित कर व उनका ध्यान रखकर भी आज्ञापालन पाया जा सकता है।

► दैनिक अभ्यास के दौरान हताश न होना

पुलिस बल जैसे सरकारी विभागों में, जहाँ स्थानान्तरण एक व्यक्ति के कार्य का हिस्सा है, आप विभिन्न टीमों से साथ काम करते हैं। प्रत्येक टीम विशिष्ट होती है और उनकी अपनी विशेषताएँ व कमजोरियाँ भी होती हैं। अधिकतर आपको अपनी टीम चुनने का मौका नहीं मिलता, या तो आप टीम पर थोप दिये जाते हैं या फिर टीम आप पर।

फिर भी शिवनंदन ऐसे अधिकारियों की खोज में रहते थे जो उनकी कोर टीम का हिस्सा बन सकें। वे सदा दो गुणों की तलाश में रहते थे निष्ठा एवं परिणाम। यह वास्तव में एक दुर्लभ मिश्रण है। ऐसे लोग होते हैं जो कि ईमानदार हों, किन्तु उनकी ईमानदारी ही उन्हें आगे बढ़ने से रोकने लगती है और वे परिणाम नहीं दे पाते। दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं, जिनका लक्ष्य परिणाम प्राप्त करना है, किन्तु ये लोग अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिये अनैतिक तरीकों का प्रयोग करते हैं।

ऐसे अधिकारियों को खोज लेना जो समय पर जिम्मेदारी उठाकर परिणाम दे दें, शिवनंदन का विशेष गुण था।

► युद्ध लड़ने का अनुभव

उन्होंने ज्वाइंट सी.पी. (क्राइम), मुंबई के पद पर कार्य करते हुए, जिस प्रकार अंडरवर्ल्ड गठजोड़ का सफाया किया, वह एक उत्कृष्ट टीमवर्क का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उदाहरण है। एक अच्छी टीम में बढ़िया समन्वय, सम्प्रेषण व अपने नेता का आज्ञाकारी होना अनिवार्य है। दलों में समन्वय आवश्यक है। पुलिस के मामले में तो यह जीवन-मरण का प्रश्न बन सकता है। किसी एक सदस्य की गलती से पूरी टीम प्रभावित होती है। यह ताश के पत्तों से पिरामिड बनाने जैसा है। यह पिरामिड बनाने के लिये व्यक्ति को बहुत धीमे और ध्यान से काम करना होता है। यदि एक भी कार्ड गलत रख दिया गया तो पूरा पिरामिड धराशायी हो जाता है।

इसी प्रकार कार्य करते हुए पुलिस दल के सदस्यों का आपसी व उनके व नेता के बीच असाधारण समन्वय आवश्यक होता है। जब पुलिस कार्यवाही चल रही होती है तब नेता एक कंट्रोल टावर के रूप में कार्य करता है। वह टीम के सदस्यों से जानकारी एकत्रित करता है, स्थिति का विश्लेषण करता है और तेजी से निर्णय लेता है।

कई बार दल के सदस्यों को भी निर्णय लेने पड़ते हैं। कई बार दल को सदस्यों के अहम का सामना भी करना पड़ता

है। इस वृत्ति को नियंत्रित करना व दल की अखंडता बनाये रखना सरल कार्य नहीं है।

यह एक उत्कृष्ट टीम वर्क ही था, जिसके कारण टीम को सराहनीय सेवा के लिये सात राष्ट्रपति पदक मिले व शिवनंदन को उनकी विशिष्ट सेवा के लिये राष्ट्रपति पदक दिया गया। उस वर्ष मुंबई पुलिस को मिले सभी पदकों में से मात्र एक पदक ही दूसरी टीम को मिला। ये पदक शिवनंदन को उनके व्यक्तिगत प्रदर्शन के लिये नहीं मिले थे अपितु उनकी पूरी टीम ही विजयी थी।

इससे स्पष्ट होता है कि शिवनंदन की पूरी टीम ही अब अनुभवी थी। वह अंडरवल्ड के साथ कई युद्ध कर चुकी थी और इन युद्धों का अनुभव लेकर की वे शांति बहाल कर पाये थे।

► नीति व शस्त्र प्रयोग में पारंगत

पुलिस बल के कौशल का विकास करने के लिये शिवनंदन ने कई रास्ते अपनाये। अपनी टीम में बौद्धिक निवेश हेतु उन्होंने मुंबई पर आतंकी हमले के बाद चार सेमिनार आयोजित करवाये। इन सेमिनारों का विषय था “आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध की तैयारी” व इन सेमिनारों ने कई प्रमुख व्यक्तियों को एक ही मंच पर ला खड़ा किया। इनमें से कुछ थे, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम- भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, के. शंकर नारायणन- महाराष्ट्र राज्य के गवर्नर, एम. के. नारायण- इंटेलिजेंस ब्यूरो के चीफ, आर.आर. पाटिल- महाराष्ट्र के गृहमंत्री, जूलियो रिबेरियो- एक अत्यंत सम्माननीय पुलिस अधिकारी, जिन्होंने पंजाब पुलिस के डी.जी.पी. के पद पर रहते हुए, अस्सी के दशक में सिख आतंकवाद की कमर तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, ए.एन. रॉय- डी.जी.पी. महाराष्ट्र पुलिस, श्यामल दत्ता- नागालैंड के भूतपूर्व गवर्नर, कामोडोर उदय भास्कर- एक जाने-माने सुरक्षा विशेषज्ञ, अनिल काकोडकर- भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डॉ. रघुनाथ अनंत माशेलकर- वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक व प्रधानमंत्री के सलाहकार, एम. जे. अकबर- भारत के प्रतिष्ठित पत्रकारों में से एक, कुमार केतकर- एक लोकप्रिय मराठी समाचार पत्र लोकसत्ता के संपादक, संदीप वास्लेकर- संसार के कई देशों की सरकारों के सलाहकार, गोपाल स्वामी पार्थसारथी- एक प्रतिष्ठित राजनयिक, बहुकुतुम्बाई रामन-भारत के रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के आतंकवाद विरोधी विभाग के भूतपूर्व प्रमुख, के. पी. एस. गिल- पंजाब के भूतपूर्व डी.जी.पी., प्रवीण स्वामी- द हिन्दु के एसोसिएट एडिटर तथा डॉ. अशोक भान- जम्मू व कश्मीर के भूतपूर्व डी.जी.पी.।

इन विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे, जैसे कि आतंकवाद को रोकने के लिये आवश्यक कदम, आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध जीतने के लिये आवश्यक, तथा सामायिक समयोचित तथा सामयिक सूचनाएँ, आतंकवादियों से एक कदम आगे बढ़कर सोचना तथा आतंकवाद का संगठित होना (कॉरपोरेटाइजेशन)।

इन सेमिनारों ने पुलिस अधिकारियों को एक ही विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित करवाया। एक टीम के लिए सबसे अच्छा प्रशिक्षण है, कुशाग्र व्यक्तियों के अनुभव सुनना।

अपनी टीम को पढ़ने के लिये प्रेरित करके भी उनके कौशल का निर्माण किया जा सकता है। जैसा कि हमने पहले अध्यायों में भी देखा, शिवनंदन ने विभिन्न पुलिस कार्यालयों में कई पुस्तालय भी आरम्भ किये। पुलिसकर्मियों में पढ़ने की आदत को प्रोत्साहन देने के लिये, प्रबन्धन, स्वास्थ्य, नेतृत्व, कला एवं साहित्य जैसे विषयों पर हजारों पुस्तकें खरीदी गई व पुलिस कर्मचारियों में बांटी गई। पहले अपने व्यस्त कार्यक्रम के चलते पुलिस अधिकारी पुस्तकें पढ़ने के लिये समय नहीं निकाल पाते थे, किन्तु अब पुस्तकें उनके कार्यालय में ही उपलब्ध थीं।

अपनी टीम को युद्ध कौशल के निर्माण हेतु प्रशिक्षित करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के लिये शिवनंदन ने प्रशिक्षण केन्द्र बनाये।

शिवनंदन ने इस पर विशेष ध्यान दिया कि टीम-निर्माण के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित हों। विश्वस्तरीय प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करना शिवनंदन के काम का भाग भी था और जुनून का भी।

► कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न होना

मुंबई आतंकी हमलों ने पूरी दुनिया को हिला दिया था। यद्यपि मुंबई पुलिस ने तत्परता से कार्यवाही की किन्तु

वह युद्ध जैसी स्थिति के लिये तैयार नहीं थी। परिणामस्वरूप, वरिष्ठ अधिकारियों सहित कई पुलिसकर्मियों की जानें गईं और आतंकियों को नियंत्रित करने में कई घंटों व दिन लग गये।

इसने सिद्ध यह भी सिद्ध किया कि तैयारी की कमी के बावजूद पुलिस ने कार्यवाही करने में कोई कोताही नहीं बरती। उनका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ उनके आड़े नहीं आया, यहाँ तक की कईयों को अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा।

► चुनौतियों का सामना करने में सक्षम

इस अनुभव से बहुत कुछ सीखने को मिला। सबसे महत्वपूर्ण कमी रही नेशनल सिन्क्योरिटी गार्ड्स व सेना को शहर तक पहुँचने में लगा समय।

हालांकि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना अच्छा है, लेकिन सतत प्रशिक्षण को प्रणाली के भाग के रूप में स्थापित करने के लिये प्रशिक्षण संस्थानों की आवश्यकता होती है। शिवनंदन ने अपने कार्यकाल के दौरान महाराष्ट्र इंटेलेजेंस अकादमी व अन्य कई प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की, किन्तु उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा, मुंबई आतंकी हमले के बाद फोर्स-1 की स्थापना।

फोर्स-1 एक सर्वोच्च श्रेणी का कमांडो बल है, एक विशिष्ट आतंकवाद विरोधी इकाई, जिसका कार्य है, मुंबई की रक्षा करना। इसकी स्थापना महाराष्ट्र सरकार ने शिवनंदन की देखरेख में की। यह दल एन.एस.जी के प्रारूप पर तैयार किया गया है व इसका मुख्यालय मुंबई है। फोर्स-1 को 24 नवम्बर, 2009 को अधिकृत किया गया।

फोर्स-1 के कमांडो को सर्वोत्तम प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें अत्याधुनिक शस्त्रों व विस्फोटकों के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिन्हें तेजी से हो रही गोलीबारी में प्रयोग किया जा सकता है। इन्हें विश्व का सर्वोत्तम प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से, दो माह का बेसिक प्रशिक्षण देने के लिये इजरायली विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। इसी के साथ केन्द्र सरकार ने एन.एस.जी. का भी एक क्षेत्रीय केन्द्र मुंबई में स्थापित किया। हालांकि, मुंबई में हुए किसी भी आतंकी हमले से निबटने के लिये सबसे पहले पहुँचने वाले दल में फोर्स-1 की उपस्थिति अपेक्षित है।

फोर्स-1 किसी भी आतंकी हमले का जवाब देने के लिये मात्र पंद्रह मिनट का समय लेती है। इसकी गति व कार्यवाही की तेजी ही इसकी विशेषता है।

सीमित समय में फोर्स-1 जैसी संस्था की स्थापना सरल नहीं था। लेकिन शिवनंदन के पास राह में आने वाली समस्याओं का सामना करने व परिणाम देने योग्यता थी।

महाराष्ट्र इंटेलेजेंस अकादमी की स्थापना सन् 2009 में पुणे में की गयी। इसका उद्देश्य था अधिकारियों को विशेषकर आतंकवादियों के संगठनों व गतिविधियों से संबंधित गुप्त सूचनाएँ एकत्रित करने का प्रशिक्षण देना। एक वर्ष के प्रशिक्षण के बाद ये अधिकारी, स्टेट इंटेलेजेंस डिपार्टमेंट में इंटेलेजेंस अधिकारी के पद पर नियुक्त किये जायेंगे।

ये अधिकारी इंटेलेजेंस फोर्स में 25-30 वर्ष कार्य करेंगे और इस बीच समय-समय पर पुनर्प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा इनकी क्षमताओं को निरंतर धार दी जायेगी। यह मॉडल बहुत सफल रहा है।

इसके अतिरिक्त अच्छी टीमों के निर्माण के लिये नेता द्वारा उन्हें प्रोत्साहन व प्रेरणा देना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब टीम अपने निर्धारित कार्य के परे जाकर कुछ करने का प्रयत्न करे। कहा जाता है कि किसी टीम का मैदान पर जीतना इस पर निर्भर करता है उसने मैदान से परे कितना प्रयत्न किया।

पुलिस बल में आपसी मेल-मिलाप व भाईचारा बढ़ाने के लिए शिवनंदन ने कई गतिविधियों का आयोजन किया।

ऐसा ही एक भव्य आयोजना था, 2006 में आयोजित महाराष्ट्र पुलिस खेल। पहले पुलिस खेल सन् 1906 में आयोजित किये गये थे। जब शिवनंदन को यह पता चला तो उन्हें इसमें सभी पुलिसकर्मियों को प्रतिद्वंद्विता व खेलभावना द्वारा निकट लाने की सुनहरी संभावना दिखायी दी।

महाराष्ट्र पुलिस खेलों का शताब्दी वर्ष एक बहुत ही सफल आयोजन रहा, जिसने पूरे पुलिस बल में उत्साह का संचार कर दिया।

इस तरह, इन खेलों द्वारा उन्होंने अपनी टीम का संपूर्ण विकास सुनिश्चित किया। गतिविधियों का आयोजन शिवनंदन का शौक है। उन्होंने अपने आयोजन प्रबंधन के इस कौशल को प्रयोग कर विभिन्न खिलाड़ियों, बॉलीवुड अभिनेताओं व अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों को इन आयोजनों में भाग लेने व पुलिस बल का मनोरंजन करने में किया। इसमें सचिन तेंदुलकर, आमिर खान व अन्य बड़े अभिनेता सम्मिलित हुए।

अपने श्रमसाध्य व कठोर कार्य दिवसों के चलते कई पुलिसकर्मियों को अपनी विशेष योग्यताओं को प्रदर्शित करने का समय नहीं मिलता। अतः उन्होंने अपने दल के सदस्यों को नृत्य व नाटकों के मंचन में भाग लेने को प्रोत्साहित किया। मुंबई में काला घोड़ा फेस्टिवल में पुलिस ने भी अपनी विशेष स्टॉल लगाई थी जिसमें पुलिस कर्मियों ने अपनी पेंटिंग्स व अन्य कला कौशल प्रदर्शित किये।

एक नेता का अंतिम व सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण है अपने दल के सदस्यों को श्रेय देना तथा अपनी सफलता लोगों के साथ बांटना।

यदि कोई समस्या आप तक पहुँचे तो उसकी जिम्मेदारी लेना। जब कोई सफलता मिले तो उसका श्रेय अपने दल को देना। जिससे कि वे उत्साहपूर्वक कार्य करने को प्रेरित रहें।

अपने तीन साल के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस, नागपुर रेंज के कार्यकाल के दौरान उन्हें इलाके के सभी छः जिलों में, निष्ठावान व योग्य पुलिस अधीक्षकों (पुलिस सुपरिंटेंडेंट) का कुशल सहयोग मिला। शिवनंदन ने अपनी वित्तीय शक्तियाँ भी उन्हें सौंप दी थी। चूँकि यह क्षेत्र नक्सल प्रभावित थे, अतः पुलिसकर्मियों की सुरक्षा व मनोबल बनाये रखना बहुत महत्वपूर्ण था।

शिवनंदन ने तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) को प्रभावित किया व एक सशक्त समिति द्वारा एक बड़ा आर्थिक अनुमोदन प्राप्त कर लिया, इस राशी से उन्होंने उन सभी पुलिस थानों का नवनिर्माण किया जो अभी तक टीन की चादरों से बने हुए थे। इन ढांचों के आहातों की दीवारें बेहद कमजोर थीं और नक्सली उन पर आये दिन हमले करते रहते थे। शिवनंदन ने इन चारदीवारियों को ठीक करने का बीड़ा उठाया और उन्हें इतना मजबूत बना दिया कि नक्सली उन पर फिर हमला करने की हिम्मत न करें। इन मजबूत चारदीवारियों के बीच उन्होंने पक्के निर्माण बनवाये जिनमें उनके लोग सुरक्षित अनुभव कर सकें। इसके बाद इन पुलिस थानों पर एक भी हमला नहीं हुआ।

वे कई बार इन जगहों का दौरा करते ताकि वे इन पुलिसकर्मियों से खुलकर मिल सकें व उनका मनोबल बढ़ा सकें। इन क्षेत्रों में नक्सलियों द्वारा दी गई चुनाव बहिष्कार की धमकियों के बादजूद संसद व राज्य विधान सभा के चुनाव बिना किसी अप्रिय घटना के शांतिपूर्वक पूरे हुए, जबकि पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश में भारी हिंसा हुई।

शिवनंदन ने अपने कमांडो दल के कर्मचारियों की डाक्टरी जांच एक हड्डियों के अस्पताल में करवायी और सिद्ध किया कि सरकार द्वारा उन्हें दिये गये जूते उनकी हड्डियों को नुकसान पहुँचा रहे थे। उन्होंने इन कमांडों के लिये खासतौर पर जंगल में कार्य करने के लिये पहने जाने वाले जूते, विशेष ऑर्डर पर तैयार करवाये। उन्होंने सरकार से बातचीत कर उनका दैनिक भोजन भत्ता भी दुगना करवाया तथा साथ ही सरकार को पुलिसकर्मियों के लिए दो प्राइवेट हाऊसिंग कॉलोनी बनाने के लिये भी राजी किया। इनमें से एक गढ़चिरौली के निकट तथा दूसरी चन्द्रपुर में स्थित है।

उनके द्वारा गढ़चिरौली व चन्द्रपुर नगरों में बनाये गये दोनों स्कूल आज भी अच्छे चल रहे हैं। उन्होंने प्रत्येक जिला मुख्यालय में गेस्ट हाऊसों का निर्माण करवाया जहाँ दौरे पर आने वाले पुलिस अधिकारी ठहर सकें। राज्य के डी.जी.पी. के पद पर रहते हुए उन्होंने दो पवन हंस हेलिकॉप्टरों को लीज पर लेने का इंतजाम भी किया जिससे हमले में घायल लोगों को इलाज के लिये तुरंत नागपुर पहुँचाया जा सके। इस पहल के कारण कई जीवन बचाये जा सके।

प्रत्येक नेता को स्वयं में तीन गुणों का विकास करना चाहिए- एक खुला दिमाग जिससे वह अपनी टीम द्वारा दिये गये नये विचारों को स्वीकार कर सकें, चौड़े कंधे ताकि वह अपनी टीम की जिम्मेदारियाँ उठा सकें तथा एक बड़ा दिल जिससे वह अपनी टीम के सदस्यों की कमजोरियाँ स्वीकार कर सकें और अंततः जब टीम विजयी हो तो सफलता का जश्न मनाना भी आवश्यक है।

टीम के प्रत्येक सदस्य की निष्ठा व परिश्रम को प्रोत्साहन दें, उनमें से प्रत्येक ने उद्देश्यपूर्ति के लिये व्यक्तिगत त्याग

किये हैं। प्रत्येक ने उस बड़े उद्देश्य को पाने में एक छोटी भूमिका निभायी है। एक बड़ी मशीन को सफलतापूर्वक चलाने में छोटे से छोटे नट बोल्ट की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

छोटे से छोटे व्यक्ति तक प्रत्येक को श्रेय दें। जैसे मैच जीतने में प्रत्येक की भूमिका होती है, यहां तक कि दर्शक दीर्घा में बैठे उस व्यक्ति की भी जिसने मैच तो नहीं खेला किन्तु अपनी टीम का उत्साहवर्धन अवश्य किया। वे दर्शक भी सफलता के भागीदार हैं। टीम वर्क में प्रत्येक व्यक्ति सम्मिलित होता है, यह एक नेता जानता है। अतः अपनी टीम के सहयोग व प्रोत्साहन के साथ, आत्मविश्वास से भरपूर वह अगले बड़े लक्ष्य की ओर चल पड़ता है।

नेतृत्व का अंतिम मर्म है- मित्र। अगले अध्याय का केन्द्र है कि किस प्रकार आपके मित्र आपको जीवन व कार्य में आगे बढ़ने में सहायक होते हैं।

★ अपनी टीम को प्रोत्साहित करने के नुस्खे ★

- अपने लोगों को चिन्हित करो : ऐसे लोगों की तलाश में रहें जो ईमानदार हैं व परिणाम पाना चाहते हैं।
- कार्य के परे जायें : कार्यालय में चल रहे कार्य के परे जाकर लोगों को प्रेरित करना ही टीम वर्क है।
- प्रशिक्षित करें : विश्वस्तरीय संस्थाओं व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निर्माण करें।
- लोगों को प्रोत्साहित करें : खेल, मनोरंजन आदि से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करें।
- श्रेय दें : अपनी टीम के साथ सफलता बांटें।

मेरे भीतर का नेता

This image shows a full page of white paper with horizontal blue or grey ruling lines. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are approximately 20 lines visible. On the left side, there are small black marks that look like staple indentations or punch holes. The paper appears to be from a notebook or a standard sheet of stationery.

अध्याय 7



मित्र

सहयोगी सलाहकार

स्वामी राजा
अमात्यमंत्री
जनपद राष्ट्र
दुर्ग किला
कोष राजा का धन
दंड सेना
मित्र सम्बद्ध राष्ट्र/
व्यक्ति

भाग अ



सातवां मर्म

मित्रः सहयोगी अथवा सलाहकार

मित्र शब्द का प्रयोग लगभग सभी भारतीय भाषाओं में किया जाता है। इसका अर्थ है- दोस्त, सहयोगी, सहकर्मी या भागीदार। चाणक्य के सात स्तंभों वाले मानक का यह अंतिम स्तंभ है।

सर्वाधिक शक्तिशाली राजा को भी मित्र की आवश्यकता होती है, क्योंकि मित्र ही वह व्यक्ति है जो आपके सुख-दुःख या अच्छे व बुरे समय में, सदा आपके साथ रहता है।

वह आपका मित्र, दार्शनिक व पथप्रदर्शक होता है। आप उस पर निर्भर रह सकते हैं और वह आपके प्रति ईमानदार होता है। वह आपको आपका सही चेहरा दिखा सकता है।

वह ऐसा व्यक्ति है जो आपको बता सकता है कि आपकी सांस में दुर्गंध है और आपको बुरा भी न लगे। वह एक प्रकाश स्तंभ है जो आपको रास्ता दिखाता है। वह एक सलाहकार है जो आपको सही समय पर सही सलाह देता है।

यह सातवां मर्म किसी भी खेल का पांसा पलट सकता है। एक मित्र आपको बना भी सकता और बिगाड़ भी।

महाभारत की कहानी में सही समय पर सही सलाहकार चुनने की महत्ता का ही वर्णन है। कुरुक्षेत्र में युद्ध आरम्भ होने से पहले कौरव व पांडव अपने-अपने मित्र ढूँढ़ रहे थे। दोनों ही चाहते थे कि कृष्ण उनके साथ रहें। अतः पांडवों की ओर से अर्जुन व कौरवों की ओर से दुर्योधन कृष्ण से मिलने गये।

जब वे पहुँचे कृष्ण सोये हुए थे। अतः वे दोनों उनके जागने की प्रतीक्षा करने लगे। अर्जुन कृष्ण के पाँव के पास बैठकर प्रतीक्षा कर रहे थे और दुर्योधन उनके सिर की ओर बैठ गये।

जागने पर कृष्ण ने उनसे उनके आने का मंतव्य पूछा। उन दोनों ने ही कृष्ण से, आने वाले युद्ध में उनका साथ देने की प्रार्थना की। चूँकि वे दोनों ही कृष्ण के संबंधी थे, अतः कृष्ण दोनों में से किसी को भी मना नहीं कर सकते थे।

चतुर कृष्ण ने उत्तर दिया, “मैं तुम दोनों को ही समर्थन दूँगा। एक ओर मेरी पूरी सेना होगी जिसमें मेरे अनुभवी योद्धा अपने पूरे शस्त्र व बल के साथ होंगे और दूसरी ओर मैं अकेला रहूँगा, किन्तु मैं निहत्था रहूँगा और शस्त्र नहीं उठाऊँगा। आप दोनों जिसे चाहें, चुन सकते हैं।”

कृष्ण ने आगे कहा, “क्योंकि पहले मेरी नजर अर्जुन पर पड़ी और दुर्योधन वह तुमसे छोटा भी है, अतः मैं उसे पहले चुनने का मौका देता हूँ।”

अर्जुन ने बिना किसी हिचकिचाहट के कृष्ण को चुन लिया। दुर्योधन जो मन ही मन चिन्तित था कि कहीं अर्जुन कृष्ण की शक्तिशाली सेना न मांग ले, यह सुनकर प्रसन्न हो गया। उसने सोचा कि कृष्ण की पूरी सेना उसकी ओर से लड़ेगी, अब तो वह इस युद्ध में हार नहीं सकता। उसने सोचा अर्जुन तो अवश्य ही हारेगा, आखिर उसने निहत्थे कृष्ण को जो चुना है।

लेकिन पांडव युद्ध जीत गये क्योंकि उन्हें हर मोड़ पर कृष्ण की सामरिक सलाह उपलब्ध थी। अर्जुन के सारथी के रूप में कृष्ण सदा उनके साथ थे और धीमे-धीमे उन्हें सफलता की ओर ले जा रहे थे।

ये है सही सलाहकार चुनने की ताकत। एक बुद्धिमान व्यक्ति किसी भी टीम या संगठन की सबसे बड़ी पूंजी होती है।

सफल कंपनियाँ एक अच्छे सलाहकार का मूल्य जानती हैं। इसीलिए उनके पास सलाहकार मण्डल होते हैं, जो समय-समय पर उनका मार्गदर्शन करते रहते हैं।

एक छात्र बांसुरी बजाना सीखना चाहता था। उसके सामने दो विकल्प थे- एक साधारण अध्यापक जिसकी फीस कम थी और एक उत्कृष्ट अध्यापक जिसकी फीस इतनी अधिक थी, कि वह दे नहीं सकता था। फिर भी वह सबसे अच्छा विकल्प चुनना चाहता था। एक विशेषज्ञ की सलाह महंगी हो सकती है किन्तु वह आपको कम समय में अपना लक्ष्य पाने में सहायक होगा। यदि आपके पास एक अच्छा सलाहकार है तो आप कम गलतियाँ करेंगे।

अतः छात्र उत्कृष्ट अध्यापक के पास गया और उनसे कहा कि वह उन्हीं से बांसुरी सीखना चाहता है और यह उसकी आंतरिक इच्छा है। उसने यह भी कहा कि वह उनकी ऊँची फीस नहीं दे सकता, किन्तु वह उसके बदले उनका कुछ काम कर देगा।

यह सुनकर वह अध्यापक हंसे। उन्होंने कहा “अधिक फीस तो मैंने सही छात्र चुनने के लिये रखी है। मैं तुम्हारी सीखने की तीव्र इच्छा देखकर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम कल से ही आ जाओ और तुम्हें फीस देने की भी जरूरत नहीं है।”

एक अच्छे अध्यापक को भी अच्छे शिष्य की आवश्यकता होती है। इसी तरह एक अच्छे सलाहकार को भी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उनकी सलाह समझें और उस पर अमल करें। अतः यदि आप सलाह लेने को तैयार हैं तो केवल सबसे अच्छे व्यक्ति को सुनें। यह स्थिति आप व सलाहकार, दोनों के ही लिये लाभकारी रहेगी।

एक मित्र संकट के समय आपकी सहायता करने को तत्पर रहता है। दोनों विश्वयुद्ध भी मित्र राष्ट्रों की विजय की कहानियाँ हैं।

यदि आप प्रचलित टीवी कार्यक्रम “कौन बनेगा करोड़पति” या “हू वांट्स टू बी ए मिलियेयर?” देखते हैं तो आप जानते होंगे कि इन दोनों में खिलाड़ी को दी जाने वाली जीवन रेखाओं में से एक है, “फोन ए फ्रेंड”। जब भी खिलाड़ी किसी कठिन प्रश्न पर अटक जाता है तो उसका मित्र सहायता के लिये आता है। यह खिलाड़ी का सबसे अच्छा व शक्तिशाली औजार होता है, जिसका उपयोग वह कठिन समय में कर सकता है, तो फिर, जब समय कठिन हो तो मित्रों की सहायता लें।

कई लोगों को सहायता लेने में हिचकिचाहट व बेईज्जती अनुभव होती है। यह वृत्ति सर्वनाशी है। किसी मित्र से सहायता लेने में आपका अहम बीच में नहीं आना चाहिए। कोई भी व्यक्ति संपूर्ण नहीं होता, अतः एक मित्र से सहायता लेकर आप कई परेशानियों से बच सकते हैं। मित्रों के लिये उपयोगी बनें व मित्रों का उपयोग करें। मित्रता सदा ही दोनों पक्षों के लिये लाभकारी होती है। यह आपस में लेन-देन का सम्बन्ध है। मित्रता में प्रसन्नता भी सांझी होती है और दुःख भी बंट जाता है।

मित्र किस प्रकार बनाये जायें? यह अनिवार्य है कि आपकी प्रकृति मित्रतापूर्ण हो। आपकी वास्तविक इच्छा मित्र बनाने की होनी चाहिए न कि मात्र स्वार्थसिद्धि के लिये मित्रता बढ़ाने की। जो लोग आपके जीवन में आते हैं, उन्हें खुले दिमाग से स्वीकार करें।

एक नेता खुला दिमाग रखता है और इसीलिए हर एक से सीखने को तैयार रहता है।

चाणक्य भी नेता को प्रत्येक से सीखने की सलाह देते हैं, चाहे वे बच्चे ही क्यों न हों। बच्चों के पास संभव है ज्ञान व अनुभव न हो। किन्तु वे पवित्र होते हैं, खुले दिमाग वाले व सच्चे। वे कई बार ऐसी अंतर्दृष्टि दे देते हैं जिसे वयस्क चूक जाते हैं। उनके मत स्वार्थों में रंगे नहीं होते। इसलिए माना जाता है कि बच्चों में भगवान बसते हैं, उनकी आवाज परमात्मा की आवाज होती है।

एक राजा दुनिया की सबसे सुंदर पोशाक पहनना चाहता था, लेकिन उसका दर्जी नियत समय तक वह पोशाक नहीं बना पाया, जान बचाने के लिये उसने राजा को एक काल्पनिक पोशाक दिखायी और उसे एक बहुमूल्य व अनोखी पोशाक के रूप में वर्णित किया। राजा को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, किन्तु वह यह स्वीकार कर, स्वयं को मूर्ख सिद्ध नहीं करना चाहता था। दर्जी ने राजा को वह पोशाक पहनाने का दिखावा किया, जबकि

वास्तव में उसने राजा के सारे कपड़े उतार दिये थे और राजा ने कुछ नहीं पहना था।

राजा अपनी नयी पोशाक अपनी प्रजा को दिखाना चाहता था। अतः उसकी सवारी निकाली गयी। सड़कों पर खड़े नागरिकों ने भी राजा के कपड़ों की बहुत प्रशंसा की क्योंकि वे सच बताकर सजा नहीं पाना चाहते थे।

अचानक सड़क पर खड़ा एक बच्चा हंसने लगा, उसने चिल्लाकर कहा, “राजा नंगा है!” यह सुनकर प्रत्येक व्यक्ति घबरा गया और सोचने लगा कि अब राजा जरूर इस बच्चे को सज़ा देगा।

किन्तु यह वाक्य सुनकर राजा होश में आ गया। उसे अपनी गलती का भान हुआ और यह भी कि उसने आत्म प्रशंसा की चाह में स्वयं को कितना बड़ा मूर्ख सिद्ध किया। उस बच्चे को दंड न दे कर उसने, राज्य का एकमात्र ईमानदार व्यक्ति होने के कारण उस बच्चे की प्रशंसा की।

इस प्रकार एक बच्चा भी आपको विवेक व सामान्य बुद्धि देकर आपका संगी बन सकता है, किन्तु जैसा कि वॉल्टेयर ने कहा है, “सामान्य विवेक (कॉमन सेंस) सामान्यतः नहीं मिलता।”

इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे मित्र की आवश्यकता होती है जो आपका मार्गदर्शक व सलाहकार बन सके।

अर्थशास्त्र के विभिन्न सूत्र व श्लोक अच्छे सलाहकार के गुणों को वर्णित करते हैं; तथा यह भी बताते हैं कि एक नेता को अच्छे सलाहकारों की आवश्यकता क्यों है?

अर्थशास्त्र की पहली पुस्तक के पंद्रहवें अध्याय के दूसरे, पैंतीसवें व चालीसवें सूत्र में चाणक्य कहते हैं, “प्रत्येक उत्तरदायित्व लेने से पहले विचार-विमर्श आवश्यक है, किन्तु कठिन विषयों पर एक ही से विचार-विमर्श, सम्भव है, अनिर्णय की स्थिति बनाये रखे व कईयों से विचार-विमर्श भी, संभव है, निर्णय लेना व गोपनीयता बनाये रखना कठिन कर दें।”

एक राजा उतना ही अच्छा या बुरा होता है जितने कि उसके सलाहकार। अतः नेता को अपने सलाहकारों व उनके द्वारा दी गई सलाह, दोनों का ही चुनाव ध्यान से करना चाहिए, क्योंकि उनकी सलाह पर लिये गये निर्णय एक राष्ट्र का निर्माण भी कर सकते हैं और विनाश भी।

रामायण की कथा याद करें, जिसमें कैकेयी द्वारा मंथरा की अनुचित सलाह मान लेने से राजा बनने जा रहे राम को राजतिलक के दिन ही वनवास पर जाना पड़ा। कैकेयी स्वयं के राजा बनने से प्रसन्न थी, किन्तु अनुचित सलाह का अयोध्या पर दूरगामी प्रभाव पड़ा।

अतः चाणक्य की चेतावनी पर ध्यान देना चाहिए।

आइये इस सूत्र पर विस्तृत चर्चा करें:-

► सभी उपक्रम

यहाँ ‘सभी’ शब्द महत्वपूर्ण है। गतिविधियाँ चाहे छोटी हों या बड़ी, सभी का पूर्वारम्भ सलाह, या विचार-विमर्श से होना चाहिए। कोई भी परियोजना या नियत कार्य आरम्भ करने से पहले सलाह करें। इस प्रकार आप अन्यो के साथ सोचेंगे, अकेले नहीं।

उदाहरण के लिये आप एक नया कार्यालय लेना चाहते हैं। इसके लिये आप किसी कन्सल्टेंट से व अन्य लोगों बात करें व फिर निर्णय लें। ऐसा करके आप उस ऑफिस के लाभ व नुकसान दोनों के बारे में जानकारी जुटा चुके होंगे। इससे निर्णय लेना सरल हो जायेगा।

► किसी एक ही व्यक्ति से सलाह लेना

एक ही सलाहकार होना आपको उस व्यक्ति पर अत्यधिक निर्भर बना देता है। वह आपको सलाह दे सकता है, किन्तु इसमें खतरा भी रहता है कि कहीं वह आपको पथ से भटका न दे। अतः किसी अन्य का मत भी अवश्य जानें।

यदि कोई डॉक्टर कहता है कि यह बीमारी लाईलाज है तो उदास होकर वहीं रुक न जाइये, किसी अन्य डॉक्टर की सलाह भी लीजिए। कई बार दूसरी सलाह ले लेने से बीमारी का इलाज संभव हो जाता है, जबकि पहले

डॉक्टर ने उसे लाईलाज बताया होता है।

दूसरा चिकित्सक कई बार एक नया परिप्रेक्ष्य ले आता है जिससे रोगी के ईलाज में सहायता मिलती है। संक्षेप में कहें तो चाणक्य के अनुसार कभी भी किसी एक व्यक्ति पर ही निर्भर न रहें।

अच्छे संगठनों में एक से अधिक सलाहकार होते हैं तथा एक से अधिक वेंडर व सप्लायर्स। यह खतरा कम करने का एक तरीका है। विशेषकर तब जब संगठन कठिनाईयों से जूझ रहा हो, तब उसे एक से अधिक सलाहकारों की आवश्यकता होती है।

एक प्रबंधन सलाहकार कहते हैं- “यदि आपका व्यवसाय एक ही ग्राहक पर निर्भर है तो आपको उसी ग्राहक की इच्छानुसार चलना होगा। वह आपकी कीमतों व धन पर नियंत्रण कर सकता है और आपकी जानकारी के बिना पूरा खेल एकतरफा हो जाता है। अतः सबसे अच्छी रणनीति है कम से कम पांच ग्राहक होना, जिससे प्रत्येक ग्राहक पर आपकी निर्भरता 20 प्रतिशत रह जाती है।”

हालांकि इसका विपरीत भी उतना ही सच है। यदि आपके पास कई सलाहकार हैं और आप प्रत्येक की सलाह लेते हैं, तो आप असमंजस में पड़ सकते हैं और आपके लिये निर्णय लेना कठिन हो जायेगा।

एक प्रचलित कथा है- एक किसान व उसके बेटे ने एक गधे खरीदा। वे उस गधे के साथ घर लौट रहे थे कि वहाँ से गुजरते हुए एक व्यक्ति ने सलाह दी, “अरे! तुम दोनों में से कोई एक इस गधे पर क्यों नहीं बैठ जाता, इससे तुम थोड़ी शक्ति बचा लोगे।” बात मानकर पिता गधे पर बैठ गया और लड़का साथ-साथ चलने लगा।

वे थोड़ी ही दूर पहुँचे थे कि उन्हें एक और व्यक्ति मिला और उन्हें देखकर कहने लगा, “जरा इस पिता को तो देखो, यह आराम से गधे पर बैठा है और अपने बेटे को इस तेज धूप में चला रहा है।” यह सुनकर पिता के मन में अपराध बोध जागा और उसने अपने बेटे को गधे पर बैठने को कहा तथा स्वयं उसके साथ चलने लगा।

उन्होंने कुछ और रास्ता तय किया था कि उन्हें फिर से एक व्यक्ति मिला और बोला, “जरा इस बेटे को तो देखो। इसे अपने पिता के प्रति अपने कर्तव्य का भान नहीं है। हमारी संस्कृति कहती है पुत्र को अपने माता-पिता के सुख का ध्यान रखना चाहिए।” यह सुनकर पिता व पुत्र असमंजस में पड़ गये। अंततः उन दोनों ने गधे पर बैठने का निर्णय लिया।

जब वे घर से थोड़ी ही दूरी पर थे तो एक अन्य ने टिप्पणी की, “कितनी बड़ी त्रासदी है। इस गरीब गधे को इन दोनों निर्मम व्यक्तियों का बोझ उठाना पड़ रहा है। अरे! कोई तो उस गूंगे गधे के बारे में सोचे।”

पिता-पुत्र ने इस बात पर विचार किया और गधे को अपने कंधे पर लादकर ले जाने का निर्णय लिया।

जब वे घर पहुँचे तो किसान की पत्नी ने कहा, “हे भगवान! मेरा परिवार कितना बेकार है! क्या तुम गधे के साथ चलते हुए घर नहीं आ सकते थे? तुमने उसे अपने कंधों पर क्यों उठा रखा है?”

“अरे! हमने यात्रा इसी तरह आरम्भ की थी”, पिता व पुत्र ने उत्तर दिया।

तो इस तरह, हर किसी की सलाह लेना मूर्खता है। इसके अतिरिक्त सलाह व मत में अंतर होता है। मत व्यक्तिगत होता है तथा सलाह सदा परिपक्व व बुद्धिमान व्यक्तियों से ही लेनी चाहिए। टिप्पणियाँ सलाह नहीं होतीं। सलाह हमेशा मुद्दों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के बाद ही दी जाती है।

जब आप किसी के पास सलाह लेने जाते हैं तो यह आवश्यक है कि आप उस व्यक्ति को अपनी समस्या के बारे में विस्तृत रूप में बतायें। यदि आप यह सौ लोगों के साथ करते हैं तो आपकी समस्या पूरी दुनिया को पता चल जायेगी और उसकी गोपनीयता समाप्त हो जायेगी।

तब, हल क्या है?

अर्थशास्त्र की पहली पुस्तक के पंद्रहवें अध्याय के 20-21 सूत्रों में चाणक्य कहते हैं- “अतः उनके साथ बैठे व सलाह लें जो कि बौद्धिक रूप से परिपक्व हैं।” अतएव हमें अपने सलाहकार ध्यान से चुनने चाहिए।

► बौद्धिक परिपक्वता

एक सलाहकार का बौद्धिक रूप से परिपक्व होना बहुत आवश्यक है। सलाहकार की आयु कम हो सकती है किन्तु अपने क्षेत्र में वह परिपक्व हो सकता है। पुलिस बल में इसके कई उदाहरण मिलते हैं। जैसे कि साइबर क्राइम के मामलों के अधिकतर विशेषज्ञ युवा पुलिस अधिकारी ही होते हैं। ये अधिकारी इन मामलों को अधिकतर वरिष्ठ अधिकारियों से बेहतर समझते हैं।

► बैठकर सलाह लें

यहाँ बैठना शब्द सांकेतिक हैं। 'उपनिशद' का अर्थ है किसी आध्यात्मिक गुरु से नीचे के स्तर पर बैठकर उन्हें सुनना। इसी प्रकार जब आप एक परिपक्व व बुद्धिमान व्यक्ति के साथ बैठें तो आपकी मानसिकता कक्षा के एक अच्छे विद्यार्थी की तरह, ज्ञान ग्रहण करने वाली होनी चाहिए।

साथ ही अपने सलाहकार की बात मात्र इस तरह न सुनें जैसे कि वह कोई भाषण दे रहा हो। उनसे अपनी समस्या पर चर्चा करें, उनसे प्रश्न पूछें ताकि संबंधित विषयों पर आपको और स्पष्टता मिल सके।

सलाह के लिये निकाला गया समय बहुत गंभीर मसला है। यह कोई आम मुलाकात नहीं है। यह दोनों पक्षों के लिये एक व्यापार अथवा कार्य है।

चाणक्य तो यहाँ तक कहते हैं कि जब सलाह ली जा रही हो तो वहाँ किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिए। सलाह के लिये एकांत आवश्यक है। अतः सुनिश्चित करें कि आपका मोबाइल फोन बंद हो, आप इंटरनेट पर कार्य न कर रहे हों तथा किसी अन्य असम्बद्ध कार्य पर आपका ध्यान न हो।

राजाओं को सलाहकारों का एक मण्डल रखने का निर्देश दिया जाता है- दूसरे शब्दों में कहें तो मंत्री परिषद, जिनके साथ वे प्रतिदिन कुछ समय बिताकर राज्य के मसलों पर विचार कर सकें।

अकबर के पास नवरत्न थे। ये नवों विशेषज्ञ उनके सलाहकार थे। वे विभिन्न क्षेत्रों से थे, अतः उसे प्रत्येक समस्या पर अलग-अलग दृष्टिकोण मिल जाते थे।

शिवाजी महाराज के पास अष्ट-प्रधान थे जो कि विभिन्न विभागों के अध्यक्ष थे। ये सभी उनके केन्द्रीय दल के सदस्य थे और सभी रणनीतियों व कार्यवाहियों की योजनाएँ उनकी सहायता से ही बनाई जाती थीं।

एकाकी ही विचार क्यों करें जब आपके साथ विचार करने को विशेषज्ञ उपलब्ध है?

आपको ऐसे कई व्यवसायी मिल जायेंगे जो अधिक शिक्षित नहीं हैं, किन्तु सफलतापूर्वक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चला रहे हैं। उनकी टीम में सुशिक्षित व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य किये हुए लोगों का होना ही उनकी सफलता का रहस्य है। उनके अनुभव कौशल का लाभ पाने के लिये कंपनी उनका पूरा ध्यान रखती है व उन्हें अच्छे पैसे भी देती है।

अपने सलाहकारों को अच्छा पैसा दें। सलाहकार की कीमत धन से नहीं लगायी जा सकती। वे अपने आप में एक पूंजी है। एक तरह से सलाहकार की पूरी सलाह मूल्यहीन है और दूसरी ओर यह अमूल्य भी है। आप अच्छी सलाह के लिये न तो मोलभाव कर सकते हैं और न ही कोई समझौता। सलाहकार कंपनियाँ जो ऐसा करती हैं, अपने सलाहकारों का मूल्य कम आंकती हैं।

अपने सहयोगियों व दल का ध्यान रखना दुर्योधन की विशेषता थी। कुरुक्षेत्र के युद्ध में, अपने समय के महानतम योद्धा चाहे वे भीष्म हों या द्रोणाचार्य, कृपाचार्य या कर्ण, सभी कौरवों के साथ थे।

दुर्योधन ने उन सभी का बहुत ध्यान रखा। जब कर्ण का अपमान किया गया तो दुर्योधन ने अपना आधा राज्य उसे दे दिया। क्षण भर में ही उसने कर्ण को एक साधारण व्यक्ति से राजा बना दिया।

क्या दुर्योधन का यह गुण सीखने योग्य नहीं है?

उसने अपने दल के सदस्यों व सलाहकारों को प्रसन्न व संतुष्ट रखा। इसी कारण उन्होंने युद्ध में दुर्योधन का साथ दिया, हालांकि वे जानते थे कि दुर्योधन गलती कर रहा है। उन्होंने उसे सही राह पर चलने की हरसंभव सलाह दी। दुर्योधन ने भले ही उनकी सलाह नहीं मानी हो किन्तु वे सभी महान व्यक्ति अपनी अंतिम सांस तक दुर्योधन के साथ ही रहे।

यदि आप अपने सलाहकारों का ध्यान रखेंगे तो वे भी आपका ध्यान रखेंगे। अधिकतर संगठनों में सलाहकार एक तरह से परिवार का हिस्सा बन जाता है और सदा उनके साथ बना रहता है। वह वाकई आपका मित्र बन जाता है, एक ऐसा सच्चा मित्र जो आपके साथ अंतिम सांस तक रहता है।

एक युद्ध में, एक सैनिक शत्रु के क्षेत्र से सुरक्षित लौट आया, किन्तु वापस आकर उसे पता चला कि उसका मित्र लापता है। यह जान कर उसने पुनः शत्रु-क्षेत्र में जाने की आज्ञा मांगी। उसके कमांडर ने कहा, “वापस जाने व जान देने का कोई अर्थ नहीं है।” किन्तु इस बार उसने आज्ञा पालन नहीं किया।

जब वह लौटा तो उसका पूरा शरीर गोलियों से छलनी था, लेकिन उसने अपने मित्र को कंधे पर उठा रखा था। यह देखकर कमांडर ने कहा, “मैं एक सैनिक खो चुका था, और अब दूसरा भी खोने वाला हूँ। तुम्हारे वापस जाने से क्या लाभ हुआ?”

सैनिक ने उत्तर दिया, “मुझे अपना मित्र शत्रु के इलाके में मरणासन्न अवस्था में मिला। जब मैं उसके पास पहुँचा, तो उसके कहा”, “मुझे पता था, तुम आओगे।”

“सर, मेरे लिये वे शब्द बहुत महत्वपूर्ण थे क्योंकि मैं अपना जीवन त्याग सकता हूँ किन्तु अपनी मित्रता नहीं।” और उसने अपने प्राण त्याग दिये।

भाग ब



चाणक्य के अनुसार एक उत्कृष्ट मित्र के गुण

नेता अपनी राह पर एकाकी नहीं चल सकते। अन्य सभी की तरह उन्हें भी साथियों की आवश्यकता होती है। एक प्रचलित कथन है, “शीर्ष पर व्यक्ति एकाकी होता है।” किन्तु अपने-अपने शीर्ष पर मौजूद अन्य लोगों को आप मित्र बना सकते हैं।

आजीवन मित्र ढूँढते रहें। वास्तविक मित्रता साहचर्य है। यह वह कंधा है जो आवश्यकता पड़ने पर आपका सहारा होता है।

अन्य नेताओं की ओर देखें, आवश्यक नहीं कि वे आप ही के क्षेत्र या विषय से संबंधित हों। आप नेतृत्व के विभिन्न प्रकारों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

प्रसिद्ध क्रिकेट कमेंटेटर हर्षा भोगले ने एक बार कहा- “आखिर क्रिकेट खिलाड़ी और क्या जानते हैं, यदि उन्हें मात्र क्रिकेट के बारे में ही पता है।”

यह एक गहरी उक्ति है। एक क्रिकेटर अन्य खिलाड़ियों से सीख सकता है, चाहे वह गोल्फ, टेनिस या फुटबाल कुछ भी खेलता हो। खेल अलग हो सकता है किन्तु वह अन्य खिलाड़ियों से अवश्य कुछ सीख सकता है। चैंपियंस अन्य चैंपियंस से सीखते हैं। विजेता अन्य विजेताओं से सीखते हैं। नेता अन्य नेताओं से सीखते हैं।

नेता भी विकसित हो अगले स्तर तक पहुँचते हैं। वे आगे बढ़ना चाहते हैं, सीखना, भूलना व पुनः सीखना चाहते हैं। वे अपना ज्ञान व अनुभव बांटना चाहते हैं।

एक बार आप नेतृत्व संभाल लें तो यह आपको अच्छा लगने लगता है। यह एक खेल या शौक हो जाता है और आपको खेलने के लिये मित्रों की आवश्यकता होती है। आपको अपने जैसा सोचने वालों की आवश्यकता होती है और तब जीवन सीधा सरल न रह कर एक सतत् सीखने की प्रक्रिया बन जाता है।

चाणक्य कहते हैं अपने साथी चुनते समय आपको कुछ गुणों पर ध्यान देना चाहिए। अर्थशास्त्र की छठी पुस्तक के पहले अध्याय के बारहवें सूत्र के अनुसार, एक अच्छे साथी के गुण हैं:-

- ▶ आपके पिता/दादा के समय से चले आ रहे संबंध
- ▶ महानता
- ▶ स्थायित्व
- ▶ आत्म नियंत्रण
- ▶ कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न होना
- ▶ तुरंत सक्रिय होना

एक बार एक बच्चे ने नये स्कूल में प्रवेश लिया। पहले दिन बच्चा चुपचाप अपने में ही सीमित रहा और उदास व दुःखी घर लौटा।

उसकी माँ ने पूछा- “क्या तुम्हें स्कूल पसंद नहीं आया? क्या आज तुमने कोई नया मित्र नहीं बनाया?”

बच्चे ने उत्तर दिया- “स्कूल बहुत अच्छा है। अध्यापक भी अच्छे हैं। सभी बच्चों ने आकर मुझसे बात भी की।”

“तो फिर समस्या क्या है? तुम उदास क्यों हो?” उसकी माँ ने पूछा।

“मेरी समस्या यह है कि मैं निर्णय नहीं ले पा रहा कि कौन अच्छा मित्र है और कौन नहीं।”

हममें से अधिकतर इस नये स्कूल वाले बच्चे की तरह ही हैं। पहली बार में कोई भी यह नहीं समझ पाता कि अच्छा मित्र कौन है, लेकिन फिर भी आपको पहला कदम उठाना होता है। अन्यो के साथ मित्रवत् व्यवहार करके आप इसका आरम्भ कर सकते हैं। समय के साथ कुछ मित्र आपके जीवन से बाहर चले जाते हैं और कुछ आजीवन आपके मित्र बने रहते हैं।

कुछ ऐसे सर्वमान्य गुण हैं जिन्हें आप अपना आजीवन मित्र चुनते समय याद रख सकते हैं।

► आपके पिता/दादा के समय से चले आ रहे संबंध

यहाँ तात्पर्य उन पारिवारिक मित्रों से हैं, जिन्हें आप दो-तीन पीढ़ियों से जानते हैं। ये वे मित्र हैं जो आपको बिन मांगे ही मिल गये। उदाहरण के लिये आपके पिता व आपके मित्र के पिता एक दूसरे को लंबे समय से जानते हैं, वे नियमित आपके घर आते हैं और आप भी नियमित रूप से उनके घर जाते रहते हैं।

परिवार एक दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं और कठिन समय में दोनों ने एक दूसरे की सहायता की होती है। आपने अपने माता-पिता की मित्रता के किस्से सुने होते हैं। ऐसे वातावरण में ही व्यक्ति मित्रता का मोल समझता है।

ऐसी पारिवारिक मित्रताएँ तीन पीढ़ी पुरानी भी हो सकती हैं- आपके दादाजी वाली पीढ़ी, आपके पिता की पीढ़ी और फिर आपकी पीढ़ी। यह सांकेतिक है, किन्तु बताता है कि मित्रता कितनी गहरी जा सकती है।

कई मामलों में पीढ़ियों तक मित्र रहे परिवारों में विवाह भी हो जाते हैं। बच्चे एक-दूसरे के साथ आनंदित रहते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे को बचपन से पहचानते हैं। यह ऐसा ही है मानों बच्चों को एक घर से दूसरे घर भेजना। चूँकि दोनों परिवार एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, अतः समायोजन सरल रहता है।

आप जितने लम्बे समय से एक मित्र को जानते हैं आपके संबंध उतने अच्छे होंगे। ऐसे मित्र एक दूसरे के गुणों, क्षमताओं व विचारों से अच्छी तरह परिचित होते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय आरंभ करने जा रहे हैं, तो आप एक भागीदार के रूप में किसे चुनेंगे- अपने तीस वर्ष पुराने मित्र को या उस व्यक्ति को जिससे आपका परिचय अभी हाल ही में हुआ है? निश्चय ही क्रमशः विकसित हुई आपसी समझ के आधार पर आप पहले व्यक्ति को ही चुनेंगे।

► महानता

जब दो व्यक्तियों में भागीदारी होती है तो एक-दूसरे का सम्मान करना आवश्यक है। कोई भी दो लोग एक जैसा नहीं सोच सकते, अतः एक सफल व आत्मनिर्भर संबंध बनाने के लिये आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान दूसरे के विशिष्ट गुणों ढूँढने पर हो व ये गुण दोनों को संपूर्णता देते हों।

व्यापारिक घरानों में यह अक्सर देखने को मिलता है कि विभिन्न भागीदारों के श्रेष्ठतम गुण भी विभिन्न हैं। कोई वित्त विशेषज्ञ है तो दूसरे का शक्तिशाली गुण मार्केटिंग है और तीसरा ऑपरेशंस का महारथी है।

आपका मित्र “महान” होना चाहिए, इसका अर्थ है कि उसमें वे गुण हों जो आपको अच्छे लगते हों और आप जिन्हें पाना चाहते हों।

जीवन में आप कभी अच्छे और कभी बुरे मित्र बनाते हैं। एक व्यक्ति की पहचान उसके मित्रों से होती है। अच्छे मित्र आपका विकास कर सकते हैं और बुरे विनाश। अतएव ‘अच्छे’ व महान मित्र रखना ही महत्वपूर्ण है।

संस्कृत में अच्छी मित्रता के लिये शब्द है- सतसंग। इसका अर्थ है अच्छे, सहृदय व आध्यात्मिक लोग। बुरी मित्रता

को संस्कृत में कुसंग कहते हैं, अर्थात् दुष्ट व बुरे लोगों की संगति।

बच्चों को अच्छी संगति मिले, यह सुनिश्चित करना माता-पिता का प्रथम कर्तव्य है।

कई बार महान लोगों की संगति एक साधारण व्यक्ति को भी महान बना देती है और वह अपने मित्र के महान गुणों का अनुसरण कर जीवन में उन्नति कर लेता है।

यह ऐसा ही है जैसे एक लोहे के टुकड़े को एक शक्तिशाली चुम्बक के साथ रख दिया जाये। कुछ समय बाद लोहे के टुकड़े में चुम्बक के गुण आ जाते हैं और वह चुम्बक की तरह अन्य लोहे के टुकड़ों को आकर्षित करने लगता है।

दूसरी ओर एक व्यक्ति दूध की तरह पाक व साफ हो सकता है, किन्तु जैसे नींबू की एक बूंद उस दूध को खराब कर देती है, वैसे ही यह व्यक्ति भी इतना बुरा बन सकता है कि उसे सुधारना असम्भव हो जाये। नशीली दवाओं व सिगरेट की लत बुरी संगति का ही परिणाम है।

एक बार एक भक्त प्रार्थना कर रहा था कि भगवान प्रकट हो गये और उसे वर मांगने को कहा। उस भक्त ने कहा- “भगवन् मुझे आशीर्वाद दें कि मैं सदा दयालु व सहृदय आत्माओं की संगति में रहूँ।” इससे बड़ा वर कोई नहीं मांग सकता।

► स्थायित्व

प्रत्येक व्यक्ति सफल व्यक्तियों की संगति ही चाहता है किन्तु जब आप सफलता के लिए संघर्षरत हों तो बहुत कम लोग आपको समर्थन देते हैं। सफल व्यक्ति के सभी मित्र होते हैं, किन्तु असफलता व्यक्ति को मित्रों की पहचान करा देती है।

अतएव चाणक्य कहते हैं कि एक अच्छे मित्र का गुण है स्थायी रहना, हर समय मित्रता निभाना चाहे व्यक्ति कठिनाईयों का सामना कर रहा हो, या असफल हो गया हो अथवा सफलता उसके कदम चूम रही हो।

मराठी में एक कहावत है- “कामा पुरता मामा”, अर्थात् आवश्यकता होने पर संबंधी बन जाना और काम पूरा हो जाने पर व्यक्ति को भूल जाना। ऐसे मित्र परजीवियों की तरह होते हैं।

अच्छे मित्र सदा आपके मित्र बने रहते हैं। वे हमेशा आपके साथ खड़े होते हैं। वे आपको निःस्वार्थ प्रेम करते हैं। ये मित्र आपके जीवन की वास्तविक पूंजी होते हैं।

एक महान संत ने कहा है- “धन आपको कभी अमीर नहीं बनाता, आपके मित्र आपको धनवान बनाते हैं। धन स्थायी नहीं है किन्तु अच्छे मित्र सदा आपके साथ रहते हैं।”

नेताओं को यह समझना होता है कि उनका सच्चा मित्र कौन है। अच्छा व बुरा, दोनों ही तरह का समय बीत जाता है, किन्तु मित्रता सदा बनी रहती है। प्रत्येक नेता की सफलता का रहस्य उसके वास्तविक मित्रों की संख्या में है। इसी पूंजी का निर्माण नेता को अपने जीवन में करना होता है। कई समुदायों में एक व्यक्ति की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि उसकी अंतिम यात्रा में कितने लोग सम्मिलित हुए।

► आत्म नियंत्रण

यह एक और परीक्षण है अपने मित्रों की सत्यता जांचने का। उसके पास आत्म-नियंत्रण होना चाहिए। वह व्यक्ति जो अपने मन व इंद्रियों को अपने वश में रखता है। कभी गलती नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति कभी मर्यादा नहीं तोड़ेगा।

वह अनुशासित, संस्कारी व सुव्यवहारित होता है। उसका दृष्टिकोण संतुलित होता है और वह किसी भी स्थिति में अपना धैर्य नहीं खोता। ऐसा व्यक्ति भीतर से मजबूत होता है।

उसका अपने विचारों, भाषा व व्यवहार पर नियंत्रण होता है। वह आवेगी नहीं होता व कोई भी कदम उठाने से पहले उसके परिणामों पर भलीभांति विचार करता है।

ऐसा मित्र खर्चों पर नियंत्रण रखता है। वह कंजूस नहीं होता, किन्तु धनवान होते हुए भी वह कभी दिखावा नहीं

करता, वह कभी जुआ नहीं खेलता। वह कभी आवेग में खरीददारी नहीं करता। वह कभी क्रेडिट कार्ड्स के मायाजाल में नहीं फंसता और केवल वहीं खर्च करता है जहाँ आवश्यक हो। वह गरिमामय होता है, चमकदार नहीं।

ऐसे व्यक्ति की संगति आपको भी आत्मनियंत्रण बढ़ाने में सहायता करती हैं। वह अच्छाईयों से घिरा होता है और अच्छाईयों को ही आकर्षित करता है। वह स्वयं एक प्रेरणा होता है। वह विवेक की बात करता है। वह उचित व अनुचित का अंतर जानता है। वह एक विचारक व कर्ता दोनों ही होता है। वह विनम्रता का मानवरूप होता है।

क्या आप ऐसे व्यक्ति को अपना मित्र, दार्शनिक व मार्गदर्शक नहीं बनाना चाहेंगे? ऐसा मित्र आपके जीवन को संपूर्णता व सार्थकता देता है।

► कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न होना

एक सच्चा मित्र कभी भी मात्र अपने लाभ के बारे में नहीं सोचता। वह हमेशा सभी के भले या लाभ के मार्ग के बारे में विचार करता है। वह सुनिश्चित करता है कि आप सभी एक साथ सफल हों किसी भी परियोजना अथवा कार्य में उसका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता।

उदाहरण के लिये शिवनंदन ने पुलिसबल में कार्यरत रहते हुए, समाज के हित को सदा सर्वोपरि रखा। अपने कार्यकाल के अंत में वे लोगों की शुभकामनाओं व समाज को मिले लाभ को ही अपनी सबसे बड़ी पूंजी मानते हैं।

आप भी ऐसे कई मित्रों को जानते होंगे जिन्होंने समाज व देश के कल्याण के लिए निःस्वार्थ योगदान दिया। ऐसे लोग मानव मात्र के कल्याण के लिये प्रार्थना करते हैं। वे महान लोग होते हैं।

दूसरी ओर एक ऐसा मित्र जो सदा अपने व्यक्तिगत लाभ के बारे में सोचता हो, अपने सभी मित्र खो कर अंत में बिल्कुल अकेला रह जाता है।

मित्रता केवल व्यक्तियों के बीच ही नहीं, अपितु संगठनों के बीच भी हो सकती है। ऐसे संगठन साथ मिलकर एक दूसरे को लाभ देने वाली परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। उनका लक्ष्य किसी व्यक्ति विशेष का हित न हो कर प्रत्येक को लाभ देना होता है।

उदाहरण के लिये, आजकल मोबाईल फोन ऑपरेटर कंपनियाँ साझा ट्रांसमिशन टावर प्रयोग करती हैं। अतिरिक्त टावर्स स्थापित करने की जगह उन्होंने ऐसा इंतजाम किया है जिसके अंतर्गत वे एक दूसरे के टावर प्रयोग कर लेती हैं और इससे दोनों कंपनियों को लाभ होता है।

कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों व पुलिस बलों में भी आदान-प्रदान (एक्सचेंज) कार्यक्रम होते हैं। वे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये अपने कर्मचारियों की अदला-बदली करते हैं। इससे दोनों संगठनों को अपना ज्ञान व अनुभव बांटने का अवसर मिलता है, जो दोनों संगठनों को भविष्य में होने वाली घटनाओं व आपदाओं के प्रति अधिक सतर्क व कदम उठाने को तत्पर बनाता है।

कई संगठन साथ मिलकर अनुसंधान भी करते हैं। वे ऐसे विशिष्ट उत्पादों एवं सेवाओं का आविष्कार करते हैं जिनके लिए उनके पास सम्मिलित इंटेलिक्चुअल प्रॉपर्टी राइट होते हैं। वे इस गतिविधि द्वारा प्राप्त आर्थिक लाभ को भी आपस में बांटते हैं।

विभिन्न संघों/संगठनों की अवधारणा भी मिलती-जुलती ही है। व्यापारिक समूह मिलकर ही एसोसिएशन बनाते हैं। एक अकेली कंपनी के पास समझौता करने की शक्ति सम्भव है कम हो लेकिन साथ मिलकर वे अपनी साझा समस्याओं पर कार्य करते हैं और उन सरकारी नीतियों का विरोध भी करते हैं जो उद्योग के लिये घातक हो सकती हैं।

व्यावसायिक गठबंधन वे सशक्त समूह है, जहाँ लोग अपने साझा उद्देश्यों की पूर्ति के लिये साथ आते हैं। इन गठबंधनों में किसी का कोई अलग स्वार्थ नहीं होता।

मित्रों की सच्ची शक्ति उनके पास आकर, मिलकर चलने में है न कि प्रतिस्पर्धा में।

डॉ. अब्दुल कलाम कहते हैं- “किसी समय नेतृत्व का अर्थ प्रतिस्पर्धा था, किन्तु आज यह सहयोग है।”

साथ आयें, सहयोग करें व एक-दूसरे के लाभ के बारे में सोचें, यह निश्चित सफलता का फार्मूला है।

► तुरंत सक्रिय होने की योग्यता

एक अच्छा सहयोगी आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता करने को तुरंत उपस्थित होगा। आपातस्थिति में आप उसे निसंकोच फोन कर सकते हैं।

एक सच्चा मित्र आपके बताये बिना ही, आपकी आवश्यकताओं को जान जाता है। उसका आपसे गहरा मानसिक समन्वय रहता है।

एक दम्पति, जिनकी शादी को कई वर्ष बीत चुके होते हैं, उनके बीच भी ऐसा ही मानसिक संपर्क रहता है। मानसिक रूप से वे दोनों एक-दूसरे के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि उन्हें शब्दों की आवश्यकता नहीं होती।

संकट के समय इन मित्रों को तुरंत सक्रिय किया जा सकता है। कल्पना करें आपके घर में आग लग गयी है, आप घबरा गये हैं व आपकी सोचने समझने की क्षमता समाप्त हो गयी है, ऐसे में एक सच्चा मित्र आपके पुकारते ही आ पहुँचेगा और तुरंत आवश्यक कदम उठायेगा जैसे कि अग्नि शमन दल व अन्य मित्रों को बुलाना।

ऐसे उत्कृष्ट मित्र आपका मानसिक संबल होते हैं।

ऊपर वर्णित मित्रों के छः गुण, हमें अच्छे व सच्चे मित्र ढूँढने में सहायता करते हैं। इन गुणों को विकास कर आप भी एक अच्छे मित्र बनें।

अपने भीतर छिपे अच्छे मित्र को ढूँढ निकालें।

भाग स



नेतृत्व का क्रियान्वयन मित्रों व सहयोगियों के साथ कार्य करना

“प्रकाश में अकेले चलने की तुलना में अंधेरे में किसी मित्र के साथ चलना मेरे लिये अधिक महत्वपूर्ण हैं।”

हेलन कीलर

शिवनंदन लम्बे समय तक एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी रहे। ऐसे पद पर कार्य करने वालों के संपर्क में कई लोग आते हैं। संपर्क में आये इन लोगों का पद की गरिमा व महत्ता के प्रभाव में आना स्वाभाविक है किंतु एक अधिकारी का इन संपर्कों को स्थायी मैत्री में बदल पाना, विशेष कौशल द्वारा ही संभव हो पाता है।

हमारे जीवन में कुछ मित्र व्यावसायिक कारणों से आते हैं, तो कुछ उनकी आवश्यकता पूर्ति हेतु हमसे संपर्क करते हैं तथा कई बार हम भी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए लोगों का सहयोग लेते हैं। आरंभ चाहे कैसे भी हो किन्तु मन्तव्य सिद्ध हो जाने पर हमें मित्रों को छोड़ना नहीं चाहिए। यहीं पर हम अपने स्वार्थों से परे जाकर संबंध बनाते हैं।

जब तक मित्रता किसी कारण से जुड़ी रहेगी, उसमें गहराई नहीं होगी, किन्तु शिवनंदन ने सेवा निवृत्ति के बाद भी अपने संपर्क व गठजोड़ बनाये रखे हैं।

जब राधाकृष्णन पिल्लै, शिवनंदन के संपर्क में आये तो उनका सेवा काल पूर्ण होने में छः माह का ही समय था। वे कहते हैं- “मेरा व उनका संपर्क उनके एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद ही बढ़ा। मुझे सर्वाधिक आश्चर्य इस बात से होता था कि सेवानिवृत्ति के बाद भी वे उतने ही सम्माननीय थे।”

इस पुस्तक के लिये उनका साक्षात्कार लेते समय मुझे पता चला कि उनके बनाये संबंधों का उनके सफल कार्यकाल में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आइये, एक नज़र उन विधियों पर डालें जिनके द्वारा वे सफलता के लिये अपने मित्रों का सहयोग ले पाये।

आपके आसपास होने वाली बहुत सी घटनाओं से संबंधित जानकारीयाँ आपको अपने संबंधों से ही मिलती हैं। पुलिस बल के नेता के पद पर होते हुए, उनके लिये केवल जानकारीयाँ एकत्रित करना काफी नहीं था अपितु, उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होता था कि जानकारीयाँ नियमित रूप से मिलतीं रहें व उनके अनुरूप कदम उठाये जाते रहें।

ऊँचे ओहदे पर पदस्थ व्यक्ति को जानकारीयाँ बिना मांगे ही मिलती रहती हैं। उदाहरण के लिये यदि आप किसी विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष हैं तो आपके विषय से संबंधित जानकारीयाँ प्रतिदिन आपकी मेज पर होंगी। आपको सेमिनारों में आमंत्रित किया जायेगा व सर्वश्रेष्ठ रिसर्च जनरल व आपके क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ बैठकों में मिलने व ज्ञान बांटने के अवसर भी आपको उपलब्ध होंगे।

किन्तु एक अच्छा नेता अपने संबंधों को एक स्तर ऊपर ले जाता है। वह जानकारीयाँ उस तक पहुँचाने की प्रतीक्षा नहीं करता, अपितु वह सक्रियता से उन्हें हासिल करता है।

शिवनंदन पुलिस बल के एक नेता थे। उनके मातहत वास्तविकताओं से अच्छी तरह परिचित थे और अपने-अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ भी। अतः उन्होंने अपने मातहतों के साथ दैनिक बैठकें रखीं जिनमें वे उनके साथ महत्वपूर्ण व गंभीर मामलों पर चर्चा करते थे, उनकी सुनते थे व कार्यान्वित करने के लिये निर्णय लेते थे।

दैनिक बैठकें, विश्लेषण व निर्णय, ये उनके पूरे कार्यकाल में उनकी दिनचर्या का भाग रहे। टीम के मुख्य सदस्यों से आमने-सामने की बैठकें, कई भ्रामक स्थितियों का हल निकालने में सहायक होती हैं।

कॉरपोरेट जगत में भी इस प्रणाली का उपयोग प्रभावकारी सिद्ध हुआ है। दैनिक बैठकों ने अच्छा नेतृत्व सुनिश्चित किया है। बिक्री बढ़ी है, टीम वर्क मजबूत हुआ है और वित्तीय नियंत्रण भी सुनिश्चित होता है। होटल उद्योग में, होटल का जनरल मैनेजर प्रतिदिन सुबह एक बैठक रखता है। वह होटल के कितने कमरों में मेहमान ठहरे हैं व उनके उपयोग की स्थिति (ऑक्यूपेंसी स्टेट्स) जाँचता है, रखरखाव की समस्याओं पर नजर डालता है, कर्मचारियों की उपस्थिति तथा अन्य महत्व के कार्यों पर इस बैठक के दौरान ध्यान केन्द्रित करता है।

प्रतिदिन की इन बैठकों में नेता को अपना दृष्टिकोण रखने का अवसर भी मिलता है। यह दोतरफा स्पष्ट बातचीत संवादहीनता से उत्पन्न होने वाली दूरी को पाटती है जो अन्यथा आपदा का कारण बन सकती है।

पुलिस तंत्र के लिये सूचना देने वालों या खबरियों का समूह, पुलिसकर्मियों की महत्वपूर्ण पूंजी होती है। ये खबरी नगर व राज्य में सक्रिय अपराधी गुटों की आंतरिक जानकारी पुलिस तक पहुँचाते हैं। कई बड़ी सफलताओं की मुख्य कड़ी ये खबरी ही होते हैं।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी या नेता के कई सूचना स्रोत होते हैं। उसके मातहत कार्य करने वाले कनिष्ठ अधिकारी, एक कांस्टेबल, एक खबरी या फिर एक आम नागरिक, जो कि बिन बुलाये अचानक उसके कार्यालय में महत्वपूर्ण सूचना लेकर आ पहुँचता है। अगला कदम होता है, खुले दिमाग से इन लोगों की पूरी बात सुनना व जानकारी का विश्लेषण करना। गहराई तक जाना, उपयोगी जानकारी की जांच करना और फिर उसका उपयोग करना।

आपके खबरियों का समूह जितना बड़ा होगा, आप उतने शक्तिशाली होंगे। आपके पास जानकारी जुटाने के विभिन्न स्रोत होने चाहिए। आपको जानकारी समाचार पत्रों, टेलिविज़न या उस पत्रकार से भी मिल सकती है जिसे मामले के विभिन्न पक्षों की जानकारी हो।

इस संदर्भ में शिवनंदन एक दिलचस्प अंतर्दृष्टि की बात करते हैं- “एक नेता को एक हंस जैसा होना चाहिए, जिसे दूध व पानी में अंतर करना व श्रेष्ठ चुनना आता है।”

हालांकि आप विभिन्न स्रोतों से कई प्रकार की जानकारियाँ एकत्रित कर लेते हैं, किन्तु इनमें से सत्य-असत्य का चुनाव करना, अपने आप में एक चुनौती है और यहीं पर दूध को पानी से अलग करने के कौशल की आवश्यकता होती है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इस कौशल को ‘विवेक-बुद्धि’ कहा जाता है- अर्थात् सही व गलत, अच्छे व बुरे, सम्बद्ध व असम्बद्ध, आवश्यक व अनावश्यक में, अपनी बुद्धि के प्रयोग से अंतर करना।

अर्थशास्त्र में विचार करने की योग्यता को ‘आन्विकशिकी’ कहा जाता है- सामरिक सोच व विश्लेषण का एक तरीका।

परस्पर विरोधी जानकारियों का विश्लेषण कर सही जानकारी का पता लगाने का एक सरल तरीका है:

“तीन स्रोतों से प्राप्त हुई जानकारी लें, तीनों में औसतन क्या कहा गया है? उस पर ध्यान दें व निर्णय लें।”

अतः यदि आप किसी स्थिति को लेकर आश्वस्त नहीं हैं तो तीन लोगों से अलग-अलग पता करें। जब आप इन जानकारियों के औसत कथन तक पहुँच जायेंगे तो सच्चाई अपने आप स्पष्ट हो जायेगी। जैसा कि शिवनंदन कहते हैं- “सत्य कहीं बीच में ही रहता है।”

जानकारी के स्रोतों के अतिरिक्त व्यक्ति को अच्छे सलाहकारों से भी संपर्क रखना चाहिए। ये सलाहकार आपसे अधिक परिपक्व व वरिष्ठ होते हैं। उनके पास अनुभव, बुद्धि व अंतःदृष्टि होती है। शिवनंदन ने सुनिश्चित किया कि वे अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सदा सीखते रहें। एक वरिष्ठ अधिकारी से उन्होंने अनुशासन व समयबद्धता का महत्व सीखा, दूसरे से उन्होंने सीखा कि अच्छी पोशाक पहनने से आप सकारात्मक अनुभव करते हैं, तीसरे से उन्होंने तुरंत कार्यवाही करना सीखा।

ये सलाहकार उस समय भी उपयोगी सिद्ध होते हैं, जब आपको रणनीति बनाने में दिशानिर्देशों व सलाह की आवश्यकता होती है। 26/11 के आतंकी हमलों के बाद, शिवनंदन ने सेमिनारों का आयोजन किया, जिनका उद्देश्य भारत के सर्वाधिक बुद्धिमान व्यक्तियों से ज्ञान हासिल करना था। यह ज्ञान आपको अच्छे सामाजिक संबंधों से भी मिलता है।

पुलिस बल में मौजूद आपके सहकर्मी व मित्र भी आपको जानकारीयाँ देते रहते हैं। उदाहरण के लिये जब शिवनंदन डायरेक्टर जनरल ऑफ महाराष्ट्र पुलिस थे, तब उनके कई मित्र अन्य राज्यों में इसी पद पर थे। इनमें से कुछ उनके ही बैच के थे और कुछ से उनकी पहचान कार्य के दौरान हुई।

आप इन संबंधों का प्रयोग कर सकते हैं। यह ऐसा ही है जैसे एक दूसरे के साथ जानकारी बांटना। यदि एक गैंगेस्टर भागकर दूसरे राज्य में चला गया है तो वहाँ पर मौजूद आपके मित्र उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। केवल एक फोन करने से दूसरे राज्य की पुलिस हरकत में आ जाती है और गैंगेस्टर पकड़ लिया जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित पुलिस बैठकों में आप अन्य राज्यों के कई पुलिस अधिकारियों से मिलते हैं। इससे आपको उन राज्यों की गतिविधियों की भी कई जानकारीयाँ मिल जाती हैं। इन आयोजनों में आपको नये मित्र बनाने के मौके भी मिलते हैं। यदि आप चुस्त हैं तो आप इन संपर्कों को आजीवन बनाये रख सकते हैं।

शिवनंदन पूरे राज्य, देश व संसार के विभिन्न स्तर पर कार्य कर रहे कई पुलिस कर्मियों से गहरे जुड़े हुए थे। उनके द्वारा निर्मित ये औपचारिक व अनौपचारिक संबंध तथा समुदाय, हमेशा उनकी मूल शक्ति रहे।

आपके पास अलग-अलग प्रकार के मित्र होने चाहिए: वे जो आपके समुदाय व समूह का भाग हैं और वे भी जो आपके समूह का भाग नहीं हैं। शिवनंदन के कई मित्र ऐसे भी थे जो पुलिस समुदाय का भाग नहीं थे।

एक जैसे पंखों वाले पक्षी एक साथ रहते हैं : इस अंग्रेजी कहावत का अर्थ है- एक जैसे व्यक्ति साथ आ जाते हैं। यह स्वाभाविक भी है, किन्तु ऐसे पक्षियों के साथ उड़ना जिनके पंख आपसे भिन्न हैं, सरल नहीं होता। पुलिस समुदाय में कई मित्र होना, शिवनंदन के लिए स्वाभाविक था, किन्तु अन्य सामाजिक वृत्तों में मौजूद उनके मित्रों ने उन्हें सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

उनके मित्रों में अध्यापक, प्रोफेसर, शिक्षा विशेषज्ञ, चिकित्सक, वकील, इंजीनियर, चार्टेड एकाउंटेंट, प्रबंधन सलाहकार, पत्रकार व मीडिया विशेषज्ञ शामिल हैं।

इन मित्रों ने उनकी सहायता कैसे की, आइये इसे कुछ उदाहरणों की सहायता से देखें:-

अपने पत्रकार व मीडिया विशेषज्ञ मित्रों की सहायता से उन्होंने मुंबई पुलिस की पहली पत्रिका “मुंबई प्रोटेक्टर” का आरम्भ किया। यह उन्होंने न्यू मीडिया ग्रुप के सहयोग से किया। मुंबई पुलिस की यह पत्रिका अग्रिम शुल्क (सबस्क्रिप्शन) पर उपलब्ध है, तथा मुंबई पुलिस द्वारा की गई पहलों की जानकारी को, आम आदमी तक पहुँचाने का अच्छा साधन है।

न्यू मीडिया ग्रुप पुलिस आयोजनों से संबंधित कई पुस्तकें व प्रकाशन निकालता है, जैसे कि ‘आतंकवाद से मुकाबला’ विषय पर आयोजित व्याख्यानो का संकलन।

चिकित्सा क्षेत्र में काम करने वाले शिवनंदन के मित्रों ने पुलिसकर्मियों के स्वास्थ्य हेतु उनके द्वारा आरम्भ किये गये कई कार्यक्रमों में सहायता की। जैसे कि पुलिसकर्मियों का पूरा स्वास्थ्य परीक्षण, अच्छे स्वास्थ्य के नुस्खे बताने वाली पुस्तिका की छपाई और उसे प्रत्येक पुलिसकर्मी को उपलब्ध करवाना।

एक और उदाहरण है- ठाणे पुलिस अस्पताल की स्थापना जिसका संचालन व प्रबंधन वोर्खाट ग्रुप द्वारा किया जा रहा था। यहाँ भी पुलिसकर्मियों को आर्थिक लाभ वाली स्वास्थ्य योजनाएँ उपलब्ध कराई गई जिससे कि उन्हें विश्वस्तरीय चिकित्सा मिल सके।

आज सरकार की शब्दावली का नया प्रचलित शब्द है- “पब्लिक मैनेजमेंट”। शिवनंदन के कई मित्र प्रबंधन विशेषज्ञ हैं। उन्होंने पुलिस बल की प्रबंधन क्षमता का विकास करने के लिये स्वर्गीय ऋषिकुमार पंडया जैसे कई प्रबंधन सलाहकारों के व्याख्यान, सेमिनार व कार्यशालाएँ आयोजित करायीं।

अपने संबंध बनाने के कौशल के कारण वे विभिन्न व्यापारिक एसोसिएशन में मित्र बनाने में सफल रहे, व इन

मित्रों ने उनकी कई परियोजनाओं के लिए धन एकत्रित करने में सहायकता की। पूरा खर्चा सरकार को सौंपने के बदले कॉरपोरेट जगत के उनके मित्रों ने उनकी कई परियोजनाओं को वित्तीय समर्थन दिया, जैसे कि बुलेट प्रूफ जैकेटों का इंतजाम, व्यायामशालाओं, स्कूलों व कैंटीनों का निर्माण आदि।

इनके अतिरिक्त पुलिस का संदेश जनता तक पहुंचाने के लिये उन्होंने रोटरी क्लब, लायंस क्लब व इंडियन मर्चेन्ट चेम्बर्स जैसी संस्थाओं के माध्यम से सैकड़ों व्याख्यान दिये।

मित्रों के साथ कार्य करते हुए यह आवश्यक है कि ऐसी स्थिति पर ध्यान दिया जाये जो दोनों पक्षों को लाभान्वित करने वाली हों। इन सम्बन्धों से पुलिस बल को तो लाभ हुआ ही, साथ ही ये संगठन भी पुलिस बल के साथ जुड़कर लाभान्वित हुए। पुलिस में एक नेता की छवि में परिवर्तन आया। पुलिसकर्मियों से संपर्क करना सरल हो गया। पुलिस बल व आम नागरिक के बीच की दीवार ढहने लगी।

एक अच्छा नेता वह है जो दूसरे क्षेत्र के नेताओं की प्रशंसा कर सके। वह उनका सम्मान करता हो, उनसे सीखता हो और दोनों के लाभ के लिये उनसे समायोजन करें।

एक-दूसरे की सहायता किये बिना कोई समाज प्रगति नहीं कर सकता। इसके लिये प्रत्येक क्षेत्र के नेता का साथ आना व आगे बढ़ने में एक-दूसरे की सहायता करना आवश्यक है। आप जो संबंध बनायें, वे आजीवन चलने चाहिए। वे स्थायी होने चाहिए।

शिवनंदन की संबंध बनाने की योग्यता ने सेवानिवृत्ति के बाद भी उनकी सहायता की। पुलिस बल का नेता होने के बाद आज वे एक 'कॉरपोरेट एग्जिक्यूटिव' हैं। वे 'सिक्योरिटी फर्स्ट' नामक एक कंपनी के चेयरमैन हैं। यह कंपनी भारत व विदेशों में कई बड़े कॉरपोरेशनों को सुरक्षा सेवाएँ देती है।

जिस कौशल का प्रयोग उन्होंने अपराध, भ्रष्टाचार व आर्थिक अपराधों को मिटाने में किया, उसी के उपयोग से आज वे विभिन्न संगठनों को बेहतर सुरक्षा पाने की दिशा में मार्गदर्शित कर रहे हैं।

सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें भारत सरकार ने बुलावा भेजा; कार्य था, प्रधानमंत्री कार्यालय के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मण्डल में विशेष कार्य बल के सदस्य के रूप में कार्य करते हुए राष्ट्र की भीतरी व बाहरी सुरक्षा का अध्ययन कर उस पर अपनी अनुशंसा देना। इस कार्य बल के नेता भूतपूर्व कैबिनेट सचिव श्री नरेश चन्द्र थे। ऐसे कार्य आसानी से नहीं मिलते, वे आपको अनुभव व वर्षों पुरानी साख के आधार पर दिये जाते हैं।

वे रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के भी सुरक्षा सलाहकार हैं तथा साइबर क्राइम एवं इलेक्ट्रॉनिक चोरी जैसे आधुनिक युग के अपराधों को रोकने के लिये रणनीतियाँ बनाते हैं। वे कई व्यावसायिक घरानों के सलाहकार हैं तथा देश-विदेश की कई प्रमुख प्रबंधन शिक्षण संस्थाओं में प्रबंधन व नेतृत्व जैसे विषय पढ़ाते हैं।

कई सरकारी अधिकारियों को अपने शक्तिशाली पद से सेवानिवृत्त होने पर बहुत बड़ा धक्का लगता है। वर्षों तक उन्हें ऐसे अनुयायी मिले जो उनके एक आदेश पर अपना जीवन न्यौछावर कर सकते थे। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की शक्ति कई लोगों में भय से सिरहन पैदा कर देती है।

फिर भी जिस दिन आप सेवानिवृत्त होते हैं आपसे सभी कुछ छीन लिया जाता है। आपके पास कोई नियंत्रण या अधिकार नहीं रहता, आप और कोई आदेश नहीं दे सकते। लेकिन जो बचता है- वह है आपकी साख व इस राह में आपके बनाये मित्र। ये आपकी वास्तविक पूँजी होते हैं, जो आजीवन आपके साथ रहती है। इस पुस्तक पर कार्य करते हुए हमें एक-दूसरे के मित्रों से भी परिचित होने का अवसर मिला। समय के साथ हमारे मित्रों की पूँजी बढ़ती जा रही है। यही हमारा सच्चा धन है।

आइये अंत में देखें कि किस प्रकार चाणक्य द्वारा दिया गया अच्छे मित्र का विवरण, शिवनंदन के मामले में सटीक बैठता है।

► आपके पिता/दादा के समय से चल आ रहे संबंध

सेवानिवृत्त होने के बाद भी शिवनंदन अपने आई.पी.एस. पाठ्यक्रम के सहपाठियों व सरकारी विभाग में कार्य करने वाले सहकर्मियों से संपर्क बनाये हुए हैं। पैंतीस वर्षों से अधिक समय से चले आ रहे ये संबंध अगली पीढ़ी तक चल रहे हैं। इस प्रकार ये संबंध, समय की कसौटी पर खरे उतरे संबंध हैं- पिता/दादा के समय से चले आ रहे

संबंध।

► महानता

शिवनंदन विभिन्न क्षेत्रों के महान व्यक्तियों से भी सतत संबंध बनाये हुए हैं। यदि कोई अपने क्षेत्र में आपसे बेहतर है तो उसे सम्मान दें, चाहे वह चिकित्सक हो, प्रबंधन सलाहकार हो, वकील या सरकारी विभाग में काम करने वाले अन्य विशेषज्ञ। वे हमेशा महान लोगों के संपर्क में रहे।

► स्थायित्व

पद की वरिष्ठता व शक्ति ने शिवनंदन को कई नये लोगों से मिलने के अवसर दिये। किन्तु उन्होंने अपने पद का प्रयोग ऐसे मित्र बनाने में किया जो उनके साथ सदा बने रहें।

► आत्म नियंत्रण

पुलिस बल में स्वयं पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। आपको कई प्रलोभन दिये जाते हैं, जैसे कि एक बड़ी रकम के एवज में एक अपराधी को न रोकना। ये प्रलोभन एक मित्रतापूर्ण सौदे के रूप में आ सकते हैं, लेकिन आवश्यक यह है कि आप इनके जाल में न आयें। शिवनंदन की निष्ठा ने सदा यह सुनिश्चित किया कि वे स्वयं को नियंत्रित रखें। वे सदा कानून के साथ चले व अपनी एक ईमानदार अधिकारी की छवि व साख के अनुरूप व्यवहार किया।

► कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न होना

जब शिवनंदन कॉरपोरेट समूहों या चिकित्सा विशेषज्ञों से मिले, जिन्होंने अंततोगत्वा पुलिस बल से संबंधित उनकी परिकल्पना को साकार करने में उनकी सहायता भी की, तब इस स्थिति की ओर उनका दृष्टिकोण “मेरे लिए इसमें क्या है?” वाला नहीं था। अपितु उनका नज़रिया हमेशा पुलिस बल व उनके मित्रों के लिये एक लाभकारी स्थिति का निर्माण करना था। अतः अपना व्यक्तिगत स्वार्थ न रखकर आप अपनी साख कई गुना बढ़ा लेते हैं।

► तुरंत सक्रिय होने की योग्यता

चाहे यह धन एकत्रित करना हो, परियोजनाओं को क्रियान्वित करना हो या स्वीकृति लेनी हो, शिवनंदन ने यह सभी बहुत तेजी से किया और यह सब उनकी सक्रिय होने की योग्यता के कारण हुआ जो अच्छे संबंधों द्वारा उन्हें मिली।

★ सहयोगियों व मित्रों के साथ कार्य करने के नुस्खे ★

- संबंधों की कड़ी- मित्रों की एक उत्कृष्ट कड़ी होना महत्वपूर्ण है।
- बैठकें आयोजित करें- अपनी टीम से नियमित रूप से जानकारी एकत्रित करें।
- अपनी बुद्धि का प्रयोग करें- सही व गलत के बीच भेद करना आवश्यक है।
- जानकारी देने वाले स्रोतों को बढ़ाएँ- ये रणनीति तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।
- मित्रों की सहायता करें- आवश्यकता पड़ने पर अपने मित्रों की सहायता करें।

मेरे भीतर का नेता

This image shows a full page of white paper with horizontal blue or grey ruling lines. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are approximately 20 lines visible. On the left side, there are small black marks that look like staple indentations or punch holes. The paper appears to be from a notebook or a standard sheet of stationery.

लेखक परिचय

डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई मुंबई विश्वविद्यालय से हैं। वे एक प्रशिक्षक, अनुसंधानकर्ता, लेखक व नेतृत्व के अध्यापक हैं। उनकी पहली पुस्तक 'कॉरपोरेट चाणक्य' ने प्रबंधन की पुस्तकों की श्रेणी में नये मानदंड स्थापित किये। एक लोकप्रिय पुस्तक होने के अतिरिक्त यह पुस्तक संसार भर में शैक्षिक अनुसंधान के लिये भी प्रयुक्त की गई। हजारों नेताओं को प्रशिक्षित करने व परामर्श देने के अतिरिक्त डॉ. पिल्लै, चाणक्य को एक प्रबंधन व नेतृत्व के गुरु के रूप में लोकप्रिय बनाने के लिये भी जाने जाते हैं।

डी. शिवनंदन ने पुलिस बल के नेता के रूप में पैंतीस वर्षों से अधिक समय कार्य किया और वह भी उन परिस्थितियों में जहाँ उनकी जान को खतरा था। उन्होंने अपने कार्यकारी जीवन की शुरुआत मद्रास विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में की, किन्तु 1976 में भारतीय पुलिस सेवा में आ गये। उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें प्रमुख है 'इंटेलिजेंस ब्यूरो' (आई.बी) में छः वर्ष का कार्यकाल, पहले डीसीपी के रूप में (1987-93) और फिर डिप्टी डायरेक्टर के रूप में। 1995-98 के दौरान उन्होंने पुलिस के नक्सल विरोधी अभियान को नेतृत्व दिया, उस समय वे डिप्टी एस.पी. डिप्टी आईजीपी, नागपुर रेंज के रूप में पदस्थ थे। मुंबई में उनका ज्वाइंट सी.पी. (क्राइम) का कार्यकाल (जुलाई 1998- मार्च 2001) सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों वाला माना जाता है, जब उनके सामरिक नेतृत्व में पुलिस शहर को अंडरवल्ड के शिकंजे से मुक्त कराने में सफल रही। अपने नेतृत्व कौशल के अलावा शिवनंदन को, पुलिस बल के कल्याण में रुचि लेने व कल्याण कार्य की गतिविधियों में भाग लेने के लिये जाना जाता है। उन्होंने पूरी सक्रियता के साथ पुलिसकर्मियों के बच्चों के लिये, गढ़चिरोली व चन्द्रपुर जैसे नक्सलियों के गढ़ समझे जाने वाले शहरों में स्कूलों का निर्माण कराया। उसके बाद ठाणे के सी.पी.- ठाणे सिटी, के पद पर रहते हुए (फरवरी 2005-मई 2008) उन्होंने ठाणे पुलिस स्कूल का निर्माण कराया। यह विश्व स्तरीय संस्था पुलिसकर्मियों व सामान्य नागरिकों के बच्चों को शिक्षित करने हेतु निर्मित की गई। वे पुलिसकर्मियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिये की गई कई पहलों में भी सम्मिलित रहे, जैसे कि अस्पतालों व व्यायामशालाओं का निर्माण, स्वास्थ्य परीक्षण व योग कक्षाओं का आयोजन आदि। नवम्बर 26, 2008 को मुंबई पर हुए आतंकी हमले के बाद, शिवनंदन ने मुंबई पुलिस के कमिश्नर का पदभार ग्रहण किया (जून 2009- मई 2010)। इस समयावधि में उन्होंने शहर के सुरक्षा ढांचे में कई महत्वपूर्ण बदलाव किये ताकि शहर भविष्य में आतंकियों के किसी संभावित हमले का सामना करने के लिये पूरी तरह तैयार रहें। महाराष्ट्र राज्य के डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (मई 2010-मार्च 2011) के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने 2.5 लाख पुलिस कर्मियों का नेतृत्व किया। सन् 2011 में सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री कार्यालय में कार्य किया व आजकल वे भारतीय रिजर्व बैंक में कार्यरत हैं। शिवनंदन व उनकी नेतृत्व शैली पर बहुत चर्चाएँ भी हुई व मीडिया में भी कई बार यह बहस का मुद्दा रहा। अपराधियों से निबटने की उनकी रणनीति पर बॉलीवुड में कई फिल्मों भी बनीं। उनके स्थितिजन्य नेतृत्व की रणनीतियाँ भारत व विश्व के कई शैक्षणिक संस्थानों में केस स्टडी के रूप में पढ़ाई जाती है।

आमंत्रण दें

राधाकृष्णन पिल्लई व डी. शिवनंदन को अपने संस्थान में “चाणक्याज सेवन सिक्रेट्स ऑफ लीडरशिप” पर कार्यक्रम आयोजित करने हेतु आप निम्नलिखित पते पर संपर्क कर सकते हैं,

info@ciplmumbai.in | sourav@seventeenevents.com

अथवा

फोन पर संपर्क करने के लिये डायल करें

91-9819993300, 9820941012, 022-26206195

www.seventeenevents.com

इन संस्थानों को बेहतर जानने के लिये देखें,

SECURUS  FIRST

डी. शिवनंदन, www.securusfirst.com



राधाकृष्णन पिल्लई, www.ciplmumbai.in

निम्नलिखित के बारे में अधिक जानकारी के लिये,

प्रबंधन पर बनी फिल्म “चाणक्य स्पीक्स - सेवन पिरल्स फॉर द सक्सेस इन बिजनेस” एवं ट्रेनिंग किट एवं ‘चाणक्य इन यू’ के लिय निम्न वेबसाइट पर जायें, www.chanakyaspeaks.in

चाणक्य का चक्रव्यूह

(अर्थशास्त्र पर आधारित एक विशेष खेल)

www.chanakyaschakkravyuh.com

फोन करें +91-7738688532.

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में भारत में जन्मे चाणक्य, अद्वितीय नेतृत्व गुरु थे। उनके द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' उनकी शिक्षाओं का कोष है। यह पुस्तक आदर्श नेतृत्व पर आधारित सुराज से सम्बंधित है।

अर्थशास्त्र में वर्णित आदर्श राज्य की अवधारणा को 'सप्तांग' कहा गया है। इसके अनुरूप राज्य के सात स्तंभ हैं, स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड, व मित्र। पिछली कई शताब्दियों तक भारतीय राजा इस अवधारणा को सफल राज्य के प्रारूप की तरह प्रयोग करते रहे हैं।

अपनी श्रेणी की इस पहली पुस्तक, **चाणक्य नेतृत्व के 7 रहस्य** में लेखक राधाकृष्णन पिल्लै ने चाणक्य द्वारा प्रतिपादित सप्तांग के सिद्धांत पर विस्तृत चर्चा की है और जीवंत उदाहरणार्थ डी. शिवनंदन को प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में महाराष्ट्र के भूतपूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस व एक योग्य प्रशासक शिवनंदन ने प्रभावकारी प्रबंधन के अपने निदेश सभी के साथ बाँटें हैं, विशेषकर वे जो एक ऊर्जावान व क्रियाशील नेतृत्व का मूल हैं।

चाणक्य नेतृत्व के 7 रहस्य के सातवें अध्याय में सिद्धांतों व व्यावहारिकता का मिलन है, अकादमिक अनुसंधान व पुलिस सुपरविजन के विस्तृत अनुभव का मिलन है, तथा सफलता की इस आधुनिक कथा में एक छुपा हुआ प्राचीन मंत्र भी अनावरित होता है।

नेतृत्व के सातों मर्मों का प्रयोगकर कोई भी एक प्रभावकारी राजा बन सकता है। अपने जीवन में इनका प्रयोग करें और देखें, कैसे चाणक्य का ज्ञान व बुद्धिमत्ता आपको एक आदर्श नेता के रूप में रूपांतरित कर देता है।



डॉ. राधाकृष्णन पिल्लै, चाणक्य इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक लीडरशिप (सीआयपीएल) के संस्थापक-निदेशक, जिन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बैठकों में भारत का प्रतिनिधित्व किया, तथा जर्मनी (हैडलबर्ग, कोलोन), यूके (ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज) व भारत (आय आय टी, आय आय एम, एवं आय आय एस) में अध्यापन भी किया। इनकी बेस्टसेलिंग पुस्तक 'कॉर्पोरेट चाणक्य' पूरी दुनिया की प्रबंधन संस्थाओं द्वारा प्रयोग की जाती है। सन् 2009 में श्री पिल्लै को सरदार पटेल अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



डी शिवनंदन, मुम्बई के भूतपूर्व कमिश्नर व महाराष्ट्र के भूतपूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस, भारत के अत्यंत सम्मानित भारतीय पुलिस सेवा अधिकारियों में से एक हैं। 2008 के मुम्बई हमलों के बाद मुम्बई की सुरक्षा के पुर्ननिर्माण में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, ये नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सचिवालय के सदस्य भी रहे हैं। आजकल ये कई कंपनियों के निदेशक मंडलों के सदस्य हैं तथा "सिक्योरस इंडिया प्रा लि" के संस्थापक व चेयरमैन हैं।

Elevate Your Life. Transform Your World.

JAICO BOOKS

www.jaicobooks.com

Business/Strategy

ISBN-13: 978-81-8495-688-7



9 788184 956887

